CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4.5 VHP

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला
१३०

॥ श्रीः ॥

प्राकृत-प्रबोधः

(प्राकृत भाषा-रचनानुवाद-सम्बन्धी सोदाहरण विवेचन)

लेखक
डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री

२४१७०
प्रा० १९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४८०
प्रा०१.६२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

24600
प्रा. १२८३

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला
१३०

॥ श्रीः ॥

प्राकृत-प्रबोधः

(प्राकृत भाषा-रचनानुवाद-सम्बन्धी सोदाहरण विवेचन)

लेखक
डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री
ज्यौतिषाचार्य, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न:
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी, प्राकृत एवं जैनालॉजी); पी-एच० डी०
स्वर्णपदक प्राप्त
अध्यक्ष : संस्कृत-प्राकृत-विभाग, एच० डी० जैन कालेज, आरा
(मगध विश्वविद्यालय)

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१
१९६५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक : चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
मुद्रक : विद्याविलास प्रेस, वाराणसी
संस्करण : प्रथम, वि० संवत् २०२२
मूल्य : ८-००

© The Chowkhamba Vidya Bhawan,
Chowk, Varanasi-1 (India)
1965
Phone : 3076

Also can be had of
THE CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE
Publishers & Antiquarian Book-Sellers
POST BOX 8. VARANASI-1 (India) PHONE : 3145

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

THE
VIDYABHAWAN SANSKRIT GRANTHAMALA
130

PRĀKṚTA-PRABODHA

(Introduction to the Prākṛta Language Composition
and Translation with examples)

By

Prof. N. C. Shastri
M. A., Ph. D. (Gold Medallist)
Head of the Deptt. of Sanskrit & Prakrit
H. D. Jain College, Arrah.
(Magadh University)

THE
CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
VARANASI-1
1965

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत भाषा और साहित्य के मनीषी चिन्तक

श्री पं० फूलचन्द्र जी सिद्धान्ताचार्य, वाराणसी

को

सादर : सभक्ति

समर्पित

नेमिचन्द्र शास्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आमुख

आपरितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् ।

प्राचीन भारत की विशाल ज्ञाननिधि संस्कृत, प्राकृत और पालि इन तीनों भाषाओं में सुरक्षित है। अतः भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं ज्ञान-विज्ञान को अवगत करने के हेतु प्राकृत भाषा का ज्ञान नितान्त अपेक्षित है। भारतीय वाङ्मय में प्राकृत वाङ्मय का महत्त्वपूर्ण स्थान है। किन्तु इसके अध्ययन के अभाव में प्रत्येक जिज्ञासु के ज्ञान की चमक धुंधली ही रहेगी। इसमें केवल कल्पना, बौद्धिक विलास एवं मत-मतान्तरों की समीक्षाएँ ही नहीं हैं, अपितु ज्ञानसागर के मन्थन से समुद्भूत जीवनस्पर्शी अमृतरस हैं। काव्य, कथाएँ, नाटक, दर्शन, अध्यात्म, सूक्तिकाव्य, स्तोत्र-भक्ति-काव्य एवं लोकोपयोगी विविधविषयक साहित्य प्राकृत भाषा में निबद्ध है। समृद्ध वही भाषा मानी जाती है, जिसमें जनसाधारण के बौद्धिक स्तर को पुष्ट करने के साथ विशेषज्ञों के चिन्तन-मनन के लिए भी यथेष्ट ज्ञान-सामग्री वर्तमान हो। संस्कृत भाषा के समान ही प्राकृत का कोष नाना-विषयक साहित्य विधाओं से परिपूर्ण है। ज्ञान-विज्ञान-सम्बन्धी सभी प्रकार की रचनाएँ इस भाषा के गौरव को वृद्धिंगत कर रहीं हैं। अतएव प्राकृत भाषा के ज्ञान की आवश्यकता प्रत्येक जिज्ञासु के लिए है। हिन्दी भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए संस्कृत भाषा के अध्ययन से कहीं अधिक प्राकृत भाषा का अध्ययन आवश्यक है। हिन्दी के प्रत्यय एवं रूपों का जितना निकट का सम्बन्ध प्राकृत भाषा के साथ है, उतना अन्य किसी भाषा के साथ नहीं। यह सत्य है कि शब्दकोष के लिए हिन्दी संस्कृत की ऋणी है, तो रूप-गठन के लिए प्राकृत की।

यह एक सार्वजनीन सिद्धान्त है कि किसी भी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना रचना और अनुवाद की शिक्षा के बिना कठिन है। भाषा को सहज रूप में ज्ञात करने का वैज्ञानिक साधन रचनानुवाद प्रक्रिया है। यतः व्याकरण की विशेष जानकारी रहने पर भी अध्येताओं को उच्च शिक्षा के अभाव में किसी भी भाषा को बोलने और लिखने में कठिनाई का अनुभव होता है। यदि व्याकरण की शुष्क शिक्षा रचना और अनुवाद के द्वारा ही की जाय तो वह सहज ग्राह्य हो जाती है तथा भाषा के लिखने और बोलने में दक्षता प्राप्त होती है।

विश्वविद्यालयों में प्राकृत का पाठ्यक्रम निर्धारित हो जाने के उपरान्त तो यह आवश्यक हो गया है कि रचनानुवाद सम्बन्धी पुस्तक शीघ्र ही अध्येताओं के समक्ष उपस्थित की जाय। इस विषय की कोई भी व्यवस्थित कृति अभी तक नहीं थी। यद्यपि आदरणीय पं० बेचरदास दोशी ने प्राकृत-प्रवेशिका जैसी दो-एक रचनाएँ गुजराती माध्यम से लिखी हैं, पर छात्रों के लिए वे रचनाएँ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उतनी उपयोगी नहीं हैं, अतएव रचनानुवाद के लिए एक स्वतन्त्र पुस्तक की अत्यन्त आवश्यकता बनी हुई थी। इस कमी की पूर्ति के लिए आदरणीय डॉ० एच० एल० जैन, जवलपुर तथा पं० फूलचन्द्र जी सिद्धान्ताचार्य वाराणसी की प्रेरणा एवं आदेश से यह रचना जिज्ञासुओं के समक्ष प्रस्तुत की जा रही है।

रचनानुवाद में व्याकरण के जिन-जिन नियमों की आवश्यकता होती है, उन-उन नियमों का समावेश इस कृति में किया गया है। अतएव रचना-सम्बन्धी व्याकरण के नियमों का बोध कराने के हेतु प्रकरणानुसार ऐसे कई ज्ञातव्य और उपयोगी विषयों की अवतारणा की गयी है, जो पढ़ते ही हृदय में पैठ जाते हैं। प्रयोजनीय नियमों, रूपों और उदाहरणों को व्याख्यापूर्वक समझाने का प्रयास भी किया गया है। व्याकरण, रचना और अनुवाद सम्बन्धी उन प्रारम्भिक बातों का समावेश करने की चेष्टा की गयी है, जिनकी आवश्यकता भाषा को सीखने के लिए अपेक्षित है। उदाहरण-वाक्य और प्रयोग-वाक्यों से कोई भी पाठक प्राकृत बोलने और लिखने का अभ्यास कर सकता है। विश्वविद्यालय के छात्रों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर अंग्रेजी अभ्यास भी दिये गये हैं।

द्वितीय भाग में प्राकृत भाषा के उपयोगी अंश संकलित हैं, इन अंशों के अध्ययन से प्राकृत भाषा और साहित्य का परिज्ञान प्राप्त करने में सरलता का अनुभव होगा। चयन करने में अपनी सुरुचि के साथ छात्रों की रुचि और योग्यता का भी ध्यान रखा गया है। अतएव द्वितीय खण्ड के कई अंश पाठ्यक्रम में रखे जा सकते हैं। इस पुस्तक का मननपूर्वक अध्ययन करने से कोई भी जिज्ञासु गुरु की सहायता के विना प्राकृत भाषा की जानकारी प्राप्त कर सकता है। मेरा यह विश्वास है कि प्राकृत भाषा की अभिज्ञता प्राप्त करने के लिए यह रचना उसी प्रकार उपयोगी सिद्ध होगी, जिस प्रकार संस्कृत भाषा के ज्ञान के लिए ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और वामन शिवराम आप्टे की संस्कृत रचनाएँ उपयोगी हैं।

प्राकृत भाषा के अधिजिज्ञासुओं को इस रचना से लाभ होगा तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

मैं चौखम्बा संस्कृत सीरीज तथा चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी के व्यवस्थापक को धन्यवाद देता हूँ, जिनके सहयोग से यह रचना प्रकाश में आ सकी है।

विदुषामनुचरः
नेमिचन्द्र शास्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय-सूची

पढमो पवाढओ ... १–८

अकारान्त शब्दरूप और उनके प्रयोग ... १

अकारान्त शब्दों में जुड़नेवाले विभक्ति चिह्न ... „

देव शब्द के रूप ... २

शब्दकोष ... „

वर्तमानकाल के धातु प्रत्यय ... ३

भू और हस धातु के वर्तमानकालिक रूप ... „

अब्भास ... „

क्रियाकोष ... ४

प्रयोगवाक्य ... „

अब्भास ... ६

बीओ पवाढओ ... ८–२३

सर्वनाम शब्दों के रूप और प्रयोग ... ८

तुम्ह (युष्मद्) के रूप ... ९

अम्ह, त, ज शब्दों की रूपावलि ... १०

क, एत, इम की रूपावलि ... ११

असु, सव्व, अन्न, दुव्व की रूपावलि ... १२

स, जा, एई के रूप ... १३

इमी, असु, त, ज (नपुं०) रूपावलि ... १४

किं, एअ, असु, इम (नपुं०) रूपावलि ... १५

उदाहरण वाक्य ... „

शब्दकोष ... १९

धातुकोष ... २०

अनुवाद ... २१

अब्भास ... २२

तइओ पवाढओ ... २४–४७

इकारान्त और उकारान्त शब्दरूपों के प्रयोग ... २४

हरि और णरवइ शब्दों के रूप ... „

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ईसी, अग्गि, भाणु शब्दों के रूप	...	२५
वाउ और पही शब्दों के रूप	...	२६
गामणी, खलपू और सयंभू शब्दों के रूप	...	२७
प्रयोग वाक्य	...	२८
उदाहरण वाक्य	...	२९
शब्दकोष	...	३१
धातुकोष	...	३३
अब्भास	...	३४
कत्तार (कत्ता) के रूप	...	३६
भत्तार, भायर, पिअर शब्दों की रूपावलि	...	३७
दाउ, सुरेअ, गिलोअ की रूपावलि	...	३८
अप्पाण, राय, महव की रूपावलि	...	३९
मुद्ध, जम्म, चन्दम की रूपावलि	...	४०
हसन्त और भगवन्त के रूप	...	४१
प्रयोग वाक्य	...	"
शब्दकोष	...	४४
अब्भास	...	४५
चउत्थो पवाढओ	...	**४८–८२**
स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप और उनके प्रयोग	...	४८
लता, माला, छिहा, हलिद्दा की रूपावलि	...	४९
नट्टिआ, मइ, मुत्ति की रूपावलि	...	५०
राइ, लच्छी, रुप्पिणी की रूपावलि	...	५१
वहिणी, धेणु, तणु–रूपावलि	...	५२
वहू, सासू, माआ के रूप	...	५३
ससा, नणन्दा और माउसिआ के रूप	...	५४
धूआ, गावी और नावा के रूप	...	५५
प्रयोगवाक्य	...	५६
शब्दकोष	...	०
धातुकोष	...	६६
अब्भास	...	६८
कम्मा और महिमा के रूप	...	७२
अच्चि, ईसह और भगवई के रूप	...	७३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तडि, छुहा और विज्जु के रूप	...	७४
शब्दकोष	...	७५
क्रियाकोष	...	७६
प्रयोगवाक्य	...	७८
अब्भास	...	८०
पंचमो पवाढओ	...	**८३–९५**
नपुंसकलिंग शब्द और उनके प्रयोग	...	८३
वण और धण शब्दों की रूपावलि	...	"
दहि, वारि, सुरहि और महु की रूपावलि	...	८४
जाणु, अंसु, दाम, नाम की रूपावलि	...	८५
दे,म्म अह, सेय, वय और हसंत के रूप	...	८६
भगवन्त और आउ शब्द के रूप	...	८७
शब्दकोष	...	"
क्रियाकोष	...	९१
प्रयोगवाक्य	...	९२
अब्भास	...	९३
छट्ठो पवाढओ	...	**९६–११४**
काल और क्रियारूपों का व्यवहार	...	९६
ठा, ने और पा के वर्त्तमानकालिक रूप	...	९८
ण्हा, कर, अस् के वर्त्तमानकालिक रूप	...	९९
भूतकाल के धातुरूपों की प्रयोगविधि	...	"
हस, हो, ठा, झा और ने के भूतकालिक रूप	...	१००
प्रयोग वाक्य	...	१०१
भविष्यत्काल के धातुरूपों के प्रयोग	...	१०२
हस, हो, ठा, झा के भविष्यत्कालिक रूप	...	"
ने और पा के भविष्यत्कालीन रूप	...	१०३
प्रयोगवाक्य	...	"
विधि और आज्ञा के प्रयोग	...	१०४
हस, हो, ठा, झा के विधि और आज्ञा सम्बन्धी रूप	...	१०५
ने, पा, ण्हा, कर, पूस, गच्छ के विधि-आज्ञा के रूप	...	१०६
प्रयोगवाक्य	...	१०७
क्रियातिपत्ति की प्रयोगविधि	...	१०८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हस, हो, ठा, पा और गच्छ के क्रियातिपत्ति के रूप	...	"
प्रयोगवाक्य	...	१०९
शब्दकोष (भोज्यपदार्थ)	...	११०
अभ्यास	...	११२
सत्तमो पवाढओ	...	**११५-१२९**
कृदन्तरूप और उनका व्यवहार	...	११५
भूतकालिक कृदन्तों का व्यवहार	...	११६
भूतकालिक कृदन्तों के प्रयोग	...	११७
विधिकृदन्तों का व्यवहार	...	११८
प्रेरक विधिकृदन्तों का व्यवहार	...	१२०
प्रयोगवाक्य	...	"
भविष्यत्कृदन्तों का व्यवहार	...	१२२
प्रयोगवाक्य	...	"
सम्बन्धभूत कृदन्तों का व्यवहार	...	१२३
प्रयोगवाक्य	...	१२५
हेत्वर्थकृदन्तों का व्यवहार	...	१२६
प्रयोगवाक्य	...	१२७
अभ्यास	...	१२९
अट्ठमो पवाढओ	...	**१३०-१४८**
वाच्यपरिवर्त्तन के नियम	...	१३०
हस और हो धातु के कर्म और भावि के रूप	...	१३१
प्रेरणार्थक क्रिया के नियम और व्यवहार विधि	...	१३२
हस धातु के प्रेरणार्थक रूप	...	१३३
कर धातु के प्रेरणार्थक रूप	...	१३४
हस के प्रेरक भाव और कर्म के रूप	...	१३५
उपयोगी शब्दकोष	...	१३६
वस्त्राभूषण सम्बन्धी शब्दकोष	...	१३७
पुष्प, सुगन्धित द्रव्य-कोष	...	१३८
अस्त्रकोष	...	"
सम्बन्धियों का नामावलि-कोष	...	१३९
वृत्तिजीवी कोष	...	"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पशु-पक्षियों का नामावलि-कोष	...	१४०
शरीर के अंगादि का कोष	...	१४१
निवासस्थानादि के नामों का कोष	...	१४१
गत्यर्थक धातुकोष	...	१४३
भोजनार्थक और ज्ञानार्थक धातुकोष	...	"
शब्दार्थक और भावार्थक धातुकोष	..	१४४
हस्तक्रियार्थक धातुकोष	...	१४५
विविध क्रियाएँ	...	"
प्रयोगवाक्य	...	१४६
अनुवादवाक्य	...	१४७
नवमो पचाढओ	...	**१४९-१७७**
विशेषणों के भेद और व्यवहारविधि	...	१४९
संख्यावाचक शब्दों के रूप	...	१५०
अपूर्णसंख्यावाचक विशेषण	...	१५५
क्रमवाचक विशेषण	...	"
प्रकारवाचक	...	१५७
तुलनात्मक विशेषण	...	"
प्रयोगवाक्य	...	१५८
विभक्ति—कारक के नियम	...	१६१
समास के भेद और प्रयोगविधि	...	१६८
तद्धित प्रत्यय और तद्धितान्तों का व्यवहार	...	१७१
शब्दकोष (अव्यय)	...	१७५
अभ्यास	...	१७७
प्राकृत अनुवाद के लिए हिन्दी और अंग्रेजी के अभ्यास		१७८
वरुणकहा	...	२०३
चाणक्कहाणगं	...	२१२
आहीरीवंचगवणिगकहाणगं	...	२१६
कविलकहाणगं	...	२१७
अरिट्ठणेमिकहाणगं	...	२२०
इब्भपुत्तकहाणगं	...	२२६
कुवेरदत्ताकहाणगं	...	२२७
धुत्तसियालकहाणगं	...	२३०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवासगे कुंडकोलिए	...	२३१
रोहिणीए दक्खत्तणं	...	२३४
दुवे कुम्मा	...	२३९
सिरिसिरिवालकहा	...	२४३
सीलवई कहाणगं	...	२६९
मागधी-पाठ	...	२७८
नाटकीय शौरसेनी-पाठ	...	२८०
महाराष्ट्री-पाठ	...	२८२
मूलदेव	...	२८५
करकंडु	...	२९५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत-प्रबोध

भाग १

पढमो पवाढओ Lesson 1

अकारान्त शब्दरूप और प्रयोग

१. प्राकृत में तीन लिङ्ग, तीन पुरुष और दो वचन होते हैं। द्विवचन का व्यवहार प्राकृत में नहीं पाया जाता है। इसके स्थान पर भी बहुवचन का प्रयोग होता है।

२. प्राकृत में चार प्रकार के शब्द पाये जाते हैं— अकारान्त–अ और आ से अन्त होनेवाले शब्द; इकारान्त—इ और ई से अन्त होनेवाले शब्द, उकारान्त—उ और ऊ से अन्त होनेवाले शब्द एवं हलन्त—जिनके अन्त में व्यञ्जन अक्षर आये हों। पर विशेषता यह है कि प्रयोग में, हलन्त्य शब्द उपलब्ध नहीं होते, अतः उनके स्थान पर भी उक्त तीनों प्रकार के शब्दों में से किसी भी प्रकार के शब्द का व्यवहार पाया जाता है।

पुँल्लिङ्ग अकारान्त शब्दों में जोड़े जानेवाले विभक्ति चिह्न

	एकवचन	बहुवचन
पढमा–प्रथमा	ओ	आ
बीआ–द्वितीया	·	ए, आ
तइया–तृतीया	ण, णं	हि, हिं, हिँ
चउत्थी–चतुर्थी	य, स्स	ण, णं
पंचमी–पञ्चमी	त्ता, ओ, उ, हि	त्तो, ओ, उ, हि, हिंतो, सुंतो
छट्ठी–षष्ठी	स्स	ण, णं
सत्तमी–सप्तमी	ए, म्मि, सि	सु, सुं
संबोहण–सम्बोधन	ओ, लुक्	आ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अकारान्त देव शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	देवो	देवा
बी०	देवं	देवा, देवे
त०	देवेण, देवेणं	देवेहि-हिं-हिँ
च०	देवाय, देवस्स	देवाण, देवाणं
पं०	देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि	देवत्तो, देवाओ, देवाहिंतो, देवासुन्तो
छ०	देवस्स	देवाण, देवाणं
स०	देवे, देवम्मि, देवंसि	देवेसु-सुं
सं०	हे देवो, देवा	हे देवा

Translate into Prakrit पाइयभासाए अणुवायं करेन्तु

देव के लिए। देव को। देवों के द्वारा। देवों पर। देव में। देव से। देवों से। देव ने। दो देव। दो देवों को।

शब्दकोष

लोक = लोओ	सूर्य = सुज्जो, आइच्चो
सोना = कणयो	किरण = किरणो
मेघ = मेहो	अपमान = अवमाणो
गाँव = गामो	कुठार = कुढारो
समुद्र = सायरो	क्रोध = कोहो
चन्द्रमा = चन्दो	आचार = आयारो
पहाड़ = पव्वओ	उद्यम = उज्जमो
नगर = नयरो	न्याय = नायो
हाथ = करो	राजा = राया, नरिंदो, निवो
नौकर = सेवओ, भिच्चो	नरक = निरयो
घोंसला = कुलाओ, नीडो	बहिरा = बहिरो
कुँआ = कूवो	ब्राह्मण = बंभणो, माहणो
तालाब = तडाओ	मनोरथ = मणोरहो
हवा = पवनो, वाउ	मृग = मिओ, मिगो
रोष = रोसो	मोक्ष = मोक्खो
व्याध = वाहो	विनय = विणयो
शठ = सढो	स्वभाव = सहावो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ क्रिया की सहायता के विना अनुवाद नहीं हो सकता है। यतः वाक्य का प्राण क्रिया ही है। वाक्य की परिभाषा में केवल क्रिया को भी वाक्य कहा है। प्राकृत के क्रियारूप संस्कृत की अपेक्षा वहुत सरल हैं। प्राकृत में प्रायः भ्वादिगण की धातुएँ ही हैं और अकारान्त धातुओं को छोड़कर शेष धातुओं में आत्मनेपदी और परस्मैपदी का भेद भी नहीं है। प्राकृत में लकार नहीं होते। केवल वर्तमान, भूत, भविष्य, विधि, आज्ञा एवं क्रिया-क्रियातिपत्ति ये छः काल के भेद माने गये हैं।

वर्तमानकाल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष (Third person)	इ, ए	न्ति, न्ते, इरे
मध्यम पुरुष (Second person)	सि, से	इत्था, ह
उत्तम पुरुष (First person)	मि	मो, मु, म

हे√भू–होना धातु के वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होइ	होन्ति, होन्ते, होइरे
म० पु०	होसि	होइत्था, होह
उ० पु०	होमि	होमो, होमु, होम

हस–हँसना धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसइ	हसन्ति, हसन्ते, हसिरे
म० पु०	हससि	हसित्था, हसह
उ० पु०	हसामि, हसेमि	हसिमो, हसिमु, हसिम

Translate into Prakrit पाइयभासाए अणुवायं करेन्तु

बहिरा हँसता है। राम हँसता है। बादल बरसते हैं। राम का नौकर हँसता है। गोपाल के हाथ में पत्र है। आकाश में बादल हैं। लड़के हँसते हैं। केशव का तालाब है। मोहन का कुँआ गाँव में है। हरिहर के कुँए का पानी मीठा है। चोर धन चुराता है। घोड़े जाते हैं। पहाड़ ऊँचा है। वाराणसी गङ्गा के तट पर स्थित है। लड़के मैदान में खेलते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रियाकोष

है=अत्थि
हैं=अत्थि, सन्ति
जाता है=गच्छइ
जाते हैं=गच्छन्ति

नहीं है=णत्थि
बरसता है=वरसइ
चुराता है=चोरेइ
कहता है=कहइ, भणइ
बोलता है=बोल्लइ
पढ़ता है=पढइ
चलता है=चलइ
जानता है=जाणइ, मुणइ
खाता है=भुंजइ,जेमइ,खादइ,खाअइ
नमस्कार करता है=नमइ
गिरता है=गिरइ, पडइ
पीता है=पिवइ, पिज्जइ
पीड़ा या दुःख देता है=पीडइ,पीलइ
गर्जता है=गज्जइ
थूकता है=थुक्कइ
खेलता है=खेलइ
भ्रमण करता है=भमइ
इच्छा करता है=इच्छइ, पिहइ
ढकता है=पिंधइ
कूटता है=कुट्टइ
घृणा करता है=गरहइ

पूछता है=पुच्छइ
दौड़ता है=धावइ
धारण करता है=धारइ
धिक्कारता या तिरस्कार करता है=धिक्कारइ
जोड़ता है=पउंजइ
प्रवृत्ति करता है=पउत्तइ
द्वेष करता है=पउसइ
पकाता है=पचइ
निन्दा करता है=पगंथइ
विश्वास करता है=पच्चाअइ
आस्वादन करता है=पच्चोगिलइ
प्रार्थना करता है=पच्छइ
त्याग करता है=पजहइ
जगाता है=पडिबोहइ
वापस जाता है=पडिगच्चइ
ठगता है=पतारइ
रुकता है=थंभइ
रहता है=वसइ
देखता है=पेच्छइ
भेजता है=पेसइ
पीसता है=पीसइ
पवित्र करता है=पुणइ
क्रोध करता है=कुज्भइ
तलाश करता है=गवेसइ
बड़ा बनता है=गरुअइ

प्रयोगवाक्य

मोहन पढ़ता है	=	मोहनो पढइ।
राम पुस्तक लिखता है	=	रामो पोत्थअं लिहइ।
नलिन स्कूल में पढ़ता है	=	नलिनो विज्जालयम्मि पढइ।
राम का घर नदी किनारे है	=	रामस्स गिहं नइतडे अत्थि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लड़का खाता है	=	बालओ खाअइ।
मनुष्य बोलते हैं	=	माणुसा बोल्लन्ति।
लड़के मैदान में खेलते हैं	=	बालआ खेत्ते खेलन्ति।
पुत्र पिता को प्रतिदिन प्रणाम करता है	=	पुत्तो पइदिणं पिअरं पणमइ।
राम का पिता पटना जाता है	=	रामस्स पिआ पाडलिपुत्तं गच्छइ।
मोहन का लड़का जाता है	=	मोहनस्स पुत्तो गच्छइ।
केशव का छोटा भाई रोता है	=	केसवस्स अणुयो कंदइ।
श्याम मोहन को पीड़ा देता है	=	सियामो मोहनं पीडइ।
गोपाल का बड़ा भाई हँसता है	=	गोवालस्स अग्गओ हसइ।
दो मोर नाचते हैं	=	दुण्णि मोरा णच्चन्ति।
सीता राम का विश्वास करती है	=	सीया रामं पच्चाअइ।
सुग्रीव राम से पूछते हैं	=	सुग्गीवो रामं पुच्छइ।
गोपाल नौकर को पूछता है	=	गोवालो भिच्चं पुच्छइ।
इन्द्र का बड़ा भाई पत्र लिखता है	=	इंदस्स अग्गओ पत्तं लिहइ।
राम देवों को प्रणाम करता है	=	रामो देवे पणमइ।
नलिन कुँए से पानी खींचता है	=	नलिनो कूवत्तो जलं भरइ।
चिड़िया घोंसले में रहती है	=	चडआ नीडम्मि वसइ।
व्याध पशुओं को मारता है	=	वाहो पसुणो हणइ।
सूर्य में किरण हैं	=	सुज्जम्मि किरणा संति।
आकाश में बादल हैं	=	आयासे मेहा सन्ति।
पहाड़ पर पेड़ नहीं हैं	=	पव्वयम्मि रुक्खा ण संति।
गाँव में तालाब नहीं है	=	गामंसि तडाओ णत्थि।
कुँए में दो घड़े हैं	=	कूवम्मि दुण्णि घडा सन्ति।
धूल में बालिकाएँ खेलती हैं	=	धूलीए बालिआ खेलन्ति।
राजा की सेना जाती है	=	राइणो सेना गच्छइ।
गुरु धर्म का उपदेश देता है	=	गुरु धम्मोवएसं देइ।
अग्नि उष्ण होती है	=	अग्गि उण्हं होइ।
कमल का पुष्प सुन्दर होता है	=	उप्पलस्स पुप्फं सुन्दरं होइ।
राजा शत्रु पर आक्रमण करता है	=	नरिंदो सत्तुणो वोज्झइ।
मोहन राम का अभिनय करता है	=	मोहनो रामस्स अहिणयं कुणइ।
राम चन्द्रमा का दर्शन करता है	=	रामो चंदं पेच्छइ।
मृग दौड़ता है वन की ओर	=	मिओ धावइ वणं पडि।
वह मोक्ष की कामना करता है	=	सो मोक्खं अहिलहइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्राह्मण क्रोध करता है	=	माहणो कोप्पं कुणइ।
वन में सिंह गरजता है	=	वणम्मि सीघो गज्जइ।
नरक में बहुत दुःख होते हैं	=	णरयम्मि बहू दुक्खा संति।
आकाश में पक्षी उड़ते हैं	=	आयासम्मि खगा उड्डुन्ति।
उसके खेत में तालाब है	=	तस्से खेत्ते तडाओ अत्थि।
आरा में अनेक लोग रहते हैं	=	आराणयरम्मि अणेगा जणा णिवसंति।
वह नौकर को घर भेजता है	=	सो भिच्चं घरं पडि पेसइ।
वे भात खाते हैं	=	ते भत्तं खाअन्ति, खादन्ति वा।
राम हरि को धिक्कारता है	=	राम हरिं धिक्कारइ।
घर में वे लोग गिरते हैं	=	घरम्मि ते जणा पडंति।
राम दीवाल पर थूकता है	=	रामो भित्तीए थुक्कइ।
वदनसिंह पढ़ने में लगता है	=	वदनसींघो पढणम्मि लगइ।
रामदास दूत भेजता है	=	रामदासो दूयं पेसइ।
कालिदास मेघदूत लिखता है	=	कालिदासो मेहदूअं लिहइ।
जगन्मोहन कष्ट देता है	=	जगन्मोहनो पीडइ।
वह राम से घृणा करता है	=	सो रामं गरहइ।
वे लोग प्रतिदिन काम करते हैं	=	ते पडिदिणं कज्जं कुणंति।
राम पाठ पूछता है	=	रामो पाढं पुच्छइ
श्याम हर बात पर हँसता है	=	सियामो पइएगवत्तम्मि हसइ।
वाराणसी में साधु रहते हैं	=	वाराणसीए साहू णिवसन्ति।
काशी नगरी में अपार भीड़ है	=	कासीनयरीए अपारसंदोहो अत्थि।
रामदास वन में गाय तलाश करता है	=	रामदासो वणम्मि गावं गवेसइ।

अब्भासो Exercise

Trarslate into Hindi हिन्दीभासाए अणुवायं करेन्तु

एगस्स सेट्ठिवरस्य खत्तियपुत्तो लेहवाहगो अत्थि। महिसी पाडलिपुत्तं गच्छइ। मगहाविसए सालिग्गामो नाम गामो। राजगिहे नयरे सेणियो नरिन्दो अत्थि। रामो नयरं गच्छइ। नलिनो वायरणं पढइ। धणं धणेण वड्ढइ। मोरा नच्चन्ति। थोवा णरा किं करेन्ति। बालो रहेण सह चलइ। सुवण्णं भूसणाय होइ। पुत्तस्स धणं देइ। रामो फुल्लाणि चिणइ। मुरुक्खो बुहं निंदइ। समणो नयरं विहरेइ। पुरिसा देवं नमइ। पावा सुहं न पावेन्ति। आयासे मेहा सन्ति। रामो पोत्थयं पढइ। चोरो धणं चोरेइ। रहो पावाडरं चलइ। तस्स मणो सया धम्मे लगइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नलिनो परोवयारं कुणइ। सीया महुरं गायइ। रामो रहोवरि चढइ। ठक्कुरस्स समीवे गच्चा कहेइ। इमा लड्डुआ सप्पहावा सन्ति। सियामो मोहणं बोल्लइ। तत्थ बहूणि रयणाइं सन्ति। तत्थ एगो निद्धणो सेट्ठी वसइ। भोयणावसरे जिणदासो पुत्तं भणइ। तत्थ णयरीए एगो धम्मदासो सत्थवाहो परिवसइ। पच्चूसे सेट्ठी वियारेइ। दाणसीलो जिणदासो सेट्ठिवरो वसइ। निवो मोहणं भणइ। रामस्स पिआ गच्छइ। तस्स चउरो भायरो सन्ति। अत्थ एगो पुरिसो गच्छइ, एगो पढइ, एगो भमइ, एगो नच्चइ य। चउत्थे दिवसे रायमुओ धिक्कारइ। रायसुओ गिहं पजहइ। धुत्तो सुयणं पतारइ। मोहणो मग्गे थुक्कइ। जोइन्दो सव्वत्थ थुक्कइ। सियामो मोहणं पगंथइ। नलिनो पढगम्मि पउत्तइ। राजारामो दुद्धं पिवइ। सा भत्तं खाअइ। महारायं को न जाणइ। नयरे अणेया लोआ सन्ति। एसो नियमो निवेण कओ अत्थि। पेमकुमरो भत्तं पचइ। रीया चुण्णं पीसइ। नइपवाहो थंभइ। मेहो गज्जइ। सेणा दुग्गम्मि पविसइ। मुणी तित्थं गच्छइ। रामो वणेसुं भमइ। हंसा सरोवरं गच्छन्ति। किसओ बइल्ले सअडंसि पउंजइ। भिक्खो पत्तं नेइ। थविरा मोहणं पउसइ। अस्सो खेत्तं धावइ। उज्जाणे फुल्लो फुल्लइ। सोहणो नियगिहम्मि बोल्लइ। तेलिओ तेलं नेइ। रहुवरो जुअं कीडइ। अस्स बालअस्स बुद्धी तिक्खा अत्थि। सियामस्स कण्णा सुसिक्खिया अत्थि। गोवालस्स भज्जा आगच्छइ। तस्स बालिआ बहिरा अत्थि। जिणदासस्स भायरा पंडिआ सन्ति। गोइन्दस्स पुत्तो महाविज्जालयम्मि पढइ।

Translate into Prakrit पाइयभासाए अणुवायं कुणन्तु

राजगृह में नेमकुमार रहता है। नालन्दा में विद्यापीठ है। रामदास हरिमोहन का विश्वास करता है। नलिन दौड़ता है। राजा नगर का त्याग करता है। रीता आटा पीसती है। गंगाजल स्वच्छ होता है। मोहन प्रातःकाल पढ़ता है। शिष्य (सिस्सो) गुरु से प्रश्न (पण्हं) पूछता है। ब्राह्मण पुस्तक पढ़ता है। राजा प्रजा पर शासन करता है। पानी बरसता है। चोर धन चुराता है। धूर्त्त सज्जनों को ठगते हैं। गंगा की धारा रुकती है। स्कूल के लड़के खेलते हैं। योगेन्द्र सब जगह थूकता है। श्याम पटना में रहता है। देवपूजा सबको पवित्र करती है। वह पढ़ने में प्रवृत्त होता है। नलिन लिख रहा है। राम पुस्तक ढूढ़ता है। मोहन पाप से घृणा करता है। रामप्रवेश घूमता है। मोहन पेड़ से गिरता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। किसान खेत जोतता है (कसइ)। गोविन्द अपने घर में धान का छिलका अलग करता है (कंडइ)। सिपाही चिट्ठी ले जाता है। दो बालिकाएँ तालाब में नहाती हैं (ण्हान्ति)। गीता कटाक्ष करती है (कडक्खइ)। राजा की सेना पीछे हटती है (ओणिअत्तइ)। उसके पास कपड़े हैं। सभी बच्चे पिता को प्रणाम करते हैं। माली बगीचे (उज्जाण) की घास को (तिणं) काटता है (कत्तइ)। मुनि लोग आत्मा का (अप्पं, अत्तं)। ध्यान करते हैं (झाअइ)। राम गुरुजनों को नमस्कार करता है। मोतीराम धनसंग्रह करता है। गाँव में तालाब नहीं है। ब्राह्मण पढ़ता है और लिखता है। चिड़ियाँ घोसलों में रहती हैं। पहाड़ पर झरने होते हैं। सोने से आभूषण बनते हैं (णिम्मइ)। अग्नि गर्म होती है। सुग्रीव राम से पूछता है। सुमतिचन्द्र मोक्ष की कामना करता है। प्राकृत भाषा मधुर है। पावापुर महावीर का निर्वाणस्थान (निव्वाणथाण) है। राजा शत्रु पर आक्रमण करता है। गिरिराज गुरु से डरता है (वीहइ)। कुत्ता भूंकता है (बुक्कइ)। राम विज्ञान को अच्छी तरह समझता है (बुज्झइ)। रामदयाल लकड़ी (काट्ठं) फाडता है (फाडइ)। दासी ईंटों को (इट्ठिआ) फोड़ती है (फोडइ)। राम बड़बड़ाता है (बडबडइ)। माधवराम अपने अध्ययन (अज्झयण) को समाप्त करता है (णिट्ठवइ)। नलिन ब्राह्मण को निमन्त्रण देता है (णिमंतइ)। मोहन चन्दन का विलेपन करता है (णिम्मच्छइ)। हरि विद्यालय की देखभाल (णिभालइ) करता है। उसके विद्यालय में मेरा पुत्र पढ़ता है। राममोहन का घर सुन्दर (सुण्णेरं) है। गीता नाचती है। सीता सावधान होती है (चेअइ)। लड़के शिक्षक की प्रशंसा करते हैं (अहिणंदन्ति)।

बीओ पवाढओ Lesson 2

सर्वनाम (Pronouns) के रूप और प्रयोग

४ संज्ञा के स्थान पर जो आता है, उसे सर्वनाम कहते हैं। यथा— दीवायणो तत्थ वसइ। सो य अइदुक्करं बालतवमणुचरइ। अर्थात् वहाँ द्वीपायन रहता है और वह अत्यन्त कठोर बालतप करता है। उक्त वाक्य में 'सो' 'दीवायणो' के स्थान पर आया है। वाक्यों में सर्वनाम का प्रयोग करने से वाक्य सुन्दर बन जाते हैं।

५ जिस संज्ञा के स्थान पर या उसके साथ जो सर्वनाम आता है, उसमें उसी के लिङ्ग, वचन होते हैं। यथा—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राम का नौकर क्षत्रियपुत्र था। वह दुर्वल होने पर भी निर्भय था =रामस्स भिच्चो खत्तियपुत्तो अत्थि। सो दुब्बलो वि निब्भओ अत्थि। यहाँ 'खत्तियपुत्त' पुँल्लिङ्ग और एकवचन है, अतः इसके स्थान पर प्रयुक्त होनेवाला सर्वनाम 'सो' भी पुँल्लिङ्ग और एकवचन है।

६. अनुवाद करने में कर्त्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष होता है। कर्त्ता जब उत्तम पुरुष First person में रहता है तो क्रिया भी उत्तम पुरुष की होती है, कर्त्ता जब मध्यमपुरुष Second person में रहता है, तो क्रिया मध्यम पुरुष की और कर्त्ता जब प्रथम पुरुष Third person में रहता है तो क्रिया प्रथम पुरुष की होती है।

७. 'तुम, और 'मैं' बोधक शब्दों के अतिरिक्त शेष सभी शब्द प्रथम पुरुष Third person होते हैं।

८. शब्दरूपावली के नियमों के आधार पर संस्कृत के समान प्राकृत में सर्वनामों को सर्वादि—सर्व, विश्व, उभय, एक, एकतर; अन्यादि—अन्य, इतर, कतर कतम; यदादि—यद्, तद्, एतद्, किम्; पूर्वादि—पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व एवं इदमादि—इदम्, अदस्, युष्मद्, अस्मद्, भवत् वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

९. पास की वस्तु या व्यक्ति के लिये इम (इदम्); अधिक पास की वस्तु या व्यक्ति के लिये एअ (एतद्); सामने के दूरवर्ती पदार्थ या व्यक्ति के सम्बन्ध में अमु (अदस्) और परोक्ष—जो वक्ता के सामने नहीं हो, पदार्थ या व्यक्ति के लिए स (तद्) शब्द का व्यवहार किया जाता है।

तीनों लिङ्गों में पुरुषवाचक सर्वनाम तुम्ह (युष्मद्) के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	तुमं, तुं, तुह	तुब्भे, तुज्झ, तुम्ह, तुम्हे
बी०	तुमं, तुमे, तुवे	तुज्झ, तुम्हे
त०	तुमइ, तुमए	तुब्भेहिं, तुम्हेहिं, तुज्झेहिं
च०	तुम्हं, तुज्झ, तुह	तुमाण, तुहाण, तुम्हाण, तुज्झाण
पं०	तुवत्तो, तुमाओ, तुहाओ	तुब्भेहिंतो, तुम्हाहिंतो, तुम्हासुंतो
छ०	तुम्हं, तुज्झ, तुह	तुमाण, तुहाण, तुम्हाण
स०	तुमए, तुहम्मि, तुमम्मि	तुसु, तुमेसु, तुम्हेसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीनों लिङ्गों में अम्ह (अस्मद्)—हम

	एकवचन	बहुवचन
प०	हं, अहं, अम्मि	अम्ह, वयं
बी०	अम्मि, अम्ह, ममं	अम्हे, अम्ह
त०	ममए, मए	अम्हेहि, अम्हाहि
च०	मम, महं, मज्झ	अम्हाण, मज्झाण, ममाण
प०	मइत्तो, ममाओ, मज्झाओ	ममाहिंतो, ममेहिंतो, अम्हेहि
छ०	मम, महं, मज्झ	ममाण, मज्झाण, अम्हाण
स०	म , अम्हम्मि, महम्मि	अम्हेसु, ममेसु, मज्झेसु

पुँल्लिङ्ग त (तत्)—वह—प्रथम पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
प०	सो, ण	ते, णे
बी०	तं, णं	ते, णे
त०	तेण, णेण	तेहिं, णेहिं
च०	तस्स, से	तेसिं, ताणं
प०	तत्तो, ताओ	ताहिंतो, तेहिंतो, तासुन्तो
छ०	तस्स, से	तेसिं, ताणं
स०	तहिं, तम्मि, तस्सि	तेसु, तेसुं

पुँल्लिङ्ग ज (यद्)—जो—सम्बन्धवाचक

(Relative pronoun)

	एकवचन	बहुवचन
प०	जो	जे
बी०	जं	जे
त०	जेण	जेहि-हिं-हिँ
च०	जस्स	जाण-णं
प०	जम्हा, जत्तो, जाओ	जाहिंतो, जेहिंतो, जासुंतो
छ०	जस्स	जाण-णं
स०	जम्मि, जस्सि	जेसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुँल्लिङ्ग क (किम्)—कौन प्रश्नवाचक

(Interogative pronoun)

	एकवचन	बहुवचन
प०	को	के
बी०	कं	के
त०	केण	केहि-हिं-हिँ
च०	कस्स	काण, केसिं
पं०	किणो, कत्तो	काहिंतो, कासुंतो
छ०	कस्स	केसिं, काण
स०	कम्मि, कस्सिं	केसु

पुँल्लिङ्ग एत, एअ (एतद्)—यह

	एकवचन	बहुवचन
प०	एसो, एस	एते, एए
बी०	एतं, एअं	एते, एआ
त०	एतेण, एएण	एतेहि, एएहिं
च०	एतस्स, एअस्स	एतेसिं, एताणं
पं०	एत्तो, एअत्तो, एआओ	एताहिंतो, एआसुंतो
छ०	एतस्स, एअस्स	एतेसिं, एताणं
स०	एतम्मि, एअम्मि, एअस्सिं	एएसु

पुँल्लिङ्ग इम (इदम्)—यह

	एकवचन	बहुवचन
प०	अयं, इमो	इमे
बी०	इमं, इणं	इमे
त०	इमिणा, णेण	इमेहि, णेहि
च०	अस्स, इमस्स	इमेसिं, इमाणं
पं०	इमत्तो, इमाओ	इमाहिंतो, इमासुंतो
छ०	अस्स, इमस्स	इमेसिं, इमाणं
स०	अस्सिं, इमम्मि	इमेसु, एसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुँल्लिङ्ग अमु (अदस्)—वह, अमुक

	एकवचन	बहुवचन
प०	अमू	अमुणो, अमू
बी०	अमुं	अमुणो, अमू
त०	अमुणा	अमुहि-हिं-हिँ
च०	अमुणो, अमुस्स	अमूण-णं
पं०	अमुत्तो, अमुणो	अमूहिंतो, अमूसुंतो
छ०	अमुणो, अमुस्स	अमूण-णं
स०	अमुम्मि	अमूसु-सुं

पुँल्लिङ्ग सव्व (सर्व)—सभी, सब

	एकवचन	बहुवचन
प०	सव्वो	सव्वे
बी०	सव्वं	सव्वे
त०	सव्वेण	सव्वेहिं
च०	सव्वाय, सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाणं
पं०	सव्वत्तो, सव्वाओ	सव्वाहिंतो, सव्वासुंतो
छ०	सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाणं
स०	सव्वम्मि, सव्वस्सिं	सव्वेसु

पुँल्लिङ्ग अन्न (अन्य)—दूसरा

	एकवचन	बहुवचन
प०	अन्नो	अन्ने
बी०	अन्नं	अन्ने
त०	अन्नेण	अन्नेहि-हिं-हिँ
च०	अन्नाय, अन्नस्स	अन्नेसिं, अन्नाणं
पं०	अन्नत्तो, अन्नाओ	अन्नाहिंतो, अन्नासुंतो
छ०	अन्नस्स	अन्नेसिं, अन्नाणं
स०	अन्नम्मि, अन्नस्सिं	अन्नेसु

पुँल्लिङ्ग—पुव्व, पुरिम (पूर्व)

	एकवचन	बहुवचन
प०	पुव्वो, पुरिमो	पुव्वे, पुरिमे
बी०	पुव्वं, पुरिमं	पुव्वे, पुरिमे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	एकवचन	बहुवचन
त०	पुव्वेण, पुरिमेण	पुव्वेहिं, पुरिमेहिं
च०	पुव्वाय, पुव्वस्स, पुरिमस्स	पुव्वाणं, पुरिमाणं
पं०	पुव्वत्तो, पुरिमत्तो	पुव्वाहिंतो, पुरिमाहिंतो
छ०	पुव्वस्स, पुरिमस्स	पुव्वाणं, पुरिमाण
स०	पुव्वम्मि, पुरिमम्मि	पुव्वेसु, पुरिमेसु

स्त्रीलिङ्ग सा (तद्)—वह

	एकवचन	बहुवचन
प०	सा, णा	तीआ, ताओ
बी०	तं, णं	तीआ, ताओ
त०	तीआ, तीए, तीइ, णाए	तीहि, ताहिं
च०	तीसे, तीइ, तीए, ताए	ताएं, तेसिं
पं०	तीए, ताए	तीहिंतो, तासुंतो
छ०	तिस्सा, तीए	ताणं, तेसिं
स०	तीअ, तीए, ताए	तीसु, तासु

स्त्रीलिङ्ग जा (यद्)—जो

	एकवचन	बहुवचन
प०	जा	जाओ, जीओ
बी०	जं	जाओ, जीओ
त०	जीआ, जीए	जीहि, जाहिं
च०	जिस्सा, जीए	जेसिं, जाण
पं०	जीए, जित्तो	जिहिंतो, जासुंतो
छ०	जिस्सा, जीए	जेसिं, जाणं
स०	जीए, जाए	जीसु, जासु

स्त्रीलिङ्ग एई, एआ (एतद्)—यह

	एकवचन	बहुवचन
प०	एसा	एईआ, एआ, एई
बी०	एइं, एअं	एईआ, एआउ
त०	एआए, एईए	एआहि, एईहि·हिं
च०	एईअ, एआऊ	एईणं, एआणं
पं०	एअत्तो, एईअ	एआहिंतो, एआसुंतो
छ०	एईअ, एआअ	एईण, एआण-णं
स०	एईअ, एआअ	एआसु, एईसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रीलिङ्ग इमी, इमा (इदम्)—यह

	एकवचन	बहुवचन
प०	इमी, इमा	इमाओ, इमीओ
बी०	इमिं, इमं	इमीओ, इमाओ
त०	इमीअ, इमाए	इमीहि, इमाहिं
च०	इमीअ, इमाअ	इमीण, इमाण-णं
पं०	इमीअ, इमाओ, इमत्तो	इमाहिंतो, इमासुंतो
छ०	इमीए, इमीअ	इमीण, इमाणं
स०	इमीए, इमाए	इमीसु, इमासु

स्त्रीलिङ्ग अमु (अदस्)—वह, अमुक

	एकवचन	बहुवचन
प०	अमू	अमूओ
बी०	अमुं	अमूओ
त०	अमूए	अमूहि-हिं
च०	अमूए	अमूण
पं०	अमूए, अमुत्तो	अमूहिंतो, अमूसुंतो
छ०	अमूए, अमूअ	अमूण णं
स०	अमूए, अमूअ	अमूसु

नपुंसकलिङ्ग त (तद्)—वह

	एकवचन	बहुवचन
प०	तं	ताइं, ताणि
बी०	तं	ताइं, ताणि

शेष शब्दरूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं।

नपुंसकलिङ्ग ज (यद्)—जो

	एकवचन	बहुवचन
प०	जं	जाइं, जाणि
बी०	जं	जाइं, जाणि

शेष शब्दरूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नपुंसकलिङ्ग (किम्)—कौन

	एकवचन	बहुवचन
प०	किं	काइं, काणि
बी०	किं	काइं, काणि

शेष रूप पुंल्लिङ्ग के समान होते हैं।

नपुंसकलिङ्ग एअ (एतद्)—यह

	एकवचन	बहुवचन
प०	एअं, इणं	एआइं, एआइँ, एआणि
बी०	एअं, इणं	एआइं, एआइँ, एआणि

शेषरूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं।

नपुंसकलिङ्ग अमु (अदस्)—वह, अमुक

	एकवचन	बहुवचन
प०	अमुं	अमूइं, अमूणि
बी०	अमुं	अमूइं, अमूणि

शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं।

इम (इदम्)—यह

	एकवचन	बहुवचन
प०	इदं, इणं	इमाइं, इमाणि
बी०	इदं, इणं	इमाइं, इमाणि

उदाहरण वाक्य

यह बोलता है = अयं बोल्लइ; इमो बोल्लइ। यह हँसता है = इमो हसइ। वह जाता है = सो गच्छइ। ये जाते हैं = एते गच्छन्ति। ये नमस्कार करते हैं = इमे णमन्ति। यह देव को नमस्कार करता है = इमो देवं णमइ। ये महादेव को नमस्कार करते हैं = इमे महादेवं णमन्ति। यह भात खाता है = इमो भत्तं खादइ, भुंजइ वा। वह सोना चुराता है = सो सुवण्णं चोरेइ। ये मैदान में दौड़ते हैं = एते खेत्ते धावन्ति। वे पाठ लिखते हैं = ते पाढं लिखन्ति। वे घर को जाते हैं = अमुणो गिहं गच्छन्ति। वे लोग मित्र की निन्दा करते हैं = ते जणा मित्तं पगंथन्ति। ये उसका विश्वास करते हैं = एते तं पच्चाअन्ति। वे उसको धिक्कारते हैं = ते तं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धिक्कारन्ति। वे गन्ने का आस्वादन करते हैं=ते उच्छुं पच्चोगिलन्ति। वे लोग विद्यालय जाते हैं=ते विज्जालयं गच्छन्ति।

राम इनसे धन लेता है	=	रामो इमत्तो धणं गेण्हइ।
इनसे पुस्तक लेता है	=	इमाहिंतो पोत्थयं गेण्हइ।
इसका घर बाजार में है	=	अस्स गिहं आवणे अत्थि।
इसके द्वारा कार्य होता है	=	इमिणा कज्जं हवइ।
इनके द्वारा सहायता मिलती है	=	इमेहिं साहज्जं मिलइ।
वह इनके हाथ से पुस्तक लेता है	=	सो इमाण हत्थत्तो पोत्थयं गेण्हइ।
उनके आदमी श्याम को ठगते हैं	=	तेसिं जण सामं पतारन्ति।
उसकी पत्नी आटा पीसती है	=	तस्स भज्जा चुण्णं पीसइ।
उनपर उनका कर्ज है	=	अमूसुं ताणं रिणं अत्थि।
उससे प्रश्न पूछता है	=	अमुत्तो पण्हं पुच्छइ।
वह रथ में घोड़े जोड़ता है	=	सो रहम्मि अस्सा पउंजइ।
इनसे मोहन ऋण मांगता है	=	एताहिंतो मोहणो रिणं मग्गइ।
वह हँसता है	=	सो हसइ।
वह घर में रहता है	=	सो गिहे वसइ।
वे हँसते हैं	=	ते हसेइरे।
वे काम करते हैं	=	ते कज्जं करन्ति।
तुम बोलते हो	=	तुमं भणसि।
तुम चलते हो	=	तुमं चलसि।
तुम जाते हो	=	तुमं गच्छसि।
तुम पुस्तक पढ़ते हो	=	तुमं पोत्थयं पढसि।
तुम पढ़ने में प्रवृत्ति करते हो	=	तुमं अज्झयणे पउत्तसि।
तुम घर को वापस जाते हो	=	तुमं गिहं पडिवच्चसि।
तुम राम को देखते हो	=	तुमं रामं पेच्छसि।
तुम क्रोध करते हो	=	तुमं कुज्झसि।
तुम नौकर को भेजते हो	=	तुमं भिच्चं पेससि।
तुम जल पीते हो	=	तुमं जलं पिबसि।
तुम भात खाते हो	=	तुमं भत्तं भुंजसि।
तुम मोहन को धिक्कारते हो	=	तुमं मोहणं धिक्कारसि।
तुम मोहन को जानते हो	=	तुमं मोहणं जाणसि।
तुम पटना जाते हो	=	तुमं पाडलिपुत्तं गच्छसि।
तुम चने भूँजते हो	=	तुमं चणआ भंजसि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम दीपक बुझाते हो	=	तुमं दीवं णिव्वयसि।
तुम भूमि पर बैठते हो	=	तुमं भूमीए णिसीअसि।
तुम मोहन का धन लेते हो	=	तुमं मोहणस्स धणं गेण्हसि।
वह तुम्हारा सच्चा मित्र है	=	सो तुम्हाणं सच्चं मित्तं अत्थि।
तुम्हारा पुत्र कहाँ रहता है	=	तुज्झ पुत्तो कहिं वसइ।
तुम कहाँ से आते हो	=	तुमं कओ आगच्छसि।
तुम क्या करते हो	=	तुमं किं करेसि।
तुम्हारी पुस्तक में क्या लिखा है	=	तुज्झ पोत्थयम्मि किं लिखियं अत्थि।
तुमसे राम धन लेता है	=	तुवत्तो रामो धणं गेण्हइ।
तुम तीर्थंकर को नमस्कार करते हो	=	तुमं तित्थयरं पणमसि।
राम तुमको घड़ा देता है	=	रामो तुम्हं घडं देइ।
तुम्हारा कोई भी दोष नहीं है	=	तुज्झ किमवि अवराहो णत्थि।
तुम इसी तरह कहते हो	=	तुमं एवमेव कहसि।
तुम नीचे जाते हो	=	तुमं अहो गच्छसि।
तुम यहीं पर रहते हो	=	तुमं इह एव णिवससि।
तुम उत्तर से आते हो	=	तुमं उत्तरओ आगच्छसि।
तुम सभी लोग पढ़ते हो	=	तुम्ह पढित्था।
तुम लोग कहते हो	=	तुम्हे कहह।
तुम लोग जानते हो	=	तुम्हे जाणह।
तुम लोग डरते हो	=	तुम्हे बीहित्था।
तुम कहते हो	=	तुम्हे भणित्था।
तुम लोग जल पीते हो	=	तुम्हे जलं पिवह।
तुम लोग काम करते हो	=	तुम्हे कज्जं करित्था।
तुम लोग वृक्ष पर से गिरते हो	=	तुम्हे रुक्खत्तो पडह।
तुम लोग कुँए से पानी भरते हो	=	तुम्हे कूवत्तो जलं भरित्था।
तुम लोग रास्ते में थूकते हो	=	तुब्भे पहम्मि थुकेज्ज।
तुम लोग प्रातःकाल जागते हो	=	तुब्भे पच्चूसे पडिबोहित्था।
तुम लोग बर्तन को ढकते हो	=	तुम्हे पत्तं पिधित्था।
तुम लोग नगरी का त्याग करते हो	=	तुम्हे णयरं पजहित्था।
मैं बोलता हूँ	=	अहं बोल्लामि।
मैं हँसता हूँ	=	अहं हसेमि या अहं हसामि।
मैं भ्रमण करता हूँ	=	अहं भमेमि।
मैं खाता हूँ	=	अहं जेममि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं नमस्कार करता हूँ	=	अहं नमामि ।
मैं जल पीता हूँ	=	हं जलं पिज्जेमि ।
मैं रहता हूँ	=	हं वसामि ।
मैं धान कूटता हूँ	=	हं धण्णं कुट्टेमि ।
मैं जल की तलाश करता हूँ	=	हं जलं गवेसामि ।
मैं पाप से घृणा करता हूँ	=	हं पावं गरहेमि ।
मैं वस्त्र धारण करता हूँ	=	हं वत्थं धारेमि ।
मैं पुस्तक पढ़ता हूँ	=	हं पोत्थयं पढामि ।
मैं नगर को देखता हूँ	=	हं णयरं पेच्छामि ।
मैं उसको धिक्कारता हूँ	=	हं तं धिक्कारेमि ।
हम लोग पढ़ते हैं	=	अम्हे पढामो ।
हम लोग भ्रमण करते हैं	=	अम्हे भमामो ।
हम लोग कहते हैं	=	अम्हे भणामो ।
हम लोग डरते हैं	=	अम्हे बीहामो ।
हम लोग आस्वादन करते हैं	=	अम्हे पच्चोगिलिमु ।
हम लोग उसको जानते हैं	=	अम्हे तं जाणिम ।
मैं तुमको जानता हूँ	=	हं तुमं जाणेमि ।
हम लोग कपड़े धोते हैं	=	अम्हे वत्थपक्खालणं करामो ।
हम लोग विद्यालय में जाते हैं	=	अम्हे विज्जालयम्मि गच्छामो ।
यहीं पर हम लोग रहते हैं	=	एत्थमेव अम्हे णिवसामो ।
इस समय हम लोग जाते हैं	=	इयाणिं अम्हे गच्छामो ।
निश्चय ही हम लोग पढ़ते हैं	=	णूणमेव अम्हे पढामो ।
हम लोग अन्य लोगों का अनुकरण करते हैं	=	अम्हे अण्णा अणुहरामो ।
हम लोग पत्र लिखते हैं	=	अम्हे पत्तं लिखामो ।
हम लोग भोजन करते हैं	=	अम्हे भोयणं करामो ।
हम लोग देवता को नमस्कार करते हैं	=	अम्हे देवं णमामो ।
हम लोग राजा से धन माँगते हैं	=	अम्हे राइण्णो धनं मग्गामो ।
हम लोग दिल्ली जाते हैं	=	अम्हे दिल्ली णयरं गच्छामो ।
वह तुमको धन देता है	=	सो तुज्झ धणं देइ ।
हम सब यह कार्य करते हैं	=	अम्हे इदं कज्जं करामो ।
तुम लोग क्यों नहीं पढ़ते	=	तुम्हे कहं ण पढित्था ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम लोग मन लगाकर पढ़ते हैं = अम्हे मणेण पढामो।
मैं वाराणसी में पढ़ता हूँ = हं वाराणसिं पढामो।
हम लोग यह जानना चाहते हैं = अम्हे इदं जाणिउं इच्छामो।
क्या तुम यहाँ ठहरना चाहते हो = अवि तुमं एत्थ ठाउं इच्छसि।
आप लोग क्या लेना चाहते हैं = भवन्ता किं गेण्हिउं इच्छन्ति।
हम लोग नदी तैर सकते हैं = अम्हे नइं तरिउं सक्केमो।
उसे कोई नहीं मार सकता = ण कोवि तं हणिउं समत्थो।

शब्दकोषः

ओष्ठ = उट्ठो
झोपड़ी = उडवं
मकड़ी = उन्ननाहो
दुपट्टा = उत्तरिज्जं
पानी = उदयं
निर्माल्य = उम्मालं
पानी की तरंग = उल्लोलो
कपड़े की चाँदनी = उल्लोओ
झरना = ओज्झरं
कपट = कइअवं
कैलास पर्वत = कइलासो
बन्दर = कइ
कठोर = कक्कसो
कछुआ = कच्छहो, कमढो
कामदेव = कंदप्पो
कपूर = कप्पूरो
नख = कररुहो
तलवार = करवालं
ऊंट = करहो
हाथी = करि, करेणु
हथिनी = करिणी, करेणुआ
कदम्ब का वृक्ष = कलंबो
गौरैया पक्षी = कलविंको
घड़ा = कलसो
हाथी का बच्चा = कलहो
समूह = कलावो
कुत्ता = कविलो
गाल = कवोलो
मांस खानेवाला राक्षस = कव्वायो
कृष्णपक्ष = कसणपक्खो
काला = कसिणो
शरीर = कायो
बलरहित, निर्बल = अबलो, निब्बलो
आग्रह = अभिणिवेसो
अमृत = अमयो
अहीर = अहिरो
धनी = इब्भो, धणी
चाबुक = कसो
कहार = काहारो
गेंद = किंदुओ
जुआरी = कितवो
संसर्ग = संसग्ग
उत्सुकता = कुऊहलं
कुत्ता = कुक्कुरो
निकुञ्ज = कुडंगो
कुदारी = कुद्दालो
वृद्ध = बुड्ढो
खाली करना = खिलीकरणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षीर-दूध = खीरं
वामन = खुज्जो
खलासी = खुल्लासयो
ऐरावत हाथी = गइंदो
गाँठ = गंठि
पाकिटमार = छेअो
ग्रन्थ = गंथो
गधा = गद्दहो
गर्भ = गब्भो
रोग = गयो
गरिष्ठ = गरिट्ठो
गवैया = गाइरो
घर = गेहं
ग्वाला = गोवालो
घर = घरो
चतुर = चउरो
यक्ष = जक्खो

धातुकोषः

खींचता है = करिसइ
रूठता है = रूसइ
चुनता है = चिणइ
फोड़ता है = फुडइ
बन्द होता है = निमीलइ
घूमता है = अट्टइ
सकता है = सक्कइ
क्रोध करता है = कुप्पइ
सम्पन्न होता है = संपज्जइ
खिन्न होता है = खिज्जइ
वरसता है = वरिसइ
सरकता है = सरइ
पकड़ता है = धरइ
मरता है = मरइ
तैरता है = तरइ
सींचता है = सिंचइ
चुराता है = मुसइ
रोकता है = रुणइ
उल्लंघन करता है = अइइ
अतिक्रमण करता है = अइक्कमइ
जाता है, गमन करता है = अइगच्छइ
स्वीकार करता है = अंगीकरइ
पूजता है = अंचइ, अच्चइ
आक्रमण करता है = अक्कमइ
गाली देता है = अक्कोसइ
फेंकता है = अक्खिवइ
शोभता है, योग्य होता है = आछइ
प्रशंसा करता है = अच्चीकरइ
मार्जन करता है, साफ सुथरा-
करता है = पमज्जइ
प्रमाणित करता है = पमाइ
प्रार्थना करता है = पत्थइ
थकता है = थक्कइ
पैदा करता है = अज्जइ
दया करता है = अणुकंपइ
खींचता है = अणुकड्ढइ
नकल करता है = अणुकरइ
भक्षण करता है = अणुगिलइ
कृपा करता है = अणुगाइ
सेवा करता है = अणुचरइ
वैठता है = अच्छइ
फड़कता है = फुरइ।
बांधता है = वंधइ
पोषण करता है = विंहइ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भयभीत होता है = बीहइ	प्रकट करता है = पागडइ
भूंकता है = बुक्कइ	पहुँचता है = पहुच्चइ
विरोध करता है = बाहइ	भागता है = पलायइ
फिसलता है = फेल्लुसइ	पहिरता है = परिहइ
छूता है = फरिसइ	स्तुति करता है = थुइ
फटता है = फट्टइ	लपेटता है = परिआलइ
उछलता है = फंफइ	मुरझाता है = पमिलायइ
पुष्ट होता है = पोसइ	भूल जाता है = पम्हअइ
रुई धुनता है = पिंजइ	बिछाता है = पत्थरइ
पालन करता है = पालइ	प्रतिघात करता है = पडिहणइ
आरम्भ करता है = आरंभइ, पारंभइ	गीला करता है = थिमइ

Translate into Prakrit पाइयभासाए अणुवायं कुणन्तु

यह उसका घर है। उसके यहाँ चावल नहीं है। उनके घर में कौन रहता है। उनका पत्र कब आया है। वह कहाँ रहता है। उसका स्वभाव कैसा है। वह क्या कार्य करता है। उसका घर कहाँ पर है। उनके कितने पुत्र हैं। उनके घर में तुम कब जाते हो। मैं पटना जाता हूँ। तुम वाराणसी जाते हो। उस राजा के राजपुत्र हैं। उसके यहाँ मैं रहता हूँ। मेरा उसके साथ अच्छा सम्बन्ध है। रामदास उसका छोटा भाई है। मोहन उसका बड़ा भाई है। मेरा घर कानपुर है। तुम्हारा घर पटना है। वाराणसी में मेरा भाई रहता है। तुम्हारी परीक्षा कब है। हम लोग सब बातों को जानते हैं। वह जल पीता है। मैं दूध पीता हूँ। उनकी लड़की जैन बाला-विश्राम में पढ़ती है। मैं पुस्तक लिखता हूँ। उनका अध्ययन अच्छा है। वह अध्यापक है। भारतमाता सबकी पूज्य है। मैं दूसरों के साथ रहता हूँ। उसकी तीन कन्याएँ हैं।

वह देव की वंदना करता है। मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। हम लोग नाटक देखते हैं। वह इनसे धन लेता है। इसके द्वारा कार्य होता है। उसकी लड़की आटा पीसती है। मेरा लड़का लिखता है। तुम लोग पुस्तक लेते हो। तुम लोग ध्यान देते हो। हम लोग भी काम करते हैं। मेरा साथी पढ़ता है। उन पर उनका कर्ज है। उस नगर की अवस्था अच्छी नहीं है। अरे मित्र देखो। वे लोग घर में रहते हैं। तुम लोग झोपड़ी में रहते हो। तुम लोग बोलते हो। हम लोग परिश्रम करते हैं। वे तुम्हारे सच्चे मित्र हैं। वह हमारा मित्र है। तुम समय पर काम करते हो। तुम इसी तरह कहते हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम पेड़ के नीचे रहते हो। हम लोग यहीं पर रहते हैं। मैं राम को देखता हूँ। मैं दीपावली पर घर आया हूँ। तुम चलते हो। तुम लोग उत्तर से आते हो। हम लोग नौकर को भेजते हैं। तुम्हारा दुपट्टा अच्छा है। तुम झरना देखते हो। तुम कपड़े की चाँदनी लगाते हो। तुम बन्दर नचाते हो। तुम निकुञ्ज में रहते हो। तुम्हारा कपटाचार अच्छा नहीं है। तुम्हारा हाथी जाता है। तुम्हारे खेत में कदम्ब का पेड़ है। तुमने गौरैया पक्षी पाला है। तुम गरिष्ठ भोजन करते हो। हम लोगों के घर में यक्ष रहता है। वह बूढ़ा आदमी तुम्हारी प्रशंसा करता है। वह काला आदमी ग्रन्थ लिखता है। वह कपूर जैसा सफेद है। वह कछुआ भी तुम्हारे साथ चलता है। मैं कृष्णपक्ष में पढ़ता हूँ। तुम प्रतिदिन पढ़ते हो। वह गवैया मेरा भाई है। तुम्हारी वाणी कर्कश है। तुम्हारी चादर में गांठ है। वह पाकिटमार तुम्हारा धन लेता है। तुम्हारा पुत्र निर्बल है। मेरा भाई दूध पीता है। उसके यहाँ गधा रहता है।

Exercise अब्भासो

Translate into Hindi हिन्दी भासाए अणुवायं कुणन्तु

तत्थ य वाराणसी णाम णयरी। तत्थ एगो रिद्धि-घणसमिद्धो णरिंदो वसइ। तया एगेण मन्तिणा भणियं। हत्थिणाउरे सूरनामा रायपुत्तो परिवसइ। सो वरो मोयणं कुणन्तो उट्ठिउं लग्गो। तया रण्णी दासिं पुच्छइ। तया महिसी कुंभगारिं नियसहिं पुच्छइ, पहाणो नरिंदं पुच्छइ—'एत्थ को मच्चुं पाविओ'। सच्चं कहेसु एअस्स कारणं। एगसरिसी अवत्था कस्स होइ। तेण मए कहियं एगा थाली नाथि। तओ किंकरेण सव्वाओ गणिआओ। सव्वेसुं धम्मेसु जत्थ पाणाइवाओ न विज्जइ, सो धम्मो सोहणो होइ। विसया न उवसमन्ते। पच्चूसे सो उज्जाणं जाइ। वुड्ढत्तणे वि मूढाणं नराणं णाणं न होइ। तस्स उज्जाणे पुप्फाणि सन्ति। अवि कुसलं सिंधुणाहस्स। जं देवो आणवेदि। कस्स णट्टं होइ। अअं अवसरो अम्हाणं पओअ-विण्णाणं दंसिदुं। मोहणो मिच्छा तं कुज्झइ। तुमं इदं जाणासि ण वा। पावाणं कम्माणं खयाए सो काउस्सग्गं करइ। मज्जम्मि मंसम्मि य पसत्ता मणुसा निरयं वच्चन्ति। परोवयारो पुण्णाय, पावाय अन्नस्स पीलणं। किं वि अच्छारिअं सुणादु भावो। मूढो हं तत्तो कत्थ गच्छामि, कहिं चिट्ठमि, कस्स कहेमि, कस्स रूसेमि। कासी-नयरी-नरेसो एसो दढभुयबलो नाम। वरसु इमं जइ गंगं महसि दट्ठुं। जीवा पावेहिं कज्जेहिं निरयंसि गच्छन्ति। चंदेसु निम्मलयरा तित्थयरा हुंति। जरिसो जणो होइ तस्स मित्तो वि तारिसो विज्जइ। मइरामउम्मत्ती नच्चइ, गायइ, पइसइ, पणमइ, परिचयइ वत्थं वि। तत्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

य अन्नया कयाइ नडो आगओ। सो य तस्स पुत्तो नडसंसग्गीए नडो जाओ। नंदपुरम्मि वसुभूई नाम बंभणो परिवसइ। सो अज्झावओ अत्थि। सा मम मोत्तुं कत्थ गया। तुमं एयस्स परिक्खणं करेज्जासि। अहं नयरं गच्छामि चंदग्गहणं भविस्सइ। एवं वइत्ता गओ सो। न य करे घयतंदुलाइं अत्थि। तइयाए धूयाए पुणो भणियं। तओ तस्स जामाउयस्स समीवं गंतूण माऊए भणियं। सो जंपइ—अम्ह वि एस कुलधम्मो। तस्स सुहा महिला लीलानिलओ। तेसिं य तिन्नि धूया जाया। ता गउरव-पयं न होंति। भो वयस्स पेक्ख। सो अट्ठवरिसो जाओ। एत्थंतरे तत्थागयं मुणिजुयलं। इमो बालओ एयस्स घरस्स सामी अत्थि। जं तुमं भणसि तं हं करेमि। सो धीवरो दीणारं लहित्ता चिंतेइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तइओ पवाढओ Lesson 3

इकारान्त और उकारान्त शब्दों के रूप और प्रयोग

९. इकारान्त और उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों में प्रथमा के एकवचन और बहुवचन में, तृतीया, चतुर्थी और पञ्चमी के बहुवचन में अन्त के इकार और उकार को दीर्घ हो जाता है।

१०. प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में ओ और णो आदेश होता है।

११. इकारान्त और उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों में तृतीया विभक्ति के एकवचन में णा आदेश होता है।

पुँल्लिङ्ग इकारान्त हरि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	हरी	हरओ, हरिणो
बी०	हरिं	हरिणो, हरी
त०	हरिणा	हरीहिं
च०	हरिणो, हरिस्स	हरीण, हरीणं
पं०	हरिणो, हरित्तो	हरीहिंतो, हरीसुंतो
छ०	हरिणो, हरिस्स	हरीण, हरीणं
स०	हरिम्मि, हरिंसि	हरीसु, हरीसुं
सं०	हरी	हरओ, हरिणो

पुँल्लिङ्ग इकारान्त णरवइ—नरपति शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	णरवई	णरवओ, णरवइणो
बी०	णरवइं	णरवइणो, णरवई
त०	णरवइणा	णरवईहिं
च०	णरवइणो, णरवइस्स	णरवईण, णरवईणं
पं०	णरवइणो, णरवइत्तो	णरवईहिंतो, णरवईसुंतो
छ०	णरवइणो, णरवइस्स	णरवईण, णरवईणं
स०	णरवइम्मि, णरवइंसि	णरवईसु-सुं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुँल्लिङ्ग इकारान्त इसी—रिसी (ऋषि) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	इसी	इसओ, इसिणो
बी०	इसिं	इसिणो, इसी
त०	इसिणा	इसीहिं
च०	इसिणो, इसिस्स	इसीण–णं
प०	इसिणो, इसित्तो	इसीहिंतो, इसीसुंतो
छ०	इसिणो, इसिस्स	इसीण–णं
स०	इसिम्मि, इसिंसि	इसीसु–सुं

पुँल्लिङ्ग इकारान्त अग्गि (अग्नि) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	अग्गी	अग्गओ, अग्गिणो
बी०	अग्गिं	अग्गिणो, अग्गी
त०	अग्गिणा	अग्गीहिं
च०	अग्गिणो, अग्गिस्स	अग्गीण–णं
प०	अग्गिणो, अग्गित्तो	अग्गीहिंतो, अग्गिसुंतो
छ०	अग्गिणो, अग्गिस्स	अग्गीण–णं
स०	अग्गिम्मि, अग्गिंसि	अग्गीसु, अग्गीसुं

इसी प्रकार मुणि (मुनि), बोहि (बोधि), संधि, रासि (राशि), रवि, कइ (कवि), कवि (कपि), अरि, तिमि; समाहि (समाधि), निहि (निधि), विहि (विधि), दंडि (दण्डिन्), करि (करिन्), तवस्सि (तपस्विन्), पाणि (प्राणिन्), पहि (प्रधी), सुहि (सुधी) आदि शब्दों के रूप होते हैं।

पुँल्लिङ्ग उकारान्त भाणु (भानु) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	भाणू	भाणुणो, भाणओ
बी०	भाणुं	भाणुणो, भाणू
त०	भाणुणा	भाणूहिं
च०	भाणुणो, भाणुस्स	भाणूण–णं
प०	भाणुणो, भाणुत्तो	भाणूहिंतो, भाणूसुंतो
छ०	भाणुणो, भाणुस्स	भाणूण–णं
स०	भाणुम्मि, भाणुंसि	भाणूसु, भाणूसुं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुँल्लिङ्ग उकारान्त वाउ (वायु) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	वाऊ	वाउणो, वाउओ
बी०	वाउं	वाउणो, वाऊ
त०	वाउणा	वाऊहिं
च०	वाउणो, वाउस्स	वाऊण–णं
पं०	वाउणो, वाउत्तो	वाऊहिंतो, वाऊसुंतो
छ०	वाउणो, वाउस्स	वाऊण-वाऊणं
स०	वाउम्मि, वाउंसि	वाऊसु, वाऊसुं

इसी प्रकार जउ (यदु), धम्मण्णु (धर्मज्ञ), सव्वण्णु (सर्वज्ञ), दइवण्णु (दैवज्ञ), गउ (गो), गुरु, साहु (साधु), वउ (वपुष्) मेरु, कारु, धणु (धनुष्), सिन्धु, केउ (केतु), विज्जु (विद्युत्), राहु, संकु (शङ्कु), उच्छु (इक्षु), पवासु (प्रवासिन्), वेलु (वेणु), सेउ (सेतु), मच्चु (मृत्यु), खलपु (खलपू), गोत्तभु (गोत्रभू), सरभु (शरभू), अभिभु (अभिभू) और सयंभु (स्वयंभू) आदि शब्दों के रूप होते हैं। प्राकृत में खलपू, गोत्तभू, सरभू, अभिभू और सयंभू शब्द विकल्प से ह्रस्व उकारान्त होते हैं। अतः इन शब्दों के रूप वाउ के समान बनते हैं।

१२. ईकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के रूप इकारान्त और उकारान्त शब्दों के समान होते हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने दीर्घ—ईकार और ऊकार के लिए ह्रस्व—इकार और उकार का नियमन किया है।

पुँल्लिङ्ग दीर्घ ईकारान्त पही (प्रधी) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	पही	पहओ, पहिणो
बी०	पहिं	पहिणो, पही
त०	पहिणा	पहीहिं
च०	पहिणो, पहिस्स	पहीण–णं
पं०	पहिणो, पहिन्तो	पहीहिंतो, पहीसुंतो
छ०	पहिणो, पहिस्स	पहीण–णं
स०	पहिम्मि, पहिंस्सि	पहीसु–सुं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुँल्लिङ्ग दीर्घ ईकारान्त गामणी (ग्रामणी)

	एकवचन	बहुवचन
प०	गामणी	गामणओ, गामणिणो
बी०	गामणिं	गामणिणो, गामणी
त०	गामणिणा	गामणीहिं
च०	गामणिणो, गामणिस्स	गामणीण-णं
पं	गामणिणो, गामणित्तो	गामणीहिंतो, गामणीसुंतो
छ०	गामणिणो, गामणिस्स	गामणीण-णं
स०	गामणिम्मि, गामणिंसि	गामणीसु-सुं

पुँल्लिङ्ग दीर्घ ऊकारान्त खलपू शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	खलपू	खलपवो, खलपओ, खलपुणो
बी०	खलपुं	खलपुणो, खलपू
त०	खलपुणा	खलपूहिं
च०	खलपुणो, खलपुस्स	खलपूण-णं
पं०	खलपुणो, खलपुत्तो	खलपूहिंतो, खलपूसुंतो
छ०	खलपुणो, खलपुस्स	खलपूण-णं
स०	खलपुम्मि, खलपुंसि	खलपूसु-सुं

दीर्घ ऊकारान्त सयंभू (स्वयम्भू-विधाता) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	सयंभू	सयंभओ, सयंभुणो
बी०	सयंभुं	सयंभू , सयंभुणो
त०	सयंभुणा	सयंभूहिं
च०	सयंभुणो, सयंभुस्स	सयंभूण-णं
प०	सयंभुणो, सयंभुत्तो	सयंभूहिंतो, सयंभू सुंतो
छ०	सयंभुणो, सयंभुस्स	सयंभूण-णं
स०	सयंभुम्मि, सयंभुंसि	सयंभूसु-सुं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रयोगवाक्य

हरि पढ़ता है = हरी पढइ।
हरि का घर पटना में है = हरिणो गिहं पडलिउत्ते अत्थि।
हरि से धन माँगता है = हरित्तो धणं मग्गइ।
हरि को धन देता है = हरिणो धणं देइ।
मोहन हरि को गाली देता है = मोहनो हरिं अक्कोसइ।
वह हरि की तलवार को फेंकता है = सो हरिणो करवालं अक्खिवइ।
तुम हरि के कमरे को साफ करते हो = तुमं हरिणो कक्खं पमज्जसि।
मैं हरि से प्रार्थना करता हूँ = अहं हरिणो पत्थेमि या हं हरिं पत्थेमि।
तुम लोग पहाड़ से गिरते हो = तुम्ह गिरिणो पडित्था।
तुम पहाड़ पर क्यों रहते हो = तुमं गिरिम्मि कहं णिवससि।
वह पहाड़ पर कहाँ रहता है = सो गिरिम्मि कत्थ णिवसइ।
वे पहाड़ से पत्थर लाते हैं = ते गिरित्तो पाहणं नेंति।
राजा की सेना पहाड़ पर चढ़ती है = णरवइणो सेणा गिरिं आरोहइ।
राजा के कर्मचारी बाजार जाते हैं = णरवइणो भिच्चा हट्टे गच्छन्ति।
वे लोग पहाड़ पर रहते हैं = ते जणा गिरिं णिवसन्ति।
हम लोग हरि की प्रशंसा करते हैं = अम्ह हरिं अच्ची करेमि।
वे लोग पहाड़ पर पहुँचते हो = ते जणा गिरिं पहुच्चन्ति।
मुनि लोग पहाड़ पर तपस्या करते हैं = मुणिणो गिरिम्मि तवं करेन्ति।
ऋषि तुम्हारे घर भोजन करते हैं = इसिणो तुज्झ घरे भोयणं करेन्ति।
वह ऋषियों से पुस्तक मांगता है = सो इसीहिंतो पोत्थयं मग्गइ।
वे लोग घर में अग्नि जलाते हैं = ते जणा गिहे अग्गिं पज्जलन्ति।
अग्नि से स्फुलिङ्ग निकलते हैं = अग्गित्तो फुल्लिंगा निक्कसन्ति।
वे लोग सूर्य को देखते हैं = ते जणा सुज्जं पेच्छन्ति।
हवा चलती है = वाऊ वहइ।
हम लोग ऋषियों की प्रशंसा करतें हैं = अम्ह इसीणं पसंसणं करिमो।
हम लोग ऋषियों के लिए आसन बिछाते हैं = अम्ह इसीणं आसणं पत्थरिमो।
बुद्धिमान् व्यक्ति पाप से भागते हैं = पहिणो पावत्तो पलायन्ति।
तुम लोग पहाड़ से फिसलते हो = तुमं गिरित्तो फेल्लुसित्था।
मैं मुनियों की पूजा करता हूँ = हं मुणिणो अंचेमि, अच्चेमि वा।
मैं प्रमाणित करता हूँ = हं पमामि।
वे लोग मुनियों की स्तुति करते हैं = ते मुणिणो थुवन्ति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वायु में चलना संभव नहीं है = वाउम्मि गमणं संहवं णत्थि ।
तुम लोग ऋषियों को भूल जाते हो = तुम्ह इसिणो पम्हइत्था ।
वे लोग मुनियों की सेवा करते हैं = ते मुणिणो अणुचरन्ति ।
वे लोग धनुष खींचते हैं = ते धणुं अणुकड्ढन्ति ।
ऋषि लोग प्राणियों पर दया करते हैं = इसिणो जीवेसु दयां कुणन्ति ।
मृत्यु को जानकर वह दुःखी होता है = मच्चुं णात्वा सो दुही होइ ।
विधाता सृष्टि का पालन करता है = सयंभू सिट्ठिं पालइ ।
मैं शीघ्र भूलता हूँ = हं सिग्घं पम्हएमि ।
उस नगर में ऋषि रहते हैं = तम्मि णयरे इसिणो णिवसन्ति ।
वे सर्वज्ञ की स्तुति करते हैं = ते सव्वण्णुं पत्थेंति ।
हम लोग बांध बांधते हैं = अम्हे वांधं वंधिमो ।
उन ऋषियों के फूल मुरझाते हैं=ताणं इसीणं फुल्लाणि पमिलायन्ति ।
तुम गुरु के पास से पुस्तक लाते हो=तुमं गुरुणो समीवत्तो पोत्थयं नेसि ।
किस ऋषि ने यह काम किया है = केण इसिणा इदं कज्जं कयं ।
कौन व्यक्ति मुनियों के पास पढ़ता है=को पुरिसो मुणिणो समीवं पढइ ।
ऋषि लोग ग्रंथों का स्वाध्याय करते हैं = इसिणो गंथाणं सज्झायं कुणन्ति ।
किन के द्वारा यह कार्य हुआ है = केहिं इदं कज्जं कयं ।
गाँव का मुखिया तुम्हारी निन्दा करता है = गामणी तुम्हं पगंथइ ।
प्रवासी अपने गाँव को जाता है = पवासु णियगामं गच्छइ ।
वे लोग गन्ना खाते हैं = ते जणा उच्छुणो खादन्ति ।
मृत्यु को कौन चाहता है = मच्चुं को अहिलसइ ।
राम समुद्र पर पुल बांधता है = रामो समुद्दोवरि सेउं वंधइ ।
सर्वज्ञ की सभी लोग स्तुति करते हैं = सव्वण्णुं सव्वे थुवन्ति ।
कृतज्ञ व्यक्ति की हम लोग प्रशंसा करते हैं = अम्ह कयण्णुं पसंसिमो ।
कृतज्ञ का व्यवहार अच्छा होता है = कयण्णुणो ववहारं वरं होइ ।
हम लोग सर्वज्ञ को नमस्कार करते हैं = अम्हे सव्वण्णुणो नमामो ।
तुम सूर्य को देखते हो = तुमं भाणुं पेच्छसि ।

उदाहरण वाक्य

तत्थ वसू नाम सत्थवाहो = वहाँ वसु नामक सार्थवाह था ।
तस्स सुन्दरी नाम भारिया = उसकी सुन्दरी नाम की स्त्री थी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहि मरुत्थलीए कप्पपायवो उट्ठेइ = मरुभूमि में कल्पवृक्ष नहीं उत्पन्न होता है।

भिक्खुगस्स भिक्खं देहि = भिक्षुक को भिक्षा दो।

वेसालिए नयरीए जिणदत्तो सेट्ठी = वैशाली नगरी में जिनदत्त सेठ रहता था।

एयदा गंधहत्थी पाणिए पविट्ठो = एक समय गंधहाथी पानी में प्रविष्ट हुआ।

न जाणइ सो तस्स विसेसं = वह उसकी विशेषताओं को नहीं जानता है।

कयपुण्णो एसो जीवो = यह जीव पुण्यात्मा है।

जो एरिसे कुले उववन्नो = जो ऐसे कुल में उत्पन्न हुआ है।

अण्णं चिंतइ हियए = हृदय में अन्य सोचता है।

रयणीए तीए सह पसुत्तो = रात्रि में उसके साथ सोया।

तत्थ बलो नाम राया, रई से देवी = वहाँ बल नाम का राजा था और रति नाम की उसकी पत्नी थी।

तीसे धूया सूरसेणा = उनकी पुत्री शूरसेना थी।

रूवेण जोव्वणेण य उक्किट्ठा = रूप और यौवन में उत्कृष्ट थी।

जहाविहीए वंदिऊण गच्छन्ति इसिणो = यथाविधि वंदना करके ऋषि जाते हैं।

गाम्रो पुत्तलाहो गामाणिणो = गाँव के मुखिया को पुत्रलाभ हुआ।

पडिबुद्धा पाणिणो इसि-उवएसेण = ऋषि उपदेश से प्राणी प्रतिबुद्ध हुए।

सुमरियं पुव्वभवकयं पहिणा = राहगीर ने पूर्वभवकृतकर्म का स्मरण किया।

लच्छी निय-इच्छाए गच्छइ = लक्ष्मी अपनी इच्छा से जाती है।

संझाए नईतडट्ठिए नियपासादे गओ = सन्ध्या समय नदी किनारे स्थित अपने भवन में गया।

सहसा अविआरिअं कज्जं कयं = सहसा बिना विचारे कर्म किया है।

ते अडविं गच्छन्ति = वे वन में जाते हैं।

पुण्णप्पहावेण तस्स असी न चलइ = पुण्य के प्रभाव से उसकी तलवार नहीं चलती है।

तस्स गामणिणो एगो कोढिय पुत्तो अत्थि = उस गाँव के मुखिया का एक कोढ़ी पुत्र था।

सो किवणसेट्ठी तं भूमिघरे रक्खइ = वह कृपण सेठ उसे तलघर में रखता है।

जं भावि तं अन्नहा न होइ = जो होनहार है, वह अन्यथा नहीं होती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कमेण निगामे सव्वे पहिणो आगच्छन्ति = क्रम से अपने ग्राम में पथिक आते हैं।

कुलवहूणं एसो च्चिअ सामी = कुलवधुओं के लिए यही स्वामी है।

नरिंदो नियबंधुणा गच्छइ = राजा अपने भाई के साथ जाता है।

जिणदासो आगच्च गामिणं पणमइ = जिनदास आकर गाँवके मुखिया को प्रणाम करता है।

तुं अम्हे किं परिजाणासि = क्या तुम हमको जानते हो।

गिरित्तो बाहिं खन्धावारो अत्थि = पहाड़ से बाहर स्कन्धावार है।

शब्दकोष

अक्खि = नेत्र, आँख
अग्गि = अग्नि
कइ = कवि
केसरि = सिंह
कन्ति = कान्तिमान्
खत्ति = क्षत्रिय
गिरि = पर्वत
गंठि = गाँठ
चक्कवट्टि = चक्रवर्ती
जोगि = योगी
धणि = धनवान्, धनिक
मणि = रत्न
मंति = मन्त्री
मुणि = मुनि
मुरारि = कृष्ण
रस्सि = रज्जू, किरण
वणस्सइ = वनस्पति
वाहि = व्याधि, पीडा
विहि = विधि, ब्रह्मा
निवइ, निव = राजा, नृपति
निहि = निधि, भण्डार
पइ = पति, स्वामी, मालिक
परमेट्ठि = परमेष्ठी, उच्च अधिकारी
पंखि = पक्षी
फणि = साँप
भाइ = भाई
भिक्खारि = भिखारी, भीख माँगनेवाला
वेरि = शत्रु
ससि = चन्द्रमा
संति = शान्ति
सामि = स्वामी
सारहि = सारथी,
सेट्ठि = सेठ, धनी
हत्थि = हाथी
हरि = विष्णु, कृष्ण, इन्द्र
अग्गणि = नेता, अग्रेसर
गामणि = मुखिया
सुगन्धि = सुगन्धवाला
सुरहि = सुगन्धि
सुलच्छि = लक्ष्मीवान्
मणंसि = मनस्वी
दुहि = दुःखी
वावारि = व्यापारी
सुहि = सुखी
उवहि = उपाधि, माया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओहि = अवधि, मर्यादा
कुच्छि = कुक्षि, उदर, पेट
नाणि = ज्ञानी, ज्ञानवान्
रिद्धि = समृद्धिवाली
सूरि = आचार्य
सेणावइ = सेनापति
रिसि = मुनि, ऋषि
जइ = यति, साधु, भिक्षु
भत्ति = भक्ति, सेवा
मइ = मति
नरवइ = नरपति, राजा
दंडि = दण्डा धारण करने वाला
अरि = शत्रु
समाहि = समाधि
करि = हाथी
तवस्सि = तपस्वी
पाणि = प्राणवान्
रवि = सूर्य
रासि = राशि
पहि = रास्तागीर
पहि = बुद्धिमान्
आसु = आंसू
गुरु = बड़ा, पूज्य
चक्खु = आँख
जण्हु = घुटने
जंतु = प्राणी
जंबु = जामुन फल
जियसत्तु = जितशत्रु राजा
जामाउ = जामाता, दामाद
तंतु = तंतु, धागा
तरु = वृक्ष
धणु = धनुष
पसु = पशु

इन्दधणु = इन्द्रधनुष
बिंदु = बिन्द, बूंद
महु = मधु
उडु = एक विमान का नाम
कंचु = कञ्चुक, चोली
कडु = कडुआ, तिक्तरस
करेणु = हाथी
कुन्थु = तीर्थंकर का नाम
केउ = केतु, ध्वजा
गउ = बैल, वृषभ, साँड़
गरु = बड़ा
चउ = चतुर
चट्टु = लकड़ी का पात्र विशेष
चरु = पात्रविशेष
छेत्तु = काटनेवाला
हेउ = हेतु, कारण
तणु = पतला, कृश, शरीर
तेउ = अग्नि, तेज
थाणु = महादेव, शिव
दुप्पिउ = दुष्टपिता
पंगु = लंगड़ा
पडु = पटु, चतुर
कयण्णु = कृतज्ञ
दिग्घाउ = दीर्घायु
परिप्फुड = फोड़नेवाला, भेदक
पहु = प्रभु, स्वामी, परमेश्वर
पाउ = गुदा, भात, ऊख
पाणु = प्राण-वायु, श्वासोच्छ्वास
पिउ = पिता
पीलु = वृक्ष विशेष
पुरु = प्रचुर, प्रभूत, एक राजा का नाम
फरसु = कुठार, कल्हाड़ा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भिउ = एक ऋषि का नाम
मग्गु = पक्षिविशेष, मार्ग
मच्चु = मृत्यु
मणु = प्रजापति, मुनिविशेष
मन्तु = क्रोध
मरु = वायु, निर्जल प्रदेश
मेरु = पर्वत विशेष
रहु = रघु—सूर्यवंश का राजा
रिउ = शत्रु
रुरु = मृगविशेष
वाउ = वायु, पवन
विउ = विद्वान्, पंडित
विच्छु = बिच्छू, जन्तुविशेष
विज्जु = बिजली, विद्युत्

विन्हु = विष्णु,
विण्हु = विष्णु
विभु = स्वामी, परमेश्वर
विहु = चन्द्र, ब्रह्मा
वेलु = चोर
सत्तु = शत्रु, सत्त
साहु = साधु
हिंगु = हींग
हिन्दु = हिन्दू
विआलिउ = बाण
दाउ = देनेवाला
भत्तु = स्वामी
साउ = स्वादिष्ट
चारु = सुन्दर

धातुकोष

सुणइ = सुनता है
रोवइ, रुयइ = रोता है
दरिसइ = बतलाता है, दिखाता है
दिक्खइ = देखता है
दमइ = निग्रह करता है
तसइ = डरता है, त्रास पाता है
तावइ = गर्म करता है
ताडइ = ताड़ना करता है
इच्छइ = इच्छा करता है
वड्ढइ = बढ़ता है
अच्छइ = बैठता है
वच्चइ = जाता है
खिज्जइ = खिन्न होता है
वेढइ = वेष्टित करता है
रुन्धइ = रोकता है
नमइ, नवइ = झुकता है
ओमीलइ = मुद्रित होता है, बन्द होता है

ओयत्तइ = उलटता है
कंडइ = धान का छिलका अलग करता है
कड्ढइ = खींचता है
कणइ = आवाज करता है
कमइ = संगत होता है, युक्त होता है
कम्मइ = हजामत बनाता है, क्षौर कर्म करता है।
कलहइ = झगड़ा करता है
उम्मुंचइ = परित्याग करता है
उज्झावइ = बकवाद करता है
जवइ = व्यवस्था करता है
जाइ = जाता है, गमन करता है
जागरइ = जागता है, नींद छोड़ता है
जामइ = साफ करता है
जीवइ = जीता है
जुउच्छइ = घृणा करता है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जुज्झइ = युद्ध करता है लड़ाई करता है
जोअइ = प्रकाशित करता है
मग्गइ = ढूढ़ता है
नस्सइ = नष्ट होता है
तुट्टइ = टूटता है
सिव्वइ = सीता है
जिणइ = जीतता है
लुणइ = काटता है
वरइ = वरण करता है
सरइ = खिसकता है ।
जरइ = जीर्ण होना, पुराना होना
ओगाहइ = अवगाहन करता है
ओगिण्हइ = अनुज्ञापूर्वक ग्रहण करता है
ओग्गहइ = ग्रहण करता है
ओइंधइ = छोड़ देता है
ओंगणइ = अव्यक्त ध्वनि करता है
ओणंदइ = अभिनन्दन करता है
ओणमइ = नीचे नमता है
ओणझइ = नीचे लटकता है

ओभासेइ = चमकता है, प्रकाशित होता है
कज्जलावेइ = डूबता है
कढइ = उबालता है, तपाता है
कप्पइ = समर्थ होता है, कल्पना करता है
कमइ = चलता है, उल्लंघन करता है
कम्मवइ = उपभोग करता है
उल्लसइ = विकसित होता है
उब्भुअइ = उत्पन्न होता है
जलइ = जलता है
जवइ = जाप करता है, मन ही मन देवता का स्मरण करता है
जाणइ = जानता है
जिंघइ = सूंघता है
जिणइ = जीतता है, वश करता है
जुंजइ = जोड़ता है, प्रयुक्त करता है
जूरइ = खेद करता है, क्रोध करता है
झंखइ = विलाप करता है, उलाहना देता है

अब्भासो Exercise

Translate into Prakrit पाइअभासाए अणुवायं कुणन्तु

अग्नि जलती है। सिंह वन में गरजता है। कवि काव्य लिखता है। चक्रवर्त्ती दिग्विजय के लिए जाता है। योगी पहाड़ पर ध्यान करते हैं। वनस्पतियाँ पहाड़ों पर होती हैं। उसके शरीर में पीड़ा है। उसके घर में निधि है। मेरा स्वामी अच्छा व्यक्ति है। ब्रह्मा की सृष्टि सदा चलती रहती है। भिखारी भीख मांगकर पेट भरता है। शत्रु आक्रमण करते हैं। चन्द्रमा आकाश में प्रकाशित होता है। सारथी रथ चलाता है। सेठ के पास हाथी है। विष्णु रक्षा करता है। जिनेन्द्र इन्द्रियों को जीतते हैं। सेनापति सेना का संचालन करता है। तपस्वी गुफा में तप करते हैं। उच्चाधिकारी पटना में रहते हैं। पक्षी आकाश में उड़ता है। भाई अपना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिस्सा लेता है। राहगीर अपने साथ भोजन रखता है। तुम्हारी भक्ति सफल होती है। ज्ञानी कभी कष्ट नहीं पाता। सदाचारी सर्वदा आचार का पालन करता है। प्राणियों की रक्षा हम सदा करते हैं। व्यापारी व्यापार में बहुत धन कमाते हैं। गाँव का मुखिया अच्छा प्रबन्ध करता है। नेता सदा सम्मान पाते हैं। क्षत्रिय वीर होते हैं। वे सदा युद्धभूमि में वीरता दिखलाते हैं। हमारी इच्छा पढ़कर लिखने की है। मणि की चमक अच्छी होती है। उसकी आँख में रोग है। मनस्वी व्यक्ति कर्मठ होते हैं। उनका काम कभी भी समाप्त नहीं होता है। हमारे नगर के व्यापारी सुखी हैं।

उनकी आँखों से आँसू निकलते हैं। जामुन के फल काले होते हैं। मथुरा में जितशत्रु राजा राज्य करता है। मृग को मारने के लिए वह बाण चलाता है। उसके रथ पर हनुमानजी की ध्वजा है। महादेव को हमलोग प्रणाम करते हैं। इसका शरीर दुबला है। दुष्ट पिता अपने बच्चों को अधिक पीटता है। लंगड़ा आदमी कष्ट पाता है। जीवन में कृतज्ञ होना आवश्यक है। देनेवाला धन दान करता है। रघु का राज्य अयोध्या में था। परशुराम कुल्हाड़ी से लकड़ी काटता है। बिच्छू का विष चढ़ता है। शीतल वायु चल रही है। हींग की गन्ध तेज है। मृत्यु अनिवार्य होती है। प्रभु की लीला विचित्र होती है। सर्वज्ञ समस्त बातों को जानते हैं। हिन्दुओं के लिए गया पवित्र तीर्थ है। पावापुरी में दीपावली के दिन मेला लगता है। मेरु पर्वत पर कल्पवृक्ष है। उसका दामाद जैन कालेज में पढ़ता है। हाथी तालाब में कूदता है। उसका क्रोध बढ़ता है। प्राणिहिंसा में अधर्म होता है। सदाचार अमूल्य सम्पत्ति है। अध्ययन करने से विवेक की प्राप्ति होती है। मन्दिर पर ध्वजा लटकती है।

Translate into Hindi हिन्दीभासाए अणुवायं कुणन्तु

एईए चंपानयरीए नायनिउणो विक्कमो नाम राया रज्जं कुणेइ। जोव्वणे पिउणा तस्स सीलवईए-कन्नाए सह पाणिगहणं कयं। एवं तेसिं आणंदेण दिवसा गच्छंति। एयं सोउण हरिसिओ चित्तेण। न एस सुमिणओ अन्नहा परिणमइ, उव्वूहिओ (जगाया गया) पाहाउयतूरेणं (प्रातः-कालीन वाद्यों से)। कत्थ वि नयरे एगेण नरिंदेण णियणयरे आएसो दिण्णो। गाममज्झे एगो देवालओ अत्थि। पुरीए माहणा वा वइस्सा वा खत्तिया वा सुद्दा य वा नयरवासिणो जे लोगा सन्ति तेहिं देवालए पविसिअ देवं वंदित्ता गंतव्वं। एगो कुंभयारो तमाएसं सुणइ। अम्हे तं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महारायं न जाणिमो। अहं संवंधत्तणेण पुच्छामि। तया सो जिणदासो तं इसिं वंदइ। ते जणा भाणुं पेच्छन्ति। अज्ज अम्हाणं दिवसो सहसो, जं णिउपायदंसणं जायं। तया सबंधू नरिंदो सीहासणाओ उत्थाय पिउस्स पाए पडिओ। मुणि-आअमण-समाचारं लोयमुहाओ जाणिऊण (जानकर) सिग्घं तत्थ गच्छंति जणा। नरिंदो वि तस्स मुणिणो सव्वमवराहं खमेइ। इसिणो जणा मण्णन्ति। आजीवणं सो भाणुं अंचइ। तस्स सेट्ठिणो एए पुत्ता संति। दिण्णा य तेहिं किंकराण आणत्ती जहा, एयं आणेह वारुणिं। आणिय तेहिं।

ते सिग्घं इसिं पियरं च रहं समारोवेऊण (बैठाकर) वणं गच्छंति। न सोहणं कयं जं तुममेत्थमागओ। रायगिहे नयरे चत्तारि वयंसा वाणियगा सहवड्ढिया। ते भद्दबाहुस्स अंतिए धम्मं सुच्चा पव्वइया। सो तं खुड्डगं पुत्तनेहेण न कयाइ भिक्खाए हिंडावेइ। माया वि पुत्तपउत्तिं अयाणंती अइमोहेण उम्मत्तिया जाया। पावकम्मो अहं न तरामि संजमं काउं, जइ परमणसणं करेमि। अन्नं इमं सरीरं, अन्नो जीवोत्ति एव कयबुद्धी इसिणो होन्ति। ते सरीरम्मि ममत्तं छिंदंति। एत्थ एगो साहू पाहुणगो (अतिथि) आयाइ। राया तस्स मूलमागओ। तत्थ वंदिया गुरू, निसुओ धम्मो। ताहे सीहगुहाओ साहू आगओ चत्तारि मासे उववासं कुणइ। पुच्छिओ तेहिं साहूण सुहविहाराइपउत्ती। तेसिं तं वयणं सोऊण नट्ठा वाणमंतरी। सव्वे संजमे तवे चरणे उज्जुत्ता हवंति। ते न जाणंति—कयरेण मग्गेण नीयाओ। ते साहुं पुच्छंति। तओ ते रोसेण निरवराइं दीवायणरिसिं पहरंति। पायतले मम्मपएसे विद्धो जणद्दणो वेगेणं। किमम्हाणं बाहुबलं पि णत्थि। रयणीअ बहुसंधयारा अत्थि। कूरसत्ता परिभमंति समंतओ।

अन्य स्वरान्त एवं व्यञ्जनान्त पुँल्लिङ्ग शब्द तथा उनके प्रयोग

१३. संस्कृत के ऋकारान्त शब्द प्राकृत में प्रायः अकारान्त अथवा उकारान्त हो जाते हैं। यहाँ प्रमुख शब्दरूप दिये जाते हैं :—

ऋकारान्त कर्तृ शब्द—कत्तार और कत्तु

	एकवचन	बहुवचन
प०	कत्ता, कत्तारो	कत्तारा, कत्तओ, कत्तुणो
बी०	कत्तारं	कत्तारा, कत्तुणो
त०	कत्तारेण, कत्तुणा	कत्तारेहिं, कत्तिहि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	एकवचन	बहुवचन
च०	कत्तारस्स, कत्तुणो	कत्ताराणं, कत्तूण
पं०	कत्तारत्तो, कत्ताराओ, कत्तुणो	कत्ताराहिंतो, कत्तारासुंतो
छ०	कत्तारस्स, कत्तुणो	कत्ताराणं, कत्तूण
स०	कत्तारे, कत्तारम्मि, कत्तुम्मि	कत्तारेसु, कत्तूसु

भर्तृ—भत्तार, भत्तर, भत्तु शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	भत्ता, भत्तारो, भत्तरो।	भत्तुणो, भत्तरा, भत्तओ, भत्तू
बी०	भत्तारं, भत्तरं	भत्तारे, भत्तुणो
त०	भत्तरेण, भत्तुणा, भत्तारेण	भत्तारेहि, भत्तरेहि, भत्तूहि
च०	भत्तारस्स, भत्तुणो	भत्तूण, भत्तराण
पं	भत्तरत्तो, भत्तराओ, भत्तुणो	भत्ताराहिंतो, भत्तारासुंतो
छ०	भत्तरस्स, भत्तुणो	भत्तराण, भत्ताराण
स०	भत्तरे, भत्तरम्मि	भत्तरेसु, भत्तारेसु

भ्रातृ—भायर, भाउ शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	भाया, भायरो	भायारा, भाउणो
बी०	भायरं	भायरा, भाउणो
त०	भायरेण, भाउणा	भायरेहि, भाऊहि
च०	भायराय, भायरस्स, भाउणो	भायराणं, भाऊण
पं०	भायरत्तो, भायराओ, भाउणो	भायरेहिंतो, भायरेसुंतो
छ०	भायरस्स, भाउणो, भाउस्स	भायराणं, भाऊण
स०	भायरे, भायरम्मि, भाउम्मि	भायरेसु, भाऊसु

पितृ—पिउ, पिअर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	पिअरो, पिआ	पिअरा, पिउणो
बी०	पिअरं	पिअरे, पिउणो
त०	पिअरेण, पिउणा	पिअरेहि, पिऊहि
च०	पिअरस्स, पिउणो, पिउस्स	पिअराण, पिऊण
प०	पिअराओ, पिउणो, पिउरत्तो	पिअराहिंतो, पिअरासुंतो
छ०	पिअरस्स, पिउणो, पिउस्स	पिअराण, पिऊण
स०	पिअरंसि, पिअरम्मि, पिउम्मि	पिअरेसु, पिऊसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दातृ—दाउ, दायार शब्द—दाता-देनेवाले के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	दायारो, दाउणा	दायारा, दउणो
बी०	दायारं	दायारे, दाउणो
त०	दायारेण, दाउणा	दायरेहिं, दाऊहि
च०	दायारस्स, दाउणो	दायाराण, दाऊण
प०	दायाराओ, दाउणो	दायाराहिंतो, दायारेसुंतो
छ०	दायारस्स, दाउणो	दायाराण, दाऊण
स०	दायारंसि, दायारम्मि, दाउम्मि	दायारेसु, दाऊसु

१४. संस्कृत के ऐकारान्त और औकारान्त शब्द प्राकृत में अकारान्त हो जाते हैं और रूप भी अकारान्त शब्दों के समान होते हैं।

सुरै (सुरेअ) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	सुरेओ	सुरेआ
बी०	सुरेअं	सुरेआ, सुरेए
त०	सुरेण	सुरेएहिं
च०	सुरेअस्स, सुरेआय	सुरेआणं
प०	सुरेअत्तो, सुरेआओ	सुरेआहिंतो, सुरेआसुंतो
छ०	सुरेअस्स	सुरेआणं
स०	सुरेअंसि, सुरेअम्मि	सुरेएसु

ग्लौ—गिलोअ—चन्द्रमा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	गिलोओ	गिलोआ
बी०	गिलोअं	गिलोए, गिलोआ
त०	गिलोएण	गिलोएहिं
च०	गिलोअस्स, गिलोआय	गिलोआणं
पं०	गिलोअत्तो, गिलोआओ	गिलोआहिंतो, गिलोआसुंतो
छ०	गिलोअस्स	गिलोआणं
स०	गिलोअंसि, गिलोअम्मि	गिलोएसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्यञ्जनान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

१५. प्राकृत में व्यञ्जनान्त या हलन्त शब्द नहीं होते। कुछ हलन्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जनों का लोप होता है और कुछ हलन्त शब्द अजन्त—स्वरान्त के रूप में परिणत हो जाते हैं।

अप्पाण, अत्ताण, अप्प और अत्त—आत्मन् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	अप्पाणो, अप्पा, अत्तो	अप्पाणो, अत्ताणो
बी०	अप्पाणं, अत्ताणं, अत्तं	,, ,,
त०	अप्पणिआ, अप्पणा, अप्पाणेण	अप्पाणेहिं, अप्पेहि, अत्ताणेहिं
च०	अप्पाणस्स, अप्पणो, अत्तणो	अप्पाणाणं, अत्ताणाणं
प०	अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ	अप्पाणाहिंतो, अप्पाणासुंतो
छ०	अप्पाणस्स, अप्पणो, अत्तणो	अप्पाणाण, अत्ताणाणं
स०	अप्पाणम्मि, अत्ताणम्मि	अप्पाणेसु, अत्ताणेसु

राय—राजन् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	राया	रायणो, राइणो
बी०	रायं, राइणं	,, ,,
त०	राइणा, राएण, रण्णा	राएहिं, राईहिं
च०	रण्णो, राइणो, रायस्स	राईण, रायाणं
प०	रण्णो, राइणो, रायत्तो	रायाहिंतो, रायासुंतो, राइहिंतो
छ०	रण्णो, राइणो, रायस्स	राईण, रायाणं
स०	रायम्मि, राइम्मि	राईसु, राएसु

महव, महवाण—मघवन्—इन्द्र शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	महवो	महवा
बी०	महवं	महवा, महवे
त०	महवेण	महवेहिं
च०	महवणो, महवस्अ	महवाणं
पं०	महवणो, महवत्तो	महवाहिंतो, महवासुंतो
छ०	महवणो, महवत्तो	महवाणं
स०	महवे, महवम्मि	महवेसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुद्ध, मुद्धाण (मुग्ध) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	मुद्धा, मुद्धो	मुद्धा, मुद्धे
बी०	मुद्दं	मुद्धे, मुद्धा
त०	मुद्धणा, मुद्धेण	मुद्धेहिं
च०	मुद्धणो, मुद्धस्स	मुद्धाणं
पं०	मुद्धत्तो, मुद्धाओ	मुद्धाहिंतो, मुद्धासुंतो
छ०	मुद्धणो, मुद्धस्स	मुद्धाणं
स०	मुद्धम्मि, मुद्धे	मुद्धेसु

जम्मो (जन्मन्) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	जम्मो	जम्मा
बी०	जम्मं	जम्मे, जम्मा
त०	जम्मेण	जम्मेहिं
च०	जम्माय, जम्मस्स	जम्माणं
पं०	जम्मत्तो, जम्माओ	जम्माहिंतो, जम्मासुंतो
छ०	जम्मस्स	जम्माणं
स०	जम्मे, जम्मम्मि	जम्मेसु

चन्दमो—चन्द्रमस् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	चन्दमो	चन्दमा
बी०	चन्दमं	चन्दमा, चन्दमे
त०	चन्दमेण	चन्दमेहिं
च०	चन्दमाय, चन्दमस्स	चन्दमाणं
पं०	चन्दमत्तो, चन्दमाओ	चन्दमाहिंतो, चन्दमासुंतो
छ०	चन्दमस्स	चन्दमाण
स०	चन्दमे, चन्दमम्मि	चन्दमेसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हसन्तो, हसमाणो—हसत् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	हसन्तो, हसमाणो	हसन्ता, हसमाणा
बी०	हसन्तं, हसमाणं	हसन्ते, हसमाणे
त०	हसन्तेण, हसमाणेण	हसन्तेहिं, हसमाणेहिं
च०	हसन्तस्स, हसमाणस्स	हसन्ताणं, हसमाणाण
पं०	हसन्तत्तो, हसमाणत्तो	हसमाणाहिंतो, हसन्ताहिंतो
छ०	हसन्तस्स, हसमाणस्स	हसन्ताणं, हसमाणाण
स०	हसन्तम्मि, हसमाणम्मि	हसन्तेसु, हसमाणेसु

भगवन्तो—भगवत् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	भगवन्तो	भगवन्ता
बी०	भगवन्तं	भगवन्ते
त०	भगवन्तेण	भगवन्तेहिं
च०	भगवन्तस्स	भगवन्ताणं
पं०	भगवन्तत्तो, भगवन्ताओ	भगवन्ताहिंतो, भगवन्तासुंतो
छ०	भगवन्तस्स	भगवन्ताणं
स०	भगवन्तम्मि	भगवन्तेसु

प्रयोगवाक्य

मेरा भाई जैन कालेज में पढ़ता है = मज्झ भायरो जेणमहाविज्जालये पढइ ।

भाई का पुत्र बहुत रोता है = भाउणो पुत्तो बहु रोवइ ।

पिता उसके व्यवहार से खिन्न होता है=पिआ तस्स ववहारेण खिज्जइ ।

राम पिता से धन लेता है = रामो पिउणो धणं गेण्हइ ।

वह अपने पिता के साथ झगड़ता है=सो णिय पिउणा सह कलहइ ।

भाई के साथ उसका झगड़ा है = भायरेण सह तस्स कलहो अत्थि ।

मैं अपने पिता की सेवा करता हूँ = अहं णियपिअरं सेवामि ।

तुम उसके भाई को जानते हो = तुमं तस्स भायणं जाणासि ।

दाता की सदा श्रीवृद्धि होती है = दायारस्स सव्यथा इड्ढी होइ ।

वे लोग दाता के धन से जीवित हैं = ते दायारस्स धणेण जीवन्ति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दाता के यहाँ धन की कमी नहीं रहती = दायारस्स गिहे धणस्स अप्पत्ता ण वट्टइ ।

उसका भाई धान पर से छिलका हटाता है=तस्स भायारो धण्णे कंडइ।

चन्द्रमा से अमृत झरता है = गिलोअत्तो सुहा णिस्सरइ ।

झगड़ा कर वे लोग भाई का त्याग करते हैं=ते कलहित्ता भायरं उम्मुंचइ।

नलिन भाई का कहना मानता है = नलिनो भायरस्स आणं मण्णइ ।

वे अपने पिता का बहुत सम्मान करते हैं = ते णिय पिअरस्स सम्माणं करेंति ।

हम अपने दाता के प्रति श्रद्धा करते हैं = अम्हे णिय दायरं पइ सद्दहामो ।

वे अपने मालिक को मानते हैं = ते णिय भत्तरं मण्णंति ।

नारी के लिए पति ही सब कुछ है=महिलाए भत्ता एव सव्वस्सं अत्थि ।

पिता की निन्दा करनेवाला नरक जाता है = पिउणो णिन्दओ णिरयं गच्छइ ।

मैं भाई के साथ युद्ध करता हूँ = अहं भायरेण सह जुज्झेमि ।

मेरा भाई कुल को प्रकाशित करता है = मज्झ भायरो कुलं जोअइ ।

तुम्हारा पिता घर की व्यवस्था करता है = तुज्झ पिआ घरं जवइ ।

नलिन पिता के साथ घूमता है = नलिनो पिअरेण सह भमइ ।

नलिन भाई का आदर करता है = नलिनो भायरस्स सम्माणं करेइ ।

उसका पिता तुम्हारे घर आता है=तस्स पिआ तुज्झ घरं आगच्छइ ।

हम अपने घर में दीपक जलाते हैं = अम्हे णिवघरम्मि दीवा जोअमो ।

तुम्हारे पिता सदा झख मारते हैं = तुज्झ पिआ सव्वया झंखइ ।

सभी लोग आत्मा की उन्नति करते हैं = सव्वे जणा अप्पणो उण्णइं करेंति ।

आत्मा के समान अन्य कोई मित्र नहीं है = अत्तणो समं अण्णमित्तं णत्थि ।

वे आत्मा का ध्यान करते हैं = ते अत्तणं झाअन्ति ।

तुम आत्मा की शक्ति का विकास करते हो=तुमं अत्तणो सत्तिं विअससि।

मैं आत्मा की आवाज को सुनता हूँ = अहं अत्तणो सद्दं सुणेमि ।

मैं आत्मा की चिन्ता करता हूँ = अहं अत्तणो चिंतं करेमि ।

वे आत्मा के द्वारा इन्द्रियों को जीतते हैं = ते अप्पाणेण इंदियाणि जिणंति ।

आत्मा से कर्मबन्धन अलग होता है=अप्पाणत्तो कम्मबंधणं पिधं हवइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्मा का ध्यान ही सबसे बड़ा ध्यान है = अत्तणो झाणं सव्वाहियं झाणं अत्थि।

वे लोग एकान्त में आत्मा का जाप करते हैं=ते एआन्ते अप्पाणं जवंति।

वह अपनी आत्मा पर ही क्रोध करता है = सो णिय अप्पम्मि एव कोवं करेइ।

वह अपनी आत्मा के कर्मों का उपभोग करता है=सो णिय अत्तणो कम्मं उवभुंजइ।

वे अपनी आत्मा का उद्धार करते हैं=ते णिय अप्पाणं उद्धरंति।

राजा का भवन ऊंचा है=राइणो पासादो उत्तुंगो अत्थि।

राजा के कर्मचारी सावधान हैं=राइणो कम्मअरा सावहाणा सन्ति।

राजा का विचार बहुत अच्छा है=रण्णो वियारो उत्तमो अत्थि।

राजा का प्रधान मन्त्री चतुर है=रण्णो पहाणो णिउणो अत्थि।

राजा के ऊपर सभी का ध्यान है = रायोवरि सव्वाणं झाणं अत्थि।

वहाँ एक राजा रहता था = एगो राया तत्थ णिवसइ।

उसके दरबार में एक कवि है = तस्स रायसहाए एगो कइ अत्थि।

वह बहुत ही गरीब है=सो अईव दरिद्दो अत्थि।

वह नित्य राजा को कविता सुनाता है=सो णिच्चं राइणं कव्वं सावइ।

राजा प्रसन्न होकर उसे पुरस्कार देता है = राया पसण्णो होइउं तस्स धणं देइ।

राजा के पास एक घोड़ा है = राइणो एगो घोडओ अत्थि।

राजा घोड़े को प्यार करता है = राया घोडअं पीइं करेइ।

आप कविता बनाते हैं = भवन्तो कव्वं रयइ।

आपसे मेरा पुराना पहिचान है = भवन्तेण सह अम्हाणं पुरायणो परियओ अत्थि।

पुण्यवान् के घर सभी पहुँचते हैं=पुण्णमन्ताणं गिहे सव्वे जणा पहुच्चंति।

धनवान् की सभी प्रशंसा करते हैं=धणमन्ताणं सव्वे पसंसंति।

आपलोग क्या बकवाद करते हैं = भवन्तो किं उल्लावइ।

आज हम आपका स्वागत करते हैं = अज्ज अम्हे भवन्ताणं अहिणं-दणं करिमो।

हँसते हुए लोगों को हम जानते हैं = हसमाणे जाणाणं अम्हे जाणिमो।

चन्द्रमा की चाँदनी छिटकी है=चन्दमस्स जोण्हा विकीण्णा अत्थि।

इनका यश सर्वत्र व्याप्त है = ताणं जसो सव्वत्थ वित्थिण्णो अत्थि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्दकोष

जुआो, जुवाणो = युवक
बम्हो, बम्हाणो = ब्राह्मण, ब्रह्मा
अद्धो, अद्धाणो = मार्ग
उच्छो, उच्छाणो = बैल
गावो, गावाणो = पत्थर, पाषाण
पुसो, पुसाणो = सूर्य
तक्खो, तक्खाणो = बढई
सुकम्मो, सुकम्माणो = अच्छा कर्म करने वाला
सो, साणो = कुत्ता
नम्मो = नर्म
मम्मो = मर्म
कम्मो = कर्म
अहो = अर्हन्
पम्हो = अक्षिलोम, आंख के बाल
उप्पलो = उत्पल, कमल
कुम्पलो = कुड्मल, कोंपल
किण्हो = कृष्ण
खग्गो = खड्ग, तलवार
थंभो, खम्भो = स्तम्भ
चेइओ, चइत्तो = मन्दिर
जम्मो = जन्म
छिद्दो = छिद्र
जसो = यश
चिइच्छओ = चिकित्सक
छप्पओ = पट्पद्, भौंरा
जुग्गो, जुम्मो = युग्म
णडालो, णिडालो = कपार, ललाट
तूह, तित्थो = तीर्थ
दुआरो, दुवारो, दारो = द्वार
देवउलो = देवकुल
निग्गहो = निग्रह, दमन, नाश
सणेहो, णेहो = प्यार
पउमरहो = पद्मरथ
भवन्तो = आप
पक्खो = पक्ष
परिमाणो = माप
पुव्वण्हो = पूर्वाह्ण
पोक्खरो = पुष्कर
बोरो = बेर, बदर
मज्जारो, मज्जरो = बिलाव, बिल्ली
मज्झो = मध्य
मरगयो = मरकत
मरहट्ठो = महाराष्ट्र
मसाणो = श्मशान
मोग्गरो = मुद्गर
रयण-दिओ = रत्नदीप
लग्गो = लग्न
वक्कलो = वल्कल
वग्घो = व्याघ्र
वच्छो, रुक्खो = वृक्ष
वरिसो = वर्ष
विग्घो = विघ्न
विज्जो, विउसो = विद्वान्
विप्पओ = विप्लव, उथल-पुथल
वीरियो = वीर्य, शक्ति
वेज्जो = वैद्य
सव्वज्जो = सर्वज्ञ
सिप्पी = शिल्पी
सिलोओ = श्लोक
सुदरिसणो, सुदंसणो = सुदर्शन, देखने लायक
सुरट्ठो = सौराष्ट्र, गुजरात
सेज्जा = शय्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुन्देरं, सुन्दरिअं = सौन्दर्यं
सोरिय = शौर्य
उत्तिमो = उत्तम

आसत्तो = आसक्त
परिट्ठिओ = परिस्थित

अब्भासो Exercise

Translate into Hindi हिन्दीभासाए अणुवायं करेन्तु

भो कुमार. पुच्छामि अहं भवन्तं, किमेत्थ जीवलोए सुपुरिसेण मित्तवच्छलेण होयव्वं किं वा नहि। कुमारेण भणियं। भो साहु पुच्छियं, साहेमि भवओ। एत्थ खलु तिविहो मित्तो हवइ। तं जहा—अहमो, मज्झिमो, उत्तिमो त्ति। ता अलमिमीए अइपरमत्थचिन्ताए। एत्थन्तरम्मि समागओ महुसमओ, वियम्भिया वणसिरी। तओ राया जाव धम्मं सुणित्ता कीरवत्तंतं पुच्छइ। राइणा तीए संमुहं भणिअं। एवं रायभणिअं सुणित्ता संवेग-भाविअ-मणा भणइ। रायावि खणेण अदिस्सो होइ। अप्पाणं जो जाणइ, सो सव्वं जाणइ। अत्थि कामरूवविसए मयणउरं नाम नयरं। तत्थ पज्जुन्नाहिहाणो राया। रई नाम से भारिया। अत्थि खलु केइ चत्तारि पुरिसा। राइणा चिन्तियं। भोयनरिंदस्स अवंतीनयरीए देवसम्मो विण्हु-सम्मो अ नाम माहणा दुण्णि भायरा विउसवरा संति। लच्छी—सरस्सईण एगत्थठाणाभावाओ ते विउसा अईव निद्धणा संति। रायपासाए पच्छण्णं पवेसिआ। पल्लंगसमीवम्मि एगो मक्कडो हत्थे असिं घेत्तूण सावहाणो नरिंदं रक्खइ। ताहे पल्लंगुवरिं एगो सप्पो मंदं मंदं संचरमाणो निग्गओ। तस्स छाया नरिंदोवरि पडिया, तं दट्ठूण मक्कडो सप्पबुद्धीए नरिंदं पहरिउं लग्गो। तया ते विउसा तारिसं असमंजसं दट्ठूण सिग्घयरं सक्कडं निग्गहिउं लग्गा। मक्कडो वि असिं घेत्तूण तेहिं सह जोद्धुं पउत्तो।

तओ नरिंदो चिंतेइ—'मुरुक्खो मक्कडो अत्थि, अणेण अप्पणो रक्खा किल अप्पवहाइ होइ। जइ चोरिकत्थं एए पंडिआ मज्झ मंदिरे न आगच्छंता, तया हं एएण कविणा अवस्सं हओ होंतो। ऊओ अए विउसा सक्कारारिहा चेव'। तओ विउसे कहेइ—तुम्हाणं जं इट्ठं, तं मग्गेह, एवं कहित्ता बहुधणं ताणं दाविऊण विसज्जिआ। पच्छा राइणा मक्कडाओ अप्प-रक्खणं चत्तं ति।

हे महाराय! अज्ज भीमसेणभाया विजयढक्कं वाएइ। धम्मपुत्तो भीमसेणं बोल्लाविऊण पुच्छइ—हे भायर! अज्ज को अउव्वो देसो केण विजिओ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीलवई दासीहत्थेण रहे चडंतं तं पाडेइ। पुणरवि चाडिउं आगच्छइ, एवं पुणरवि दासी धक्काए तं पाडेइ। सो रुयंतो तत्थ ठिओ। जो सहसा अविआरिअं कज्जं करेइ, सो पच्छातावं करइ। भोयणावसरे सो अप्पाणं विम्हरइ। राइणो सहाए अणेया णरा णिवसन्ति। ते परोप्परं कलंहति। खत्तियउत्तो सम्माणिओ, पाहुडं तस्स दिण्णं।

Translate into Prakrit पाइअभासाए अणुवायं कुणन्तु

भाई का लड़का पटना जाता है। पिता के घर में हरिमोहन रहता है। राजा भाई को बहुत मानता है। मेरे पिता स्कूल में अध्यापक हैं। सिंहपुरी में मेरे पिता का मन्दिर है। धर्मशाला में मेरा भाई ठहरता है। मैं गया में अपने भाई के साथ रहता हूँ। वे लोग पिता का बहुत सम्मान करते हैं। हम लोग पिता का इलाज पटना में कराते हैं। आरा में मेरा भाई रहता है। दिलीप का यश सर्वत्र व्याप्त है। धन से ही बड़े-बड़े काम सम्पन्न होते हैं। दाता को सभी आशीर्वाद देते हैं। धन की शोभा दान से होती है। मैं अपनी पुस्तक पिता को देता हूँ। पिता की कलम अच्छी नहीं है। यज्ञदत्त का पिता दरिद्र है और धर्मदत्त का पिता धनी है। इन्द्र असुरों को मारता है।

मैं अपनी आत्मा का चिन्तन करता हूँ। तुम्हारी आत्मा पाप से डरती है। तुम आत्मा का आदेश मानते हो। हम अपनी आत्मा की अन्तर्ध्वनि को पहचानते हैं। हम लोग आत्मा में विचरण करते हैं। सभी प्राणियों की आत्माएँ समान हैं। आत्मापराधरूपी वृक्ष के पुण्य और पाप दोनों फल हैं। आत्मा का ध्यान सभी योगी करते हैं। आत्मादेश को हम सभी स्वीकार करते हैं।

राजा की सेना आक्रमण करती है। सेनापति राजा की आज्ञा का पालन करता है। विक्रमादित्य बहुत ही प्रतापी राजा है। उसके दरबार में बड़े-बड़े कवि रहते हैं। उज्जैनी में विक्रमादित्य रहता था। काशीराज बड़े विद्वान् हैं। राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि मानते हैं। राजाओं के दान से समाज के अनेक कार्य सम्पन्न होते हैं। इन्द्र जल का देवता है। मूर्ख का बल सदा मूर्खता से प्रकट होता है। मूर्ख व्यक्ति दूसरों को कष्ट पहुँचाता है। उस मूर्ख के पास बहुत सी गायें हैं। इन्द्र गायों की रक्षा करता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वह जन्म से अन्धा है। उसका जन्म श्रेष्ठ कुल में हुआ है। चन्द्रमा से अमृत निकलता है। चाँदनी रात बहुत प्यारी होती है। चन्द्रमा की किरणें शीतल होती हैं। उसका मुख चन्द्रमा के समान है। चन्द्रमा आताप को शान्त करता है। चन्द्रमा को लोग कलंकी कहते हैं।

हँसती हुई लड़की घर जाती है। तुमने उस हँसते हुए लड़के को पीटा है। मैं आपको प्रणाम करता हूँ। आपका निवास कहाँ है। आपके पड़ोस में कौन-कौन रहते हैं। आपको मेरा कहना मानना चाहिए। हम लोग आपके अनुचर हैं। आपका प्रताप कौन नहीं जानता है। आपको किसने यह पुस्तक दी है। चन्द्रमा से तुमको शिक्षा मिलती है। तालाव में जल बहुत है। हमारे गाँव में आपका खेत है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चउत्थो पवाढओ Lesson 4

स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप और प्रयोग

१६. स्त्रीलिङ्ग शब्दों से पर में आनेवाले जस् और शस् के स्थान में अर्थात् प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में उ और ओ प्रत्यय जोड़े जाते हैं और इनसे पूर्व के ह्रस्व स्वर को विकल्प से दीर्घ हो जाता है।

१७. स्त्रीलिङ्ग में तृतीया विभक्ति एकवचन, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी के एकवचन में अ, इ और ए प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

१८. द्वितीया विभक्ति के एकवचन में अन्तिम दीर्घ स्वर को विकल्प से ह्रस्व होता है।

१९. स्त्रीलिङ्ग शब्दों में दीर्घ ईकारान्त शब्दों की रूपावली में प्रथमा एकवचन, प्रथमा बहुवचन और द्वितीया के बहुवचन में विकल्प से आ प्रत्यय जोड़ा जाता है।

२०. सम्बोधन में आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों में आ के स्थान पर एत्व होता है।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों में जोड़े जानेवाले विभक्ति चिह्न

	एकवचन	बहुवचन
प०	(लुक्)	उ, ओ, (लुक्)
बी०	ं	,, ,, ,,
त०	अ, इ, ए	हि, हिं, हिँ
च०	अ, इ, ए	ण, णं
पं०	अ, इ, ए, त्तो, ओ, उ	त्तो, ओ, उ, हिंतो, सुंतो
छ०	अ, इ, ए	ण, णं
स०	अ, इ, ए	सु, सुं
सं०	(लुक्)	उ, ओ, (लुक्)

लदा—लता शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	लदा	लदा, लदाओ, लदाउ
वी०	लदं	,, ,, ,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	एकवचन	बहुवचन
त०	लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाहि–हिं–हिं
च०	लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाण-णं
पं०	लदाए, लदत्तो, लदाओ	लदाहिंतो, लदासुंतो
छ०	लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाण, लदाणं
स०	,, ,, ,,	लदासु–सुं
सं०	हे लदे, हे लदा	हे लदा, हे लदाओ, हे लदाअ

मालाशब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	माला	मालाउ, मालाओ, माला
बी०	मालं	मालाउ, मालाओ, माला
त०	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाहि–हिं–हिं
च०	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाण–णं
पं०	मालाअ, मालाए, मालत्तो, मालओ	मालाहिंतो, मालासुंतो
छ०	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाण–णं
स०	,, ,, ,,	मालासु–सुं
सं०	माले, माला	मालाओ, मालाउ, माला

छिहा–स्पृहा–अभिलाषा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	छिहा	छिहाउ, छिहाओ, छिहा
बी०	छिहं	,, ,,
त०	छिहाअ, छिहाइ, छिहाए	छिहाहि–हिं–हिं
च०	,, ,, ,,	छिहाण-णं
पं०	छिहाअ, छिहाए, छिहत्तो, छिहाओ	छिहाहिंतो, छिहासुंतो
छ०	छिहाअ, छिहाए, छिहाइ	छिहाण–णं
स०	,, ,, ,,	छिहासु-सुं
सं०	छिहे, छिहा	छिहाउ, छिहाओ, छिहा

हलिद्दा—हरिद्रा (हल्दी) के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	हलिद्दा	हलिद्दाउ, हलिद्दाओ, हलिद्दा
वी०	हलिद्दं	,, ,, ,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	एकवचन	बहुवचन
त०	हलिद्दाअ, हलिद्दाइ, हलिद्दाए	हलिद्दाहि-हिं-हिँ
च०	,, ,, ,,	हलिद्दाण-णं
पं०	,, ,, हलिद्दत्तो, हलिद्दाओ	हलिद्दाहिंतो, हलिद्दासुंतो
छ०	हलिद्दाअ, हलिद्दाए, हलिद्दाइ	हलिद्दाण-णं
स०	,, ,, ,,	हलिद्दासु-सुं
सं०	हलिद्दे, हलिद्दा	हलिद्दाअ, हलिद्दाओ, हलिद्दा

मट्टिआ—मृत्तिका—मिट्टी के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	मट्टिआ	मट्टिआउ, मट्टिआओ, मट्टिआ
बी०	मट्टिअं	,, ,, ,,
त०	मट्टिआअ, मट्टिआइ, मट्टिआए	मट्टिआहि-हिं-हिँ
च०	मट्टिआअ, मट्टिआइ, मट्टिआए	मट्टिआण-णं
पं०	,, मट्टिअत्तो मट्टिआओ	मट्टिआहिंतो, मट्टिआसुंतो
छ०	मट्टिआए, मट्टिआइ, मट्टिआअ	मट्टिआण-णं
स०	,, ,, ,,	मट्टिआसु-सुं
सं०	हे मट्टिए, मट्टिआ	हे मट्टिआओ, मट्टिआउ, मट्टिआ

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग मइ (मति) के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	मई	मईउ, मईओ, मई
बी०	मइं	,, ,, ,,
त०	मईअ, मईआ, मईए	मईहि-हिं-हिँ
च०	,, ,, ,,	मईण मईणं
पं०	,, ,, ,, मइत्तो, मईओ,	मईहिंतो, मईसुंतो
छ०	मईआ, मईए, मईइ	मईण, मईणं
स०	,, ,, ,,	मईसु-सुं
सं०	हे मई, मइ	हे मईउ, मईओ, मई

मुत्ति (मुक्ति)—मोक्ष के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	मुत्ती	मुत्तीउ, मुत्तीओ, मुत्ती
बी०	मुत्तिं	,, ,, ,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	एकवचन	बहुवचन
त०	मुत्तीआ, मुत्तीए, मुत्तीइ	मुत्तीहि-हिं-हिँ
च०	,, ,, ,,	मुत्तीण णं
पं०	,, मुत्तितो, मुत्तीओ	मुत्तीहिंतो, मुत्तीसुंतो
छ०	मुत्तीए, मुत्तीइ, मुत्तीआ	मुत्तीण-णं
स०	,, ,, ,,	मुत्तीसु-सुं
सं०	हे मुत्ती, मुत्ति	मुत्तीउ, मुत्तीओ, मुत्ती

राइ (रात्रि) के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	राई	राईओ, राईउ, राई
बी०	राइं	,, ,, ,,
त०	राईआ, राईए, राईइ	राईहि-हिं-हिँ
च०	राईआ, राईए, राईइ	राईण-णं
पं	,, ,, ,, राइत्तो, राईओ	राईहिंतो, राईसुंतो
छ०	राईअ, राईए, राईइ	राईण-णं
स०	,, ,, ,,	राईसु-सुं

दीर्घ इकारान्त लच्छी (लक्ष्मी) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	लच्छी, लच्छीआ	लच्छीओ, लच्छीआ
बी०	लच्छिं	,, ,,
त०	लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए	लच्छीहिं, लच्छीहि
च०	,, ,, ,,	लच्छीण-णं
पं०	,, ,, लच्छित्तो	लच्छीहिंतो, लच्छीसुंतो
छ०	लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए	लच्छीण-णं
स०	,, ,, ,,	लच्छीसु-सुं
सं०	हे लच्छि	हे लच्छीआ, लच्छीओ

रुप्पिणी (रुक्मिणी) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	रुप्पिणी	रुप्पिणीओ
बी०	रुप्पिणिं	रुप्पिणीओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	एकवचन	बहुवचन
त०	रुप्पिणीए	रुप्पिणीहिं
च०	,,	रुप्पिणीण—णं
पं०	,, रुप्पिणित्तो	रुप्पिणीहिंतो
छ०	रुप्पिणीए	रुप्पिणीण—णं
स०	,,	रुप्पिणीसु
सं०	हे रुप्पिणि	हे रुप्पिणीओ

वहिणी—(भगिनी)—बहिन के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	वहिणी	वहिणीओ
वी०	वहिणिं	,,
त०	वहिणीए	वहिणीहिं
च०	वहिणीए	वहिणीण
पं०	,, , वहिणित्तो	वहिणीहिंतो
छ०	वहिणीए	वहिणीण
स०	वहिणीए	वहिणीसु
सं०	हे वहिणि	हे वहिणीओ

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग धेणु शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	धेणू	धेणूओ
वी०	धेणुं	,,
त०	धेणूए	धेणूहिं
च०	धेणूए	धेणूण
पं०	,, धेणुत्तो	धेणूहिंतो
छ०	धेणूए	धेणूण—णं
स०	,,	धेणूसु
सं०	हे धेणू	धेणूओ

तणु—शरीर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	तणू	तणूओ
वी०	तणुं	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	एकवचन	बहुवचन
त०	तणूए	तणूहिं
च०	,,	तणूण-णं
पं०	तणूए, तणुत्तो	तणूहिंतो
छ०	तणूए	तणूण-णं
स०	तणूए	तणूसु
सं०	हे तणू	तणूओ

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग वहू-वधू के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	वहू	वहूओ
बी०	वहुं	,,
त०	वहूए	वहूहिं
च०	वहूए	वहूण-णं
पं०	वहूए, वहुत्तो	वहूहिंतो
छ०	वहूए	वहूण-णं
स०	वहूए	वहूसु
सं०	हे वहु	हे वहूओ

सासू (श्वश्रू)—सास शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	सासू	सासूओ
बी०	सासुं	सासूओ
त०	सासूए	सासूहिं
च०	सासूए	सासूण-णं
पं०	सासूए, सासुत्तो	सासूहिंतो
छ०	सासूए	सासूण-णं
स०	सासूए	सासूसु

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग माआ (मातृ)=माता शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	माआ	माआओ, माआउ
बी०	माअं	,, ,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	एकवचन	बहुवचन
त०	माआए, माआइ	माआहि-हिं-हिँ
च०	,, ,,	माआ-णं
पं०	माआए, माअत्तो	माआहिंतो, माआसुंतो
छ०	माआए, माआइ	माआए-णं
स०	माआए	माआसु-सुं
सं०	हे माआ	माआओ

ससा (स्वसृ)–बहिन शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	ससा	ससाओ, ससाउ
बी०	ससं	,, ,,
त०	ससाए, ससाइ	ससाहि–हिं–हिँ
च०	ससाए, ससाइ	ससाण–णं
पं०	ससाए, ससात्तो	ससाहिंतो, ससासुंतो
छ०	ससाए	ससाण–णं
स०	ससाए	ससासु–सुं
सं०	हे ससा	हे ससाओ

णणन्दा (ननन्द)–ननद शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	णणन्दा	णणन्दाओ
बी०	णणन्दं	,,
त०	णणन्दाए	णणन्दाहिं
च०	णणन्दाए	णणन्दाण–णं
पं०	णणन्दाए, णणन्दत्तो	णणन्दाहिंतो
छ०	णणन्दाए	णणन्दाण–णं
स०	णणन्दाए	णणन्दासु
सं०	हे णणन्दा	णणन्दाओ

माउसिआ (मातृष्वसृ)–मउसी शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	माउसिआ	माउसिआओ
बी०	माउसिअं	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	एकवचन	बहुवचन
त०	माउसिआए	माउसिआहिं
च०	माउसिआए	माउसिआणं
पं०	माउसिआए माउसिअत्तो	माउसिआहिंतो
छ०	माउसिआए	माउसिआणं
स०	माउसिआए	माउसिआसु
सं०	हे माउसिआ	हे माउसिआओ

धूआ (दुहितृ)-बेटी शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	धूआ	धूआओ
बी०	धूअं	धूआओ
त०	धूआए	धूआहिं
च०	धूआए	धूआणं
पं०	धूआए, धूअत्तो	धूआहिंतो
छ०	धूआए	धूआणं
स०	धूआए	धूआसु
सं०	हे धूआ	हे धूआओ

ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग गावी (गो)-गाय शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पं०	गावी	गावीओ
बी०	गविं	गावीओ
त०	गावीए	गावीहि
च०	गावीए	गावीणं
पं०	गावीए, गावित्तो	गावीहिंतो
छ०	गावीए,	गावीणं
स०	गावीएं	गावीसु
सं०	हे गावी	हे गावीओ

औकारान्त स्त्रीलिङ्ग नावा (नौ) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	नावा	नावाओ
बी०	नावं	नावाओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	एकवचन	बहुवचन
त०	नावाए	नावाहिं
च०	नावाए	नावाण–णं
पं०	नावाए, नावत्तो	नावाहिंतो
छ०	नावाए	नावाण–णं
स०	नावाए	नावासु

प्रयोगवाक्य

वह माला धारण करता है=सो मालं धारइ।
वे लताओं को काटते हैं=ते लदाओ छिन्नंति।
हम लताओं से माला बनाते हैं=अम्हे लदाहिं मालं णिव्वत्तिमो।
लताएँ वृक्ष को वेष्टित करती हैं=लदाओ विच्छं वेढंति।
तुम लताओं का क्या उपयोग करते हो=तुमं लदाणं किं उवओगं करेसि।
लताओं से घर की शोभा होती है=लदाहिं घरस्स सोहा हवइ।
माली मालाएँ बनाता है=माली मालाओ रयइ।
माली लताओं को सुन्दर बनाता है=माली लदाणं सुन्देरं करेइ।
बालक लताओं को तोड़ता है=बालओ लदं तुट्टइ।
मालाओं से घर सजाया जाता है=मालाहिं गिहं सज्जइ।
नेताओं के गले में मालाएँ शोभित होती हैं = नाऊणं कंठम्मि मालाओ सोहंति।
वे हमको मालाएँ देते हैं=ते अम्हो मालाओ देंति।
आरा के लोग नेहरूजी को मालाएँ पहनाते हैं=आरानयरस्स जना नेहरुं मालाओ परिहिन्ति।
जैन कालेज के छात्र कुलपति को माला पहनाते हैं=जेणमहाविज्जालयस्स छत्ता कुलवइं मालं परिहिन्ति।
पुष्पों से मालाएँ तैयार होती हैं=फुल्लेहिं मालाओ णिम्माणं हवइ।
मालाओं में से सुगन्ध आती है=मालाहिंतो सुयंधो आयइ।
मालाओं की शोभा अपूर्व होती है=मालाणं सोहा अपुव्वा हवइ।
नागरिक लोग मालाओं का अधिक व्यवहार करते हैं=पउरजणा मालाणं अहियं ववहारं कुणन्ति
हम लोग लताओं से फूल चूनते हैं=अम्हे लदाहिंतो फुल्लं चिणिमो।
फूलों से मालाएँ बनाते हैं=फुल्लेहिं मालाओ रयंति।
उसके गले में मालाएँ शोभित हैं=तस्स कंठम्मि मालाओ सोहंति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शकुन्तला पुष्पमाला धारण करती है=सउंतला पुप्फमालं धारइ।
हम लोग लताओं की व्यवस्था करते हैं=अम्हे लदाए पबंधं करिमो।
वह लताओं के लिए माली को ताड़ना देता है=सो लदाणं मालिं ताडइ।
तुम लोग मालाओं के लिए झगड़ते हो=तुम्ह मालाणं जुज्झित्था।
वे लड़के मालाओं को सूंघते हैं=ते वालआ मालाओ जिंघंति।
तुम्हारे वगीचे में मालती के पुष्प हैं=तुम्हाणं उज्जाणे जाइ-पुप्फाणि सन्ति।
हमारे यहाँ शौकीन माला पहनते हैं=अम्हाणं छइल्ला मालं धारेन्ति।
मालाओं से वन्दनवार बनाते हैं=मालाहिं वंदणवारं णिम्मइ।
वे मालाओं की अभिलाषा करते हैं=ते मालाणं छिहा करेंति।
हल्दी का रंग पीला होता है=हलिद्दाए पीअं रंगं होइ।
दाल में हल्दी डाली जाती है=सूवम्मि हलिद्दा पडइ।
हल्दी में शक्ति रहती है=हलिद्दासु सत्ती णिवसइ।
हम लोग दाल में हल्दी खाते हैं=अम्हे सूवम्मि हलिद्दं खादेमो।
उनकी माला में पीले पुष्प हैं=ताणं मालासु पीअं फुल्लं अत्थि।
मिट्टी से घड़ा बनता है = मट्टिआए कलसं णिम्मइ।
मिट्टी का उपयोग सभी करते हैं=मट्टिआए ववहारं सव्वे कुणन्ति।
मिट्टी में अन्न पैदा होता है=मिट्टिआसु अण्णं उप्पण्णं हवइ।
मिट्टी का घड़ा अच्छा होता है=मिट्टिआए घडो वरो हवइ।
बच्चे मिट्टी में खेलते हैं=बालआ मिट्टिआए खेलंति।
मिट्टी के अनेक उपयोग हैं=मिट्टिआए अणेया उवओगा संति।
उसकी मति अच्छी है=तस्स मई उत्तमा अत्थि।
बुद्धि से काम करने पर सफलता मिलती है=मईए कज्जकरणे सहलआ मिलइ।

मुक्ति के लिए सभी प्रयत्न करते हैं=मुत्तीए सव्वे पयत्तं कुणन्ति।
वे मुक्ति चाहते हैं=ते मुत्तिं इछंति।
मुक्ति में सिद्ध रहते हैं=मुत्तीए सिद्धा णिवसंति।
मुक्ति से कोई लौटता नहीं है=मुत्तित्तो को वि ण पडिवच्चइ।

मुक्ति में परम सुख है=मुत्तीए परमं सुहं अत्थि।
रात्रि होती है=राई हवइ।
रात्रि में सभी सोते हैं=राईए सव्वे सुप्पंति।
रात्रि में चकवा-चकवी का वियोग होता है=राईए चक्कवाय-चक्कवीईए विओगो हवइ।
गर्मी के दिनों में रात छोटी होती है = गिह्मम्मि राई लहु होइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्यार्थी रात में पढ़ते हैं=विज्जत्थिणो राइए पढन्ति ।
शरत् के दिनों में रातें बड़ी होती हैं=सरअदिहेसु राईओ महअरा हवन्ति ।
रात्रि में सभी काम बन्द हो जाते हैं = रहिए सव्वे कज्जा रुन्धंति ।
हम लोग रात में काम नहीं करते हैं=अम्हे राईए कज्जं ण कुणिमो ।
देवता लोग रात्रि में संचरण करते हैं = देवा राईए संचरंति, विह-
रंति वा ।

हम लोग रात्रि में हल्दी नहीं खाते=अम्हे राईए हलिदं न खादिमो ।
लक्ष्मी धनिकों के यहाँ निवास करती हैं=लच्छी धणीणं गेहे णिवसइ ।
लक्ष्मी चंचला होती है=लच्छी चंअला हवइ ।
लक्ष्मी से सभी काम होते हैं = लच्छीए सव्वाणि कज्जाणि हवंति ।
वह लक्ष्मी की पूजा करता है = सो लच्छिं पुज्जइ ।
हम लोग लक्ष्मी की उपासना करते हैं = अम्हे लच्छिं उवासिमो ।
रुक्मिणी का सभी सम्मान करते हैं = सव्वे रुप्पिणिं सम्माणयंति ।
वह रुक्मिणी से अपनी माला मांगता है=सो रुप्पिणीए णियमालं मग्गइ।
रुक्मिणी कालेज में पढ़ती है = रुप्पिणी विज्जालयम्मि पढइ ।
बहिन घर का काम करती है = बहिणी घरकज्जं करइ ।
बहिन के घर भाई जाता है = बहिणीए गिहम्मि भाया गच्छइ ।
बहिन से वह रुपये मांगता है = बहिणीए सो रुप्पाणि मग्गइ ।
भाई बहिन को अपने घर ले जाता है = भायरो बहिणिं णियघरे णेइ ।
भाई बहन से रुपये लेता है = भाया बहिणित्तो रुप्पाणि गेण्हइ ।
हम बहन को वस्त्र देते हैं = अम्हे बहिणीए वत्थं देमो ।
बहन की गाय दूध देती है = बहिणीए धेणू दुद्धं देइ ।
श्याम बहिन से घृणा करता है = सामो बहिणिं गरहइ ।
बहिन भाई को प्यार करती है = बहिणी भायरं णेहं कुणइ ।
वह अपनी गाय को छोड़ता है = सो णियधेणुं पजहइ ।
भाई बहिन को जगाता है = भायरो बहिणिं जागरइ ।
गाय का दूध मीठा होता है = धेणूए दुद्धं महुरं हवइ ।
हम लोग गाय का दूध पीते हैं = अम्हे धेणूए दुद्धं पिवमो ।
गाय का बछड़ा अच्छा है = धेणूए वच्छो उत्तमो अत्थि ।
वह शरीर की मैल को धोता है = सो तणुमलं पक्खालइ ।
शरीर के द्वारा सभी काम होते हैं = तणूए सव्वकज्जाणि हवंति ।
उसका शरीर अस्वस्थ है = तस्स तणू असत्थो अत्थि ।
उसकी बहुएँ सेवा करती हैं = तीए बहूओ सेवं कुणन्ति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसकी वहु लड़ती है=तीए वहू कलहइ।

वहू और सास का झगड़ा प्रसिद्ध है=वहू-सासूणं कलहो पसिद्धो अत्थि।

वह सास की सेवा करती है = सा सासुं सेवइ।

वह अपनी सास से पूछती है = सा णिय सासुं पुच्छइ।

उसकी वहू वकवाद करती है = तीए वहू आलावं करइ।

उसको वहू से बहुत सुख है = तीए वहुत्तो बहुसुखं अत्थि।

बहुओं को सासुओं की सेवा करनी चाहिए = वहुओ सासूणं सेवा कायव्वा।

माता मुझ को प्यार करती है = माआ ममं सिणेहं करइ।

वह माता को प्रणाम करता है = सो माऊं माआए वा णमइ।

माँ को सभी पूजते हैं = सव्वे माऊं अच्चंति।

माता घर को साफ करती है = माआ घरं जामइ।

माता की चरणधूलि पवित्र होती है = माआए चरणधूली पुण्णा होइ।

वह बहिन का शब्द सुनता है = सो ससाए सद्दं सुणइ।

वह पुस्तक दिखलाता है = सो पोत्थयं दरिसइ।

माता बुरी प्रवृत्तियों का निग्रह करती है = माआ दुट्ठपउत्तीए निग्गहणं करेइ।

वह माता के सामने विनय करता है=सो माआए संमुहे विणयं करेइ।

उसकी नन्द विलाप करती है=तीए णणन्दा झंखइ।

गौरी नन्द को अपने वश करती है = गौरी णणन्दाए णियाधीणं करइ।

नन्द के घर में दस आदमी रहते हैं=णणन्दाए गिहे दह जणा णिवसन्ति।

मौसी का प्यार उसे मिलता है = माउसिआए सिणेहं तं मिलइ।

वह मौसी के घर जाती है=सा माउसिआए घरं गच्छइ।

मौसी की लड़की मेरी बहन है=माउसिआए धूआ मम बहिणी अत्थि।

तुम गाय से दूध दुहते हो = तुमं धेणूए दुद्धं दुहसि।

वह नाव से नदी पार करता है = सो नावाए नइं तरइ।

वे लोग नाव पर चढ़ते हैं = ते जणा नावाए आरोहंति।

लड़की के घर पिता जाता है =धूआए गिहं पिआ गच्छइ।

पुत्रियों को वह धन देता है = सो धूआणं धणं देइ।

पुत्रियाँ पटना में रहती हैं = धूआ पाडलिपुत्ते णिवसन्ति।

हम लोग गायों की सेवा करते हैं=अम्हे गावीणं सेवं करिमो।

माता कभी भी कुमाता नहीं होती=माआ कयावि कुमाआ ण होइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माँ सभी को बराबर दृष्टि से देखती है = माआ सव्वाणं समदिट्ठीए पेच्छइ।

उनके घर में सिंह गर्जता है = ताणं गिहे सीहो गज्जइ।

नन्द ने उसका अभिनन्दन किया = नगन्दा तीए अहिणंदणं कयं।

लक्ष्मी की इच्छा सभी करते हैं = सव्वे जणा लच्छिं अहिलसंति।

लक्ष्मी धनी के घर को शोभित करती है = लच्छी धणीओ गिहं सोहइ।

शब्दकोष

अज्जा = आर्या
आणा = आज्ञा
आसिसा = आशीष
इट्टा = ईंट
उक्कण्ठा = उत्कंठा, इच्छा
अहिलासा = अभिलाषा
कक्कडिआ = ककड़ी
कक्खा = कांख, कक्षा
कच्छा = कमर का आभूषण मेखला
कच्चरा = कचरा, एक प्रकार का खाद्य
कज्जला = इस नाम की एक पुष्करिणी
कट्ठा = दिशा, कालका एक परिमाण
कडणा = घर का एक हिस्सा
कडतला = लोहे का एक प्रकार का हथियार
कढिआ = कढ़ी, खाद्यविशेष
कण्णिआ = कर्णिका, कमल का बीज, कोष
कत्ता = कौड़ी
कत्तिया = कैंची
कत्थूरिया = कस्तूरी
कन्ना, कन्नगा = कन्या
कमणिया = जूता
कमला = लक्ष्मी
कम्मो = व्यापार
करंडिया = छोटा डिब्बा
करडा = वृक्षविशेष, पक्षिविशेष
करुणा = दया
करेणुआ = हथिनी
कलंबुगा = जल में होने वाली वनस्पति
कलसिया = छोटा घड़ा
कला = कला, समय का सूक्ष्म भाग
काइआ = शरीरसम्बन्धी क्रिया, शौचक्रिया
काणच्छिया = कटाक्ष
कारा = कैदखाना
कासा = दुर्बल स्त्री
कासाइया = कषाय रंग से रंगी हुई साड़ी
किच्चा = जादूगरी
किड्डा = क्रीड़ा
कहा = कथा
किड्डाविया = बच्चों को खेलकूद करनेवाली दाई
किरिया = क्रिया, कृति. प्रयत्न
किवा = कृपा
कीडिया = चींटी
कीला = नववधू, क्रीडा
कुडआ = तुम्बीपात्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुंचिया = कुञ्जी
कुच्छा = निन्दा, जुगुप्सा
कुट्ठा = इमली
कुलडा = व्यभिचारिणी
केका = मयूरवाणी
केआरिआ = घासवाली जमीन
कूविया = छोटा कुँआ
कोइला = कोकिल, कोकिला
कोइला = काष्ठ का अंगार
कोलज्जा = धान रखने का गड्ढा, खौं
कोविआ = सियारिन
खण्डा = चीनी
खमा = क्षमा, पृथ्वी
खाडहिला = गिलहरी
खुधा, छुधा = भूख
खेड्डिया = वारी
गंगा = गंगा नदी
गड्डा = गड्हा, गड्ढा
गड्डिआ = गाड़ी
गणणा = गिनती, सांका
गलोया = गिलोय, गुडूची
गाहा = गृहस्थ, संसारी
गुंजालिआ = टेढ़ी कियारी या नदी
गुहा = गुफा
गोमहा = गली, मुहल्ला
गोधा=गोह
गोवालिया, गोवा=ग्वालिन
गोसाविआ=वेश्या, वारांगना
घडणा = घटना, संयोग
घडा=समूह, जत्था
घरिल्ला = घरवाली
घूरा = जांघ
घोसणा = घोषणा, ऊँची आवाज
चआ = त्वचा, चमड़ी
चडुत्तरिया=उतरचढ़
चविडा, चपेटा-तमाचा, थप्पड़
चप्पुडिया=चुटकी
चरिया=आचरण, संन्यासिनी
चवला=विजली
चिंचा=चटाई, विजोका-तृण का बना मनुष्य, जो पशु-पक्षी आदि को डराने के लिए खेतों में गाड़ा जाता है।
चिंता = अफसोस, चिन्ता
चिगिच्छा=चिकित्सा
चियगा = चिता
चिरिक्का=मशक
चूडा, चूला=चोटी, केश-शिखा
चेयणा = चेतना
चंदिआ = चन्द्रिका
छत्तंतिया=परिषद् विशेष
छलणा = ठगाई. वंचना
छायणिया = छावनी, पड़ाव
छाया = छाया
छालिया=वकरी
छिक्का=छींक
छुरिआ = छुरी, चाकू
छोइआ = छिलका
जंघा=जांघ
जउणा = यमुना
जंभा = जँभाई
जडा = जटा
जरा=बुढ़ापा
जाया = स्त्री, पत्नी
जिब्भा, जीहा=जीभ, रसना
जीआ=ज्या, धनुष की डोरी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीविआ = जीविका, आजीविका
जुण्हा = ज्योत्स्ना, चाँदनी
जूसणा = सेवा
झीरा = लज्जा
झिल्लिआ = कीट विशेष
झिल्लिरिआ = मशक
झुंपडा = झोंपड़ी
टंकिया = टाँकी
टंटा = जुआखाना
ठवणा = स्थापना
डंगा = लाठी, यष्टि
डिंभिया = छोटी लड़की
डोला = हिंडोला, झूला
णवा = नवोढ़ा, दुलहिन
णाला = नाडी, नस, सिरा
णालिआ = नाल, डंडी
णावा = नौका
णासा = नाक
णिद्दा = नींद
णिब्भच्छणा = निर्भर्त्सना, तिरस्कार
णिसा = निशा, रात्रि
णिसज्जा = उपाश्रय
णिसीहिआ = श्मशान भूमि
णिसीहिआ = निशीथिका, स्वाध्यायभूमि
णिवेसणा = सेवा
णिहा = माया, कपट
णोहलिआ = नवफलिका
णोहा = पुत्रवधू, पतोहू
तज्जणा = भर्त्सना, तर्जना
तडिआ = बिजली
तढ्ढिआ = गोशाला
तारगा = तारका, नक्षत्र
तारा = आँख की पुतली
तारिया = टिकली, टिकिया
ताडणा = ताड़ना
तिगिच्छा = चिकित्सा
तुलणा = तोल, वजन
थवणिया = धरोहर, न्यास
थेरिया = बुढ़िया
दक्खा = द्राक्षा
दलिद्दा = दरिद्रा, दरिद्र स्त्री
दुज्झसिआ = नौकरानी
दुहिआ = लड़की
दोसा = रात्रि
धारणा = ग्रहण करनेवाली बुद्धि, मकान का खंभा
धारा = धार, अग्रभाग
धाहा = पुकार
धूमिआ = कुहासा
णंदा = ननद
निसा = रात्रि
पआसा = प्रयास
पइण्ण = प्रतिज्ञा
पडाया = पताका, ध्वजा
पडिमा = प्रतिमा, मूर्त्ति
पइट्ठा = प्रतिष्ठा, सम्मान
पइहा, पइभा = प्रतिभा, बुद्धिविशेष
पउमा = पद्मा, लक्ष्मी, लौंग
पच्चा = घास की झोपड़ी
पजाला = अग्निशिखा
पज्जिआ = परनानी, परदादी
पट्टाढा = पट्टा, घोड़े की पेटी
पडपुत्तिया = रुमाल
पडाइया = छोटी पताका
पडवा = तंबू, पट-मण्डप
पडिच्छिआ = प्रतिहारी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडिमोअणा = छुटकारा
पडिया = वस्त्रविशेष
पडिलेहा = प्रतिलेखा, निरीक्षण
पडुत्तिया = प्रत्युक्ति, प्रत्युत्तर, जवाब
पड्डिया = पाडी, वछिया
पण्णा = प्रज्ञा, बुद्धि
पण्हिया = एडी, लात
परिक्खा = परीक्षा, आँच
परिकहा = परिकथा, बातचीत
परिगप्पणा = परिकल्पना
पल्हथिया = आसनविशेष, पालथी
पसाहा = प्रशाखा, छोटी शाखा
पहा = प्रभा, कान्ति, दीप्ति
पाडिवया, पडिवया = प्रतिपदा
पत्तिआ = पत्रिका
पसंसा = प्रशंसा
पाढसाला = पाठशाला
बाला = बालिका
बुहुक्खा = भूख
भज्जा, भारिया = भार्या
भाउजाया = भाभी
मट्टिआ = मिट्टी
माअरा = जननी
माआ = माँ, माता
माउसिआ = मौसी
वाडिआ = वाटिका
वीणा = वीणा
सरला = सरल
सहा = सभा
संपया = सम्पत्
कुल्ला = नहर
साडिआ = साड़ी
सिक्खा = शिक्षा

सिला = शिला
सीआ = सीता
सुहा = अमृत
सोहा = शोभा
हलिद्दा = हल्दी
पिउसिआ = फूफी, पिता की बहन
विलया = वनिता
महिला = स्त्री
पिआ = प्रिया
भासा = भाषा
भिलुगा = फटी जमीन, भूमि की रेखा
मइरा = मदिरा
मज्जाया = मर्यादा
मणालिया = मृणालिका, कमल डंडी
मत्ता = मात्रा, परिमाण
ममया = ममता
मरट्टा = उत्कर्ष
मल्लिआ = मल्लिका
मायण्हिया = मृगतृष्णिका
मिअआ = शिकार
मिहिआ = अल्प मेघ, मेघसमूह
मुद्दिआ = द्राक्षाकी लता
मुहा = मुधा
मुद्दा = मोहर, छाप
मुसा = मृषा, मिथ्या
मुद्धा = मुग्धा, व्यर्थ
मूसा = धातु गलाने का पात्र, छोटा दरवाजा
मेहरिया = गाली देनी वाली स्त्री
मेहा = मेधा
रयणा = रचना
रामा = महिला
राहिआ = राधिका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रुट्टिया = रोटी
रेआ = धन, सोना
रेहा = रेखा
लंका = लंका नगरी
लंचा = घूस
लंछणा = चिह्न
लट्टा = धान्यविशेष
लया = लता
ललणा = ललना, स्त्री
लिक्खा = यूका, जूँ
लिच्छा = लिप्सा, लाभ की इच्छा
लीला = क्रीड़ा, विलास
लूआ = वातिक रोग विशेष
वंचणा = प्रतारणा
वंदणा = प्रणाम
वंदुरा = अस्तवल, घुड़साल
वक्खा = व्याख्या
वग्गा = लगाम
वज्जणा = वर्जना, परित्याग
वज्जा = प्रस्ताव, अधिकार
वड्डिआ = ढेकुंवा, कूपतुला
वद्धणिआ = झाड़ू
वद्धलिया = बदली
वसा वया = मेद, चर्वी
वलया = समुद्रकूल
ववत्था = व्यवस्था
ववेक्खा = व्यपेक्षा
वसाहा = अलंकार, आभूषण
वसुहा = वसुधा, पृथ्वी
वाउलिया = छोटी खाई
वायणा = वाचना, पठन
विंटिया = गठरी, पोटली
विचित्ता = विचित्रा

सपज्जा = सपर्या, पूजा
सारिच्छिआ = दूर्वा, दूब
आकिइ = आकृति, आकार
असीइ = अस्सी, अशीति
अच्छि = आंख, नेत्र
अंजलि = अञ्जली
इड्ढि = ऋद्धि
उप्पत्ति = उत्पत्ति
कडि = कटि, कमर
कन्ति = कांति, तेज
कित्ति = कीर्ति, यश
कुच्छि = कुक्षि
कोडि = कोटि, करोड
गइ = गति
गँठि = ग्रन्थि, गाँठ
गोट्ठि = गोष्ठी
चिइ = चिता
छड्डि = वमन का रोग
छिप्पी = सीप, शुक्ति
जाइ = जाति,
जुत्ति = युक्ति, उपाय
जुवइ = युवति, युवा स्त्री
दिट्ठि = दृष्टि नजर
धिइ = धृति, धीरज
धूलि = धूल
नवइ = नव्वे
निहि = निधि
निव्वुइ = निवृत्ति, मोक्ष
नीइ = नीति
पसिद्धि = प्रसिद्धि
पीइ = प्रीति, प्रेम
पंति = पंक्ति,
बुद्धि = बुद्धि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भत्ति = भक्ति
भिउडि = भ्रुकुटि, भौंह
भित्ति = भींत, दीवाल
भीइ = भीति, डर, भय
भूमि = भूमि, पृथ्वी
मइ = मति, बुद्धि
माइ = माता, मातृ
मुट्ठि = मुष्टि, मुट्ठी
मुत्ति = मोक्ष, मुक्ति
मुत्ति = मूर्ति
रइ = रति, प्रेम
राइ, रत्ति = रात्रि
रस्सि = रश्मि, डोरी
राइ = राजि
विअड्डि = वेदी, हवन स्थान
वुट्ठि, विट्ठि = वर्षा, वृष्टि
वुड्ढि = वृद्धि, बढ़ती
विहत्थि = वालिस्त, १२ अंगुल प्रमाण
सामिद्धि, समिद्धि = समृद्धि
सट्ठि = साठ
सत्तरि = सत्तर, सप्तति
सत्ति = शक्ति
सन्ति = शान्ति
सुत्ति, सिप्पि = सीप
सिद्धि = सिद्धि
सुगन्धि = सुगन्धवाला
इत्थी, त्थी = स्त्री
आली, ओली = पंक्ति, सखि
कत्तरी = कर्तरी, कैंची
कयली, केली = कदली
कुमारी = कुमारी
कुहाडी = कुल्हाड़ी, कुठार

कोमुई = कौमुदी, चाँदनी
कोहली, कोहंडी = कोहँड़े का पेड़
गग्गरी = गागर, घड़ा
गलोई = गिलोय, गुडूची
गोरी = पार्वती
चउद्दसी = चतुर्दशी
चुल्ली = छोटा चूल्हा
छड्डी = शय्या, बिछौना
छाली = बकरी
छाया, छाही = छाया
झल्लरी = झालर
डाली = डाल, शाखा
थाली = थाली, बटलोई
दाली = दाल, दलाहुआ चना
दासी = दासी, नौकरानी
धाई, धारी = धाई, धात्री
नारी = स्त्री
पत्ती = पत्नी
पिच्छी, पुहवी, पुढवी = पृथ्वी
पोप्फली = सुपारी,
पोट्टली = पोटरी, गठरी
बहिणी = बहन
बारी = पारी, नम्बर,
भिसिणी = कमलिनी
लच्छी = लक्ष्मी
वाडी = वाड़ी, वाटिका
वावी = वापी
वेल्ली = लता
सही = सखी
सूई = सूची
साही = शाखी
हत्थोडी = हथोड़ी
हत्थिणी = हथिनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हरडई=हरीतकी, हरड
हलद्दी = हल्दी, हरिद्रा
एकल्ली = अकेली
गरुई=मोटी, गुर्वी
गामणी = गाँव का मुखिया
बहुवी=बहुत
सुलच्छी = सुलक्ष्मी
हसमाणी=हसती हुई
उच्छु, इक्खु=इक्षु, गन्ना
कंगु=कांगो, धान्यविशेष
तणु=शरीर
धेणु = गाय
पंसु=धूली
रज्जु=रस्सी
विज्जु=बिजली
वेणु, वेलु=बांस
हणु=ठुड्डी, ठोढ़ी, चिबुक
बहु=ज्यादा
गुरु = मोटा
ईसालु = ईर्ष्या करनेवाला
लज्जालु=लज्जा करनेवाला
रिज्जु, उज्जु=सरल
लहु=लघु
अज्जू=आर्या, सास
अलाऊ, लाऊ=लौका, तुंबा
करेणु=हथिनी
चमू=सेना
कण्डू=खाज
वहू=वधू
सरजू=सरयू नदी
सासू = सास
पंगू = लंगड़ा
कंदु=हाँड़ी
कडच्छु=कछीं, चमची
काउ=कापोत लेश्या
काहेणु = गुंजा, लालरत्ती
खज्जू=खुजली
चंचू=चोंच
जंबू=जामुन
अणरहू = दुलहिन

धातुकोष

अइसमइ=मात करता है
अंगीकरइ = स्वीकार करता है
अंबाडइ=लेप करता है
अक्कोसइ=आक्रोश करता है, गाली देता है
अक्खिवइ = आक्षेप करता है
अक्खोडइ = म्यान से तलवार खींचता है
अडइ = भ्रमण करता है।
अडक्खइ = गिराता है
अणइ = आवाज करता है
अणावेइ = मंगवाता है
अणुकंपइ = दया करता है
अणुकुणइ = अनुकरण करता है
अणुचिट्ठइ=अनुष्ठान करता है
उद्दालइ = हाथ से खींचता है
उद्दिसइ = संकल्प करता है, स्वीकार करता है।
उद्दंसेइ = मारता है, खाली देता है
उद्धरइ = उद्धार करता है
उप्पयइ = उड़ता है, कूदता है
उप्पालइ = कहता है, बोलता है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उप्पायइ = उत्पन्न करता है
उप्पासइ = हँसी करता है
उप्फालेइ = उठाता है, उखाड़ता है
उप्फिडइ = कुंठित होता है, मेंढक की तरह कूदता है
उप्फुसइ = सींचता है
किलेसइ = क्लेश पाता है, हैरान होता है
कीणइ = खरीदता है, मोल लेता है
कुल्लइ = कूदता है
कूडइ = झूठ ठहराता है, अन्यथा करता है
खअइ, खउरइ = सम्पत्ति युक्त करता है
खउरइ = क्षुब्ध होता है, कलुषित करता है
खचइ = पवित्र करता है
खणइ = खोदता है
खअइ = नष्ट होता, क्षय होता है
खरइ = झरता है, टपकता है
खरडइ = लीपता है, पोतता है
खलइ = पड़ता है, भूलता है
खासइ = खांसता है
खिंसइ = निन्दा करता है
खुम्मइ = भूख लगती है
गलइ = गलता है, सड़ता है
गसइ = खाता है, निगलता है।

गाअइ = जाता है
गालइ = छानता है
गिज्जइ = आसक्त होता है, लंपट होता है
गुंठइ = धूलिसात् करता है
गुडइ = हाथी को फूलों से सजाता है
गुड्ढेइ = नियन्त्रण करता है
गुणइ = गिनता है, याद करता है
गुप्पइ = व्याकुल होता है
गुभइ = गूंथता है, घूमता है
गुम्मइ = मुग्ध होता है
गोवेइ = छिपाता है, रक्षण करता है
घत्तइ = अनुसन्धान करता है, ग्रहण करता है, यत्न करता है
जारइ = विष फैलता है
घुड्डुक्कइ = गरजता है
घुम्मइ = घूंमता है
घुरुक्कइ = घुड़कता है
घुसलइ = हाथ मलता है
घोट्टइ = पीता है
चंकमइ = बार-बार चलता है, भटकता है
चंपइ = चाँपता है, दबाता है, चर्चा करता है, चढ़ता है
चक्खइ = चखता है, स्वाद लेता है, कहता है

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब्भासो Exercise

Translate into Prakrit हिन्दीभासाए अणुवायं कुणन्तु

सो अज्जाए आणां अणुसीलइ, करेइ वा। तस्स अहिलासा अईव दुक्करा अत्थि। कक्खाए कइ छत्ता अज्झयणं कुणंति। हं कक्कडिअं कडुं अणुभवेमि। मज्झं कढिआ ण रोयइ। सो भित्तिं अणुलिंपइ। जत्थ थालीओ लद्धाओ तत्थं तत्र ताहिं सह किमवि पत्तं न वा। सो वेइ अहं तुम्हं न देमि, किन्तु वालगाणं भोयणाए देमि। अणिच्छंतो वि जिणदासो इवरोहवसेण गिण्हित्ता गामाओ बाहिरं निग्गच्छइ। विमलपुरीओ केइ कट्ठिहारा कट्ठनिमित्तं रण्णे गया। तत्थ संजायवुट्ठीए कट्ठाइं अलहमाणा ते कट्ठिहारा चिंतिंति। अज्ज किं भक्खिस्सामो, कुडुंबमवि कहं पोसिस्सामो। तओ तेण सच्चं कट्ठिहाराणं उत्तं—मम पासे मोयगचउक्कं अत्थि, अन्नं किंपि न। तेहिं सव्वे मोयगा गहीआ। भज्जा-पुत्तजुगसंजुत्तो जिणदासो गामंतरं निग्गओ। वीयदिणे अग्गओ गच्छंतो मज्झण्हसमए एगाए अडवीए पयाइ। वीयदिणे धम्मदाससेट्ठिघरे पच्चूसे वालगा बुभुक्खिआ संजाया। मंतिपमुहा पउरजणा अहिणवं णरिंदं हरिसेणं णमंति। ओसहिप्पहावेण सो तम्मि णयरे महाराया जाओ। तस्स सेट्ठिस्स एगो कोढियपुत्तो अत्थि, सो जम्माओ रोगी अत्थि। तेण सो किवणसेट्ठी तं भूमिघरे रक्खेइ। लोए कहेइ—मम पुत्तो अईव रूववंतो अत्थि। तस्सुवरि कस्सवि दिट्ठिदोसो ण लगेज्जा, तेण भूमिघरे ठविओ अत्थि। तस्स रूववण्णणं सोच्चा पउरजणा सव्वे पसंसंति। एवं तस्स पुत्तस्स रूववत्तं सोऊण समीवणयरणिवासी रयणसेट्ठी णियकण्णा सीलवईदाणाय तं किवणसेट्ठिं पत्थेइ। सो किवणसेट्ठी विआरेइ—'अहुणा किं करेमि? कोढियपुत्तस्स मुहं कहं जणाणं दंसेमि। तेण कहिअं 'तीए कण्णाए जीवणं अहं कयावि मलिणं ण करिस्सामि। एआरिस— अकिच्चकरणेण मम मोअणेच्छा वि णत्थि। किं करेमि, जं भावि तं अण्णहा ण होइ। तीए कण्णाए एरिसा भवियव्वया तेण एरिसो पसंगो। उवट्ठिओ, अओ अहुणा एअस्स वयणस्स अंगीकरणं चिय वरं। घरंमि विवाहमहूसवो वि पारंभिओ। पउरा मोत्तिअज्झरणमुहं दट्ठूण पसंसं काउं लग्गा—'धण्णो एसो सेट्ठी, जस्स एरिसो रूववंतो पुत्तो अत्थि'। एवं मोत्तिअज्झरणस्स रूवसलाहं सुणमाणो सेट्ठी कमेण कण्णाणयरे संपत्तो। मोत्तिअज्झरण–सीलवईकण्णाणं विवाहो वि समहं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संजाओ। करमोयणसमए जामायरस्स बहुदव्वं दिण्णं। एवं विवाहमहूसवे समत्ते तओ सव्वे निग्गया।

Translate into Hindi पाइयभासाए अणुवायं कुणन्तु

उसकी सास विदुषी है। वह मेरी आज्ञा का पालन करता है। तुम भी मेरी आज्ञा मानते हो। उसका आशीर्वाद सफल होगा। मेरी उत्कंठा कथा सुनने की है। कक्षा में कितने छात्र हैं। उसको कढ़ी पसन्द है। मैं भात खाता हूँ। तुम रोटी खाते हो। कमल में भौंरे रहते हैं। उसका व्यापार कैसा चलता है। वह मुझको मात करता है। चीनी मीठी होती है। मोर की ध्वनि सुनायी पड़ती है। गंगा का प्रवाह तेज है। गिलहरी पेड़ पर चढ़ती है। व्यभिचारिणी स्त्री दण्ड पाती है। मुझे भूख लगी है। वह गाड़ी में बैठता है। हथिनी नदी में पानी पीती है। वह शरीरसम्बन्धी क्रियाओं से निवृत होता है। उसका व्यापार अच्छा चलता है। उसका जूता पुराना है। कस्तूरी की सुगन्ध तेज होती है। उसके यहाँ लक्ष्मी का निवास है। वह अपना छोटा डिब्बा लेता है। हथिनी शहर में रहती है। छोटे घड़े में पानी भरो। कैदखाने भरो। कैदखाने में कैदी रहते हैं। सियारिन बोलती है। गुडूची कड़वी होती है। गृहस्थ खेती करता है। गुफा में साधु रहते हैं। आपकी कृपा से मैं प्रसन्न हूँ। तुम किस मोहल्ले में रहते हो। जमुना में गर्मी के दिनों में पानी नहीं रहता। ग्वालिन दही मथती है। गोह दीवाल पर चढ़ती है। वेश्या नाचती है। यह संयोग ही है कि आपके दर्शन हो गये। उसकी घरवाली पढ़ती है। उसकी जाँघ में पीड़ा हो रही है। उतर-चढ़ करना ठीक नहीं है। उसको वह तमाचा लगाता है। आकाश में बिजली चमकती है। वह चटाई पर सोता है। खेत में हरिणों को डराने के लिए बिजोका लगाया है। मैं अपने भाई की चिकित्सा करता हूँ। पद्मिनी चिता बनाकर आग लगाती है। वंचना करना अच्छा नहीं है। उसको बहुत छींक आती है। सेना छावनी में निवास करती है। उसके पास छुरी है। गन्ने का छिलका कड़ा होता है। वह जटा बढ़ाकर योगी बनता है। उसकी जटाओं में जूं हैं। उसे रात में नींद नहीं आती। मैं दिन में भी नींद लेता हूँ। उसकी पुत्रवधू बहुत चतुर है। जुआखाने में जुआरी लड़ते हैं। पूर्णिमा को चाँदनी चमकती है। बुढ़ापे में सभी को कष्ट होता है। उसकी जीभ तेज है। तुम्हारी आजीविका का क्या साधन है। वह मन्दिर में मूर्त्ति को स्थापित करता है। उपाश्रय में साधु रहते हैं। स्वाध्यायशाला में छात्र स्वाध्याय करते हैं। उसका मायाचार बहुत बुरा है। उसकी नाक पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मक्खी बैठती है। वह नवोढ़ा सुन्दरी है। गंगा में नौकाएँ चलती हैं। गंगा के किनारे काशी और यमुना के किनारे मथुरा स्थित है। आकाश में बिजली चमकती है। मेरे यहाँ उसकी धरोहर नहीं है। नौकरानी घर का काम करती है। मेरी लड़की सातवीं कक्षा में पढ़ती है। उसकी धारणा शक्ति अच्छी है।

मेरी प्रतिज्ञा पक्की है। मन्दिर के ऊपर ध्वजा फहराती है। उसकी प्रतिष्ठा सभी करते हैं। वह संन्यासी घास की झोंपड़ी में रहता है। उसकी दादी बुड्ढी हैं। वह रूमाल से मुँह पोंछता है। माता बच्चे को प्यार करती है। तुम्हारी मौसी कहाँ रहती है। भोजपुरीपत्रिका आरा से निकलती है। जैनसिद्धान्तभास्कर आरा का प्रसिद्ध पत्र है। वे लड़के अभी पाठशाला में पढ़ते हैं। उसकी भाभी रोती है। वे लोग तुम्हारी प्रशंसा करते हैं। वह परीक्षा में अनुत्तीर्ण है। प्रतिहारी द्वार पर रहता है। वह गणेश की मूर्त्ति बनाता है। वे लोग मूर्त्तियाँ बनाने में प्रवीण हैं। आज चारों ओर कुहासा छाया है। वाटिका में पुष्प खिलते हैं। वीणा सीधी है, राम उसको बजाता है। इस सभा में सैकड़ों व्यक्तियों की भीड़ है। उस पेड़ की अनेक शाखाएँ हैं। भाभी और ननद का झगड़ा इतिहास-प्रसिद्ध है। बुद्धि पढ़ने में नहीं चलती है। तंबू में सेना निवास करती है। उसकी भार्या विद्यालय में रहती है। उस भैंस की पाड़ी अभी छोटी है। दाल में हल्दी पड़ी है। आज रसोइया ने दाल में हल्दी नहीं डाली है। आरा में नहर से खेती होती है। उसके घर की शोभा मोहक है। उसकी साड़ी नीले रंग की है। रामदास शिक्षा प्राप्त करता है। शिला के ऊपर वह बैठकर तपस्या करता है। उस गाली देनेवाली के पड़ोस में मैं नहीं रहता हूँ। वह अभी मुग्धा है, कुछ भी नहीं जानती है। गर्मी में जमीन फट जाती है और उसमें दरार हो जाती है। मेरी ममता उसके ऊपर नहीं है। उसकी रचना अच्छी होती है। राधा यमुना के किनारे खेलती है। पोटली में क्या है। भगवान की पूजा में सभी संलग्न हैं। पृथ्वी पर पशु-पक्षी निवास करते हैं। मेरी मोहर तुम्हारे पास है। घर की व्यवस्था का भार मेरे ऊपर है। आकाश में बदली छायी है। अस्तबल में घोड़े रहते हैं। उसकी लीला सभी कामों को खराब करती है। ललनाएँ कृष्ण की भक्ति करती हैं। बिहार की सीमारेखा कर्मनाशा नदी है। वह घोड़े की लगाम को ढीला करता है। वे लोग रथ चलाते हैं। आरा के चारों ओर छोटी खाई है। उसकी लीला विचित्र है। सभा में कौन-कौन प्रस्ताव पास हुए हैं। मेरी उनसे वंदना कह देना। बगीचे में मालती की लता सुशोभित है। मैं तुम्हारी शिक्षा मानता हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वे लोग गले में माला पहिनते हैं। वह सोने को घरिया में गलाता है। सीता हनूमान को आशीर्वाद देती है। मल्लिका की गन्ध पर भौंरे आते हैं। वे घूंस लेते हैं और दंड पाते हैं। अमृत देवों को अमर बनाता है।

उसकी आकृति सुन्दर है। रामदास की अंजलि में क्या वस्तु है। कमल की उत्पति जल में होती है। उसकी कमर में पट्टा बँधा है। उसके मुँह की कान्ति तेज है। उसका यश सर्वत्र फैलता है। कौशिल्या की कोख से राम का जन्म हुआ है। नारकी नरकगति में रहते हैं। उसके पास कैंची है। सीप से मोती निकलते हैं। तीन दिन से वर्षा हो रही है। उसका घर पटना में है। वेदी पर हवन-सामग्री रखी है। वह वीणा बजाने में बहुत पटु है। जननी बच्चे को प्यार करती है। वह बच्चा के पास सोती है। सोन नदी से नहरें निकली हैं। चतुर्दशी को वे उपवास करते हैं। वे शय्या पर सोते हैं। वृक्ष की छाया शीतल है। वे लोग सुपारी खाते हैं। कमलिनी तालाब में खिली है। सेना पहाड़ पर रहती है। रामदयालु आदमी है। उस ईर्ष्यालु के साथ तुम क्यों रहते हो।

सरयू नदी के किनारे अयोध्या नगरी है। हाँडी में धान रखा है। लंगड़ा आदमी आजीविका प्राप्त करता है। उसके शरीर में खुजली है। वे लोग जामुन के फल खाते हैं। गाँव का मुखिया पटना जाता है। शकुन्तला की सखी अनुसूया है। तुम अकेली जाती हो। रात हो गई है। मोटी स्त्री सदा बीमार रहती है। वह सास के पैर छूती है। पक्षी की चोंच लाल है। भिल्लों की स्त्रियाँ गुंजा पहनती हैं। उसकी ठोढ़ी पर चिन्ह है। उसके घर में लक्ष्मी का निवास है। नौकरानी पानी भरती है। पृथ्वी पर सोता है। मैं लता को तोड़ता हूँ। लड़के धूलि में खेलते हैं। बकरी पानी पीती है। घास के खेत में गाय चरती है। वह पुष्पमाला धारण करती है। उसके पिता का नाम हरिचन्द्र है। मेरे भाई अजमेर में रहते हैं।

मैं अकेला ही वीणा बजाता हूँ। मूलदेव वीणा बजाने में प्रवीण है। मिट्टी के बर्तन में पानी ठंढा रहता है। तुम लोग सेना में भरती होते हो। हमको अपनी सेना को शक्तिशाली बनाना है। लक्ष्मी बिजली के समान चँचल है। वह सुई से कपड़ा सीता है। मैं लताओं से पुष्प तोड़ता हूँ। वे लड़कियाँ पाठशाला में पढ़ती हैं। वे रामायण याद करती हैं। वह ननन्द को साड़ी देती है। उसकी जादूगरी मेरे ऊपर नहीं चलती है। चीनी से मिठाइयाँ तैयार की जाती हैं। उन कन्याओं का विवाह होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उस कंजूस सेठ के यहाँ हम नौकरी करते हैं। इस समय मैं क्या करूँ। तलघर में दासी रहती है। उसको नजर नहीं लगती है। औषधि के प्रभाव से रोग दूर होते हैं। सभी लोग राजा को प्रणाम करते हैं। मन्त्री आदि नागरिक भी उसको प्रणाम करते हैं। उसकी कमर में मेखला शोभित है। गड्ढे में पानी भरा है। वर्षा ऋतु में छोटे-छोटे कीड़े उत्पन्न होते हैं।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

२१. प्राकृत में हलन्त शब्दों का अभाव होने से स्त्रीलिङ्ग रूप भी आकारान्त, ईकारान्त और ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के समान ही होते हैं। उदाहरण के लिए प्रमुख स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप दिये जाते हैं।

कम्मा—कर्म के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	कम्मा	कम्माओ, कम्माउ
वी०	कम्मं	कम्माओ, कम्माउ
त०	कम्माए, कम्माइ	कम्माहि
च०	कम्माए, कम्मइ	कम्माणं
पं०	कम्माए, कम्मत्तो	कम्माहिंतो
छ०	कम्माए, कम्मइ	कम्माणं
स०	कम्माए, कम्माइ	कम्मासु

महिमा शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	महिमा	महिमाओ
वी०	महिमं	महिमाओ
त०	महिमाए, महिमाइ	महिमाहिं
च०	महिमाए	महिमाणं
पं०	महिमाए, महिमत्तो	महिमाहिंतो
छ०	महिमाए, महिमाइ	महिमाणं
स०	महिमाए, महिमाइ	महिमासु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अच्चि—कान्ति, तेज, अग्नि की ज्वाला के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	अच्ची	अच्चीओ
बी०	अच्चिं	अच्चीओ
त०	अच्चीए, अच्चीइ	अच्चीहिं
च०	अच्चीए, अच्चीइ	अच्चीणं
पं०	अच्चीए, अच्चित्तो	अच्चीहिंतो
छ०	अच्चीए, अच्चीइ	अच्चीणं
स०	अच्चीए	अच्चीसु

हसई, हसन्ती, हसमाणी—शब्दरूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	हसई, हसन्ती, हसमाणी	हसन्तीओ, हसमाणीओ, हसईओ
बी०	हसइं, हसन्तिं, हसमाणिं	,, ,, ,,
त०	हसन्तीए, हसईए	हसईहिं, हसन्तीहिं
च०	,, ,,	हसईणं, हसन्तीणं
पं०	हसन्तीए, हसन्तित्तो	हसईहिंतो, हसन्तीहिंतो
छ०	हसन्तीए, हसईए	हसईणं, हसन्तीणं
स०	हसन्तीए, हसईए	हसईसु, हसन्तीसु

भगवई (भगवती) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	भगवई	भगवईओ
बी०	भगवइं	भगवईओ
त०	भगवईए	भगवईहिं
च०	भगवईए	भगवईणं
पं०	भगवईए, भगवइत्तो	भगवईहिंतो
छ०	भगवईए	भगवईणं
स०	भगवईए	भगवईसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तडि—विजली शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	तडी	तडीओ
बी०	तडिं	तडीओ
त०	तडीए	तडीहिं
च०	तडीए	तडीणं
पं०	तडीए, तडित्तो	तडीहिंतो
छ०	तडीए	तडीणं
स०	तडीए	तडीसु

छुहा (सुधा) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	छुहा	छुहाओ
बी०	छुहं	छुहाओ
त०	छुहाए	छुहाहिं
च०	छुहाए	छुहाणं
पं०	छुहाए, छुहत्तो	छुहाहिंतो
छ०	छुहाए	छुहाणं
स०	छुहाए	छुहासु

विज्जु—विद्युत् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	विज्जू	विज्जूओ
बी०	विज्जुं	विज्जूओ
त०	विज्जूए	विज्जूहिं
च०	विज्जूए	विज्जूणं
पं०	विज्जूए, विज्जुत्तो	विज्जूहिंतो
छ०	विज्जूए	विज्जूणं
स०	विज्जूए	विज्जूसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गरिमा = गुरुता, गौरव
महिमा = बड़ाई
सरिआ = नदी, सरिता
तडिआ = तडित्, विजली
पाडिवआ, पडिवआ = प्रतिपदा
संपया = सम्पदा
छुहा = क्षुधा, भूख
कउहा = दिशा
गिरा = वाणी, वचन
धुरा = धुरा, अग्रभाग
पुरा = नगरी
दिसा = दिशा
अच्छरसा, अच्छरा = अप्सरा
तिरच्छी = तिर्यञ्च स्त्री
अच्चा = अर्चा, पूजा
अमावासा, अमावस्सा = अमावास्या, अमावस
अरइ = अरति, अप्रीति
असाया = पीडा
असायणा = आशातना, अपमान
कयली = कदली, केला
गरिहा = निन्दा
तिण्हा = तृष्णा, इच्छा, पिपासा
थुइ = स्तुति
पुण्णिमा = पूर्णिमा
बाहा = हाथ, बाहु
महोसहि = महौषधि, श्रेष्ठ औषधि
वत्ता = वार्त्ता
विवत्ति = विपत्ति
अउज्झा = अयोध्या
केरिसी = कैसी
परिसा = परिषद्, सभा
भवन्ती = आप

अमरी = देवी
अच्छरसा = अप्सरा
पइट्ठा = प्रतिष्ठा
पच्चोणी = सम्मुख
अणगारिया = संन्यासिनी
उवहि = उपाधि, माया, साधन
जरादेवी = वसुदेव की स्त्री का नाम
दोरिआ = रस्सी, डोरी
मित्ती = मैत्री, दोस्ती
आगला = अर्गला
अब्भत्थणा = अभ्यर्थना, प्रार्थना आदर
अद्धमागही = अर्धमागधी भाषा
अवरा = पश्चिम दिशा
आवया = आपत्ति, आपदा
आहि = मानसिक पीड़ा
कुच्छि = उदर
जत्ता = यात्रा
तिहि = तिथि
पवित्तया = पवित्रता
पुव्वा = पूर्वा
महासई = महासती, शीलवती नारी
वणप्फइ = वनस्पति
वावी = वावड़ी
सासू = सास
साविगा = श्राविका
सिरी = श्री, लक्ष्मी
धुत्तिमा = धूर्त्तता
होडा = छोकरी
सिरीमई = श्रीमती
कुंभआरी = कुम्हारिन
सुण्णरी = सुन्दरी
सियाली = शृगाली, मादा सियार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णिसाअरी = राक्षसी
सुप्पणही = शूर्पणखा
अय्याणी = आर्या
विउसी = विदुषी
मच्छी = मछली
सुएसी = अच्छे बालवाली
सुद्दी = शूद्र की स्त्री
पढन्ती = पढ़ती हुई
मऊरी = मोरनी
सीसा = शिष्या
सेट्ठिणी = सेठानी
चन्दमुही = चन्द्रमुखी
कामुआ = विषयाभिलाषिणी
अयला = अचला
णायिआ = नायिका
महिसी = पटरानी
पढमा = प्रथमा
किण्णरी = अप्सरा
चडआ = चिड़िआ
तुंगणासिआ = ऊँची नाकवाली स्त्री
गणई = ज्योतिषी की स्त्री
मुट्ठिआ = मुष्टिका, घूंसा
णट्टई = नर्तकी
फलिहा = परिखा, खाई
चाउँडा = चामुण्डा
वसही = वसति, गाँव
गिद्धी = आसक्ति
पण्हा = प्रश्न
चोरिआ = चोरी, अपहरण
रक्खसी = राक्षसी

पुत्तवई = पुत्रवती
लोहआरी = लुहारिन
सूअरी = शूकरी
बंभणी = ब्राह्मण की पत्नी
उवज्झायाणी = अध्यापिका
खत्तिआणी = क्षत्रिय की पत्नी
माणुसी = मानुषी—स्त्री
गिहवण्णी = गृहपत्नी
धीवरी = धीवर की स्त्री
जुवई = युवति
माहणी = ब्राह्मणी
सुत्तगारी = सूत्रबनाने वाली स्त्री
वुत्तिगारी = वृत्तिलिखने वाली स्त्री
गंधिआ = गन्धीगरनी
पींवरी = स्थूला—मोटी स्त्री
णिउणा = चतुर स्त्री
संखपुप्फी = शंखपुष्पी
रुद्दाणी = पार्वती
चवला = चपला-चंचला
सुवण्णअरी = सुनारिन
नडी = नटी, नर्तकी
पाणिगहीदी = धर्मपत्नी
दीहोअरी = बड़े पेटवाली
धणवई = धनी स्त्री
वट्टा = बात
सण्णा = संज्ञा, नाम
छमी = शमीवृक्ष
अलसी = एक प्रकार का तिलहन
पिसाजी = पिशाची, राक्षसी

क्रियाकोष

आदरेइ = आदर करता है
कीणइ = खरीदता है

जम्मइ = उत्पन्न होता है
धुव्वइ = कंपाता है, हिलाता है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णिज्झरइ = झरता है
फासइ = छूता है
फरिसइ = छूता है
वड्ढइ = बढ़ता है
सुमरेइ = स्मरण करता है
धुणेइ = हिलाता है
चिणइ = इकट्ठा करता है
थुणइ, थुणेइ = स्तुति करता है
पुणेइ = पवित्र करता है
सुणइ = सुनता है
बुवेइ = बोलता है
कहेइ = कहता है
जाणइ = जानता है
बीहइ = डरता है
वसइ = रहता है
इच्छइ = इच्छा करता है
चिंतइ = चिन्ता करता है
बुज्झइ = समझता है
रक्खेइ = रक्षा करता है
लज्जइ = लज्जा करता है
हणइ = मारता है
हुणइ = हवन करता है
तूसेइ, तोसइ = सन्तुष्ट करता है
रूसइ = गुस्सा करता है
रुंजइ = आवाज करता है
रुंचइ = रुई से उसके बीज को अलग करता है
रुहइ = उत्पन्न होता है
रुलइ = लेटता है
लाहइ = प्रशंसा करता है
रुम्हइ = मलिन करता है
रुप्पइ = रोपता है, बोता है
रुचइ = पसंद करता है

रुंधइ = रोकता है
रेल्लइ = सराबोर करता है
रेहइ = शोभता है, चमकता है
रोयइ = रुचि करता है, चाहता है
रोअइ = निर्णय करता है
रोचइ = पीसता है
रोडइ = अटकाता है
रोमंथइ = जुगाली करता है, चबाता है
रोसाणइ = मार्जन करता है, शुद्ध करता है
रोहइ = उत्पन्न होता है
लंछइ = कलंकित करता है, तोड़ता है
लंघइ, लंघेइ = लांघता है, अतिक्रमण करता है
लंबेइ = सहारा लेता है
लंभइ = प्राप्त करता है
लग्गइ = लगता है, सम्बन्ध करता है
लज्जइ = शरमाता है
लज्जावइ = लजवाता है
लढइ = स्मरण करता है, याद करता है
लद्देइ = बोझ लादता है, भार डालता है
लहइ, लभइ = प्राप्त करता है
लएइ = ग्रहण करता है
ललइ = विलास करता है
लवइ = काटता है, बोलता है
लसइ = श्लेष करता है, चमकता है
लहुअइ = लघु करता है
लायइ = लगाता है, जोड़ता है
लालइ = स्नेहपूर्वक पालन करता है
लासइ = नचाता है
लिअइ = लेपन करता है, लीपता है
लुक्कइ, लिक्कइ = छिपता है, लुकता है
लिच्छइ = प्राप्त करना चाहता है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लीलायइ = लीला करता है
लुअइ = काटता है
लट्टइ, लुंटइ = लूटता है
लुढइ = लुढ़कता है
लुब्भइ = लोभ करता है
लुट्टइ = लूटता है, चोरी करता है
लेइ = लेता है
लोट्टइ = लोटता है
लोवेइ = लोप करता है
ल्हिसइ = सोता है, शयन करता है
लिहइ = लिखता है
लिहइ = चाटता है
लुंचइ = बाल उखाड़ता है
लुंपइ = लोप करता है
लुणइ = काटता है
लुहइ = पोंछता है
लूसइ = वध करता है
लोअइ = देखता है
लोढइ = कपास निकालता है
ल्हसइ = खिसकता है, सरकता है

प्रयोगवाक्य

आकाश में विजली चमकती है = विज्जू विज्जोअइ आयासे
अयोध्या सरयू नदी के किनारे पर है = अओज्झा सरयू नइतडे अत्थि
उसकी महिमा सर्वत्र व्याप्त है = तस्स महिमा सव्वत्थ वित्थीण्णा अत्थि
प्रतिपदा तिथि को आप क्या करते हैं = पडिवआतिहीए भवओ किं करेइ
तुम्हारे पास बहुत सम्पत्ति है = तुम्हाणं समीवे बहुसंपया अत्थि
उसे आज भूख लगी है = तं अज्ज छुहा वाट्टइ, लग्गइ वा
गाड़ी का धुरा टूटता है = सअडस्स धुरा तुट्टइ
स्वर्ग में अप्सराएँ रहती हैं = सग्गम्मि अच्छराओ णिवसंति
नगरी की कान्ति फटती है = णयरीए अच्ची दीणा होइ
हसती हुई बालिका शहर में जाती है = हसंती बाला णयरं गच्छइ
वे वासुदेव की प्रतिष्ठा करते हैं = ते वासुदेवस्स पइट्ठं करेंति
तुम कृष्ण की अभ्यर्थना करते हो = तुमं किसणस्स अब्भथणं करेसि
हम पूर्णिमा को पूर्णचन्द्र को देखते हैं = अम्हे पुण्णिमाए पुण्णचन्दं पेच्छमो
उसकी बाहमें पीडा है = तस्स बाहाए पीडा अत्थि
आपकी यात्रा सफल होती है = भवन्तीए जत्ता सहला होइ
उसकी विपत्ति को कोई नहीं जानता है = तस्स विवत्तिं को वि ण जाणइ
वे लोग वावडी में क्रीड़ा करते हैं = ते जणा वावीए कीलं कुणान्ति
इस महासती के प्रभाव से अग्नि जल बनती है = तस्स महासईए पभावेण अग्गी जलं हवइ
पार्वती की सास दिनरात काम में संलग्न रहती है = पव्वई ए सासू राइदिणं कज्जे संलग्गा अत्थि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसके पेट में दर्द है = तस्स कुच्छिए पीडा अत्थि
सीता श्राविका के व्रत ग्रहण करती है = सीया साविगाए वियं गिण्हइ
उसकी शोभा आज भी वर्तमान है = तस्स सोहा अज्ज वि वट्टइ
मेरी मुट्ठी में वह है = मज्झ मुट्ठिआए सो वट्टइ
उस नर्तकी का नाच अच्छा होता है = तीए नडईए उत्तमं णच्चं होइ
उस नगर की खाई गहरी है = तस्स णयरस्स फलिहा गहीरा अत्थि
उस वसतिका में हम लोग रहते हैं = तीए वसदीए अम्हे णिवसामो
नृत्य में उसकी बहुत आसक्ति है = णच्चम्मि तस्स बहुगिद्धी अत्थि
वह ऊँची नाकवाली वहाँ क्या करती है = सा तुंगणासिआ तत्थ किं करइ।
चामुण्डा के मन्दिर में बहुत लोग हैं = चाउँडाए चेइए बहुजणा सन्ति
उसकी पटरानी का क्या नाम है = तस्स महिसीए किं नाम अत्थि
वह विषयाभिलाषिणी विषयों का चिन्तन करती है = सा कामुआ विसयाणं चिन्तणं करेइ
उस अच्छे केशवाली के घर में कौन रहता है = तीए सुएसीए घरम्मि को निवसइ
वे मामी के घर जाते हैं = ते माउलाणीए गिहं गच्छन्ति
शँखपुष्पी के फूल सफेद होते हैं = संखपुप्फीए फुल्लाणि सेअवर्णानि हवन्ति
वह तो शूर्पणखा है = सा सुप्पणही अत्थि
तुम्हारी शिष्याएँ क्या पढ़ती हैं = तुज्झ सीसाओ किं पढंति
चिड़िआ घोंसले में रहती है = चडआ नीडम्मि णिवसइ
उपन्यास की नायिका चतुर है = उवण्णासस्स णायिआ चउरा अत्थि
कुम्हारिन के घर वह जाती है = सा कुंभआरीए घरं गच्छइ
अप्सराएँ देवी की स्तुति करती हैं = अच्छराओ देइं थुणंति
वे लोग मोरनी का नाच देखते हैं = ते मऊरीए णच्चं पेच्छन्ति
तालाब में अगणित मछलियाँ हैं = तडागे अगणिया मच्छीओ सन्ति
शृगाली रात में भौंकती है = सियाली राइए बुक्कइ
चन्द्रमुखी का बालक समझता है = चन्दमुहीए बालओ बुज्झइ
तीर्थभूमियाँ पवित्र करती हैं = तित्थभूमीओ पुणेंति
वे लोग धान इकट्ठा करते हैं = ते जणा धण्णं चिणंति
अप्सराएँ समुद्र को लाँघती हैं = अच्छराओ समुद्दं लंघंति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महिलएँ स्नेहपूर्वक संतान का पालन करती हैं = महिलाओ सणेहपुव्वं सन्ताणं लालंति

वे लोग आकाश को छूते हैं = ते आयासं फरिसंति

तुम लोग उसको मारते हो = तुमं तं हणसि

बैल घर में जुगाली करते हैं = बइल्ला घरम्मि रोमंथंति

वे लोग वाराणसी जाना चाहते हैं = ते जणा वाराणसिं गमित्तए इच्छंति

ब्राह्मणी शीलव्रत की रक्षा करती है = माहणी सीलवयस्स रक्खं कुणइ

वे नारियाँ अपने कार्यों के लिए लज्जित होती हैं = तीओ महिलाओ णियकज्जस्स लज्जिया होंति।

अब्भासो Exercise

Translate into Hindi हिन्दीभासाए अणुवायं कुणन्तु

इहेव भारहेवासे साएयं णाम णयरं। तत्थ वसू णाम सत्थवाहो। तस्स सुंदरी णाम भारिया। जं बहु जणो करेइ धम्मं सो कायव्वो। तया रण्णी दासिं पुच्छइ—'को एत्थ मच्चुं पाविओ। तीए रोयमाणीए तप्परिवारो वि रोवेइ। तम्मि काले णरिंदभज्जा किं पि कारणत्थं कुंभगारी गेहे दासिं पेसेइ। तओ जणणीए पुत्तीए समीवमागन्तुं भणियं। धिरत्थु मम, जेण मए दव्वस्स कए भाउविणासो चिंतिओ। पिअस्स हट्टाओं णाइदूरे रुक्खस्स पच्छा अप्पाणं आवरिअ ठविआ। कियंतकाले सो सोण्णारो हट्टं संवरिअ, मंजूसं च हत्थेण गहिऊण सो भयमंतो इओ तओ पासंतो सिग्घं गच्छंतो जाव तस्स रुक्खस्स समीवं आगओ तया सा सहसा णीसरिऊण मउणेण तं णिब्भच्छेइ।

एगम्मि वणे वाणरो जूहवई सच्छंदपयारो परिवसइ। सो कयाइ परिणयवओ बलवता वाणरेण अभिभूओ। एवं भणंता कलुणं परुण्णा भणइ तं जणणी। तत्थेव णयरे बहस्सइ नाम माहणो, तस्स सोमिला भज्जा, तेसिं पुत्तो रुद्ददत्तो। सुरिंददत्त—रुद्ददत्ता बालवयंसा।

सोहम्मदेवो चुओ माणुसं विग्गहं लहिऊण गुरुसमीवे जिणवयणं सोऊणं समणो जाओ, सो अहं। भो महाराय, सागयं ते। राइणा भणियं। अहो ते महाणुभावया। किं वा तवस्सिजणो पियं वज्जिय अण्णं भणिउं जाणइ। ण य मियङ्कबिम्बाओ अंगारवुट्ठीओ पडंति। ता अलं एइणा। भयवं, कया ते पारणगं भविस्सइ। अग्गिसम्मेण भणियं। महाराय, पञ्चहि दिणेहिं। राइणा भणियं। भयवं, जइ ते णाईव उवरोहो, ता कायव्वो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मम गेहे पारणएणं पसाओ ! अग्गिसम्मेण भणियं। महाराय, आगच्छइ ताव सो दियहो, को जाणइ अन्तरे किंपि भविस्सइ। राइणा भणियं। भयवं, विग्घं मोत्तूण संगच्छइ। अग्गिसम्मतावसेण भणियं। जइ एवं ते णिव्वन्धो, ता एवं पडिवण्णा (स्वीकृत है) ते पत्थणा।

तो किं इयाणिं पि ते ण संजायं पारणयं ति। अग्गिसम्मतावसेण भणियं 'न संजायं'। तावसेहिं भणियं। कहं न संजायं, किं न पविट्ठो तस्स राइणो गुणसेणस्स गेहं। अग्गिसम्मतावसेण भणियं 'पविट्ठो'। तावसेहिं भणियं—'ता कहं ते न संजायं' ति। तेण भणियं। बालभावाओ चेव मे सो राया अणवरद्धवेरिओ, खलयारिओ अहं तेण। पुव्विं मए पुण न जाणिओ, अवगओ से इयाणिं वेराणुबंधो।

Translate into Prakrit पाइअभासाए अणुवायं कुणन्तु

आकाश में बादल छाये हैं और बिजली चमक रही है। उसने हँसते हुए माँ से कहा—'मैं आज भोजन नहीं करूँगा। मुझे जल्दी ही पुस्तक याद करनी है। अप्सराएँ इन्द्र के अखाड़े में नाचती हैं। मेरी मित्रता उनके साथ नहीं है। जरादेवी के पुत्र का नाम जरत्कुमार है। अर्धमागधी भाषा में विपुल साहित्य है। पश्चिम दिशा में उनका घर है। देवताओं की पूजा सुख देती है। उसके पेट में पीड़ा है। महासती का तेज अपूर्व होता है। शील के प्रभाव से असंभव कार्य संभव हो जाते हैं। यात्रा के लिए वे लोग जाते हैं। उनके साथ क्या तुम भी जा रहे हो। यात्रा में कुछ कष्ट होता है।

सभा में कितने सदस्य उपस्थित हैं। विदुषी महिला घर का आभूषण होती है। वह मोटी स्त्री बीमार है। सुनारिन के घर मेरी दासी जा रही है। उन चोरों ने सारा धन अपने पास रखा है। लुटेरे नगरी को लूटते हैं। नगर के चारों ओर खाई है। बिल्ली रात्रि में भ्रमण करती है। महिलाएँ पढ़ने में सबसे आगे हैं। जैनबालाविश्राम स्त्री-संस्था है। उसका प्रबन्ध प्रशंसनीय है। वहाँ अगणित छात्राएँ पढ़ती हैं।

वह कमरे को साफ करती है। मैं भी पुस्तकों को साफ करता हूँ। सफाई से रहना जीवनोत्थान का उपाय है। मेरे घर में चिड़ियाँ घोंसले बनाती हैं। भगाने पर भी वे कहीं नहीं जातीं। अग्नि की लपट से उसका हाथ जलता है। मैं आपकी समस्त बातों को सुनता हूँ। संसार में परिश्रम करने से ही फल प्राप्त होता है। नलिन पढ़ने में परिश्रम नहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करता है। वह पढ़ने में तेज है। उसका मन खेलने में बहुत लगता हैं। हम लोग भी पढ़ने में मन लगाते हैं। बचपन का परिश्रम जीवनभर काम आता है।

कुमुदचन्द्र वाराणसी में रहता है। वह सुशील बालक है, पढ़ने में मन लगाता है। उसमें विनय गुण वर्तमान है। रामबालक प्रसाद बहुत परिश्रम करते हैं। उन्होंने पढ़ने का कार्यक्रम तैयार किया है। वे लोग हम लोगों से झगड़ा करते हैं। दण्ड-विभाग का अधिकारी मेरा मित्र है। पटने में उनका मित्र रहता है। मथुरा भी अयोध्या के समान तीर्थ-स्थान है। मथुरा को मधुवन या मधुपुरी भी कहते हैं। धौलपुर चम्बल नदी के तटपर स्थित है। यह प्राचीन स्थान है। मेघदूत में इसका नाम दशपुर आया है। यक्ष मेघ को मार्ग बतलाता है। विदुषी बहनें उन्नति करती हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचमो पवाढओ Lesson 5

नपुंसकलिङ्ग शब्द और उनके प्रयोग

२२. नपुंसकलिङ्ग में स्वरान्त शब्दों में प्रथमा और द्वितीया के एक वचन में अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है अर्थात् विभक्ति चिह्न अनुस्वार जोड़ा जाता है।

२३. नपुंसकलिङ्ग में स्वरान्त शब्दों में प्रथमा और द्वितीया के बहु-वचन में इं, इँ और णि विभक्ति चिह्न जोड़े जाते हैं।

२४. प्रथमा के एक वचन में इकारान्त और उकारान्त शब्दों के अन्तिम इ और उ को दीर्घ नहीं होता।

२५. तृतीया विभक्ति से आगे के सभी रूप पुँल्लिङ्ग के समान ही होते हैं।

वण—वन शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	वणं	वणाइं, वणाइँ, वणाणि
बी०	वणं	वणाइं, वणाइँ, वणाणि
त०	वणेण	वणेहिं
च०	वणस्स	वणाणं
पं०	वणत्तो, वणाओ	वणाहिंतो
छ०	वणस्स	वणाणं
स०	वणम्मि	वणेसु
सं०	हे वण	हे वणाइँ, वणाइँ, वणाणि

धण—धन शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	धणं	धणाइं, धणाइँ, धणाणि
बी०	धणं	धणाइं, धणाइँ, धणाणि

इसके आगे वण शब्द के समान रूप होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इकारान्त दहि (दधि) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	दहिं	दहीइं, दहीइँ, दहीणि
बी०	दहिं	दहीइं, दहीइँ, दहीणि
त०	दहिणा	दहीहिं
च०	दहिणो, दहिस्स	दहीणं
पं०	दहिणो, दहित्तो	दहीहिंतो, दहीसुंतो
छ०	दहिणो, दहिस्स	दहीणं
स०	दहिम्मि	दहीसु
सं०	हे दहि	हे दहीइं, दहीइँ, दहीणि

वारि—जल शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	वारिं	वारीइं, वारीइँ, वारीणि
बी०	वारिं	वारीइं, वारीइँ, वारीणि
त०	वारिणा	वारीहिं
च०	वारिणो, वारिस्स	वारीणं
पं०	वारिणो, वारित्तो	वारीहिंतो
छ०	वारिणो, वारिस्स	वारीणं
स०	वारिम्मि	वारीसु
सं०	हे वारि	वारीइं, वारीइँ, वारीणि

सुरहि—सुरभि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	सुरहिं	सुरहीइं, सुरहीइँ, सुरहीणि
बी०	सुरहिं	सुरहीइं, सुरहीइँ, सुरहीणि

शेष रूप वारि शब्द के समान होते हैं।

उकारान्त महु—मधु शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	महुं	महूइं, महूइँ, महूणि
बी०	महुं	महूइं, महूइँ, महूणि
त०	महुणा	महूहिं
च०	महुणो,	महूणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	एकवचन	बहुवचन
पं०	महुणो, महुत्तो	महूहिंतो, महूसुंतो
छ०	महुणो, महुस्स	महूणं
स०	महुम्मि	महूसु
सं०	हे महु	हे महूइं, महूइँ, महूणि

जाणु—जानु शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	जाणुं	जाणूइं, जाणूइँ, जाणूणि
बी०	जाणुं	जाणूइं, जाणूइँ, जाणूणि

इसके आगे महु के समान रूप होते हैं।

अंसु (अश्रु) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	अंसुं	अंसूइं, अँसूइँ, अंसूणि
बी०	अंसुं	अंसूइं, अंसूइँ, अंसूणि

इसके आगे महु के समान रूप होते हैं।

व्यञ्जनान्त दाम—दामन् नपुंसकलिङ्ग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	दामं	दामाइं, दामाइँ, दामाणि
बी०	दामं	दामाइं, दामाइँ, दामाणि
त०	दामेण	दामेहिं
च०	दामाय, दामस्स	दामाणं
पं०	दामत्तो, दामाओ,	दामत्तो, दामाओ, दामाहिंतो
छ०	दामस्स	दामाणं
स०	दामम्मि	दामेसु
सं०	हे दाम	हे दामाइं, दामाइँ, दामाणि

नकारान्त नाम—नामन् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	नामं	नामाइं, नामाइँ, नामाणि
बी०	नामं	नामाइं, नामाइँ, नामाणि

इससे आगे के रूप दाम के समान होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नकारान्त पेम्म (प्रेमन्) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	पेम्मं	पेम्मइं, पेम्माइँ, पेम्माणि
वी०	पेम्मं	पेम्मइं, पेम्माइँ, पेम्माणि

शेष शब्द रूप दाम के समान होते हैं।

नकारान्त अह—अहन् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	अहं	अहाइं, अहाइँ, अहाणि
वी०	अहं	अहाइं, अहाइँ, अहाणि

शेष रूप दाम शब्द के समान होते हैं।

सान्त सेय—श्रेयस् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	सेयं	सेयाइं, सेयाइँ, सेयाणि
वी०	सेयं	सेयाइं, सेयाइँ, सेयाणि

शेष रूप वण शब्द के समान होते हैं हैं।

सान्त वय (वयस्) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	वयं	वयाइं, वयाइँ, वयाणि
वी०	वयं	वयाइं, वयाइँ, वयाणि

शेष शब्द रूप वण शब्द के समान होते हैं।

वर्तमान कृदन्त हसंत, हसमाण शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	हसन्तं, हसमाणं	हसन्ताइं, हसन्ताइँ, हसन्ताणि
वी०	हसन्तं, हसमाणं	हसन्ताइं, हसमाणाइँ, हसन्ताणि

अवशिष्ट रूप वण के समान होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वत् प्रत्ययान्त भगवन्त—भगवत् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	भगवन्तं	भगवन्ताइं, भगवन्ताइँ, भगवन्ताणि
बी०	भगवन्तं	,, ,, ,,

शेष रूप वण शब्द के समान होते हैं।

आउ, आउस—आयुष् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	आउं	आऊइं, आऊइ, आऊणि
बी०	आउं	आऊइं, आऊइँ, आऊणि
त०	आउणा	आऊहिं—हिँ
च०	आउणो, आउस्स	आऊणं
पं०	आउणो, आउत्तो	आऊहितो, आऊसुंतो
छ०	आउणो, आउस्स	आऊणं
स०	आउम्मि	आऊसु
सं०	हे आउ	हे आऊइं, आऊणि

शब्दकोष

अवज्झाणं = अपध्यान, दुर्ध्यान
गोविसाणं = गाय का सींग
चिन्तणं = विचार
जोव्वणं = यौवन
पयं = पद, विभक्ति अन्तवाला शब्द
भस्सं = भस्म, राख
वागरणं, वायरणं = व्याकरण
विमाणं = विमान
विसं = विष, जहर
समायरणं = समाचरण
सिलोगद्धं = श्लोकार्ध, आधा श्लोक
अत्थं = अस्त, मृत्यु
आगासं, आयासं = आकाश
उदगं = जल
दाहिणपासं = दक्षिण की तरफ
विसेसं = विशेष
सवणं = श्रवण
आसणं = आसन, बैठने की वस्तु
गाणं = गान, गीत
चच्चरं = चौराहा, चौहट्टा
दव्वं = द्रव्य
भयं = भय
वाणिज्जं = वाणिज्य, व्यापार
समोसरणं = समवशरण
सरं = सरोवर
सिद्धालयं = सिद्धालय
विसाणं = हाथी का दाँत, सींग
विसारणं = खण्डन
विसेसणं = विशेषण, दूसरे से भिन्नता बतलाने वाला गुण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विसोहणं = विशोधन, शुद्धीकरण
विस्सं = मांस के समान गन्ध वाला
विस्सरणं = विस्मृति
विस्सामणं = चप्पी, अंगमर्दन, वैयावृत्य
विस्सारणं = विस्तारण, फैलाव
विहं = आकाश
विहडणं = विघटन
विहणणं = पिंजन
विहम्मं = विधर्मता
विहाणं = विधान, शास्त्रोक्त रीति, परित्याग
विहूणणं = विधूनन, पंखा, दूरीकरण
वीवाहणं = विवाह करना
वीसन्दणं = एक प्रकार का खाद्य
वुक्कारियं = गर्जना
वुज्जणं = स्थगन, आच्छादन, ढकना
वुत्तं = छन्द
वूहं = व्यूह, सैन्यरचनाविशेष
वेअं = कर्मविशेष, वेद्य
वेअड्डं = मिलावा, विदग्धता
वेअणं = वेतन, कम्प, अनुभव
वेणइअं = वैनयिक, विनय, नम्रता
वेणिअं = लोकापवाद
वेत्तं = स्वच्छ वस्त्र
वेदिसं = विदिशा की तरफ
वेप्पुअं = बचपन
वेफल्लं = निष्फलता
वेमणस्सं = मनमुटाव
वेरग्गं = वैराग्य, उदासीनता
वेरमणं = विराम, निवृत्ति
वेरुलिअं = वैडूर्य रत्न

वेलणयं = लज्जा
वेलुगं = वेल का पेड़
वेसणं = चने का आटा
वेसम्मं = विषमता
वेहणं = वेधन
वेहव्वं = वैधव्य, रँड़ापा
वेहवं = विभूति, ऐश्वर्य
वोमं = आकाश
वोरमणं = हिंसा, प्राणिवध
वोसिरणं = परित्याग
वोहित्तं = जहाज, नौका
संकमणं = संक्रमण, प्रवेश
संकलं = सांकल, निगड
संकलणं = संकलन, मिश्रता
संकित्तणं = संकीर्त्तन, उच्चारण
संकोअणं = संकोचन, संकोच
संखं = सांख्य दर्शन
संखाणं = गिनती, गणना
संखेवणं = संक्षेपण, अल्प करना
संगं = सींग, शृंग सम्बन्धी
संगमं = संगत, मित्रता
संगरं = युद्ध
संगिण्हणं = आश्रयदान
संगीअं = संगीत, गान
संगोल्लं = समूह, संघात
संघट्टणं = संघट्टन, संमर्दन
संघयणं = संहनन, शरीर, अस्थि-रचना
संघायणं = विनाश, हिंसा
संचरणं = चलना, गति
संजणणं = उत्पत्ति
संजुअं = युद्ध, लड़ाई
संजोअणं = संयोजन, जोड़ना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संठाणं = आकृति, आकार
संठावणं = संस्थापन
संडासं = सँड़सी, चिमटा
संडिब्भं = बालकों का क्रीड़ास्थान
संतमसं = अन्धकार, अन्धेरा
सन्तरणं = तैरना
संतावणं = सन्ताप
संथरणं = संस्तरण, निर्वाह, बिछौना
संदंसणं = दर्शन, देखा
संदीवणं = उत्तेजना
संधाणं = सन्धि, सुलह, मद्य, सुरा
संधारणं = सान्त्वना, आश्वासन
संनिज्भं = सान्निध्य, निकटता
संनिविट्ठं = मोहल्ला
संपयाणं = समर्पण
संपहारणं = निश्चय
संपाडणं = सम्पादन, निष्पादन
संपेसणं = संप्रेषण, भेजना
संबलं = पाथेय
संमज्जणं = प्रमार्जन, साफकरना
संमोहणं = मोहित करना
संरक्खणं = संरक्षणं, समीचीनरक्षण
संवट्ठणं = जहाँ पर अनेक मार्ग मिलते हैं, वह स्थान।
संवहणं = ढोना
संविहाणं = संविधान, रचना
संवेयणं = ज्ञान
संसणं = कथन, प्रशंसा
संसवणं = श्रवण, सुनना
संसोहणं = विरेचन, जुलाब
सक्कारणं = सत्कार, सम्मान
सक्खिज्जं = गवाही
सगडं = गाड़ी

सच्चं = सत्य
सट्ठं = शठता
सढयं = कुसुमा, फूल
सणं = पाट, शण
सत्तं = सत्त्व
सत्थं = स्वास्थ्य, स्वस्थता
सत्थिअं = जाँघ
हरितं = हरी घास
सद्दहाणं = श्रद्धान, विश्वास
सद्दालं = नूपुर
सद्दं = श्राद्ध
सप्पि = घी, घृत
समच्चणं = पूजन
समागमणं = समागमन
समाएसणं = आज्ञा
समालंभणं = अलंकरण
समालोयणं = समालोचन, सामान्य अर्थ का दर्शन
समाहाणं = समाधान,
समुक्कित्तणं = समुत्कीर्त्तन, उच्चारण
समुक्खणणं = उन्मूलन, उत्पाटन
समुट्ठाणं = सम्यग् उत्थान
समुदाणं = भिक्षा
समुद्धरणं = उद्धार
समुप्पिंजसं = अयश, अपकीर्त्ति
समुल्लवणं = कथन
सरणं = स्मृति, गमन
सस्सं = धान्यं
सहणं = तितिक्षा, मर्षण
साउज्जं = सहयोग
सागयं = स्वागत
सामण्णं = श्रमणता, साधुपन
सामत्थं = पर्यलोचन, मन्त्रणा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सायं = सुख
सारज्जं = स्वर्ग का राज्य
सारिक्खं = समानता
साहसं = साहस
सिन्दूरं = सिन्दूर
सिक्कडं = खटिया, मचिया
सिप्पं = पलाल, पुआल, कारीगरी
सिरं = मस्तक
सिवं = मंगल, कल्याण
सिहरं = शिखर
सीउण्हं = शीतोष्ण
सुअणं = सोना, शयन
सुन्देरं = सौन्दर्य
सुकयं = सुकृत
सुक्कं = चुंगी, शुक्ल
सुचरिअं = सदाचरण
सुत्तं = सूत्र, तागा
सुहं = सुख
सूलच्छं = गड्ढा, छोटा तालाब
सेच्चं = शीतपन
सेवणं = सीना
सोअमल्लं = सुकुमारता
सोइअं = चिन्ता
सोढीरं = पराक्रम
सोमाणं = मसान, मरघट
सोवाणं = सीढ़ी, निसेनी
सोसणं = सुखाना
सोहग्गं = सुभगता, सौभाग्य
हड्डं = हाड़
हणणं = मारना
हम्मिअं = गृह, प्रासाद
हिंजीरं = सांकल, सिकरी
हिंडणं = पर्यटन
हिंडोलणं = खेत में पशु आदि को रोकने की आवाज
हिमं = तुषार
हिरण्णं = चांदी
हीसमणं = हेषारव, घोड़े का शब्द
हेअंगवीणं = नवनीत, मक्खन
हेमं = सुवर्ण, सोना
खोद्दं = मधु
गोविल्लं = चोली, कंचुकी
रिणं = कर्ज, ऋण
उग्गाहणं = उगाहना, तगादा
उच्चल्लरं = ऊसर भूमि
उडुं = नक्षत्र
ऊणं = ऊन
उवंजणं = मालिश
उवट्ठाणं = उपवेशन
उवणिमंतणं = निमन्त्रण
उसीरं = उशीर, खश
कंडं = दण्ड. लाठी
कडारं = नारियल
करणं = इन्द्रिय, साधन
करिल्लं = करेला
कवडं = कपट, माया
कविअं = लगाम
कविल्लुयं = कड़ाही
कव्वालं = कार्यालय
कव्वं = काव्य
कसव्वं = भाफ, बाष्प
कसिअं = चाबुक
काणणं = जंगल
काहलं = ढोल, वाद्यविशेष
किट्टिसं = खली
क्रिविडं = खलिहान
कुडगं = भूसा, अन्न का छिल्का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुंभंडं = कोहँड़ा
कुच्चं = दाढ़ी-मूंछ
कुडीरं = झोपड़ी
कुडुंबं = परिवार
कुल्लडं = चूल्हा
कूडं = जाल
कोट्ठारं = भाण्डागार
खिच्चं = खिचड़ी
गेहं, गिहं = घर
घढं = स्तूप, टीला

क्रियाकोष

वंचइ = ठगता है
वंजइ = व्यक्त करता है
वंदइ = प्रणाम करता है
वंछइ = चाहता है, अभिलषा करता है
वग्गइ = कूदता है, जाता, है वर्ग करता है
वज्जइ = डरता है, बजता है
वज्जरइ = कहता है, बोलता है
वट्टइ = परोसता है, व्यवहार करता है वरतता है
वड्डइ = बढता है
वड्डवइ = बढ़ाता है, वृद्धि करता है
वण्णइ = वर्णन करता है
वमइ = उलटी करता है, वमन करता है
वयइ = बोलता है, कहता है
वरइ = सगाई करता है, सम्बन्ध करता है
वलइ = लौटाता है, वापस करता है
वहइ = पहुँचाता है, मारता है, पीड़ा करता है
वलग्गइ = आरोहण करता है, चढ़ता है
ववइ = बोता है, देता है
ववसइ = प्रतिपादन करता है, करता है, प्रयत्न करता है, निर्णय करता है
ववहरइ = व्यापार करता है
वेहइ = मार डलता है, पीड़ा करता है
वाइ = सूखता है, बुनता है
वायइ = बजाता है
वालइ = मोड़ता है, वापस लौटता है
वावरइ = काम में लगता है
वाहइ = वहन करता है, चलाता है
वाहरइ = बोलता है
विअंभइ = उत्पन्न होता है, विकसित होता है
विअट्टइ = अप्रमाणित करता है विचारता है, विहरता है
विअरइ = विहरता है, अर्पण करता है, देता है
विअप्पइ = विचार करता है, संशय करता है
विअलइ = मोडता है, गल जाता है, मजबूत होता है
विअल्लइ = क्षुब्ध होता है
विअसइ = विकसित होता है
विआवइ = जन्म देता है, प्रसव करता है
विउक्कमइ = परित्याग करता है
विउक्कसइ = गर्व करता है, बड़ाई करता है
विउज्झइ = जागता है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विउसइ = विद्वान् की तरह आचरण करता है
विओजइ = अलग करता है
विंघइ, विउभ्फइ = अलग होता है
विंटइ = वेष्टन करता है, लपेटता है
विकंथइ = प्रशंसा करता है
विकट्टइ = काटता है
विकिणइ, विक्कइ, विक्केइ = बेचता है
विक्खरइ = बिखरता है
विकुप्पइ = कोप करता है
विकूणइ = घृणा से मुँह मोड़ता है
विगणइ = निन्दा करता है, घृणा करता है
विगरहइ = निन्दा करता है
विगिंचइ = पृथक् करता है
विच्छुट्टइ = विक्षोभ करता है, चंचल हो उठता है
विट्टालइ = अस्पृश्य करता है, उच्छिष्ट करता है
विडंबइ = तिरस्कार करता है
विढवइ = उपार्जन करता है, पैदा करता है
विणिजुजइ = जोड़ता है, कार्य में लगता है
विणिवट्टइ = निवृत्त होता है, पीछे हटता है
विणिवारइ = रोकता है, निवारण करता है
विण्णवइ = प्रार्थना करता है
विण्णसइ = स्थापना करता है
विद्धइ = छेदता है
विप्पलंभइ = ठगता है
विम्हरइ = याद करता है
विरइ = तोड़ता है, व्याकुल होता है
विरल्लइ = विस्तारता है, फैलाता है
विलसइ = मौज करता है
विवरइ = बाल सँवारता है
विसइ = हिंसा करता है
विसूरइ = खेद करता है
वेअइ = अनुभव करता है
वेढइ = लपेटता है
वेहइ = वीधता है
वोलइ = चलता है
वुड्ढइ = बढ़ता है, बढ़ाता है
वेआरइ = ठगता है, प्रतारण करता है
वेल्लइ = काँपता है, क्रीड़ा करता है
वोसरइ = परित्याग करता है
विरमालइ = बाट जोहता है
विरेअइ = दस्त लेता है
विलुंपइ = अभिलाषा करता है
विवहइ = विवाह करता है
विसिसइ = विशेषण युक्त करता है
वीसुंभइ = पृथक् होता है

प्रयोगवाक्य

जल में मछलियाँ रहती हैं = वारिम्मि मच्छा णिवसंति ।
वह अपध्यान करता है = सो अवज्झाणं करेइ ।
वे लोग दक्षिण की तरफ जाते हैं = ते दाहिणपासं गच्छंति ।
हम लोग उसके आसन को पसंद करते हैं = अम्हाणं तस्स आसणं रुचइ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसका यौवन अभी भी अक्षुण्ण है = तीए जोव्वणं अहुणावि अखुण्णं अत्थि

उसका व्याकरण ज्ञान बहुत अच्छा है = तस्स वायरणणाणं बहूत्तमं अत्थि

मुझे श्लोकार्ध भी नहीं आता है = मह सिलोगद्धं वि ण आआइ

चौराहे पर वे लोग मिलते हैं = चच्चरम्मि ते जणा मिलन्ति

समोशरण में मनुष्य, पशु-पक्षी सभी बैठते हैं = समोसरणम्मि मणुस्स पसू-पक्खिणो सव्वे जीवा आसंति

व्याकरण में संज्ञा, सर्वनाम, और क्रिया का वर्णन रहता है = वागरणम्मि संण्णा सव्वनाम–विसेसण–किरियाणं–वण्णणं रहइ

चतुर लोग चौराहे पर घूमते हैं = विअड्ढजणा चच्चरम्मि भमन्ति

सिद्धालय में सिद्ध रहते हैं = सिद्धालमम्मि सिद्धा णिवसंति।

सिंह-गर्जना जंगल में सुनाई पड़ती है = सिहगज्जणं वणे सुणइ।

उससे मेरा मनमुटाव है = तेहिं सह मज्झ वेमणस्सं अत्थि

मुझे पाठ तनिक भी याद नहीं है = मज्झ पाठो अप्पं वि ण विम्हरइ

विषमता हमारे देश से कब दूर होगी = वेसम्मं अम्हाणं देसत्तो कया दूरं होज्जहिइ

उसका संगीत मुझे बहुत प्रिय है = तस्स संगीअं मज्झ बहुपियं अत्थि

उसकी आकृति भयावह है = तस्स संठाणं भयावहं अत्थि

उस कहानी का तुम संक्षेपण करते हो = तीए कहाए तुमं संखेवणं करेसि

अब्भासो Exercise

Translate into Hindi हिन्दीभासाए अणुवायं कुणन्तु

पाइयकव्वं लोए कस्स हिययं न सुहावेइ। सो पावकम्मं ण करेइ। साहूणं दंसणं वि नियमा दुरियं पणासेइ। राया सुवण्णयारं कहइ। संपइ नरिंदो सयलाए पिच्छीए चेइआइं करेइ। सो तवस्सि भिक्खुं य पीडइ। पापकम्मं नेव कुज्जा न कारवेज्जा। समणोवासगो पइट्ठाए महोच्छवे सव्वे साहम्मिए भुंजावेसी। नरिंदो तत्थ गिरिम्मि चेइअं णिम्मइ। सव्वेसिं गुणाणं बह्मचेरं उत्तममत्थि। गुरवो सया अम्हे रक्खन्तु। अम्हे धणं विढवइ।

कण्हेण भयवं पुच्छिओ, सामि! कत्तो मे मरणं भविस्सइ, सामिणा कहियं, जो एस 'ते जेट्ठभाया' वसुदेवपुत्तो जरादेवीए जाओ जरकुमात्तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम, इमाओ ते मच्चू, तओ जायवाण जराकुमारे सविसाया सोएण निवडिया दिट्ठी, चिंतिअं इमिणा 'अहो' कट्ठं अहं वासुदेवपुत्तो होऊण सयलजणमिट्ठं कणिट्ठं भायरं विणासेहामि त्ति, तओ आपुच्छिऊण जादवजणं जणद्दणरमवणत्थं गओ वणवासं जराकुमारो।

अण्णया रायगिहे दूरदेसाओ समागया रयणकंबलवाणियगा। दंसिया महाजणस्स कंबलगा किं मोल्लं ति पुट्ठा महाजणेण. ते भणंति एक्केक्कं लक्खमोल्लं। अइमहग्घ त्ति न गहिया केणावि। तओ गया रायकुले। पिट्ठा सेणिएण, महग्घ त्ति न गहिया रन्ना। चेल्लणा भणइ—'मम एगं गेण्हसु 'राया नेच्छइ। निग्गया रायकुलाओ वाणियगा। भमंता गया भद्दागेहे। दंसिया भद्दाए वि कंबला गहिया सव्वे, मोल्लं च दिण्णं। चेल्लणा कंबलकए रुट्ठा सेणियस्स। नायं रन्ना, पेसिया पुरिसा—वाहरह वाणियं। आगया, भणंति—गोभद्द सेट्ठिभज्जाए भद्दाए सव्वे रयणकंबला गहिय त्ति। पेसिओ तत्थ सेणिएण पहाणपुरिसो, जहा—'कएणं मम चेल्लणाए एगं कंबलणं देहि' त्ति। भणियं भद्दाए—'को देवपाएहिं सह अम्ह ववहारो, मोल्लं विणा वि कंबलो छिज्जइ। किन्तु ते सव्वे सुण्हाणं पायपुंछणया कया सेज्जमारुहंतीण। बहुकालगहिया अत्थि। किन्तु तेसु किसारियाए (कीड़ों ने) कत्थइ दोरओ (तागा) पायडो कओ। तेण तेहिं न कयाइं पायपुंछणाइं। मा दोरएणं सालिभद्दभज्जाणं पाया छणिज्जिसंति। तओ तेहिं जइ देवपायाण कज्जमत्थि, ता देवो आणवेउ, जेण समापिज्जंति।' निवेइयं रन्ना। तुट्ठो सेणिओ। अहो कयत्थो अहं, जस्स मम एरिसगा वाणियगा संति।

Translate into Prakrit पाइय भासाए अणुवायं कुणन्तु

किसी समय राजगृह में दूर देश से रत्नकंबल बेचनेवाले व्यापारी आये। उन्होंने वहाँ के महाजनों को कम्बल दिखलाये। महाजन उनका मोल पूछते हैं। वे एक-एक लाख रुपया कीमत बतलाते हैं। रानी चेलना लेना चाहती है। मोल अधिक होने से राजा नहीं खरीदता है। यह आग जलती है और सोना चमकता है। मैं एक बात सोचता हूँ। वे लोग यह नहीं सोचते। किसान गुड तोलता है। लड़के कालेज में हल्ला करते हैं, पढ़ते नहीं। किसी नगर में एक कुम्हार रहता है। उसकी पत्नी की मित्रता राजा की रानी के साथ है। कुम्हारिन के घर में गधी है, जिसे वह बहुत प्यार करती है। मुझे पंखे की हवा अच्छी लगती है। उसको अंगमर्दन अच्छा नहीं लगता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सांख्यदर्शन आत्मा का अस्तित्व मानता है। मैं गद्य का संक्षेपण करता हूँ। उसके पास अपार ऐश्वर्य है। मुझे वेसन की रोटी अच्छी मालूम होती है। वेल के पेड़ पर बहुत पत्ते हैं, पर फल नहीं हैं। मैं गान्धी के गुणों का निरन्तर संकीर्त्तन करता रहता हूँ। मैं विधर्मी के साथ भी सम्बन्ध बनाये रखता हूँ। मैं आपकी प्रशंसा करता हूँ, पर आप मेरी बात नहीं मानते हैं। वे अपनी ही बात कहते रहते हैं।

उनका आचरण हमको भी अच्छा लगता है। यह एक लोककथा है। वसन्तपुर नगर में एक ब्राह्मण रहता है। उसके पास तीन गायें हैं। कर्म एवं साधना के क्षेत्र में अन्धानुकरण करना हानिकर है। इस कथा में मानव-स्वभाव का सुन्दर विश्लेषण है। इसके पश्चात् माता पुत्री के पास पहुँचती है। संसार में परिग्रह का संचय ही पाप का कारण है। इस कथा के रचयिता आचार्य हरिभद्र हैं। कुन्दकुन्दाचार्य का लिखा हुआ समयसार ग्रन्थ है। आचार्य नेमिचन्द्र ने गोम्मटसार की रचना की है।

संस्कृत साहित्य में कालिदास का नाम सर्वोपरि है। उमास्वाति बहुत बड़े सूत्रकार हैं। सूत्र-ग्रन्थों की शैली संक्षिप्त होती हैं। मैं स्नानकर भोजन करता हूँ और तुम बिना स्नान किये ही भोजन कर लेते हो। प्रातःकाल जागना स्वास्थ्य के लिए हितकर होता है। हँसती हुई लड़कियाँ झूला झूलती हैं। तुम लोग माता-पिता की आज्ञा मानते हो या नहीं। मेरे भाई अजमेर में रहते हैं। वे कपड़े का व्यापार करते हैं। उनके यहाँ उत्सव होता है। मैं भी उस उत्सव में शामिल होता हूँ। आप लोग वाराणसी क्यों जा रहे हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छट्ठो पवाढओ Lesson 6

काल और क्रिया रूप

२५. काल रचना की दृष्टि से प्राकृत में वर्तमान, भूत, आज्ञा, विधि, भविष्य और क्रियातिपत्ति के प्रयोग दिखलायी पड़ते हैं। सहायक क्रिया के साथ कृदन्त रूपों का व्यवहार बहुलता से उपलब्ध होता है।

२६. वर्तमान काल के दो भेद हैं—सामान्य वर्तमान और तात्कालिक वर्तमान। सामान्य वर्तमान का अनुवाद वर्तमान काल के सामान्य रूपों द्वारा किया जाता है। यथा—

बालक हँसता है = बालओ हसइ।
वे पढ़ते हैं = ते पढन्ति।
हम लोग दौड़ते हैं = अम्हे धावंति।
वे लोग छत से गिरते हैं = ते पासादओ पडंति।
वह गुरु को प्रणाम करता है = सो गुरुं पणमइ।
मैं सच बोलता हूँ = अहं सच्चं बोल्लामि।
हम लोग आपको प्रणाम करते हैं = अम्हे भवन्तं पणमामो।
तुम पुस्तक पढ़ते हो = तुमं पोत्थयं पढसि।
आप पुस्तक लिखते हैं = भवन्तो पोत्थयं लिहइ।
तुम लोग खेलते हो = तुम्हे खेलित्था
वे पटने में रहते हैं = ते पडलिपुत्ते वसंति।
वे लोग काशी में रहते हैं = ते कासीए वसंति।
वे लोग चलते हैं = ते जणा चलंति।

२७. तात्कालिक वर्त्तमानकाल के वाक्यों का अनुवाद दो प्रकार से किया जाता है। प्रथम प्रक्रिया द्वारा सामान्य वर्तमान काल के क्रिया रूपों को रखकर ही प्राकृत वाक्य लिखे जाते हैं। दूसरी प्रक्रिया में मूलधातु में न्त प्रत्यय जोड़कर कर्त्ता के वचन के अनुसार अत्थि या सन्ति लगाकर अनुवाद करते हैं) प्राचीन प्राकृत में तात्कालिक वर्तमान (Present progressive tense) के प्रयोग प्रायः नहीं मिलते। सामान्य वर्तमान की क्रिया से ही वाक्यों का अनुवाद किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हमारे विचार से तात्कालिक वर्तमान का अनुवाद 'न्त' और अत्थि के योग से ही करना उचित है। यथा—

वह जा रहा है = सो गच्छन्तो अत्थि।
तू जा रहा है = तुमं गच्छन्तो अत्थि, सि वा।
वे लोग पढ़ रहे हैं = ते पढन्ता सन्ति।
तुम लोग पढ़ रहे हो = तुम्हे पढन्ता अत्थि।
मैं पढ़ रहा हूँ = अहं पढन्तो अत्थि, हं पढन्तो म्हि वा
वह छात्रा जा रही है = सा छत्ता गच्छन्ती अत्थि।
वे छात्राएँ पढ रही हैं = तीओ छत्ताओ पढन्तीओ संति।
लड़कियाँ विद्यालय जा रही हैं = बालिआओ विज्जालयं गच्छन्तीओ संति।
वह मनोरमा काम कर रही है = सा मनोरमा कज्जं कुणन्ती अत्थि।
रामदास पुस्तक याद कर रहा है = रामदासो पत्थयं सुमिरन्तो अत्थि।
वह कलम से लिख रहा है = सो कलमेन लिखन्तो अत्थि।
सुरेन्द्र विद्यालय जा रहा है = सुरेंदो विज्जालयं गच्छन्तो अत्थि।
मैं तुम से पूछ रहा हूँ = हं तुमं पुच्छन्तो म्हि।
वह परमात्मा का ध्यान कर रहा है = सो परमप्पं झाणन्तो अत्थि।
वे रुपये एकत्र कर रहे हैं = ते रुप्पआणि चिव्वन्ता संति।
वे परिश्रम से काम कर रहे हैं = ते समेण कज्जं कुणन्ता सन्ति।
तुम क्या कर रहे हो = तुमं किं कुणन्तो अत्थि, सि वा।
वह जंगल में घूम रहा है = सो वणम्मि अडन्तो अत्थि।
राजकन्याएँ पूजा कर रही हैं = रायकण्णाओ पुज्जं कुणन्तीओ संति।
वह घर जा रहा है = सो गिहं गच्छन्तो अत्थि।
लड़के धन जमा कर रहे हैं = बालआ धणं अज्जन्ता संति।
ज्ञानपीठ पुस्तकें प्रकाशित कर रहा है = णाणपीढो पोत्थयाइं पआसन्तो अत्थि।
चौखम्बा भी पुस्तकें छाप रहा है = चौखम्बा वि पोत्थयाइं पआसन्तो अत्थि।
वे लोग चौखम्बा के लिए पुस्तकें लिख रहे हैं = ते चौखम्बास्स कए पोत्थयाइं लिहन्ता सन्ति।
स्टीमर पानी में डूब रहा है = जलयाणं जलम्मि णिमज्जन्तं अत्थि।
डाकिया चिट्ठियाँ ला रहा है = पत्तवाहओ पत्ताणि आणयन्तो अत्थि।
शिक्षक बालकों को पढ़ा रहा है = सिक्खओ बालआ पढन्तो अत्थि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनि तीर्थयात्रा के लिए जा रहे हैं=मुणीओ तित्थजत्ताए गच्छन्ता संति।
बालक खेल कर रहे हैं = बालआ खेलं कुणन्तो सन्ति।
सेना दुर्ग में प्रवेश कर रही है=सेना दुग्गम्मि पवेसं कुणंती अत्थि।
गुरु शिष्यों को उपदेश दे रहे हैं = गुरु सिस्से उवएसं देंतो अत्थि।
वे लोग सीढ़ी पर चढ़ रहे हैं = ते सोवाणं आरोहंता सन्ति।
मैं पीढ़े पर बैठ रहा हूँ = हं पीढम्मि उवविसंतो अत्थि।
आप लोग देव को प्रणाम कर रहे हैं = भवन्ता देवं पणमन्ता संति।
वे लोग ससुराल जा रहे हैं=ते ससुरालयं गच्छन्ता सन्ति।
नागरिक लोग नृत्य देख रहे हैं=पउरा जणा णच्चं पेच्छन्ता सन्ति।
वे धर्मशाला में रह रहे हैं = ते धम्मसालाए वसन्ता सन्ति।
माली वृक्षों का सिंचन कर रहा है=माली विच्छाणं सिंचणं कुणन्तो अत्थि।
मधुमक्खियाँ मधु संचय कर रही हैं=महुमक्खियाओ महुसंचयं कुणन्तीओ सन्ति।

वर्तमानकाल में कुछ धातुओं के रूप

ठा < स्था—ठहरना

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाइ	ठान्ति, ठान्ते, ठाइरे
म० पु०	ठासि	ठाइत्था, ठाह
उ० पु०	ठामि	ठामो, ठामु, ठाम

ने < नी—ले जाना

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेइ	नेन्ति, नेन्ते, नेइरे
म० पु०	नेसि	नेइत्था, नेह
उ० पु०	नेमि	नेमो, नेमु, नेम

पा—पीना

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाइ	पान्ति, पान्ते, पाइरे
म० पु०	पासि	पाइत्था, पाह
उ० पु०	पामि	पामो, पामु, पाम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ण्हा < स्ना—स्नान करना

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ण्हाइ	ण्हान्ति, ण्हान्ते, ण्हाइरे
म० पु०	ण्हासि	ण्हाइत्था, ण्हाह
उ० पु०	ण्हामि	ण्हामो, ण्हामु, ण्हाम

कर < कृ—करना

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करइ, करेइ, करए	करन्ति, करेन्ति, करन्ते, करिरे
म० पु०	करसि, करसे, करेसि	करित्था, करह, करेह
उ० पु०	करामि, करेमि, करमि	करिमो, करामो, करमो, करेमो, करिमु, करिम, कराम

अस्—होना

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अत्थि	अत्थि, संति
म० पु०	अत्थि, सि	अत्थि
उ० पु०	आत्थि, म्हि	अत्थि, म्हो, म्ह

२८. वर्तमान काल में धातु का अत्थि रूप तीनों पुरुष और दोनों वचनों में बनता है।

भूतकाल

२९. भूतकाल के परिज्ञान के लिए प्राकृत में एक ही काल का प्रयोग पाया जाता है। अनुवाद में कृदन्त पदों से विशेष सहायता ली जाती है। सभी प्रकार के अतीत प्रयोगों में सामान्य भूत के अतिरिक्त कृदन्तों का भी प्रयोग पाया जाता है।

३०. भूतकाल के रूपों के लिए व्यञ्जनान्त धातुओं में ईअ प्रत्यय सभी पुरुषों और सभी वचनों में जोड़ा जाता है। स्वरान्त धातुओं में तीनों पुरुष और दोनों वचनों में सी, ही और हीअ प्रत्यय जोड़कर रूप बनाये जाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्यञ्जनान्त हस धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसीअ	हसीअ
म० पु०	हसीअ	हसीअ
उ० पु०	हसीअ	हसीअ

स्वरान्त हो धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होसी, होही, होहीअ	होसी, होही, होहीअ
म० पु०	होसी, होही, होहीअ	होसी, होही, होहीअ
उ० पु०	होसी, होही, होहीअ	होसी, होही, होहीअ

ठा < स्था—ठहरना धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठासी, ठाही, ठाहीअ	ठासी, ठाही, ठाहीअ
म० पु०	,, ,, ,,	,, ,, ,,
उ० पु०	,, ,, ,,	,, ,, ,,

झा < ध्यै—ध्यान करना

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	झासी, झाही, झाहीअ	झासी, झाही, झाहीअ
म० पु०	झासी, झाही, झाहीअ	झासी, झाही, झाहीअ
उ० पु०	झासी, झाही, झाहीअ	झासी, झाही, झाहीअ

ने < नी—ले जाना

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेसी, नेही, नेहीअ	नेसी, नेही, नेहीअ
म० पु०	नेही, नेही, नेहीअ	नेसी, नेही, नेहीअ
उ० पु०	नेसी, नेही, नेहीअ	नेसी, नेही, नेहीअ

अस् धातु का तीनों पुरुषों में एकवचन में आसि और बहुवचन में अहेसि रूप बनता है। कुछ वैयाकरणों के अनुसार तीनों पुरुषों के एकवचन और बहुवचन का रूप आसि ही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रयोगवाक्य

तुम पटना गये थे = तुमं पाडलिपुत्तं गच्छीअ ।
उसने बनारस में पढ़ा था = सो वाराणसी ए पढीअ ।
तुमने यह क्या किया = तुमं इदं किं करीअ ।
उन लोगोंने आँखें बन्द कीं = ते जणा नेत्ताइं संमीलीअ ।
उन लोगों ने आत्मा का ध्यान किया = ते जणा अप्पं झाहीअ ।
मैंने प्रातःकाल में पुस्तक पढ़ी = अहं पच्चूसे पोत्थयं पढीअ ।
उसने मेरी घड़ी चुराई = सो मज्झ घडिं चोरीअ ।
किसान ने खेत सींचा = किसओ खेत्तं सिंचीअ ।
मैंने रोटी खायी = अहं रोटिअं खादीअ ।
राम ने मेरे विरुद्ध शिकायत की = रामो मज्झ विवरीयं अवहीरीअ ।
शिक्षक ने लड़के को पीटा = सिक्खओ वालअं ताडीअ ।
उसने मधुर गीत गाया = सा महुरं गीयं गाहीअ ।
पुलिस ने चोर को पकड़ा = पुलिसो चोरं गिण्हीअ ।
न्यायाधीश ने फैसला सुनाया = णायाहीसो नायं सुणीअ ।
तुम एक पुस्तक पढ़ रहे थे = तुमं एगं पोत्थयं पढीअ ।
लड़के मैदान में खेल रहे थे = वालआ खेत्ते खेलीअ ।
यात्री यात्रा कर रहे थे = जात्तीआ जत्तं करीअ ।
तुम कुएँ पर स्नान कर रहे थे = तुमं कूवम्मि ण्हाणं करसी ।
तुम ने रामायण पढ़ी थी = तुमं रामायणं पढीअ ।
तुम्हारे पिता घर जा रहे थे = तुज्झ पिआ गिहं गच्छीअ ।
रसोइया ने भोजन बनाया = पाचओ भोयणं णिम्मीअ ।
शिक्षक लड़कों को पढ़ा रहे थे = सिक्खओ वालआ पढीअ ।
उर्मिला गाना गा रही थी = उम्मिला गाणं गाहीअ ।
उसकी बेटी ने प्रवेशिका पास की = तस्स पुत्ती पवेसिअं उत्तरीअ ।
उसने खेत से धान काटा = सो खेत्तओ सस्सं कट्टीअ ।
बाग में माली ने फूल तोड़े = उज्जाणे माली फुल्लाणि तुट्टीअ ।
माता ने बालक को भात खिलाया = माया बालअं भत्तं भुंजावीअ ।
कुन्ती ने पुत्रों को शिक्षा दी = कुंती बालआ सिक्खं देहीअ ।
भिखारी ने भीख माँगी = भिक्खुओ भिक्खं मग्गीअ ।
मल्लाह नदी में नाव को ले गया = केवडो नईए नावं नेहीअ ।
सेवक ने आज्ञा नहीं मानी = सेवओ अण्णं ण मण्णीअ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैंने किसी की बुराई नहीं की = अहं कस्सवि अणिट्ठं ण करीअ।
वे लोग पटने में रहते थे = ते जणा पाडलिपुत्तम्मि णिवसीअ।

भविष्यत्काल

३१. भविष्यत्काल का व्यवहार प्राकृत में एक ही प्रकार का पाया जाता है। इसका अनुवाद भी सामान्य भविष्य के क्रियापदों द्वारा किया जाता है। इसकी रूपावली के लिए प्रथम पुरुष एकवचन में हिइ और बहुवचन में हिन्ति, मध्यम पुरुष के एकवचन में हिसि और बहुवचन में हित्था एवं उत्तम पुरुष के एकवचन में स्सं, स्सामि और बहुवचन में स्सामो प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

हस धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसिहिइ	हसिहिन्ति
म० पु०	हसिहिसि	हसिहित्था
उ० पु०	हसिस्सं, हसिस्सामि	हसिस्सामो, हसिस्सामु

हो धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होहिइ	होहिन्ति
म० पु०	होहिसि	होहित्था
उ० पु०	होस्सं, होस्सामि	होस्सामो, होस्सामु

ठा धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाहिइ	ठाहिन्ति
म० पु०	ठाहिसि	ठाहित्था
उ० पु०	ठाहामि, ठास्सामि	ठास्सामो, ठाहामो

झा धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	झाहिइ	झाहिन्ति
म० पु०	झाहिसि	झाहित्था
उ० पु०	झास्सामि	झास्सामो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेहिइ	नेहिन्ति
म० पु०	नेहिसि	नेहित्था
उ० पु०	नेस्सामि	नेस्सामो

पा धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाहिय	पाहिन्ति
म० पु०	पाहिसि	पाहित्था
उ० पु०	पास्सामि	पास्सामो

भविष्यकाल में सुण (श्रु) के स्थान पर सोच्छ, रुद् के स्थान पर रोच्छ, विद् के स्थान पर वेच्छ, दृश् के स्थान पर दच्छ, मुच् के स्थान पर मोच्छ, वच् के स्थान पर वोच्छ, भिद् के स्थान पर भेच्छ एवं भुज् के स्थान पर भोच्छ आदेश होता है और प्रत्यय जोड़कर पूर्ववत् ही रूप बनाये जाते हैं।

प्रयोगवाक्य

वह कल विद्यालय जायगा = सो कल्लं विज्जालयम्मि गच्छहिइ।
वे लड़के वहाँ पर पुस्तक पढ़ेंगे = ते बालआ तत्थ पोत्थयं पढहिन्ति।
तुम वहाँ पर प्रार्थना करोगे = तुमं तत्थ पत्थणं केरहिसि।
हम लोग मैदान में खेलेंगे = अम्हे खेत्ते खेलस्सामो।
शीला गया जायगी = सीला गयं गच्छहिइ।
तुम अपनी किताब पढ़ोगे = तुमं णियपोत्थयं पढहिसि।
वर्षा अच्छी होगी = वरसा उत्तमा होहिइ।
खेत में धान की फसल पैदा होगी = खेत्ते सस्सं उप्पज्जहिइ।
वह किताब की दुकान से किताब खरीदेगा = सो पोत्थयहट्टीए पोत्थयं कीणहिइ।
वह दस बजे रोटी खायगा = सो दसवायणे रोट्टगं खाअहिइ।
उसको कल पुरस्कार मिलेगा = सो पुरक्कारं पप्पहिइ।
श्रीकान्त मैदान में पढेगा = सिरिकांतो खेत्ते पढहिइ।
हम लोग दिल्ली जायेंगे = अम्हे दिल्लिं गच्छहिस्सामो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरी बहन गाती रहेगी = मज्झ बहिणी गायहिइ।
तोता रामनाम कहेगा = सुगो रामनामं कहहिइ।
जुलाई में कालेज खुलेगा = जुलाईमासम्मि विज्जालयो उग्घहिइ।
खेत में पानी बरसेगा = खेत्ते जलं वरहिइ।
तुम लोग रमना में खेलोगे = तुमं रमनाखेत्ते खेलहिसि।
तुम लोग पटना जाओगे = तुमं पाडलिपुत्तं गच्छहिसि।
कल पिताजी वाराणसी से आयेंगे = कल्लं पिआ वाराणसिं आगच्छहिइ।
तुम कपड़ा खरीदोगे = तुमं वत्थं कीणहिसि।
वह धनी आदमी हाथी बेचेगा = सो धणिओ हत्थिं विक्कीणहिइ।
तुम बाजार से कागज लाओगे = तुमं हट्टाओ कग्गलं आणेहिसि।
तुम गाँव में सफाई करोगे = तुमं गामम्मि जामहिसि।
हम विद्यालय का सुधार करेंगे = अम्हे विज्जालयस्स सोहणं करिस्सामो।
वे विद्यालय के अधिकारी बनेंगे = ते विज्जालयस्स अहियारी होहिन्ति।
वे लोग हमारे कामों से प्रसन्न होंगे = ते अम्हाणं कज्जाओ प्रसण्णा होहिन्ति।
हम लोग आपकी भेंट स्वीकार करेंगे = अम्हे तुम्हाणं उवहारं पग्गहिस्सामि।
चलने पर तुमको प्यास लगेगी = चलणम्मि तुमं पिवासा लग्गहिसि।
आज उपवास करने से कल भूख लगेगी = अज्ज उववासकरणेन कल्लं छुहा लग्गहिइ।
मधुमक्खी छत्ता बनायेगी = महुमक्खी महुछत्तं णिम्माहिइ।
विश्वविद्यालय में प्राकृत की पढ़ाई चलेगी = विस्सविज्जालये पाइय अज्झयणं आरंभहिइ।
हम लोग प्रातःकाल दाँतौन करेंगे = अम्हे पच्चूसे दंतहावणं करिस्सामो।

विधि और आज्ञा

३२. जब किसी क्रिया के औचित्य का भाव प्रकट करना हो अर्थात् अमुक क्रिया होनी चाहिए अथवा नहीं, तो विधिलिङ् का प्रयोग होता है। आचार-व्यवहार आदि के सम्बन्ध में शिक्षा-उपदेश देने में विधि का व्यवहार किया जाता है। साधारणतः विधि के दो भेद हैं—प्रवर्तना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और निवर्तना। सत्कार्य में प्रवृत्ति को प्रवर्तना और असत्कार्य से निवृत्ति को निवर्तना कहते हैं।

३३. इच्छा, सामर्थ्य (Ability), योग्यता (Fitness) और संभावना (Possibility) का बोध कराने के लिए विधि एवं आज्ञा का प्रयोग किया जाता है। प्राकृत में विधि और आज्ञा के रूप समान होते हैं।

३४. विधि और आज्ञा में प्रथम पुरुष एकवचन में उ प्रत्यय और बहुवचन में न्तु प्रत्यय; मध्यम पुरुष एकवचन में हि, सु प्रत्यय और बहुवचन में ह प्रत्यय एवं उत्तम पुरुष एकवचन में मु प्रत्यय और बहुवचन में मो प्रत्यय जोड़ा जाता है।

हस धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसउ, हसेउ	हसन्तु, हसेन्तु
म० पु०	हसहि, हससु, हसेहि	हसह, हसेह
उ० पु०	हसिमु, हसेमु	हसिमो, हसेमो

हो धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होउ	होन्तु
म० पु०	होहि, होसु	होह
उ० पु०	होमु	होमो

ठा धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाउ	ठान्तु
म० पु०	ठाहि, ठासु	ठाह
उ० पु०	ठामु	ठामो

झा धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	झाउ	झान्तु
म० पु०	झाहि, झासु	झाह
उ० पु०	झामु	झामो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेउ	नेन्तु
म० पु०	नेहि, नेसु	नेह
उ० पु०	नेमु	नेमो

पा धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाउ	पान्तु
म० पु०	पाहि	पाह
उ० पु०	पामु	पामो

ण्हा धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ण्हाउ	ण्हान्तु
म० पु०	ण्हाहि	ण्हाह
उ० पु०	ण्हामु	ण्हामो

कर धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करउ, करेउ	करन्तु, करेन्तु
म० पु०	करहि, करसु, करेहि	करह, करेह
उ० पु०	करिमु, करामु	करिमो, करामो

पूस पुष्ट होना धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पूसउ	पूसन्तु
म० पु०	पूसहि, पूससु	पूसह
उ० पु०	पूसिम	पूसिमो

गच्छ < गम—जाना धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छउ	गच्छन्तु
म० पु०	गच्छहि	गच्छह
उ० पु०	गच्छिमु, गच्छामु	गच्छिमो, गच्छामो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अस् धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अत्थि	अत्थि
म० पु०	अत्थि	अत्थि
उ० पु०	अत्थि	अत्थि

प्रयोगवाक्य

तुम वहाँ जाओ और काम करो=तुमं तत्थ गच्छहि एवं कज्जं करहि।

तुम अपने मित्र के साथ स्कूल जाओ = तुमं णियमित्तेण सह विज्जालयं गच्छहि।

तुम आचारांग पढो = तुमं आचारांगं पढहि।

झूठे आदमी का साथ मत करो = असत्तनराणं संसग्गं मा करहि।

बड़ों की निन्दा मत करो = गुरुजणाणं निंदा मा करहि।

आकाश के तारों को देखो = आयासम्मि तारागणं पेच्छहि

वे लोग नदी के तट पर घूमें = ते जणा नइतडे भमन्तु।

तुम यहाँ से भाग कर चले जाओ = तुमं एत्थ थाणओ धवित्ता गच्छहि।

तुम लोग इनकी रक्षा करो = तुमं इमाणं रक्खं करहि।

वे लोग इनको रुपये दें = ते जणा इमाणं रुप्पआणि देंतु।

वे जंगल में घूमने जाये = सो वणम्मि भमणे गच्छहि।

तुम फौज में भरती हो जाओ = तुमं सेणाए पविट्ठो होहि।

वे लोग आत्मा का ध्यान करें = ते जणा अप्पाणं झान्तु।

वे लोग उसके सौन्दर्य पर हँसते हैं = ते जणा तस्स सुन्देरं हसन्तु।

तुम इस समय सुग्गे को पढाओ = तुमं इयाणीं सुअं पढहि।

तुम गरीबों को चावल दो = तुमं दरिद्दाणं तंडुलं देहि।

बच्चों को मिठाई दो = बालाणं मिट्ठाण्णं देहि।

उस पुराने मकान को गिरा दो = तं जुण्णं भवनं पाडसु।

इस काम को जल्दी कर डालो = इदं कज्जं सिग्घं करेहि।

वह बालिका कपड़ा को सींये = सा बालिआ वत्थं सिव्वउ।

किसाण ईख का रस पीये = किसओ उच्छुरसं पाउ।

जुलाहा वस्त्र को बुने = तंतुवाओ वत्थं रचउ।

वे लोग जामुन के फल चुने = ते जणा जंबूफलाणि चिव्वन्तु।

वे सन्दूक की चाभी दें = ते वासउस्स कुंचिअं देन्तु।

घाव पर पट्टी बांधो = विणम्मि पट्टिअं वंधहि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रेड़ के पेड़ को काट डालो = एरण्डविच्छं छिन्नहि।
हम लोग सत्य बोलें = अम्हे सच्चं बोल्लेमो।
वे लोग पटने में ठहरें = ते जणा पाडलिपुत्तम्मि ठान्तु।
उनको धर्म्मशास्त्र पढाओ = ताणं धम्मसत्थं पढहि।
तुम लोग इस बबूल के पेड़ को काटो = तुमं इमं बब्बूलविच्छं छिन्नहि
हम लोग सब अपना अपना काम करें = अम्हे णिय-णियकज्जं करेमो।
राम खलिहान में पुआल बिछावे = रामो खले पलालं तिणउ।
पात्र भर दही ले लो = कुडपत्तं दहिं गिण्हहि।
तुम लोग प्रातःकाल ही स्नान करो = तुमं पच्चूसे ण्हाहि।

क्रियातिपत्ति (Conditional)

३५. पूर्व कथन में कोई हेतु निर्दिष्ट हो और दूसरे में उसका फल, तो इस प्रकार के वाक्य-खण्डों की रचना के लिए क्रियातिपत्ति का व्यवहार किया जाता है। आशय यह है कि जब परस्पर संकेतवाले दो वाक्यों का एक संकेतवाक्य बने और उसका बोध करानेवाली क्रिया कोई सांकेतिक क्रिया जब अशक्य प्रतीत हो, तब क्रियातिपत्ति का प्रयोग होता है। क्रियातिपत्ति में क्रिया की अतिपत्ति—असम्भवता की सूचना मिलती है। The Conditional is used instead of the potential, when the non-performance of an action is implied.

३६. क्रियातिपत्ति में तीनों पुरुषों के दोनों वचनों में ज्ज, ज्जा, न्त और माण प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

हस धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसेज्ज, हसेज्जा, हसन्तो, हसमाणो	हसेज्ज, हसेज्जा, हसन्तो, हसमाणो
म० पु०	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,
उ० पु०	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,

हो धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होज्ज, होज्जा, होन्तो, होमाणो	होज्ज, होज्जा, होन्तो, होमाणो
म० पु०	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,
उ० पु०	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ठा धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाज्ज, ठाज्जा, ठान्तो, ठामाणो	ठाज्ज, ठाज्जा, ठान्तो, ठामाणो
म० पु०	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,
उ० पु०	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,

पा धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाज्ज, पाज्जा, पान्तो, पामाणो	पाज्ज, पाज्जा, पान्तो, पामाणो
म० पु०	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,
उ० पु०	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,

गच्छ—गम धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छेज्ज, गच्छेज्जा, गच्छन्तो, गच्छमाणो	गच्छेज्ज, गच्छेज्जा, गच्छन्तो, गच्छमाणो
म० पु०	,, ,, ,,	,, ,, ,,
उ० पु०	,, ,, ,,	,, ,, ,,

प्रयोगवाक्य

यदि सड़क पर प्रकाश होता तो हम गड्ढे में न गिरते = जइ रायमग्गम्मि पयासो होज्जा, ता अम्हे खड्डम्मि ण पडेज्जा।

यदि तू मेरे मन की अवस्था समझ पाता तो मेरा कभी उपहास न करता = जइ तुमं मज्झ मणस्स अवत्थं मुणेज्जा, ता कदापि मज्झ उवहासं ण कुणेज्जा।

यदि मैं एक मिनट पहले आता तो गाड़ी पर सवार हो जाता = जइ हं एग छणं पुव्वं आगच्छेज्जा, ता सयढोवरि आसीणो होज्जा।

यदि पिता जी आज जीवित होते तो उन्हें कितना सुख मिलता = जइ पिआ अज्ज जीवियो होज्जा ता तं किइ सुहं मिलेज्जा।

यदि तुम रहस्य को समझ पाओ तो सत्य के मार्ग से कदापि विचलित न हो = जइ तुमं रहस्सं जाणज्जा ता सच्चमग्गस्स कयापि वियलियं ण होज्जा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरे पास पर्याप्त धन होता तो विदेश की सैर करता = जइ मज्झ समीवे पज्जत्तं धणं होज्जा ता विएसभमणं करेज्जा ।

यदि आरम्भ में ही शत्रु का दमन न किया जाता तो आज वह अदम्य होता = जइ आरंभेव सत्तुस्स दमणं न करेज्जा, ता अज्ज सो अनियंत्तणो होज्जा ।

यदि वैद्य समय पर न पहुँचता तो बीमार मर जाता = जइ समयम्मि वेज्जो न पहुच्चेज्जा ता रोगी मरेज्जा ।

यदि पास ही तालाब न होता तो सारा गाँव जल जाता = जइ णियडम्मि तडाओ ण होज्जा ता समग्गो गामो जलेज्जा ।

यदि यह अफवाह महाराज तक पहुँच जाय तो बुरा हो=जइ अयं जणपवायो महारायपज्जत्तं पहुँच्चेज्ज ता अणिट्ठं होज्जा ।

यदि मैं कर्म न करूँ तो लोक नष्ट हो जायँ = जइ हं कम्मं ण कुणेज्जा ता लोयस्स विणासो होज्जा ।

यदि फिर महायुद्ध हो तो सारी मनुष्य जाति नष्ट हो जाय = जइ पुणो महा-जुद्धो होज्जा ता समग्गमणुस्सजाइए विणासो होज्जा ।

यदि तू मेरी शरण ले तो तुझे कोई कष्ट न हो = जइ तुमं ममसरणं गिण्हेज्जा ता तुमं किमवि कट्ठं ण होज्जा ।

यदि उसे भूखा रहना पड़े तो वह सारी बातों को समझ जाय = जइ सो बुभुक्खो णिवसेज्जा ता सो सयलं वयणं जाणेज्जा ।

यदि तुम्हारे पिता यहाँ रहते तो बहुत धन देते = जइ तुज्झ पिआ अत्थ णिवसेज्जा ता तुज्झं सो बहुधणं देज्जा ।

ध्यान से पढ़ो, नहीं तो फेल हो जाओगे = झाणेण पढेज्जा, अण्णथा अणू-त्तीण्णो होज्जा ।

यदि यह चित्र मैं उसे देता तो वह बहुत खुश होता = जइ इदं चित्तं हं तस्स देज्जा ता सो बहुप्रसण्णो होज्जा ।

शब्दकोष (भोज्य पदार्थ)

भात = भत्तं	रोटी = रोट्टग, रोडिआ
दाल = सूवो, दाली	परोठा = घयचोरी
तरकारी = तेमणं	हलुआ = मोहणभोओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मालुपुआ = अपूवो
पकवान = पक्कान्नं
मिठाई = मिट्ठान्नं
लड्डू = लड्डुओ, मोदओ
जिलेबी = कुंडलिणी
घेवर = घयपूरो
गुझिआ = संयावो
पीठा = पिट्ठओ
बड़ा = बडओ
पापड़ = पप्पडो
वाटी = लेटी
कढ़ी = क्कथिआ
चिउड़ा = चिविडओ
खीर = पायसं
चीनी = सिता या सिया सक्करं
भूरा = महुहूसो
शहद = महु
अमावट = आमावट्टो
सत्तू = सत्तू
गुड़ = गुडो
चटनी = अवलेहो
दूध = खीरं, पयो, दुद्धं
दही = दहि
घी = घयं, सप्पि, आज्जं
मलाई = संताणिआ
खोआ = किलाडो
छेना = आमिछा
तक्र = तक्कं, मट्ठं
माँड़ = मंडं
खिचड़ी = खिच्चडिआ
भूंजा = मिट्ठान्नं भज्जणं

लावा = लाया
होरहा = होलआ
तीखुर = तवखारो
मखाना = मखान्नं
आटा = चुण्णं
मैदा = समिश्रा
चाशनी = सियालेहो
शरवत = सक्करोदयं

तरकारी

आलू = आलुओ
परवल = पडोलो
वैगन = विंताओ
सेम = सिंबी
कोंहड़ा = अलाबू
कद्दू = अलाबू, तुंबी
तरोई = दिग्घहला, कोसातई
झिंगुनी = झिंगणी
रामतरोई = भिंडा
ककड़ी, खीरा = चिब्भडं
करेला = कारवेल्लो
केला = कयली
ओल = कंदो, सूरणो
अरवी = अरलू
मुरई = मूलिआ
गोभी = गोजीहा
साग = सागो, सायो
वत्थुए का साग = वात्थुअं
प्याज = पलांडु
लहसुन = लसुणं
सलगम, गाजर = गिंजणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब्भासो Exercise

पाइअभासाए अणुवायं कुणन्तु Translate into Prakrit

हमारे लड़के बनारस विश्वविद्यालय में विज्ञान का अध्ययन कर रहे हैं। उनकी परीक्षा आगामी मार्च महीने में होगी। यदि वे परिश्रम करेंगे तो उत्तम श्रेणी में उत्तीर्ण होंगे। वे लोग करेला की तरकारी अधिक पसंद करते हैं। पर हमारा विचार आलू की तरकारी खाने का है। वे बाजार से मिठाइयाँ मंगाते हैं, पर यह सभी के लिए संभव नहीं है। कुछ वर्ष पहले की बात है कि रामनगर में एक घटना घटी थी। हम लोग एक बारात में गये थे, वहाँ पर कढ़ी बनी थी, पर वह हमें अच्छी नहीं लगी। बथुए का साग दही के साथ खाने से स्वादिष्ट लगता है। लड़के खीर को बहुत पसन्द करते हैं। मैदा के बने पदार्थ अधिक नहीं खाने चाहिए, इनके सेवन से पेट की आँतें खराब हो जाती हैं। ओल की तरकारी खाने से मुँह खुजलाने लगता है। रामतरोई की तरकारी में नमक अधिक पड़ गया है। आटे की रोटियाँ दूध से खालो। सत्तू खाकर गुजर-बसर कर लेना बुरा नहीं है। उन बच्चों को गुड बाँट दो, पर बीमार को छेना खिलाना हितकर होगा।

मगध विश्वविद्यालय की स्थापना सन् १९६१ में हुई है। इसके कुलपति डॉ० कालिकिंकरदत्त हैं। ये इतिहास के बड़े भारी विद्वान् हैं। इनके समय में विश्वविद्यालय की उन्नति होगी। प्राकृत का अध्ययन इस विश्वविद्यालय में विशेष रूप से होता है। पाठ्यक्रम-निर्धारण के हेतु एक समिति बनी है, जिसके अध्यक्ष डॉ० हीरालाल जी हैं। ये प्राकृत के बहुत बड़े विद्वान् हैं। इन्होंने बड़े-बड़े अनेक ग्रन्थों का संपादन किया है। प्राकृत साहित्य संस्कृत साहित्य के समान ही समृद्ध है। इसमें काव्य, नाटक, छन्द, अलंकार आदि सभी प्रकार का वाङ्मय वर्त्तमान है। भारतीय संस्कृति और साहित्य की जानकारी के लिए प्राकृत का अध्ययन अत्यावश्यक है।

इस कक्षा में बीस छात्र पढ़ते हैं। यदि वे लोग ईमानदारी से काम करेंगे, तो अवश्य ही सफलता मिलेगी। पाटलिपुत्र में चन्द्रगुप्त का राज्य वर्तमान था। उसने बीस वर्षों तक अच्छा शासन किया। करकण्डु का बहुत अच्छा शासन था। उसे गोकुलों से बहुत प्रेम था। उसके अनेक गोकुल थे। जब उसने शरत् काल में एक सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट गाय के बछड़े

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को देखा, तो उसने आदेश दिया कि इसकी माँ का दूध मत दुहना। सारा दूध इसको पिला दिया करना। बड़े होने पर भी इसको गायों का दूध पिलाना बन्द मत करना।

हिन्दीभासाए अणुवायं कुणन्तु Translate into Hindi

तेण उत्तं—'मम नयरे जिणदासो नाम वणिगो अत्थि, सो कइवासाओ पुव्वं एत्थ आगच्च कय-विक्कयं कुणंतो चिट्ठइ'। नरिंदो वि तस्स सेट्ठिस्स आह्वत्थं जणं पेसेइ। सो जिणदासो आगच्च सवंधु नरिंदं, पणमइ। नरिंदो वि तं पुच्छइ—'हे सेट्ठि! तुं अम्हे किं परिजाणासि? सेट्ठी आह—'अणेगवंदियपायकमलं तं महारायं को न जाणइं? नरिंदो कहेइ 'एवं न, किन्तु अहं संवंधत्तणेण पुच्छामि। तया सो जिणदासो सम्मं सवंधुं नरिदं पुत्तत्ताए उवलक्खेइ, किन्तु कहं कहिज्जइ 'तुम्हे मम पुत्त' ति। तओ सेट्ठी मोणेण थिओ। तया सवंधू नरिंदो सीहासणाओ उत्थाय पिउस्स पाए पडिओ कहेइ—'पिअ! अम्हे यावंतं कालं पिउमुह दंसण-परिहीणा मिच्भग्गा तुम्हाणं पाए पणमिमो, अज्ज अम्हाणं दिवसो सहलो, जं पिउपायदंसणं जायं। मायावि तं समायारं लोगमुहाओ जाणिऊण सिग्घं तत्थ आगया। सहसा आगयं मायरं दट्ठूणं ते दुण्णि वि माइपाएसु पडिआ। मायावि थण्णं झरंती अच्छीहिंतो हरिसेग अंसूणि मुंचंती नियपुत्ते सहरिसं आलिंगइ।

कत्थ वि नयरे एगेण नरिंदेण नियनयरे आएसो दिण्णो—"गाममज्झे एगो देवालओ अत्थि। पुरीए माहणा वा वइस्सा वा खत्तिया वा सुद्दा य वा नयरवासिणो जे लोगा संति तेहिं देवालए पविसिअ देवं वंदित्ता गंतव्वं, अन्नहा तस्स वहो भविस्सइ।" एगो कुंभयारो तमाएसं अजाणिऊण गद्दहमारुहिअ हत्थे लगुडं गिण्हित्ता महारायवत्र गच्छइ। तेण देवालए सो देवो न वंदिओ। तओ रुट्ठा सुहडा गिह्विऊण नरिंदग्गओ ठविओ नरिंदेण तस्स वहो निद्दिट्ठो। वहत्थंभे सो नीओ। मरणकाले तत्थ मरणं विणा पत्थणातियं किज्जइ, पत्थणातिगं पूरिऊण वहिज्जइ, एवं नियमो निवेण कओ अत्थि। तदा सो कुंभारो पत्थणातिगं मग्ग त्ति कहिअं।

रण्णा चिंतिअं अहं किं करेमि? एसो थूलो, दंडोवि थूलो, एगेण पहारेण अहं मरिस्सामि। तओ 'अजुत्तो एसो आएसो' इअ चिंतित्ता वंदणाएसो निक्कासिओ, उवरिं दाणमहिअं तस्स अप्पित्ता तस्स बुद्धीए

८ प्रा० प्र०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संतुट्ठेण निवेण समाणं गिहे मोइओ। एवं अविआरिओ आएसो—'कयावि अप्पवहाए होइ।

अन्नम्मि दिणे पिउप्पेरिओ सो कोढिओ पुत्तो सीलवईए समीवं आगच्छंतो दासीए अवमाणिओ धक्काए नीसरणीए अहो खित्तो। तस्स अंगाइं पि चुण्णीकयाइं, एवं जया सो आगच्छइ, तया दासी तं हिट्ठंमि खिवई। तेण तओ एवं निएणओ कओ कया वि एत्थ न आगमिस्सामि, एवं दिणाणि गच्छंति। सा सीलवई कस्सावि वयणं न मन्नेइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्तमो पवाढओ Lesson 7

कृदन्त रूप और उनका व्यवहार Verbal derivatives)

वर्तमान कृदन्त

२७. प्राकृत में न्त और माण वर्तमान कृदन्त हैं। इनका प्रयोग तब किया जाता है जब यह भाव प्रकट करना हो कि कर्त्ता एक साथ (Simultaneously) दो क्रियाएँ करता है। जब क्रियाएँ एक के बाद दूसरी या भिन्न भिन्न काल में हों, तो न्त और माण का प्रयोग रचना में नहीं किया जाता। यथा—

वह स्नान करते हुए पढ़ता है = सो ण्हान्तो पढइ।

परतन्त्र मनुष्य साँस लेता हुआ जीवित नहीं होता = ससंतो न जीवइ परायत्तो।

प्रियंवदा सदा मुस्कराती हुई बातें करती है = प्रियंवदा सदा हसंती बोल्लइ।

बादल गरजता हुआ बरस रहा है = मेहो गज्जंतो वरसइ।

भक्त ईश्वर का स्मरण करते हुए प्राण छोड़ता है = भत्तजणो ईसरं सुमिरंतो पाणा मुंचइ।

विद्वानों के सम्पर्क में आने से मूर्ख भी विद्वान् बन जाता है = विउसेहिं संसग्गेब्भो मुक्खो विउसो होइ।

आय से अधिक खर्च करने के कारण हर कोई ऋणी हो जाता है = आयत्तो अधियं वियन्तो सव्वो जणो रिणी होइ।

सदा दूसरों की नकल करनेवाली जातियाँ आत्मसम्मान खो बैठती हैं = सययं पराणं अणुकुणन्तीओ जातीओ अप्पसम्माणं हान्ति।

भीख मांगते हुए वह घर-घर फिरता है = भिक्खं जाअमाणो घरत्तो घरं सो अडइ।

पाठ पढ़ते हुए मैं सारी रात जागता रहा = पाठं पढन्तो हं सव्वं रत्तिं जग्गीअ।

क्या भीख मांगने वाले लोग भी कहीं आदर पाते हैं = किं भिक्खं अडन्तो जणो वि कहिं सम्माणं लहइ।

प्रतिदिन पाठ पढ़नेवाला छात्र आसानी से परीक्षा पास कर लेता है = पइदिणं पाढं अज्झीयमाणो छत्तो सुहेण परिक्खं उत्तरइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजाज्ञा को भंग करनेवालों को क्षमा नहीं किया जाता = रायसासणं उल्लघन्तो लोओ ण मरहइ।

दो लड़कियाँ हँसते-हँसते घर जाती हैं = दुण्णि बालिआओ हसन्तीओ घरं गच्छन्ति।

जब वह नहा रहा था, उसका कपड़ा बह गया = जया सो ण्हान्तो आसी, तस्स वत्थं वहीअ।

अपराधियों ने रोते-रोते कहा कि हमारा दोष नहीं है = अवराहिओ रुवन्ता कहीअ, ज अम्हाणं अवराहो णत्थि।

मैने उसे यहाँ खेलते खेलते देखा है = हं तं खेलन्तं पेच्छीअ।

भूतकालिक कृदन्त (Past passive participle)

३८. भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए धातु में अ, द और त प्रत्यय जोड़कर बनाये गये भूतकालीन कृदन्तों का व्यवहार भूतकालिक क्रिया के समान ही किया जाता है। प्राकृत भाषा में भूतकालीन क्रिया का प्रयोग कम ही पाया जाता है और भूतकालीन कृदन्तों का प्रयोग बहुलता से होता है।

३९. धातु में अ, द और त प्रत्यय जोड़ने पर भूतकाल में धातु के अन्त्य अ या इ होता है। यथा—

गम+अ=गमिओ	हस+अ=हसिअं
गम+द=गमिदो	हस+द=हसिदं
गम+त=ग़मितो	हस+त=हसितं
चल+अ=चलिओ	कर+अ=करिओ
चल+द=चलिदो	कर+द=करिदो
चल+त=चलितो	कर+त=करितो

४०. प्रेरणासूचक भूतकृदन्त के लिए धातु में आवि और इ प्रत्यय जोड़ने के उपरान्त अ, द और त प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यथा—

कर + आवि + अ = कराविअं

कर + आवि + द = कराविदं

कर + आवि + त = करावितं

कर + इ + अ = कारिअं (इ प्रत्यय होने पर उपान्त्य अ को दीर्घ होता है)

कर + इ + द = कारिदं

कर + इ + त = कारितं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१. प्राकृत में ऐसे भी कुछ भूतकालीन कृदन्त हैं, जिनमें उपर्युक्त नियम लागू नहीं होते। ध्वनि परिवर्तन के नियमों के आधार पर ऐसे कृदन्त पद संस्कृत कृदन्तों से बनाये गये हैं।

भूतकालीन कृदन्तों के प्रयोग

देवदत्ता को माँ ने कहा, पुत्री मूलदेव को छोड़ो = भणिया देवदत्ता जणणीए, पुत्ति परिच्चय मूलदेवं।

राजा उससे प्रसन्न हुआ, वर दिया = तुट्ठो तीए राया, दिन्नो वरो।

वासुदेव ने भी नगरी में दूसरी बार भी घोषणा करायी = वसुदेव-नंदणेण त्ति बीय-वारं पि घोसावियं नयरीए।

इसके पश्चात् उसने शम्बुकुमार को निवेदन किया। अनन्तर शम्बु-कुमार वहाँ गया = तओ तेण संब-कुमारस्स निवेइयं। तओ गओ संबकुमारो।

प्रातःकाल हम लोगों ने वाराणसी में गंगास्नान किया = अम्हेहिं वाराणसीए गंगाण्हाणं पच्चूसे करिओ।

लंका में लक्ष्मण ने अनेक योद्धाओं के साथ मेघनाद को मारा=लंकाए लछिमणेण अणेयजुद्धाहि सह मेहणादं मरिओ।

तुम लोगों ने मेरे भाई को उसके पास जाने की आज्ञा दी = तुम्हेहिं ममभायरं तस्स समीवे गमणस्स आणा दिण्णा।

उस धोबी ने उस गधे को जंगल में छोड़ दिया है = तेण रयअेण सो गद्दभो वणम्मि मुक्किदो।

दो हँसती हुई लड़कियाँ स्कूल से घर गयीं = हसन्तीओ दुण्णि वालिआओ विज्जालयत्तो घरं गमिदा।

वहाँ रहने के कारण वह नगर का सब हाल जानता है=तत्थ णिवसणेण तेण णयरस्स सव्वं समायारं णायं।

घर के भीतर छोटी कोठरी में पहुँचकर निश्चिन्त हुआ = गिहस्स अंतो अववरए गच्चा निच्चिंतो जाओ।

उसने कहा चोर ने लूट लिया, सब कुछ लेकर नंगा कर दिया = तेण 'कहियं चोरेहिं लुंटिओ, सव्वं अवहरिअ नग्गो कओ।

प्रथम दिन बड़े पुत्र के घर भोजन के लिए गया = पढमदिणम्मि जेट्ठस्स पुत्तस्स गेहे भोयणाय गओ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक दिन वह वन में गया, वहाँ एक विद्याधर और विद्याधरी विमान से जा रही थीं = एगम्मि दिणे सो वणम्मि गओ, तत्थ एगो विज्जाहरो विज्जाहरी अ विमाणेण गच्छन्ति।

राजा ने भी अमंगलीय पुरुष की बात को सुना, परीक्षा के हेतु राजा ने एक समय प्रातःकाल में उसे बुलाया, उसका मुँह देखा= नरवइणावि अमंगलियपुरिसस्स वट्टा सुणिआ, परिक्खत्थं नरिंदेण एगया पभायकाले सो आहूओ, तस्स मुहं दिट्ठं।

इस अमंगलीय पुरुष का स्वरूप मैंने प्रत्यक्ष देखा है = अस्स अमंगलिअस्स पुरिसस्स सरूवं मए पच्चक्खं दिट्ठं।

उस समय उसको आनन्द नहीं आया, प्रमाद से नींद आ गयी = तया तस्स आणंदो न जाओ, पमाएण निद्दं पत्तो।

उस समय वहाँ एक कुत्ता आया = तया तत्थ एगो कुक्कुरो समागओ।

विधिकृदन्त (Potential passive participle)

४२. विधिकृदन्त का प्रयोग औचित्य, आवश्यकता, सामर्थ्य, योग्यता आदि का भाव प्रकट करने के लिए किया जाता है अर्थात् जब यह कहना हो कि कर्त्ताको अमुक कार्य करना चाहिए अथवा कर्त्ता अमुक कार्य करने का सामर्थ्य रखता है।

४३. विधि कृदन्त का कर्त्ता तृतीया विभक्ति में और कर्म प्रथमा विभक्ति में रहता है। इस कृदन्त के लिङ्ग और वचन कर्म के अनुसार होते हैं।

४४. धातु में अव्व, अणिज्ज और अणीअ प्रत्यय जोड़ने से विध्यर्थ कृदन्त के रूप बनते हैं।

४५. अव्व या दव्व प्रत्यय जोड़ने पर प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकारको इकार तथा ए आदेश होता है।

४६. संस्कृत के 'म' प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में 'ज्ज' प्रत्यय होता है। यथा—

ज्ञा—जाण + अव्व = जाणिअव्वं, जाणेअव्वं
ज्ञा – जाण + अणिज्ज = जाणणिज्जं
ज्ञा—जाण + अणीअ = जाणणीअं
ज्ञा—मुण + अव्व = मुणिअव्वं, मुणेअव्वं
स्था—थक्क + अव्व = थक्किअव्वं, थक्केअव्वं
पा—पिज्ज + अव्व = पिज्जिअव्वं, पिज्जेअव्वं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गणेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान 119 नरिया, वाराणसी

कृ—कुण + अव्व = कुणअव्वं, कुणेअव्वं
तृ—तर + अव्व = तरिअव्वं, तरेअव्वं
स्मृ—सुमर = सुमरिअव्वं, सुमरेअव्वं
मुच्—मेल्ल + अव्वं = मेल्लिअव्वं, मेल्लेअव्वं
क्रुध—कुज्झ + अव्व = कुज्झिअव्वं, कुज्झेअव्वं
लुभ्—लुब्ध + अव्व = लुब्भिअव्वं, लुब्भेअव्वं
नृत्—नच्च + अव्व = नच्चिअव्वं, नच्चेअव्वं
ग्रह्—घेत् + अव्व = घेत्तव्वं
दृश्—दट्ठ + अव्व = दट्ठव्वं
हस्—हस + अव्व = हसिअव्वं, हसेअव्वं
वृध्—वड्ढ + अव्व = वड्ढिअव्वं, वड्ढेअव्वं
सद् + सड + अव्व = सडिअव्वं, सडेअव्वं
सिव—सिव्व + अव्व = सिव्विअव्वं, सिव्वेअव्वं
मृग्—मग्ग + अव्व = मग्गिअव्वं, मग्गेअव्वं
इष—इच्छ + अव्व = इच्छिअव्वं, इच्छेअव्वं
हन् हण + अणिज्ज = हणणिज्जं
हन्—हण + अणीअ = हणणीअं
हन्—हण + अव्व = हणिअव्वं, हणेअव्वं
घृ—घुण + अव्व = घुणिअव्वं, घुणेअव्वं
घृ—घुण + अणिज्ज = घुणणिज्जं, घुणणीअं
भू—हुव + अव्व = हुविअव्वं, हुवेअव्वं
भू—हुव + अणिज्ज = हुवणिज्जं
भू—हुव + अणीअ = हुवणीअं
हु—हुण + अव्व = हुणिअव्वं, हुणेअव्वं
हु—हुण + अणिज्ज = हुणणिज्जं, हुणणीअं
कृ—कर (काय) + अव्व = करिअव्वं, करेअव्वं, कायअव्वं
कृ—कर + अणिज्ज = करणिज्जं,
कृ—कर + अणीअ = करणीअं
दृश्—देक्ख + अव्व = देक्खिअव्वं, देक्खेअव्वं
दृश् + अणिज्ज = देक्खणिज्जं
दृश् + अणीअ = देक्खणीअं
गम् + तव्व = गन्तव्वं
गम् + अणिज्ज = गमणिज्जं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गम् + अणीअ = गमणीओ
राज्—छज्ज + अव्व = छज्जिअव्वं, छज्जेअव्वं
स्पृश्—फास + अव्व = फासिअव्वं, फासेअव्वं
स्पृश्—फास + अणिज्ज = फासणिज्जं
स्पृश्— फास + अणीअ = फासणीओ

प्रेरक विधि कृदन्त

४७. धातु में प्रेरक प्रत्यय 'आवि' जोड़ने के पश्चात् तव्व, अव्व, अणिज्ज और अणीअ प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यथा—

हस् + आवि = हसावि + तव्वं = हसावितव्वं
हस् + आवि = हसावि + अव्व = हसाविअव्वं
हस् + आवि + अणिज्जं = हसावणिज्जं, हसावणीअं
गम् + आवि + तव्व = गमावितव्वं, गमाविअव्वं
कृ—कर + आवि + तव्व = कराविअव्वं, करावितव्वं, कराविणिज्जं
भू—हो + आवि = हो आवि + तव्व = होआवितव्वं, होआविणिज्जं
दृश्—देक्ख + आवि + तव्व = देक्खावितव्वं, देक्खाविअव्वं
ग्रह्— गिह + आवि + तव्व = गिहावितव्वं, गिहाविअव्वं

प्रयोगवाक्य

मुझे अब क्या करना चाहिए, कृपाकर बताइये = अहुणा किं कुणेअव्वं मए, किवाए बोल्लउ
तुम्हें चाहिए कि इस बालक को, जोकि रास्ता भूल गया है, घर पहुँचा दो = तुए मग्गभिट्ठो अयं सिसू गिहं पावावितव्वं।
वीतराग लोगों को यश की कामना नहीं करनी चाहिए = वीयरायेहिं जणेहिं जसकामना ण कुणेअव्वा।
इस काम के लिए तुमको इतनी जिद नहीं करनी चाहिए = अस्स कज्जस्स तुए एरिसी ईरिया (हठ) ण कुणणिज्जा।
आप जल्दी क्यों कर रहे हैं, दिन निकलने से पहले मुझे उस महात्मा से मिलना है = किमत्थं तुरइ, भवन्तो, सुज्जोदयओ पुव्वं सो महप्पा मए दिट्ठव्वो।
एक मिनट ठहरो, मुझे कपड़े बदलने हैं = छणं विलंबव्वं, मए वत्थाणि विवरिहेयाणि (बदलने हैं)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह बोझ बहुत भारी है, बच्चा इसे उठा सकता है = गुरुअरो एसो भारो, न सिसूए वोढव्वो।

यह बात प्रकट हो चुकी है, अब किसी तरह भी छिपाई नहीं जा सकती = पआसयं गओ अयमत्थो ऐयाणीं कहमवि गूहणिज्जो।

शुद्ध आचारवाले अधिकारी को घूस का लोभ कदापि नहीं दिया जा सकता = सुद्धसीलो–अहियारी ण कयापि उक्कोयाए पलोहणिज्जो होइ।

रात को देर तक जागना नहीं चाहिए = रत्तीए चिरं न जागरिअव्वं।

पैदल चलनेवाले अब इस रास्ते से न जायँगे = पयाइहिं अणेण मग्गेण अहुणा ण गंतव्वं।

भाषाविज्ञान जानने के लिए विद्यार्थियों को प्राकृत जरूर पढ़ना चाहिए = भाषाविणाण जाणिडं विज्जत्थीहिं पाइयभासा अवस्सं पढिअव्वा।

हम लोगों को अपने देश का इतिहास-भूगोल जानना चाहिये = अम्हेहिं णियदेसस्स इतिहास—भूओलो जाणेअव्वो।

सभी को प्रातःकाल भगवान् की प्रार्थना करनी चाहिए = सव्वेहिं पच्चूसे भगवन्ताणं पत्थणा करणीआ।

स्वच्छ भोजन और साफ पानी पीना चाहिए = सुच्छ भोयणं सुच्छ जलं य पिज्जेअव्वं।

किसी को भी मनुष्यमात्र से घृणा नहीं करनी चाहिए = केहिं अवि माणुसत्तो घिणा ण करणिज्जा।

हम सब लोगोंको पढ़ने में परिश्रम करना चाहिए = अम्हेहिं सव्वेहिं पढणम्मि परिस्समो करणीओ।

तुमको मोहन से इस कामको कराना चाहिए = तुए मोहणेण इदं कज्जं कराविअव्वं।

उसके द्वारा इस पुस्तक को जरूर पढ़वाना चाहिए = तेण इदं पोत्थयं अवस्सं पढावितव्वं।

जप करते समय हमें उसे जरूर हँसाना चाहिए = जवकरणसमयम्मि अम्हेहिं सो अवस्सं हसाविअव्वो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भविष्यत्कृदन्त (Future participle)

४८. जब यह भाव प्रकट करना हो कि कोई क्रिया निकट भविष्य में होनेवाली है तो भविष्यत्कृदन्त इस्संत, इस्समाण एवं इस्सई प्रत्यय जोड़कर प्रयुक्त होते हैं। यहाँ यह ध्यातव्य है कि कर्तृवाच्य में इस्संत प्रत्यय जोड़कर भविष्यत्कृदन्तों का प्रयोग और कर्मवाच्य में इस्समाण प्रत्यय जोड़कर भविष्यत्कृदन्तों का प्रयोग किया जाता है।

४९. प्रेरणार्थक भविष्यत्कृदन्त बनाने के लिए आवि प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् इस्संत और इस्समाण प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यथा—

कृ—कर+इस्संत=करिस्संतो।
कर्+इस्समाण = करिस्समाणो।
कर्+आवि+इस्संत = कराविस्संतो (प्रेरणार्थक)।
कर्+आवि+इस्समाण = कराविस्समाणो (प्रेरणार्थक)।

५०. स्त्रीलिङ्ग में इस्सई प्रत्यय जोड़कर भविष्यत्कृदन्त बनाये जाते हैं।

कृ—कर्+इस्सई = करिस्सई।
कर्+आवि+इस्सई = कराविस्सई (प्रेरणार्थक)।

प्रयोगवाक्य

मैं सैर को जानेवाला था कि पिता ने मुझे बुला भेजा=चंक्रमाय यियिस्संतो हं पिआ आहूओ।

वह छुरी भौंकने वाला ही था कि किसी ने पीछे से आकर उसका हाथ पकड़ लिया = छुरीए पहरिस्संतो अमू केनचिअ पिट्ठत्तो आगच्च हत्थे गिहीयो।

पिता मरने लगा तो उसने पुत्रों को बुलाकर कहा कि एकता से कल्याण और फूट से विनाश होता है = मरिस्संतो पिआ पुत्ते आहुज्ज उवाअ जं एअयत्ता कल्लाणं भिदत्तो विद्धंसो होइ।

इंगलैण्ड जाने से पहले मित्र और सम्बन्धी उससे मिलने के लिए एकत्र हुए = आंगलभुवं पत्थिस्समाणं तं दिट्ठुं मित्ता बांधवा य सन्निपतिया।

अछूतों का उद्धार करना चाहते हुए महात्मा गान्धी ने उनका नया नाम हरिजन रखा=अफासीओ उद्धरिस्सन्तो महप्पा गाँधी ताणं हरिजणा इइ नवं नामं करियं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्बन्ध भूत कृदन्त (Indeclinable past participle)

५१. जब कर्त्ता एक कार्य समाप्त करके दूसरा कार्य करता है, तो पहले किये गये कार्य के लिए सम्बन्ध भूतकृदन्त का व्यवहार किया जाता है। सम्बन्ध भूतकृदन्त पूर्वकालिक क्रिया का कार्य करता है।

५२. धातु में तुं, तूण, तुआण, अ, इत्ता, इत्ताण, आय और आए प्रत्यय जोड़ने से सम्बन्धसूचक भूतकृदन्त के रूप बनते हैं।

५३. तुं, अ, इत्ता और आय प्रत्यय होने पर प्रत्यय के पूर्ववर्ती अ को विकल्प से इ और ए आदेश होते हैं।

५४. तूण, तुआण और इत्ताण प्रत्ययों में ण के स्थान पर सानुस्वार णं आदेश होता है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि संस्कृत के क्त्वा और ल्यप के स्थान पर प्राकृत में उक्त प्रत्यय होते हैं।

हो + तुं (उं) = होइउं, होएउं
हो + अ = होइअ, होएअ
हो + तूण (ऊण) = होइऊण, होइऊणं
हो + तुआण (उआण) = होइउआण होएउआणं
हस + तुं (उं) = हसिउं, हसेउं
हस + तूण (ऊण) = हसिऊण, हसिऊणं, हसेऊणं
हस + तुआण (उआण) = हसिउआण, हसिउआणं
भण + तुं (उं) = भणिउं, भणेउं
भण + अ = भणिअ, भणेअ
भण + तूण (ऊण) भणिऊण, भणिऊणं
भण + तुआण (उआण) भणिउआण, भणिउआणं
भण + इत्ता = भणित्ता, भणेत्ता
कर + इत्ता = करित्ता, करेत्ता
गम + तूण = गन्तूण
गम + इत्ता = गमित्ता, गमेत्ता
गम + इत्ताण = गमित्ताण, गमित्ताणं
गह + आय = गहाय
संपेह + आए = संपेहाए—संप्रेक्ष्य
आया + आए = आयाए—आदाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५५. प्रेरणार्थक बनाने के लिए प्रेरणासूचक प्रत्यय जोड़ने के अनन्तर ही सम्बन्धक भूतकृत्प्रत्ययों को जोड़ा जाता है। यथा—

भण+आवि+तुं (इं) = भणाविइं, भणावेइं।
भण+आवि+अ = भणाविअ, भाणावेअ।
भण+आवि+तूण (ऊण) = भणाविऊण, भणाविऊणं।
भण+आवि+तुआण (उआण) = भणाविउआण, भणाविउआणं।
भण—प्रेरणार्थक—भाण+तुं (इं) = भाणिइं, भाणेइं।
भाण+अ = भाणिअ, भाणेअ।
भाण+तूण (ऊण) = भाणिऊण, भाणिऊणं।
भाण+तुआण (उआण) = भाणिउआणि, भाणिउआणं।
कर+आवि+तुं (इं) = कराविइं, करावेइं।
कर+आवि+अ = कराविअ, करावेअ।
कर+आवि+तूण (ऊण) = कराविऊण, कराविऊणं।
कार+प्रेरणार्थक—कार+तुं (इं) = कारिइं, कारेइं।
कार+तूण (ऊण) = कारिऊण, कारिऊणं।
कार+तुआणं (उआणं) = कारिउआण, कारिउआणं, कारेउआणं।
शुश्रूष्—सुस्सूस+आवि+तुं (इं) = सुस्सूसाविइं, सस्सूसावेइं।

५६. कुछ अनियमित भूतकृदन्त भी होते हैं। इनके सम्बन्ध में कोई नियम काम नहीं करता है।

कृ—का+तुं (इं) = काइं।
कृ—का+तूणं (ऊणं) = काऊणं।
ग्रह्—घेत्+तुं = घेत्तुं।
ग्रह्—घेत्+तूण = घेत्तूण, घेत्तूणं, घेत्तआण, घेत्तुआणं।
त्वर—तुर+तुं (इं) = तुरिइं, तुरेइं।
तुर+अ = तुरिअ, तुरेअ।
तुर+तूण (ऊण) = तुरिऊण, तुरिऊणं।

ध्वनिपरिवर्तन के आधार पर निष्पन्न कृदन्त—

गच्च < गत्वा
णच्चा, नच्चा < ज्ञात्वा
बुज्झा < बुद्ध्वा
मच्चा, मत्ता < मत्वा
सुत्ता < सुप्त्वा
हंता < हत्वा
आयाय < आदाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रयोगवाक्य

वह मेरा काम करके घर गया है = सो मज्झं कज्जं काऊण गिहं गच्छीअ।

तुम खाकर विद्यालय जाओ, यही आदेश है = तुम भोयणं काऊण विज्जालयं गच्छसु, इदमेव आएसं अत्थि।

पुराना पाठ याद करके ही आगे का पाठ पढ़ो = पुरायण पाठं सुमिरिऊण अग्गपाढो पढसु।

मैं आपको देखकर बहुत प्रसन्न हूँ = अहं भवन्तं पासिऊण प्रसन्नो अत्थि।

मैं जलपान कर बाजार जाऊँगा, यही मेरा नियम है = हं अप्पभोयणं काऊण हट्टे गच्छिस्सामि।

इस प्रकार विश्वास दिलाकर वह रह गया = एवं पयारं विस्सासं दाऊण सो विरमीअ।

भोजन करने के उपरान्त थोड़ा विश्राम करना चाहिए = भोयणं काऊण अप्पविस्सामो कुणिअव्वं।

पहाड़ पर चढ़कर हम लोग बहुत सुन्दर दृश्य देखते हैं = पव्वयम्मि आरोहिऊण अम्हे बहुसुन्दरं दिस्सं पेच्छामो।

मैं प्रतिज्ञा करके ही पढ़ता हूँ; यह आप जान लीजिये = हं पइण्णं काऊणं पढामि, इदं जाणउ भवन्तो।

दुर्मति द्वीपायन भी अत्यन्त दुष्कर बालतप का आचरण कर द्वारावती के विनाश का निदान कर मरकर अग्निकुमारों में भवनवासी देव हुआ = दीवायणो वि दुम्मई अइ-दुक्करं बाल-तवमणुचरिउण बारवई विणासे कय-नियाणो मरिऊण समुप्पन्नो भवणवासी देवो अग्गिकुमारेसु।

इसके पश्चात उस अधम अग्निकुमार ने छिद्र प्राप्तकर विनाश आरम्भ किया = तओ सो अग्गिकुमाराहमो छिद्दं लहिऊण विणासेउमारद्धो।

इसके पश्चात् बलदेव-वासुदेव जलती हुई द्वारावती को देखकर विलाप करते हुए माता-पिता के महल में पहुँचे = तओ बलदेव-वासुदेवा दट्ठूण डज्झमाणिं बारवइं अक्कंदकयरवा पिउणो घरमुवागया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शीघ्र ही रोहिणी, देवकी और पिता को रथ पर चढ़ाकर वहाँ से चले= सिग्घं च रोहिणिं देवइं पियरं च रहं समारोवेऊण तत्थत्तो गच्छीअ ।

यादव वहाँ जाकर भगवान की वंदना कर अपने-अपने स्थान पर बैठ गये = जायवा तत्थ गंतूण भयवंतं वंदिऊण नियएसु ठाणेसु सन्निविट्ठा ।

हेत्वर्थ कृदन्त (Infinitive of purpose)

५७. जब यह भाव व्यक्त करना हो कि कर्त्ता कोई कार्य करना चाहता है तो अभीष्ट क्रिया सूचक धातु में हेत्वर्थ कृत् प्रत्यय जोड़कर वाक्य बनाये जाते हैं। अभिप्राय यह है कि जब दोनों क्रियाओं का एक कर्त्ता हो तो निमित्तार्थबोधक धातु के आगे तुं, दुं, और तुए प्रत्यय जोड़े जाते हैं। हेत्वर्थ कृत् प्रत्यय जोड़ने पर पूर्ववर्ती अ को इ और ए हो जाता है।

५८. प्रेरणार्थक हेत्वर्थ कृदन्त बनाने के लिए प्रेरणार्थक आवि और अ प्रत्यय जोड़कर हेत्वर्थ कृत प्रत्ययों को जोड़ा जाता है; पर अ प्रत्यय जोड़ने पर उपान्त्य अ को आ हो जाता है।

भण + तुं (उं) = भणिउं, भणेउं, भणेतुं, भणेदुं, भणिदुं ।
हस + तुं (उं) = हसिउं, हसेउं, हसितुं, हसेतुं, हसिदुं, हसेदुं ।
भू—हो + अ + तु (उं) = होइउं, होएउं, होइतुं, होएतुं ।
कृ—कर + त्तए = करेत्तए
सिज्झ + तए = सिज्झित्तए, सिज्झेत्तए
उव्वज्ज + त्तए = उव्वज्जित्तए, उव्वज्जेत्तए
विहर + त्तए = विहरित्तए, विहरेत्तए
पास + त्तए = पासित्तए, पासेत्तए
गम + त्तए = गमित्तए
दा—दल् , दल + त्तए = दल इत्तए, दलएत्तए

ध्वनि परिवर्त्तन से निष्पन्न हेत्वर्थ कृदन्त

का + तुं (उं) = काउं	भुज् + तुं = भोत्तुं
ग्रह—घेन् + तुं = घेत्तुं	मुच् + तुं = मोत्तुं
तुर + तुं = तुरिउं, तुरेउं	रुद् + तुं = रोत्तुं
दृश् + तुं = दट्ठुं, दिट्ठुं	वच + तुं = वोत्तुं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रयोग-वाक्य

अनन्तर बलदेव को देखकर रथकार स्वामी ने विचार किया = तओ बलदेवं दट्ठूण रहयार सामिणा चिंतियं।

मुनि ने द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से शुद्ध जानकर ग्रहण किया = मुणिणा दव्व-खेत्त-काल-भावपरिसुद्धं ति नाऊण पडिग्गाहियं।

अनन्तर देव ने सिद्धार्थ को कल्याण करने के लिए प्रयास किया = तओ देवेण सिद्धत्थस्स कल्लाणकाउं पयण्णो कयो।

बतलाइये कि अब आप क्या पढ़ना चाहते हैं = कहइ, जं अहुणा भवन्तो किं पढिउं इच्छइ।

ऐसे लोग बहुत थोड़े हैं जो बुरा करनेवाले का भी भला करना चाहते हैं = विरला ते ये अवयारीणं अवि उवकाउं इच्छन्ति।

मैं इस कठिन कार्य को करने का यत्न करूँगा = हं इदं दुक्करं कज्जं संवाविउं पयण्णं करिहामि।

मैं जो पहले कहने लगा था, उसे छोड़कर दूर चला गयाहूँ = पढमं जं कहिउं पवत्तो हं तं परिच्चय्य दूरमइक्कन्तो अत्थि।

क्या सच तुम्हारे घर खाने को अन्न नहीं है = किण्णु तुम्हाणं गिहे खादिउं अन्नमवि णत्थि।

इस उत्तर से हमें सन्तोष हो गया। आगे कुछ पूछना नहीं है = संतुट्ठा अम्हे एतेण उत्तरेण। अओ परं णत्थि किमवि पुच्छिउं।

मुझ में एक कदम भी चलने की शक्ति नहीं है = णत्थि मे सत्ती एकं पदमवि गमित्तए।

मंगल के समय में तुम्हारा रोना ठीक नहीं है = ण उच्चियं ते मंगलकाले रोविउं।

अरे भारतवासियो! यह समय जागने का और देशसेवा में लगने का है = अरे भारहवासीओ! कालो अयं जग्गिउं देस-सेवाए चाप्पाणं वावारित्तए।

यह समय आपस में झगड़ने का नहीं है = नायं समयो परोप्परं विवदित्तए।

अब आप क्या करना चाहते हैं, साफ-साफ कहिये = अहुणा भवन्तो किं काउं इच्छइ, त्ति सपट्ठं कहिउं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बलदेव सहित द्वीपायन मुनि से प्रार्थना करने के लिए गये = गओ बलदेव-सहिओ अणुणेउं दीवायण-मुणिं।

उनको लेकर पवित्र हो स्वप्न-शास्त्र के जाननेवाले के यहाँ गये = ताइं घेत्तुं सुइ-भूओ गओ सुविण-सत्थ-पाढयस्य गेहं।

अपने को प्रकट करने का यही समय है = अवसरो अयं अप्पाणं पयासिउं।

वह विपत्ति देखना सह नहीं सकता है = सो विपत्तिं अवलोयिउं न सक्कइ।

इस काम को तुम्हारे सिवा दूसरा कौन कर सकता है = इदं कज्जं तुए विणा को अण्णो काउं सक्कइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब्भासो Exercise

हिन्दीभासाए अणुवायं कुणन्तु Translate into Hindi

ते दट्ठूण उत्तिण्णो कुमारो कुंजराओ सह पियाए, वंदिया विणाएणं। जाव पायविहारेण थोवंतरं गच्छइ ताव पेच्छइ—एगे उड्ढंजाणू-अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए धम्मसुक्काइं झायंते, एगे वायणं पडिच्छंते पुव्वगयस्स, एगे सज्झायंते अरवलियवयण पद्धईए। ते वि वंदिया परमभत्तीए। जाव थोवंतरं गच्छइ ताव पेच्छइ—एगे वागरणं परुवेंते, एगे जोइसमहिज्जंते, अन्ने अट्ठंगरुहानिमित्तमणुसीलयंते। तेवि वंदिया। कोऊहलखित्तमणो जाव थोवंतरं गच्छइ, पिच्छइ—अणेयविणेयपरियरियं धम्मघोसाभिहाणं सूरिं रत्तासोयतले पुढविसिलावट्टए निविट्ठं धम्म देसयंतं। तं दट्ठूण हरिसिओ कुमारो। तिपयाहिणीकाऊण वंदिय उवविट्ठो सुद्धधरणीए सपरियणो नाइदूरमणासन्नो कुमारो। भगवयावि आसीसप्पयाणेण समासासिय पत्थाविया देसणा। तओ संसयवुच्छेयगीं वाणीं समायण्णिऊण भणियं कुमारो—'भयवं' मम असेसरायधूयाओ वरिज्जंतीओ विचित्तु-वेयकारिणीओ अहेसि।

अत्थि कत्थवि विसए एगम्मि नयरे एगो चाउव्वेदो माहणो। छत्तेहिं भण्णइ—'वेयंतं अम्ह वक्खाणेहि'। सो य परिक्खानिमित्तं भणइ—'तत्थ विहाणमत्थि'। छत्ता भणंति—'केरिसं'। सो भणइ—कालचउद्दसीए सेतो छालगो मारेयव्वो, जत्थ न कोइ पासइ। ताहे तस्स मंसं तेहिं संकियं भुंजियव्वं। तमो वेयंत सुणणजोगो होइ।' तओ तं सोऊण एगो छत्तो गहिऊण सेयच्छालगं कालचउद्दसीरत्तीए गओ सुण्णरत्थाए। मारिओ छालगो। तं गहाय आगओ। नायमुवज्झाएण—अजोगो न किंचि वि परिणयमेयस्स। न वक्खाणियं तस्स वेयरहस्सं। बीओ वितहेव गओ सुण्णरत्थाए चिंतेइ एत्थ तारगा पेच्छंति। तओ गओ देवकुले, चिंतेइ एत्थ देवो पेच्छइ। गओ सुण्णागारे, तत्थ वि चिंतेइ—ताव अहं, एसो छगलगो, अइसंयनाणी य पेच्छंति। जत्थ न कोइ पासइ तत्थ मारेयव्वो' त्ति इति उवज्झायवयणं। या एस भावत्थो एसो न मारेयव्वो त्ति।

एवं एत्थ वि दुक्खिएसु अणुकंपादाणं ति अणुकंपाकरणं ते य दुक्खिया सव्वे वि संसारिणो जीवा।

नाओ मए एत्थ भावत्थो। न कस्सइ केण वि किंचि दायव्वं ति छत्त-छागनायाओ 'भणियं सालेण—अहो देवाणुप्पिए ण सुट्ठु बुज्झियं, सुट्ठु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अट्ठमो पचाढओ Lesson 8

वाच्य Voice

५९. प्राकृत में संस्कृत के समान तीनों वाच्य के रूप होते हैं। कर्तृ-वाच्य में कर्त्ता को प्रथमा विभक्ति और कर्म को द्वितीया विभक्ति होती है तथा क्रियापद कर्त्ता के अनुसार होता है। यथा—

बालक पुस्तक पढ़ता है = सिसू पोत्थयं पढइ।
तुम घर जाओ = तुमं गिहं गच्छहि।
मैं घर गया था = हं गिहं गच्छीअ।
तुम घर गये थे = तुमं गिहं गच्छीअ।

६०. कर्मवाच्य के कर्त्ताकारक में तृतीया विभक्ति और कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार रहता है। यथा—

मैं घट बनाता हूँ = मए घडो करीअए।
मैं गाँव जाता हुँ = मए गामो गच्छीअए।
तुम राम को देखते हो = तुए रामो पेच्छीअए।
वे लोग काम करते हैं = तेहि कज्जं करीअए।
उन्होंने हमें देखा = तेण अम्हे दिट्ठा।
तुम्हारे द्वारा वह देखा गया है = तुए सो देक्खिज्जइ।
राम आत्मा का ध्यान करता है = रामेण अप्पाणो झाइज्जइ।
कुम्हार घड़ा बनाता है = कुंभारेण घडो कुणीअइ।
मोहन महादेव की पूजा करता है = मोहणेण महादेवो अच्चीज्जइ।

६१. भाववाच्य के कर्त्ताकारक में तृतीया विभक्ति होती है, कर्म नहीं रहता और क्रियापद सदा प्रथम पुरुष और एकवचन में रहता है। यथा—

तू, मैं देवदत्त या अन्य लोग हँसते हैं = तुए, मए, देवदत्तेणं, अण्णेहिं वा हसिज्जइ।
बालक रात में जागता है = बालेण रत्तीए जग्गिज्जइ।

६२. धातुओं के कर्मणि और भावि रूपों में वर्तमानकाल और विधि एवं आज्ञार्थ में धातु प्रत्ययों के पूर्व ईअ और इज्ज विकरण जोड़े जाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर यह नियम उन्हीं धातुओं के लिए है, जिन धातुओं के स्थान पर आदेश—धात्वादेश नहीं होता है। भविष्यत्काल और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान होते हैं।

कर्मणि और भावि के कुछ आवश्यक रूप

हस (हँसना) वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसीअइ, हसीअए हसिज्जइ हसिज्जए	हसीअन्ति, हसिज्जन्ति
म० पु०	हसीअसि, हसिज्जसि	हसीइत्था, हसिज्जित्था
उ० पु०	हसीअमि, हसिज्जमि	हसीअमो, हसिज्जमो

भूतकाल

	एकवचन		बहुवचन	
प्र० पु०	हसीअईअ,	हसिज्जीअ	हसीअईअ,	हसिज्जीअ
म० पु०	„	„	„	„
उ० पु०	„	„	„	„

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसीअउ, हसिज्जउ	हसीअन्तु, हसिज्जन्तु
म० पु०	हसीअहि, हसिज्जहि	हसिज्जह
उ० पु०	हसीअमु, हसिज्जमु	हसीअमो, हसिज्जमो

भविष्यत्काल और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान होते हैं।

हो < भू कर्मणि और भावि—वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होईअइ, होइज्जइ	होईअन्ति, होइज्जन्ति
म० पु०	होईअसि, होइज्जसि	होईइत्था, होइज्जित्था
उ० पु०	होईआमि, होइज्जमि	होईआमो, होइज्जिमो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होईअसी, होइज्जसी, होईअहीअ	होईअसी, होइज्जसी, होईअहीअ
म० पु०	,, ,, ,,	,, ,,
उ० पु०	,, ,, ,,	,, ,,

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होईअउ, होइज्जउ	होईअन्तु, होइज्जन्तु
म० पु०	होईअहि, होइज्जहि	होईअह, होइज्जह
उ० पु०	होईअमु, होइज्जमु	होईअमो, होइज्जिमो

भविष्यत्काल और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान होते हैं।

प्रेरणार्थक क्रिया (Causative Verbs)

६३. प्रेरणार्थक क्रिया—क्रिया का वह विकृतरूप है, जिससे यह बोध होता है कि क्रिया के व्यापार में कर्त्ता स्वतन्त्र नहीं है, बल्कि उस पर किसी की प्रेरणा है। साधारण धातु में जो कर्त्ता रहता है, वह प्रेरणार्थक में स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे से कार्य कराता है।

६४. प्राकृत में प्रेरणार्थक बनाने के लिए अ, ए, आव और आवे प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

६५. अ और ए प्रत्यय के रहने पर उपान्त्य अ को दीर्घ हो जाता है। यथा—

कृ—कर् + अ = कार, कर् + आव = कराव

कर् + ए = कारे, कर् + आवे = करावे

६६, मूल धातु के उपान्त्य में इ स्वर हो तो ए और उ स्वर हो तो ओ हो जाता, है। यथा—

विस् = अ = वेस, विस् + ए = वेसे

विस् + आव = वेसाव, विस् + आवे = वेसावे

६७. उपान्त्य में दीर्घ स्वर रहने पर धातु में प्रेरणार्थक प्रत्यय जुड़ जाते हैं और उपान्त्य को एकार या ओकार नहीं होता। यथा—

चूस् + अ = चूस; चूस् + ए = चूसे

चूस् + आव = चूसाव; चूस् + आवे = चूसावे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रेरणार्थक क्रिया के रूप

हस—हसाता है—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासइ, हसावइ, हासेइ, हसावेइ	हासन्ति, हासेन्ति, हसावन्ति, हसावेन्ति
म० पु०	हाससि, हासेसि, हसावसि, हसावेसि	हासह, हासेह, हसावह, हसावेह
उ० पु०	हासमि, हासेमि, हसावमि हसावेमि	हासमो, हासेमो, हसावमो, हसावेमो

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र०, म०, उ० पु० हासीअ, हासेईअ, हसावीअ, हसावेईअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासिहिइ, हासेहिइ, हसाविहिइ, हसावेहिइ	हासिहिन्ति, हासेहिन्ति, हसावहिन्ति, हसावेहिन्ति
म० पु०	हासिहिसि. हासेहिसि, हसाविहिसि. हसावेहिसि	हासिहित्था, हासेहित्था, हसाविहित्था,
उ० पु०	हासिस्सं, हासेस्सं, हसाविस्सं, हसावेस्सं	हासिस्सामो, हासेस्सामो, हसाविस्सामो

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासउ, हासेउ, हसावउ, हसावेउ	हासन्तु, हासेन्तु, हसावन्तु, हसावेन्तु
म० पु०	हाससु, हासेसु, हसावसु, हसावेसु	हासह, हासेह, हसावह, हसावेह
उ० पु०	हासमु, हासेमु, हसावमु, हसावेमु	हासमो, हासेमो, हासावमो, हसावेमो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र०, म०, उ० पु० हासेज्ज, हासेज्जा, हसावेज्ज, हसावेज्जा, हासन्तो, हासेन्तो, हासवन्तो, हसावेन्तो, हासमाणो, हासेमाणो, हसावमाणो, हसावेमाणो।

कर < कृ (कराना) वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कारइ, कारेइ, करावइ	कारन्ति, कारेन्ति, करावन्ति
म० पु०	कारसि, कारेसि, करावसि	कारह, कारित्था, कारेइत्था
उ० पु०	कारमि, कारेमि, करावमि	कारमो, कारेमो, करावमो, करावेमो

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र०, म०, उ० पु० कारीअ, कारेईअ, करावीअ, कराईअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कारिहिइ, कारेहिइ, काराविहिइ	कारिहिन्ति, कारेहिन्ति, कराविहिन्ति
म० पु०	कारिहिसि, कारेहिसि, कराविहिसि	कारिहित्था, कारेहित्था, करावहित्था
उ० पु०	कारिस्सं, कारेस्सं, कराविस्सं	कारिस्सामो, कारावेस्सामो, कराविस्सामो

विधि एवं आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कारउ, कारेउ, करावउ	कारन्तु, कारेन्तु, करावन्तु
म० पु०	कारसु, कारेसु, करावसु	कारह, कारेह, करावह
उ० पु०	कारमु, कारेमु, करावमु	कारमो, कारेमो, करावमो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र०, म०, उ० पु० कारेज्ज, करेज्जा, करावेज्ज, करावेज्जा, कारन्तो, कारेन्तो, करावन्तो, करावेन्तो, कारमाणो, कारेमाणो, करावमाणो

कर्मणि और भावि के प्रेरक रूप

६८. प्रेरणार्थक धातु में भावि और कर्मणि के रूप बनाने के लिए मूल धातु में आवि प्रत्यय जोड़ने के उपरान्त कर्मणि और भावि के प्रत्यय ईअ, और इज्ज जोड़ने चाहिए।

६९. मूल धातु में उपान्त्य अ के स्थान पर आ कर देने के अनन्तर इस अंग में ईअ या इज्ज जोड़ देने से प्रेरक कर्मणि और भावि के रूप होते हैं। कर+आवि+ईअ+इ=करावीअइ=कराया जाता है।

प्रेरक भावि और कर्मणि—हास, हसावि—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासीअइ, हासिज्जइ	हासीअन्ति, हासिज्जन्ति
म० पु०	हासीअसि, हासीज्जसि	हासीइत्था, हासिज्जित्था
उ० पु०	हासीअमि, हासिज्जमि	हासीअमो, हासिज्जिमो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासिहिइ, हसाविहिइ	हासिहिन्ति, हसाविहिन्ति
म० पु०	हासिहिसि, हसाविसि	हासिहित्था, हसाविहित्था
उ० पु०	हासिस्सामि, हसाविस्सामि	हासिस्सामो, हस्साविस्सामो

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र०, म०, उ० पु० हासीअ, हसावीअ, हासीईअ, हासिज्जीअ

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासीअउ, हासिज्जउ	हासीअन्तु, हासिज्जन्तु
म० पु०	हासीअहि, हासिज्जहि	हासीअह, हासिज्जह
उ० पु०	हासीअमु, हासिज्जमु	हासीअमो, हासिज्जमो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रियातिपत्ति

सभी पुरुष और सभी वचनों में

हासेज्ज, हासेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा, हासन्तो, हासेन्तो, हासमाणो

पिवास < पा (पिलाना, पिलवाना)

खाम, खवामि < क्षम—क्षमा करना।

करा, करावि < कृ—करवाना।

हो, होआवि < भू—होना।

ने, नेआवि < नी—छिशाना, ग्रहण करवाना।

झा, झाआवि < ध्यै—ध्यान कराना।

जुगुच्छ < गुप्—घृणा कराना।

उपयोगी शब्दकोप

मसाला = वेसवारो
जीरा = जीरओ
हल्दी = हलद्दा, हलद्दी
धनिया = धाण्या
तेजपात = तेअपत्तं
डाल = साहा
डंठल = वुन्तो
लवंग = लवंगो
दालचीनी = गुडत्तओ
छोटी इलायची = एला
बड़ी इलायची = थूलेला
हींग = हिंगू
उदरख = आद्दग्रं
रस = रसो
सोंठ = सुंठी
पीपल = पिप्पली
स्याह जीरा = किसणजीरओ
शीतलचीनी = कंकोल
जायफल = जाइफलं
जावित्री = जाइपत्ती
कत्था = खदिरसारो
अनाज = अन्नं, सस्सं
धान = धाण्यं
जौ = जवो
चना = चणओ
मूंग = मुग्गो
बाजड़ा = बज्जरी
उड़द = मासो
कुल्थी = कुलत्थो, कुलमासो
तिल = तिलो
आम = सहआरफलं, अंबं
कटहल = पनसो
नाशपाती = अमियफलं
अनार = दाडिमो
केला = कयली
बेल = वेलो
अमरूद = पेरूओ
खजूर = खज्जूरो
नारियल = नारिएलं
अखरोट = अक्खोटो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनक्का = पथिआ
बहेड़ा = बहेडओ
नमक = लोणं
पीपल = अस्सत्थो
वरगद = वडो
सहजन = सोहांजन
चन्दन = चंदनविच्छो
कनेर = कण्णिआरो
कचनार = कंचणारो
मिरचा = रत्तमरियं
सौंफ = सयपुप्फा
अजवायन = जवाणिआ
मेथी = मेहिआ
राई = रायिका
कपूर = कप्पूरो
पुदीना = पुदिनो
साढीधान = साली
चावल = तंडुलो
गेहूँ = गोहूमो
अरहर = आढकी
मसूर = मसूरो
साँवाँ = सामाओ
सरसों = सस्सपो
तीसी = अतसी
ज्वार = तुवरो
जामुन = जंबूफलं
सेव = सीवफलं
नारंगी = नारंगं
पपीता = महूरेंडो
वैर = वदरीफलं
कथवेल = कवित्थो
इमली = चिंचा
इक्षु = उच्छु
वादाम = वादामो
किशमिश = महुरसा
दाख = दक्खा
मूसल = मूसलं
हरड़ = हरडई
सखुआ = सालविच्छो
बबुल = वब्बुरो
अशोक = असोयो
रीठा = अरिट्ठो
पौधा = लहुपादवो
वांस = वंसो

वस्त्राभूषण

कपड़ा = वत्थं, वसनं
कोरा कपड़ा = अणाहयं वत्थं
धोया कपड़ा, धोती = धौतवत्थं
सूती कपड़ा = कप्पासं
ऊनी कपड़ा = रोमजं, ओण्णेयं
पटुए का कपड़ा = छोमं
रेशमी कपड़ा = कोसेयं
धोती = परिहाणं
दुपट्टा = उत्तरीयं
कुरता = कंचुअं
कमीज = कमणीयो, कंचुअं
टोपी = सिरत्थं
साड़ी = साडी
चोली = कंचुई
तौलिया गमछा = अंगपोंछनी, पुंछणी
वेंदी = ललाडिया
मेंहदी = मेंहदी
उवटन = उदवट्टणं
महावर = लाछा
माला = माला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कंगना = कंकण
पहुँची = कडओ
कुण्डल = कुंडलं
हाथ का कड़ा = वाला
पाँव का कड़ा = हंसओ
बिछिया = णूउंरो, णेउरो
करधनी = रसणा, मेहला
बाजू = केयूरो
सेन्दुर = सेंदूरो

पुष्प, सुगन्धित द्रव्य और औषधियाँ

कमल = पोमं, कमलं
गुलाब = पाडलो
बेला = मल्लिआ
चमेली = जाई, मालई
चम्पा = चंपा, चंपओ
जूही = जूहिआ
गेंदा = गणेसओ
ओड़हुल = जवा
मौलसिरी = वउलो
केवड़ा = केतई, केअई
खस = उसीरो
केसर = कुंकुमं
कस्तूरी = कत्थूरिआ
इत्र = पुप्फसारो
पीपल = पिप्पलो
अजमोद = अजमोदा
गुरच = गुडूई,
चिरैता = कैराअं
अडूसा = वासओ
असगन्ध = अस्सगन्धा
कत्था = खदिरो
जमालगोटा = जयपालओ
इसफगोल = सीयबीयं
सोहागा = टंकण
गेरू = गैरिअं
खड़िया मिट्टी = खडी
चूना = चुण्णं
गुलाबजल = पाडलजलं
केवड़ाजल = कअईजलं

अस्त्र

हथियार = अत्थं, सत्थं, आउहं
तलवार = असी, तरवारी
ढाल = फलओ
बर्छी = सल्लं
भाला = कुन्तो
लाठी = लगुडो, दंडो
गुप्ती = करवालिआ
बन्दूक = नालीअं
कैंची = कहणी

सम्बन्धी

पिता = पिआ, जणओ
माँ = माया, जणणी
भाई = भाया
बहन = बहिणी
बेटा = पुत्तो, तणयो, सुनू
बेटी = पुत्ती, तणया, दुहिआ
स्त्री = भज्जा, भारिया, जामया, दारा
पति = भत्ता, सामी, पई
चाचा = पियज्ज
दादा = पिआमहो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दादी = पिआमही
फूफी = पिउच्छा, पिउसिआ
प्रेयसी = पीअसी
भतीजा = भाउणिज्जो
मामा = माउलो
भगिना = भाइणिज्जो, भाइणेओ
ससुर = ससुरो
सास = सस्सू
ननद = णणंदा
भौजाई = भाउजाया
देवर = देवरो
पुत्रवधू = पुत्तवहू
पोता = पोत्तो, णत्तुणिओ
नाना = मायामहो
नानी = मायामही
नाती = णत्तिओ
साला = सालो
फुफेरा भाई = पिउसिआणेयो
मौसेरा भाई = माउसिआणेयो
मौसी = माउसिआ
बड़ा भाई = अग्गओ
छोटा भाई = अणुओ
जमाई = जामाया
साढू = सालिवोढो
पौत्र की पत्नी = णत्तुइणी

वृत्तिजीवी

किसान = किसओ, किंसाणो
नाई = णाविओ
धोबी = रजओ
तेली = तेलिओ
कुम्हार = कुंभआरो, कुलालो
बढ़ई = रहयारो, बड्ढई
चटाई बनानेवाला = वरुडो
लुहार = लोहयारो
सुनार = सुवण्णयारो
मोची = चम्मयारो
जुलाहा = कोलिओ, पडयारो
दर्जी = सूइयारो, सोचिओ
तमोली = तांबोलिओ
बनिया = वणिओ
मछुआ = धीवरो, णिसादो
ग्वाला = गोवो
ठठेरा = तंब कुट्टओ
गड़ेरिया = मेसवालो, गडेरवालो
कलवार = कलालो
कारीगर = सिप्पी
राज = थवई
गन्धी = गन्धिओ
हलवाई = मोदइओ, कांदाविओ
चौकीदार = पहरी, दारवालो
नौकर = सेवओ, भिच्चो
मजदूर = समियो
कसाई = मांसिओ
व्याध = वाहो
रसोइआ = पाचओ, सूदो
जासूस = चरो,
गवैया = गायओ
बजानेवाला = वायओ
नाचनेवाला = णच्चओ
बाजीगर = इंदजालिओ
वैद्य = वेज्जो
डाकू = दस्सू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पशु-पक्षी

सिंह = सीहो, केहरी
बाघ = साद्दूलो, बाघो
भालू = भल्लुओ, रिच्छो
चीता = चित्तओ
बन्दर = वानरो, मक्कडो
हाथी = हत्थी, करी, गयो
घोड़ा = अस्सो, घोडओ
कौआ = काओ, वायसो
कोयल = कोइल, परहुतो
भैंसा = महिसो
बैल = वसहो
गाय = धेणु, गो
चील = चिल्लो
उल्लू = उलूओ
गीदड = सियारो
हरिण = गिओ
भेडा = मेसो
बकरा = अजो, छगलो
नीलगाय = गवयो
उदविडाल = उदविडालो
लोमडी = खिखिरो
घड़ियाल = मगरो, नक्को
गोह = गोहा
बत्तक = बत्तओ
मुर्गा = कुक्कुडो
भेड़िया = कोओ, विओ
गेड़ा = गंडओ
सूअर = सूअरो, वराहो
बिडाल = मज्जारो, बिडालो
मूसा = मूसिओ, आखू
गरुड़ = गरुडो, वेणतेयो
गीध = गिद्दो
ऊँट = कमेलो
गधा = गद्दभो, रासहो
बाज = सेण
कबूतर = कवोओ
बगुला = बओ
कुत्ता = कुक्कुरो, सारमेयो
खरगोश = ससो
सुग्गा = सुओ, कीरो
मैना = सारिआ
तीतर = तित्तिरो
खञ्जन = खँजनो
बटेर = लावओ
पपीहा = चायओ
सारस = सारसो
चकवा = चक्काओ
हंसो = हंसो
मोर = मोरो
चमगादर = जउआ

सरीसृप और कीड़े-मकोड़े

साँप = सप्पो, भुयंगो
बिच्छू = विच्छिओ, अली
गिरगिट = सरडो
मछली = मच्छो
मकड़ा = मक्कडो, लूया
गिलहरी = चमरपुच्छो
मच्छर = मसओ
खटमल = मक्कुणो
जूं = लिक्खा
चींटी = पिपीलिआ
कछुआ = कच्छवो, कुम्मो
मेढ़क = भेओ, दद्दुरो
घोंघा = संबूओ
जौंक = जलउआ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कीड़ा = कीडो	मधुमक्खी = महुमक्खिआ
पतिङ्गा = सलहो	भौंरा = छप्पद, भमरो
मक्खी = मच्छिआ	

शरीर के अंगादि

सिर = मत्थओ, सिरं	मुँह = वयणं, मुहँ
आँख = णयणं, नेतं, अच्छि, चक्खु	जीभ = जीहा, रसणा
कान = कण्णो, सोत्तं	दाँत = दसणो, दंतो
नाक = णासिआ, णासा	ओठ = अहरो, ओट्ठो
कपार = कवालो, भालो	गाल = कवोलो, गल्लो
कन्धा = अंसो	बाँह = भुओ, बाहू
काँख = कक्खो	केहुनी = कहोणी
हाथ = करो, पाणी, हत्थो	उँगली = अँगुली
स्तन = थणो	घुटना = जाणु
हथेली = करयलं	टाँग = टँगो,
नाखून = नहो	पैर = चरणो, पाओ
मुट्ठी = मुट्ठिआ, मुट्ठी	एँड़ी पाण्ही
पेट = उयरं	घुट्ठी = घुडिआ
पीठ = पिट्ठं	केश = केसो, कयो, वालो
छाती = उरो, वच्छं	भौं = भौं
पसली = पासं	दाढ़ी-मूंछ = समस्सू
कलेजा = हिययं	हड्डी = अत्थि
नाभि = णाही	मांस = मंसं
कमर = कडी	चर्बी = मेदो, वसा
चूतर = नियंबो	शोणित = रत्तं, रुहिरं
जाँघ = जंघा, जंहा	पीब = किलेओ, पूयं

निवास-स्थानादि

पृथ्वी = भूमी	मकान = गिहं, भवणं, घरं
मिट्टी = मिट्टिआ	छत, छप्पर = छई
जल = जलं, उयअं, सलिलं	खपड़ा = खप्परो
शहर = णयरं	ईंट = इट्ठिआ
नदी = नई	खिड़की = खिड्डकी, वायायणं
गली = रथ्या	दरवाजा = दारं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अटारी = अट्टं
जंगल = वणं, काणणं
गाँव = गामो
छोटी वस्ती = वसही, पल्ली
बाजार = आवणो, हट्टो
सड़क = रायमग्गो
पहाड़ = पव्वओ, गिरी
राजमहल = सोहो, पासाओ
किला = दुग्गं
दीवाल = भित्ती
घास = तिणं
दहलीज = देहली
ओसारा = उवसालं
किवार = कवाडं
ऊखल = उलूखलं
मूसल = मूसलं
सूप = सुप्पं
चालनी = चालनी
तवा = कंदू
कड़ाही = कडाहो
वर्तन = पात्तं, भायणं
बोरा = पसेवो
थाली = थालिआ
लोटा = जलपत्तं
गिलास = लहुपत्तं
बिछावन = आत्थरणं
रसोईघर = महाणसं
कठौता = कक्करी
मशहरी = मसहरी
ट्रंक = पेडिआ
खूंटी = णायदंयो
छाता = छत्तं
खड़ाऊँ = काट्ठपाउआ

कंघी = कंकतिआ, पसाहणी
पीढ़ा = पीढं, आसणं
झाडू = सम्माज्जणी
ताली = तालिआ, करयलभुणी
चुटकी = छोडिआ
छींक = छिक्का
दाद = दद्दु
मालिश = मद्दणं
डकार = आज्झमाणं
थूक = थुक्को
कूड़ा-कचड़ा = अवक्करो
मलमूत्र = पुरीसं
गोंद = णिग्यासो
घडा = घडो, कलसो
गगरी = गग्गरी
वटलोई = थाली
कर्छुल = दव्वी
लोढ़ा = पेसणं
हाँड़ी = हंड़िआ
टोकरी = कंडोलो, पिडो
ढकना = पिहाणं
चमचा = चमओ
चौकी = चउक्किआ
सेज = सज्जा
चूल्हा = चुल्ली
तोशक = उसीरो
तकिया = उवहाणं
सन्दूक = वासओ, मंजूसा
पंखा = विजणं
सींक = सिवकं
जूता = उवाणओ
आइना = दप्पणो, मुउरो
दीपक = दीवओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वत्ती = वत्तिआ, वत्ती
भूख = छुहा
प्यास = तिसा, पिवासा
नींद = निद्दा
हिचकी = हिक्का
खुजलाहट = कण्डू
जम्हाई = जिंभा, जिंभिआ
दवाना = अंगमद्दणं
विष्ठा = गूहं, मलं
पसीना = सेओ, वम्मो
दाँत माँजना = दंतहावणं
लेई = विलेवी

क्रिया-कोष (गत्यर्थक) वर्तमानार्थक

जाता है = गच्छइ, वज्जइ; याइ
आता है = आगच्छइ, आयाइ
घूमता है = भमइ
टहलना = विचरइ
पैदल चलता है = परिक्कमइ
सरकता है = परिल्हसइ
दौड़ता है = धावइ
सरकता है = सरइ, सप्पइ
खेलता है = खेवलइ, कीडइ
तैरता है = तरइ
घुसता है = पविसइ
निकलता है = णीसरइ
भागता है = पलायइ
लौटता है = णिवट्टइ
भ्रमण करता है = परीइ
पार पहुँचता है = पारइ
चलता है = चलइ
कूदता है = कूद्दइ
उड़ता है = उड्डुइ
नाचता है = णच्चइ
फिसलता है = खलइ
चूता है = चिवइ, णिट्टअइ
भेजता है = पेसइ
सम्मुख आता है = समेइ

भोजनार्थक

खाता है = खादइ, भुंजइ, खाअइ
पीता है = पिज्जइ, पिवइ
चूसता है = चुस्सइ
चखता है = आसाअइ, पच्चोगिलइ, साअइ
आचमन करता है = आचमइ
चबाता है = चव्वइ
निगलता है = गिलइ
चाटता है = लिहइ

ज्ञानार्थक

जानता है = जाणइ, अवगच्छइ
देखता है = पेच्छइ, पास्सइ, पासइ
सूंघता है = जिंघइ, जिग्घइ
याद करता है = सुयरइ, सुढइ
बुझाता है = सद्दावइ
प्रार्थना करता है = पच्छइ
सुनता है = सुणइ, आयण्णइ
छूता है = फासइ
स्वाद लेता है = सयइ
देखता है, निरीक्षण करता है = हेरइ
बुलवाता है = सारइ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्दार्थक

कहता है = कहइ, सहइ, भणइ पज्जरइ
बोलता है = वोल्लइ, भासइ बुवइ
चिल्लाता है = कोसइ, कंदइ
रोता है = कंदइ, रुव्वइ, रोदइ
खिलखिलाता है = अट्टहासं करेइ
झगड़ा करता है = कलहइ
गरजता है = गज्जइ, थणइ
घोषणा करता है = घोसइ
ललकारता है = आवाहइ, हुक्कारइ
गूंजता है = गुंजइ
रटता है = रडइ
स्तुति करता है = थवइ, थुणइ
तड़फड़ाता है = तडप्फडइ

गाता है = गाअइ
ध्यान करता है = झाअइ
हँसता है = हसइ
विलाप करता है = विलवइ
बात-चीत करता है = संभासइ
बहस करता है = विवअइ
शब्द करता है = सद्दइ
वर्णन करता है = वण्णइ
जवाब देता है = उत्तरं देइ
पढ़ता है = पढइ
भजन करता है = भजइ
उपदेश देता है = देसइ
दुःख कहता है = णिव्वरइ

भावार्थक

होता है = होइ, हवइ
प्रसन्न होता है = पसीदइ, तोसइ
तृप्त करता है = तिप्पइ
दुःखी होता है = खेअइ, सीअइ
विलाप करता है संताप्त होता है = झंखइ
घबड़ाता है = खोभइ, आउछी होइ
डरता है = बीहइ
भूंकता है = बुक्कइ
लज्जा करता है = लज्जइ
थकता है = थक्कइ
शोभता है = सोहइ
रहता है = वसइ
सुस्त होता है = गिलाइ, गिलायइ
पुष्ट होता है = पुसइ
मरता है = मरइ
क्षमा करता है = खमइ

प्रशंसा करता है = पसंसइ, पकत्थइ
डाह करता है = वेसइ
भय से व्याकुल होता है = धवक्कइ
म्लान होता है = मिलाइ
डरता है = तसइ
ताड़ता है = ताडइ
पीड़ा करता है = तुआइ
क्रोधित होता है = कुप्पइ, कुज्झइ
घृणा करता है = झुणइ
घमंड करता है = मज्जइ
पोषण करता है = विंहइ
जानता है = बुज्झइ
सहता है = सहइ
चमकता है = रायइ, दिप्पइ, दीवइ
विराजता है = विरायइ
मूर्छित होता है = मुच्छइ
गिनता है = गणइ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीता है = जीवइ
दया करता है = दयइ
स्वीकार करता है = अंगीकरेइ
निन्दा करता है = निन्दइ
सन्तुष्ट होता है = संतुसइ
धिक्कारता है = धिक्कारइ

हस्तक्रियार्थक

करता है = करेइ, करइ
देता है = देइ
लेता है = गेण्हइ
पकड़ता है = धरइ
फेंकता है = खिवइ
बुकनी करता है = चुण्णइ
कूटता है = कुट्टइ, कंडइ
पीटता है = ताडइ, पट्टइ
बंधता है = बंधइ
लीपता है = लिंपइ
सँवारता है = भूसइ, सज्जइ, मंडइ
रंगता है = रंजइ
बनाता है = रचइ, णिम्मइ
छोड़ता है = चयइ
तोड़ता है = तुट्टइ, तुडइ
काटता है = कट्टइ, छिंदइ
जोड़ता है = जोजइ
टुकड़ा करता है = खंडइ
पीसता है = पीसइ
मारता है = हणइ
थप्पड़ मारता है = चवेडं देइ
रगड़ता है = घरसइ
बुहारता है = सम्माज्जयइ
लिखता है = लिखइ
गूंथता है = गुंथइ, गुंफइ
पकाता है = पचइ
चुनता है = चिणइ
चित्र बनाता है = चित्तेइ

विविध क्रियाएँ

खरीदता है = कीणइ
बेचता है = विकीणइ
पतला करता है = तणुअइ
समेटता है = संकलेइ, संकलइ
जलाता है = दहइ
डाँटता है = तज्जइ
दुहता है = दुहइ
हिलता है = कंपइ
चरता है = चरइ
रोकता है = रुंधइ
रुचता है = रुच्चइ
कटाक्ष करता है = कक्खइ
सुगन्धित होता है = सुरहइ
सूचना करता है = सूअइ
पूछता है = पुच्छइ
माँगता है = याचइ
थूकता है = थुक्कइ
सकता है = सक्कइ
समाप्त करता है = समापइ
छोड़ता है = जहइ
ढकता है = घायइ
चिंता करता है = चिंतइ
पाता है = लभइ, लहइ
छींकता है = छिक्कइ
सावधान होता है = चेइअइ
उलाहना देता है = झंखइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूजा करता है = अच्चइ, पूजइ
आशीर्वाद देता है = आसीसं देइ
सीखता है = सीखइ
ठहरता है = ठाइ
जलाता है = डहइ
खुजलाता है = कंडूअइ
तोलता है तोलइ
नापता है = मापइ
फैलता है = तणइ
जलता है = जलइ
डसता है = दंसइ
बचाता है = रक्खइ, पाइ
तर्क करता है = तक्कइ
सींचता है = तलहट्टइ
फूलता है = पुप्फइ
मलता है = मदइ
फलता है = फलइ
सोता है = सुआइ
सेवा करता है = सुस्सूसइ, सेवइ
चूमता है = चुंबइ
बढ़ता है = बड्ढइ
कोशिश करता है = चेट्ठइ
चाहता है = इच्छइ, कामइ, छंदइ
शुरू करता है = आरभइ
जीतता है = जयइ
ठगता है = छलइ
झरता है = चुअइ
हारता है = पराजयइ
जागता है = जग्गइ
नहाता है = ण्हाइ
प्रेरणा करता है = चोझइ
धोता है = छालइ
भूलता है = विसमरइ
शाप देता है = सवइ
प्रणाम करता है = पणमइ, नमइ
स्थापन करता है = ठवइ
भेंट करता है = ढुक्कइ
छिपना है = लुक्कइ

प्रयोगवाक्य

दाल में नमक ज्यादा है = दालीए लोणं अहियं अत्थि।

पीपल के पेड़ की छाया घनी है = अस्सत्थस्स रुक्खस्स गहणछाया अत्थि।

हींग डालने से दाल का स्वाद अच्छा होता है = हिंगूपहणेण दालीए सायो उत्तमो होइ।

उसके पावों में मेहंदी लगी है = तस्स पायम्मि मेंहदी लग्गा अत्थि।

वह रेशमी वस्त्र पहने हुए था = सो कोसेयं परिहाणन्तो अत्थि।

उसने ही मुझ से यह काम कराया है = तेणेव इदं कज्जं मए कारेज्जात्थि।

उसने मुझसे राम को क्षमा करवाया = तेण मए रामो खमावीक्ष।

उसने मुझे रुपये दिलवाये हैं = तेण मज्झ रुवगं दाआवीअइ।

उसके पास बन्दूक है = तस्स गिहे नालीअं अत्थि।

चौकीदार पहरे पर सावधान है = पहरी दाररक्खणे सावहाणो अत्थि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाजा बजानेवाला चला गया = वायओ गओ।

बाज़ीगर अपने खेल दिखलायेगा = इंदजालिओ णियेन्दजालं पेच्छहिइ।

नाचनेवाला यहाँ आया है = णच्चओ अत्थ आगओ अत्थि।

वैद्य बुलाकर उसकी दवा कराओ = वेज्जो हक्कित्ता चिगिच्छा करेउ।

उसकी भौजाई अच्छे स्वभाव की है = तस्स भाउजाया सेट्ठसहाओ अत्थि।

रसोइया खाना बना रहा है = पाचओ भोयणं णिम्मंतो अत्थि।

मेरी नानी बीमार हैं = मज्झ मायामही रोगिआ अत्थि।

उसकी ननद कल वाराणसी से आई है = तीए णणंदा कल्लं वाराणसीए आगआ अत्थि।

उसकी मौसी गाना गा रही है = तस्स माउसिआ गायणं गायन्तो अत्थि।

वे दर्जी कपड़ा सी रहे हैं = ते सूचिआ वत्थं सिव्वन्तो सन्ति।

वे लड़के तेज़ी से आगे बढ रहे हैं = ते बालआ वेगेण अग्गे वड्ढन्ति।

उन्होंने कल छींका था = तेहिं कल्लं छिक्कीअईअ।

मैं उनके द्वारा तंग हुआ हूँ = तेहिं हं अच्चासामीअंमि।

वह गठरी बांधता है = सो गट्ठरं बंधइ

वे लोग जीवों पर दया करते हैं = ते जीवा दयंति।

हम लोग पाप करने वालों से घृणा करते हैं = अम्हे पाविणो झुणामो।

तुम इस कार्य को क्यों स्वीकार करते हो = तुम्हें इदं कज्जं कहं अंगीकरित्था।

नहीं पढ़ने पर मैंने बच्चों को चाँटा मारा = अपढगम्मि हं सिसुं चविडं देईअ।

वह लड़की कमरे को सजाती है = सा बालिआ कक्खं सज्जइ।

वह घर की छत को लीपती है = सा पासादं लिंपइ।

वे लोग कपड़ा रंगते हैं = ते वत्थं रंजंति।

वे लोग पढना आरम्भ करते हैं = ते जणा पढणं आरंभंति।

पाइअभासाए अणुवायं कुणन्तु Translate into Prakrit

पटना नगर में एक राजा रहता था। उसकी पत्नी का नाम मायादेवी था। उनकी तीन सन्तानें थीं। सबसे बड़ा लड़का कालेज में पढ़ता था। दूसरा लड़का नवीं श्रेणी का छात्र था। कन्या कुसुमलता मोहिनी देवी स्कूल में पढ़ती है। जब परीक्षा हुई तो सभी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आरा छोटा सा नगर है। यहाँ चार कालेज और नौ हाई स्कूल हैं। जैनसिद्धान्त भवन एक बहुत बड़ा ग्रन्थागार है। इसमें हस्तलिखित ग्रन्थ बहुत ज्यादा हैं। शिक्षा के क्षेत्र में इस नगर का महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्नातकोत्तर अध्ययन के लिए यहाँ के छात्र गया जाते हैं। गया भी हिन्दुओं का प्राचीन तीर्थस्थान है। पितृपक्ष में यहाँ मेला लगता है। फल्गू नदी का तट प्रातःकाल सुन्दर मालूम पड़ता है।

राजगिर एक ऐतिहासिक नगर है। यहाँ प्राचीन समय में बिम्बसार राज्य करता था। इस राजा का दूसरा नाम श्रेणिक भी है। श्रेणिक बहुत ही प्रतापी और प्रभावशाली राजा था। इसके पुत्र का नाम अजातशत्रु था। अजातशत्रु अपने पिता से नाराज हो गया था। यही कारण है कि उसने अपने पिता को कारागृह में बन्द कर दिया था। राजगिर में गर्म पानी के झरने हैं। मलमास में यहाँ भी मेला लगता है। भगवान् महावीर का सबसे पहला उपदेश यहाँ के विपुलाचल पर हुआ था।

नालन्दा के विश्वविद्यालय को हम सभी जानते हैं। यहाँ दस हजार विद्यार्थी पढ़ते थे। आरम्भिक परीक्षा में उत्तीर्ण हुए बिना कोई भी छात्र प्रवेश नहीं पा सकता था। प्रधानाचार्य को पीठाध्यक्ष भी कहा जाता था। आज भी नालन्दा में पालिशोध-संस्थान है। इस संस्थान के निर्देशक बहुत बड़े विद्वान् हैं। विदेश से भी विद्यार्थी आकर यहाँ अध्ययन करते हैं। पालिभाषा में प्राचीन संस्कृति निहित है।

वैशाली गणतन्त्र का सर्वप्रथम नगर है। लिच्छवि राजाओं ने यहाँ पर प्रजातन्त्र की नींव डाली थी। यहाँ पर भगवान् महावीर का जन्म हुआ है। आज भी चैत्रशुक्ला त्रयोदशी के दिन मेला लगता है। इस मेले में लगभग एक लाख मनुष्य एकत्र होते हैं। हाल ही में बिहार सरकार ने यहाँ प्राकृत-शोध प्रतिष्ठान की स्थापना की है। प्राकृत भाषा का साहित्य विशाल और महत्त्वपूर्ण है। महाकाव्य, खण्डकाव्य, सट्टक, स्तोत्र गुण और परिमाण की दृष्टि से बेजोड़ है। भाषाविज्ञान और संस्कृति की दृष्टि से भी इस भाषा का महत्त्व बहुत अधिक है।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नवमो पवाढओ Lesson 9

विशेषण, संख्यावाचक शब्द, कारक, समास, एवं तद्धित

७० जो लिङ्ग और वचन विशेष्य का होता है, वही लिङ्ग और वचन विशेषण का भी होता है। यथा—

सुंदेरो पुरिसो, सुंदेरी नारी, सुन्देरं फलं इत्यादि।

७१. विशेषण पाँच प्रकार के होते हैं—गुणवाचक, सार्वनामिक, संख्यावाचक, तुलनात्मक और कृदन्त विशेषण। गुणवाचक विशेषण द्वारा विशेष्य की गुणसम्बन्धी विशेषता बतलायी जाती है। इस विशेषण के लिंग, वचन और विभक्तियाँ विशेष्य के अनुसार ही होती हैं। यथा—

काला कुत्ता जाता है = किसणो कुक्कुरो धावइ।
काले कुत्ते दौड़ते हैं = किसणा कुक्कुरा धावंति।
अच्छा लड़का पढ़ता है = उत्तमो बालओ पढइ।
अच्छे लड़के पढ़ते हैं = उत्तमा बालआ पढंति।
अच्छे लड़के के द्वारा पढ़ा गया = उत्तमेण बालेण पढिओ।
अच्छे लड़के को पढ़ना पसन्द है = उत्तमस्स बालस्स पढणं रुच्चए।

७२. विशेष्य के पूर्व में आने से सर्वनाम भी विशेषण बन जाते हैं। इनके भी लिङ्ग, वचन और विभक्ति विशेष्य के अनुसार ही होती हैं यथा—

यह लड़का घर जाता है = अयं बालो गिहं गच्छइ।
यह लड़की घर जाती है = = इमा बाला गिहं गच्छइ
यह फूल अच्छा है = इदं पुप्फं उत्तमं अत्थि।
वह हाथी पानी पीता है = सो गयो जलं पिवइ।
वे मित्र पढ़ते हैं = ताइं मित्ताणि पढंति।
वह गाय दूध देती है = सा धेणू दुद्धं देइ।
वह फल मीठा है = एअं फलं महुरं अत्थि।
वह रानी काम करती है = एसा रण्णी कज्जं करेइ।
ये वर्तन गन्दे हैं = एआणि भण्डाणि मलिणाणि संति।
उस स्त्री का लड़का जाता है = अमूए इत्थीए बालओ गच्छइ।
उस आदमी का काम होता है = अमुणो पुरिसस्स कज्जं हवइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन लड़कों को पुरस्कार दो = एताणं बालाणं पुरसकारं देउ।
इन लड़कियों को पुरस्कार दो = एईणं बालिआणं पुरक्कारं देउ।
ये लताएँ अच्छी लगती हैं = एईआ लया उत्तमा लग्गंति।
ये वृक्ष अच्छे हैं = एए विच्छा उत्तमा संति।
उस स्थान से लड़के जाते हैं = तम्हा थाणत्तो बालआ गच्छंति।

७३. हिन्दी में संख्यावाचक विशेषण दोनों लिङ्गों में प्रायः समान होते हैं, किन्तु प्राकृत में लिङ्गभेद से इनके रूपों में अन्तर हो जाता है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि एक शब्द को छोड़ सभी संख्यावाची शब्द प्राकृत में भी तीनों लिङ्गों के समान होते हैं। यथा—

एक लड़का पढ़ता है = एगो बालओ पढइ।
एक लड़की पढ़ती है = एगा बालिआ पढइ।
यह एक पुस्तक है = इदं एगं पोत्थयं अत्थि।
इस जंगल में एक सिंह रहता है = अस्सिं वणे एगो सीहो णिवसइ।
उस खेत में दो बकरियाँ चरती हैं—तम्मि खेत्ते दुण्णि अजा चरंति।
उस ग्राम में तीन वैद्य रहते हैं=तम्मि गामम्मि तिण्णि वेज्जा णिवसंति।

संख्यावाचक शब्दों के रूप

७४. संख्यावाचक शब्दों में अट्ठारस (अष्टादश) संख्यावाचक शब्द तक षष्ठी विभक्ति के बहुवचन में ण्ह और ण्हं प्रत्यय जुड़ते हैं।

पुँल्लिङ्ग—एक—इक्क, एक्क, एग, एअ

	एकवचन	बहुवचन
प०	एगो, एओ, एक्को, इक्को	एगे, एए, एक्के
बी०	एगं, एअं, एक्कं	एगे, एगा, एए, एआ

शेष रूप सव्व शब्द के समान होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग एगा, एआ, एक्का—एक

	एकवचन	बहुवचन
प०	एगा, एआ, एक्का	एगाओ, एआओ, एक्काओ
बी०	एगं, एअं, एक्कं	” ” ”

शेष रूप सव्वा के समान होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नपुंसक लिङ्ग—एग, एअ, एक्क (एक)

	एकवचन	बहुवचन
प०	एगं, एअं, एक्कं	एगाणि, एआणि, एक्काणि
वी०	एगं, एअं, एक्कं	,, ,, ,,

शेष शब्द पुंल्लिङ्ग के समान ही होते हैं।

उभ, उह (उभ) शब्द तीनों लिङ्गों में समान

	बहुवचन
प०	उभं
वी०	उभे, उभा
त०	उभेहि, उभेहिं
च०	उभण्हं
पं०	उभाहिन्तो, उभासुंतो
छ०	उभण्हं
ष०	उभेसु

दु, दो, वे (द्वि) तीनों लिङ्गों में

	बहुवचन
प०	दुवे, दोण्णि, विण्णि
वी०	,, ,, ,,
त०	दोहि-हिं-,वेहि-हिं
च०	दोण्ह, दोण्हं, दुण्हं, वेण्ह
पं०	दुत्तो, दोसुन्तो, दो हिन्तो, वे सुत्तो
छ०	दोण्ह, वेण्ह, दोण्हं
स०	दोसु, वेसु

ति (त्रि) तीनों लिङ्गों में

	बहुवचन
प०	तिण्णि
वी०	तिण्णि
त०	तीहि, तीहिं
च०	तीण्ह, तीण्हं
पं०	तीहिन्तो
छ०	तीण्हं
स०	तीसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चउ (चतुर) तीनों लिङ्गों में

	वहुवचन
प०	चत्तारो, चउरो, चत्तारि
वी०	चत्तारो, चउरो, चत्तारि
त०	चऊहि, चऊहिं चऊहिँ
च० छ०	चउण्हं
पं०	चउत्तो, चउहिंतो, चउसुन्तो
स०	चऊसु

सत्त (सप्तन्) शब्द

	वहुवचन
प०	सत्त
वी०	सत्त
त०	सत्तहि-हिं-हिँ
च० छ०	सत्तण्ह, सत्तण्हं
पं०	सत्तओ, सत्तहिंतो सत्तसुन्तो
स०	सत्तसु

पंच (पञ्चन्) तीनों लिङ्गों में

	वहुवचन
प०	पंच
वी०	पंच
त०	पंचहि—हिं
च० छ०	पंचण्ह, पंचण्हं
पं०	पंचाहिंतो, पंचासुंतो
स०	पंचसु

छ (षष्) तीनों लिङ्गों में

	वहुवचन
प०	छ
वी०	छ
त०	छहिं
च० छ०	छण्हं
पं०	छहिंतो, छसुंतो
स०	छसु

अट्ठ (अष्टन्) तीनों लिङ्गों में

	वहुवचन
प०	अट्ठ
वी०	अट्ठ
त०	अट्ठहि—हि—हिं
च० छ०	अट्ठण्ह
पं०	अट्ठाहिंतो, अट्ठासुन्तो
स०	अट्ठसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णव (नवन्) तीनों लिङ्गों में

	बहुवचन
प०	णव
बी०	णव
त०	णवहिं
च० छ०	णवण्हं
पं०	णवाहिन्तो, णवासुन्तो
स०	णवसु

दह, दस (दशन्)

	बहुवचन
प०	दह, दस
बी०	दह, दस
त०	दहहिं, दसहिं
च० छ०	दहण्हं, दसण्हं
पं०	दहासुन्तो, दसाहिन्तो, दहाहिन्तो
स०	दहसु, दससु

इसी प्रकार एगारह, बारह, तेरह, चउद्दह, पण्णरह, सोलह, सत्तरह और अट्ठारह शब्दों के रूप होते हैं।

कइ (कति) शब्द—तीनों लिङ्गों में

	बहुवचन
प०	कइ
बी०	कइ
त०	कईहि
च० छ०	कइण्ह, कइण्हं
पं०	कईहिन्तो, कईसुन्तो
स०	कईसु

वीसा (विंशति) तीनों लिङ्गों में

	एकवचन	बहुवचन
प०	वीसा	वीसाओ
बी०	वीसं	वीसाओ
त०	वीसाअ, वीसाए	वीसाहि
च० छ०	वीसाअं, वीसाए	वीसाण–णं
पं०	वीसत्तो, वीसाए	वीसाहिन्तो, वीसासुन्तो
स०	वीसाइ	वीसासु
सं०	हे वीसा	हे वीसाओ

इसी प्रकार एगूणवीसा, एगवीसा, दुवीसा, तेवीसा, चउवीसा, पण्णवीसा, छव्वीसा, सत्तवीसा, अट्ठावीसा, एगूणतीसा, तीसा, एगतीसा,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुतीसा, तेतीसा, चउतीसा, पण्णतीसा, छत्तीसा, सत्ततीसा, अडतीसा, एगूणचत्तालीसा, चत्तालीसा, एगचत्तालीसा, बायाला, तेआलीसा, चउआलोसा, पणगचत्तालीसा छवत्तालीसा, सत्तचत्तालीसा, अडचालीसा, एगूणवन्ना, पन्नासा, एगावन्ना, दोवन्ना, तेवन्ना, चउवन्ना, पणवन्ना, छपन्ना, ससावन्ना, अट्ठावण्णा शब्दों के रूप होते हैं।

सट्ठि (षष्टि) तीनों लिङ्गों में

	एकवचन	बहुवचन
प०	सट्ठी	सट्ठीओ
बी०	सट्ठि	सट्ठीओ
त०	सट्ठीअ, सट्ठीए	सट्ठीहि
च० छ०	सट्ठीअ, सट्ठीए	सट्ठीण
पं०	सट्ठित्तो, सट्ठीए	सट्ठीहिन्तो, सट्ठीसुन्तो
स०	सट्ठीए, सट्ठीअ	सट्ठीसु
सं०	हे सट्ठि, सट्ठी	हे सट्ठीओ

इसी प्रकार एगूणसट्ठि, एगसट्ठि, दोसट्ठि, तेसट्ठि, चउसट्ठि, पणसट्ठि, छसट्ठि, सत्तसट्ठि, अडसट्ठि, एगूणसत्तरि, सत्तरि, एकसत्तरि, दोसत्तरि, तेसत्तरि, चउसत्तरि, पणसत्तरि, छस्सत्तरि, सत्तसयरि, अडसयरि, एगूणासीइ, असीइ, एगासीइ, दोसीइ, तेसीइ, चउरासीइ, पणसीइ, छासीइ, सत्तासीइ, अठासीइ, नवासीइ, एगूणनवइ, णवइ, एगणवइ, दोणवइ, तेणवइ, चउणवइ, पंचणवइ, छण्णवइ, सत्तणवइ, अट्ठाणवइ, एवं नवणवइ शब्दों के रूप होते हैं।

नपुंसकलिङ्ग सय (शत)

	एकवचन	बहुवचन
प०	सयं	सयाइं, सयाणि
बी०	सयं	सयाइं, सयाणि

शेष शब्द अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के समान होते हैं।

दुसय, तिसय (तीन सौ), चत्तारि सयाइं (चार सौ), पणसय, छसय, सत्तसय, अट्ठसय, नवसय, सहस्स, दससहस्स, अयुअ, लक्ख, दहलक्ख, पयुअ, आदि शब्दों के रूप भी सय के समान नपुंसक लिङ्ग में ही होते हैं। कोडि, कोडाकोडि, सयकोडि, दहकोडि के रूप स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपूर्णसंख्यावाचक विशेषण

चतुर्थांश = पायो
आधा = अद्धं, अड्ढं
डेढ़ = सड्ढं, सड्ढं
साढ़ेतीन = अद्धतइय, अड्ढाइय
साढ़े पाँच = अद्धपंचमो
साढ़े सात = अद्धसत्तमं, अद्धसत्तमो
साढ़े नौ = अद्धनवमो
पौना = पाओणं, पाउणं
सवा = सवायो, सवायं
ढाई = दिवड्ढो
साढ़े चार = अद्दुड्ढो, अड्ढुट्ठो
साढ़े छः = अद्धछट्ठो
साढ़े आठ = अद्धट्ठयो
साढ़े दस = अड्ढदसमो

क्रमवाचक विशेषण

पहला = पढमं, पढमिल्लं
दूसरा = वीओ, दुइयो
तीसरा = तइओ, तच्चो
चौथा = चउत्थो
पाँचवा = पंचमो
ग्यारहवाँ = एक्कारमो
बारहवाँ = बारसमो
तेरहवाँ = तेरसमो
चोदहवाँ = चउद्दसमो
पन्द्रहवाँ = पण्णरसमो
इक्कीसवाँ = एक्कवीसइमो
तेईसवाँ = तेवीसइमो
पच्चीसवाँ = पंचवीसइमो
सत्ताईसवाँ = सत्तावीसइमो
उन्तीसवाँ = एगूणतीस इमो
इकतीसवाँ = एक्कतीसइमो
तेंतीसवाँ = तेत्तीसइमो
पैंतीसवाँ = पंचतीसाइमो
सैंतीसवाँ = सत्ततीस इमो
उनचालीसवाँ = एगूणचालीसइमो
इकतालीसवाँ = एगचत्ताल
तेतालीसवाँ = तेयालीसइमो
पैतालीसवाँ. = पणयाल
सैंतालीसवाँ = सत्तचत्ताल
उनंचासवाँ = एगूणपन्नास
इक्यानवाँ = एगावन्नमो
छठा = सट्ठो
सातवाँ = सत्तयो
आठवाँ = अट्ठयो
नौवाँ = नवमो
दसवाँ = दहमो, दसमो
सोलहवाँ = सोलसमो
सत्रहवाँ = सत्तरसमो
अठारहवाँ = अट्ठारसमो
उन्नीसवाँ = एगूणवीसइमो
वीसवाँ = वीसइमो
बाईसवाँ = बावीसइमो
चौबीसवाँ = चउवीसइमो
छब्बीसवाँ = छव्वीसइमो
अट्ठाईसवाँ = अट्ठावीसइमो
तीसवाँ = तीसइमो
बत्तीसवाँ = बत्तीसइमो
चौतीसवाँ = चउतीइमो
छत्तीसवाँ = छत्तीसइमो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अड़तीसवाँ = अडतीसइमो
चालीसवाँ = चत्तालीसमो
ब्यालीसवाँ = बायालीसइमो
चवालीसवाँ = चउचत्तालीसइमो
छियालीसवाँ = छायालीसइमो
अड़तालीसवाँ = अट्ठचत्ताल. अडयालीस
पचासवाँ = पन्नासवो
बावनवाँ = बावण्णो
त्रेपनवाँ = तिपंचासइमो
चउनवाँ = चउपण्णइमो
पचपनवाँ = पंचावन्न
साठवाँ = सट्ठिमो
बासठवाँ = बासट्ठो
चौंसठवाँ = चउसट्ठिमो
छयासठवाँ = छासट्ठो
अड़सठवाँ = अडसट्ठिमो
सत्तरवाँ = सत्तरिअमो
बहत्तरवाँ = बावत्तरो
चौहत्तरवाँ = चउहत्तरो
छिहत्तरवाँ = छहत्तरो
अठहत्तरवाँ = अट्ठहत्तरो
अस्सीवाँ = असीइमो
ब्यासीवाँ = बासीइमो
चौरासीवाँ = चउरासीइमो
छियासीवाँ = छासीइमो
अट्ठासीवाँ = अट्ठासीयमो
नव्वेवाँ = नवइयमो
बानवेवाँ = बाणउयो
चौरानवेवाँ = चउणउयो
छियानवेवाँ = छन्नउयो
अट्ठानवेवाँ = अट्ठाणउयो
सौवाँ = समयमो

एकबार = एगहुत्तं
तीनबार = तिक्खुत्तो
पाँचबार = पंचक्खुत्तो
हजारबार = सहस्सहुत्तं, सहस्सक्खुत्तो
सत्तावनवाँ = सत्तावण्णो
अट्ठावनवाँ = अट्ठावण्णो
उनसठवाँ = एगूणसट्ठो
इकसठवाँ = एगसट्ठो
त्रैसठवाँ = तिसट्ठो
पैसठवाँ = पंचसट्ठो
छडसठवाँ = सत्तसट्ठो
उनहत्तरवाँ = एगूण सत्तरो
एकहत्तरवाँ = एकसत्तरो
तिहत्तरवाँ = तिहत्तरो
पचहत्तरवाँ = पंचहत्तरो
सत्तहत्तरवाँ = सत्तहत्तरो
उन्यासीवाँ = एगूणासीययमो
इक्यासीवाँ = एगासीइमो
चासीवाँ = तेयासीइमो
पिच्चासीवाँ = पंचासीइमो
सत्तासीवाँ = सत्तासीइमो
नवासीवाँ = एगूणनउमो
इक्यानवेवाँ = एक्काणउयो
तिरानवेवाँ = तेणउयो
पंचानवेवाँ = पंचाणउयो
सत्तानवेवाँ = सत्ताणउयो
निन्यानवें = नवणवइयो
एकसौ एकवाँ = एक्कोत्तरसयो
दोबार = दुवक्खुत्तो
चारबार = चउक्खुत्तो
सौबार = सयहुत्तं, सयक्खुत्तो
अनन्तबार = अणंतहुत्तो, अणंतक्खुत्तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकारवाचक विशेषण

एक प्रकार = एगहा	तीन प्रकार = तिहा, तिविह
दो प्रकार = दुहा, दुविहा	एक प्रकार = एगविह
चार प्रकार = चउहा, चउद्धा, चउविह	आठप्रकार = अट्ठहा, अट्ठविह
बहुत प्रकार = बहुहा, बहुविह	दस प्रकार = दसहा, दसविह
सैकड़ों प्रकार = सयहा, सयविह	हजार प्रकार = सहस्सहा, सहस्सविह
नाना प्रकार = णाणाविह	अनेक प्रकार = अणेयविह

७५. प्राकृत में एक से श्रेष्ठ और सबसे श्रेष्ठ का भाव बतलाने के लिए अर, अम, ईअस और इट्ठ प्रत्यय जोड़े जाते हैं। इस प्रकार के विशेषण उत्कर्ष बतलाने या तुलना के लिए प्रयुक्त होते हैं। तुलनात्मक विशेषणों की निम्न तालिका है।

तिक्ख	तिक्खअर	तिक्खअम
उज्जल	उज्जलअर	उज्जलअम
पग्गहिय	पग्गहियअर	पग्गहियअम
थोव	थोवअर	थोवअम
अप्प	अप्पअर	अप्पअम
अहिअ	अहिअअर	अहिअअम
पिअ	पिअअर	पिअअम
हसु	हसुआ	हसुअम
अप्प	कणीअस	कणिट्ठ, कणिट्ठग
बहु	भूयस	भूयिट्ठ
पावी	पावीयस	पाविट्ठ
गुरु	गरीयस	गरिट्ठ
जेट्ठ	जेट्ठयर	जेट्ठयम
विउल	विउलअर	विउलअम
धणी	धणिअर	धणिअम
महा	महाअर, महत्तर	महाअम, महत्तम
वुड्ढ	जायस	जेट्ठ, वुड्ढअम
थूल	थूलअर	थूलअम
बहुल	बंहीअस	वंहिट्ठ
दीहर	दीहरअर	दीहरअम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतिम	नेदीअस	नेदिट्ठ
दूर	दवीअस	दविट्ठ
विउस	विउसअर	विउसअम
मिउ	मिउअर	मिउअम
धम्मी	धम्मीअस	धम्मिट्ठ
खुद्द	खुद्दअर	खुद्दअम
मइम	मईअस	मइट्ठ

प्रयोगवाक्य

मैं हिसाब में उससे ज्यादा पक्का हूँ = अहं गणियम्मि तम्हा पडुअरो अम्हि।

तुम मुझसे छोटे हो = तुमं ममत्तो कणीअसो अत्थि।

वह लड़की उससे आठ वर्ष छोटी है = सा बाला तम्हा अट्ठवरिसा कणीअसी अत्थि।

छोटा लड़का सबसे ज्यादा प्यारा होता है = कणिट्ठो पुत्तो पिअअमो होइ।

नदियों में गंगा श्रेष्ठ है = नईसुं गंगा सेठ्ठअमा अत्थि।

पहाड़ों में हिमालय सबसे ऊँचा है=गिरीसु हिमालयो उच्चअमो अत्थि।

इस गाम में वह सबसे बूढ़ा है=अस्सिं गामम्मि सो वुड्ढअमो अत्थि।

यह बोझा दोनों में ज्यादा भारी है = अयं भारो दोसुं गुरुअरो अत्थि।

मेरा घर उस जगह से अधिक दूर है = मम गिहो तम्हा थाणत्तो दूर-अमं अत्थि।

सबसे नजदीक गाँव को चलो=नेदिट्ठं गामं चलउ।

गंगा यमुना से अधिक बड़ी है = गंगा जमुणात्तो दीहरअरा अत्थि।

उसकी लड़की सबसे दुलारी है = तस्स कण्णा किसअमा अत्थि।

अजगर सब साँपों में बड़ा होता है = अजगरो सप्पेसु दीहरअमो अत्थि।

मोहन सोहन से पढ़ने में तेज है = मोहनो सोहनत्तो पढणम्मि तिक्ख-अरो अत्थि।

यह रास्ता सबसे ज्यादा अच्छा है = अयं मग्गो साहिट्ठो अत्थि।

इस तालाब में सबसे ज्यादा पानी है = अस्सिं तडायम्मि भूइट्ठं जलं अत्थि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पशुओं में सिंह सबसे बलवान है = पसूसु सीहो बलिट्ठअमो अत्थि।
चीनी से मधु ज्यादा मीठा होता है = सक्करत्तो महु मिट्ठअरो अत्थि।
हीरा सबसे ज्यादा कीमती चीज है = हीरओ सव्वेसु मुल्लअमो अत्थि।
चाँदी से सोना भारी होता है = सुवण्णो रययत्तो भारअरो अत्थि।
सब इन्द्रियों में आँखें कोमल होती हैं = सव्वेसु इंदियेसु नेत्रं मिउअरं अत्थि।
बिल्ली के नाखून ज्यादा तेज होते हैं = बिडालस्स णहा तिक्खअमा सन्ति।
सब जानवरों में गधा बेवकूफ होता है = सव्वजन्तूसु गद्दभो मुक्खअरो अत्थि।
तुम सबसे ज्यादा होशियार हो = तुमं मइट्ठो अत्थि।
तुम परीक्षा में सबसे ज्यादा अंक लाते हो = तुमं परीक्खाए अहियअमा अंका आनेसि।
पशुओं में शृगाल सबसे ज्यादा धूर्त होता है = पसुणं सियारो धुत्तअमो होइ।
याचक रुई से भी हलका होता है = याचओ तूलत्तो वि हलुअरो होइ।
मनुष्य में नाई धूर्त होता है = नाराणं णाविओ धुत्तो होइ।
वह मेरा छोटा भाई है = सो मम कणिट्ठो भाया अत्थि।
उसके पुत्रों में गोपाल बड़ा है = तस्स पुत्ताणं गोवालो एव जेट्ठो अत्थि।
सतियों में सीता श्रेष्ठ है = सईसु सीया सेट्ठा अत्थि।
पाप का रास्ता प्रिय होता है = पावस्स मग्गो पेयसो होइ।
पुण्य का मार्ग कल्याण का होता है = पुण्णस्स मग्गो सेयसो होइ।
कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है = कवीसु कालिदासो सेट्ठो अत्थि।
नगरियों में वाराणसी नगरी श्रेष्ठ है = नयरीसु वाराणसी सेट्ठा अत्थि।
जयपुर नगर सबसे श्रेष्ठ है = जयपुरो नयरो सेट्ठअमो अत्थि।
वह इस नगरी में सबसे बड़ा विद्वान् है = सो अस्सिं नयरीए विउसअमो अत्थि।
पोखरे में बहुत मछलियाँ हैं = तडागे बहुमच्छा सन्ति।
इस गाँव में बहुत आदमी हैं = अस्सिं गामम्मि बहुजणा सन्ति।
उसके बदन पर तीन गहने हैं = तस्स सरीरे तिण्णि अहूसणानि संति।
उस थाली में दो दो लड्डू हैं = तीए थालीए दुण्णि मोदयाणि संति।
उस मकान में तीन नौकर हैं = तस्सिं गिहे तिण्णि सेवआ सन्ति।
उस लता में बीस फूल हैं = तीए लताए वीसा पुप्फाणि संति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दो स्त्रियाँ नदी में नहाती हैं = नईसु दुण्णि महिलाओ ण्हान्ति ।
इस प्रान्त में तीन नदियाँ हैं = अस्सिं पदेसे तिण्णि नइओ सन्ति ।
उस जेल में चार चोर हैं = अस्सिं कारायारे चत्तारि चोरा संति ।
गोशाला में पाँच गायें हैं = गोसालयम्मि पंच गावीओ संति ।
इस गाड़ी में चार पहिये हैं = अस्सिं सयडम्मि चत्तारि चक्काणि संति ।
पका आम मीठा होता है = पक्कं अंबं महुरं होइ ।
चार वेद होते हैं = चत्तारि वेदा होन्ति ।
पाँच पितर होते हैं = पंच पियरा हवन्ति ।
सात द्वीप होते हैं = सत्त दीवा हवन्ति ।
ग्यारह रुद्र होते हैं = एगारह रुद्दा हवन्ति ।
सूर्य की बारह कलाएँ होती हैं = सुज्जस्स दुवारस कला हवन्ति ।
इस पंक्ति में तेरह ब्राह्मण हैं = इमीए पंत्तीए तेरह बँभणा सन्ति ।
इस विश्व में चौदह भुवन हैं = अस्सिं जयम्मि चउद्दह भुवणाणि सन्ति ।
एक पक्ष में पन्द्रह तिथियाँ होती हैं = एयस्सिं पक्खे पण्णरह तिथीओ हवन्ति ।
यह सोलह वर्ष का बालक है = अयं सोलहण्हं वरिसाणं बालओ अत्थि ।
यह सत्रह वर्ष की कन्या है = इमा कण्णा सत्तरहण्हं वरिसाणं अत्थि ।
अठारह पुराण प्रसिद्ध हैं = अट्ठारह पुराणा पसिद्धा सन्ति ।
साठ बालक प्रथमा में पढ़ते हैं = सट्ठी बालआ पढमाए पढन्ति ।
पचास व्यक्ति गाँव में रहते हैं = पण्णासा जणा गामम्मि णिवसन्ति ।
पेंतालीस आदमी जा रहे हैं = पण्णचत्तालीसा जणा गच्छन्ता सन्ति ।
कक्षा में उसका दूसरा स्थान है = कच्छाए तस्स दुइयं थाणं अत्थि ।
मैंने दो बार इस काम को किया है = हं दुक्खुत्तो इदं कज्जं करीअ ।
सत्तानवेवाँ आदमी कब आयेगा = सत्ताणउयो जणो कया आगमिस्सइ ।
तीन तरह से मैंने उसे समझाया है = तिविहं हं तं मुणावीअ ।
हजार बार कहने पर भी वह नहीं माना = सहस्सहुत्तं कहणेणावि सो ण अंगीकरीअ ।
यह एकहत्तरवाँ आदमी किस काम में आयेगा = अयं एगसत्तरो जणो कस्सिं कज्जे आइस्सइ ।
सौ बार मैं आपका कहना मानता हूँ = सयहुत्तं हं भवन्तस्स कहणं अंगीकरेमि ।
चार दिन से वे क्या कर रहे हैं = आचत्तारि दिवसत्तो ते किं कुणन्तो सन्ति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७६. वर्तमान कृदन्त भी विशेषण का कार्य करते हैं। संस्कृत में जो कार्य शतृ और शानच् प्रत्यय से लिया जाता है, वही प्राकृत में न्त और माण प्रत्यय जोड़ कर लिया जाता है। यथा—

दौड़ता हुआ बालक घर गया = धावन्तो बालओ गिहं गओ।
बोलते हुए तोता उड़ता है = बोल्लन्तो सुग्गो उड्डेइ।
पढ़ता हुआ छात्र घर गया = पढन्तो छत्रो गिहं गओ।
रोता हुआ बच्चा = रुदन्तो सिसू।
नाचते हुए दो मोर दिखलायी पड़े = णच्चन्ता दुण्णि मोरा अवलोइआ।
चलती हुई गाड़ी आवाज करती है = चलन्तो सयडो सद्द करेइ।
गिरते हुए पत्ते शब्द करते हैं = पडन्ताणि पत्ताणि सद्दं करेन्ति।
रोती हुई लड़की माँ के पास जाती है = रुव्वन्ती बालिआ मायरस्स समीवे गच्छइ।
हँसती हुई स्त्री बोलती है = हसन्ती नारी बोल्लइ।
बहती हुई नदी समुद्र में मिलती है = वहन्ती नई समुद्दे मिलइ।
भागता हुआ चोर पकड़ा गया = पालयमाणो चोरो गेण्हिज्जसो।
लजाती हुई स्त्रियाँ छिपती हैं = लज्जमाणा नारीओ तिरोहन्ति।
जाड़े से काँपता हुआ बुड्ढा आग तापता है = सीयेण कंपमाणो बुड्ढो अग्गिं सेवइ।
बाघ गरजता हुआ दौड़ता है = गज्जन्तो वाघो धावइ।
वह लजाती हुई यहाँ आती है = सा लज्जमाणा एत्थ आगच्छइ।
वह पीढ़े पर बैठा हुआ है = सो पीढे आसीणो अत्थि।
मरीज चारपाई पर सोया हुआ है = रोगी खट्टाए सयाणो अत्थि।
वह रोते-रोते पूछता है = सो रुव्वन्तो पुच्छइ।
मैंने जाते-जाते कहा = अहं गच्छन्तो कहीअ।

विभक्ति (Case-endings)

७७. अनुक्तकर्म को बतलाने के लिए कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—

हरि का भजन करता है = हरिं भजइ
गाँव जाता है = गामं गच्छइ
वेद पढ़ता है = वेयं पढइ
पुस्तक पढ़ता है = पोत्थयं पढइ
धन इकट्ठा करता है = अत्थं चिणइ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७८. सप्तमी और प्रथमा विभक्ति के स्थान पर क्वचित् द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

रात्रि में बिजली का प्रकाश फैलता है = विज्जुज्जोयं भरइ रत्तिं।

चौबीस जिनवर भी = चउव्वीसं पि जिणवरा।

७९. संस्कृत के समान प्राकृत में भी द्विकर्मक धातुओं के योग में अपादान आदि कारकों में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

बच्चे से रास्ता पूछता है = माणवअं पहं पुच्छइ।

वृक्ष के फलों को इकट्ठा करता है = रुक्खं ओचिण्इ फलानि।

बच्चे से धर्म कहता है = माणवअं धम्मं सासइ।

८०. शी, स्था और आस् धातुओं के पूर्व यदि अधि (अहि) उपसर्ग लगा हो तो इन क्रियाओं के आधार की कर्म संज्ञा होती है। यथा—

हरि वैकुण्ठ में रहते हैं = अहिचिट्ठइ वइउंठं हरी।

८१. अहि और नि उपसर्ग जब एक साथ विश (विस) धातु के पहले आते हैं, तो विश् के आधार को कर्म कारक होता है। यथा—

सन्मार्ग में रहता है = अहिनिवसइ सम्मग्गं।

८२. यदि वस् धातु के पूर्व उव, अनु, अहि और आ में से कोई उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार को कर्मकारक होता है। यथा—

हरि वैकुण्ठ में निवास करते हैं = हरी वइउंठं उववसइ, अहिवसइ, आवसइ वा।

८३. अहिओ—चारों ओर, परिओ—सब ओर, समया—समीप, निकहा—निकट, हा, पडि, धिअ, सव्वओ और उवरि-उवरि शब्दों की जिनमें सन्निकटता पायी जाय, उनमें द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

कृष्ण के चारों ओर बालक हैं = अहिओ किसणं बालआ सन्ति।

कृष्ण के सब ओर ग्वाले हैं = परिओ किसणं गोवा सन्ति।

गाँव के पास नदी है = गामं समया नई अत्थि।

समुद्र के निकट लंका है = समुद्दं निकहा लंका अत्थि।

राजा के चारों ओर नौकर हैं = परिजणो रायाणं अहिओ चिट्ठइ।

८४. अणु के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

नदी पर सेना रहती है = णइं अणुवसिआ सेणा।

मोहन के पीछे-पीछे हरि जाता है = मोहणं अणुगच्छइ हरी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८५. जब अंगुलि निर्देश करना हो, इत्थंभूत—ये इस प्रकार के हैं—यह बतलाना हो, भाग—यह उनके हिस्से में पड़ा या पड़ता है, यह प्रकट करना हो अथवा पुनरुक्ति दिखलानी हो तो पडि, परिं और अणु के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

वृक्ष पर बिजली चमकती है = वच्छं पडि विज्जुअइ विज्जू।
विष्णु के ये भक्त हैं = भत्तो विसणुं पडि अणु वा।
लक्ष्मी विष्णु के हिस्से में पड़ीं या पड़े = लच्छी हरिं पडि अणु वा।
प्रत्येक वृक्ष को सींचता है = वच्छं वच्छं पडि सिंचइ।
कृष्ण सब देवताओं की अपेक्षा पूज्य हैं = अइ देवा किसणो।

८६. प्रकृति—स्वभावादि अर्थों में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—
वह स्वभाव से मधुर है = सो पइए महुरो अत्थि।
राम गोत्रसे गर्ग हैं = रामो गोत्तेण गग्गो अत्थि।
यह मीठे रसवाला है = इदं रसेण महुरं अत्थि।
वह सुखपूर्वक जाता है = सो सुहेण गच्छइ।

८७. दिवधातु के योग में विकल्प से द्वितीया विभक्ति भी होती है। यथा—
वह पाशों से खेलता है = सो अच्छेहिं अच्छा वा दीव्वइ।

८८ फलप्राप्ति या कार्य सिद्धि को बतलाने के लिए तृतीया विभक्ति होती है। यथा—
बारह वर्षों में व्याकरण पढ़ा जाता है = दुवालसवरसेहिं वाअरणं सुणइ।

८९. सह, साअं, समं और सद्धं के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—
पुत्र के साथ पिता आया = पुत्तेण सहाअओ पिआ।
राम के साथ लक्ष्मण भी जाता है = लक्खणो रामेण साअं गच्छइ।
देवदत्त यज्ञदत्त के साथ नहाता है = देवदत्तो जग्यदत्तेण समं ण्हाइ।

९०. पिहं, बिना, नाना शब्दों के साथ तृतीया, द्वितीया या पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—
रामके बिना रहना संभव नहीं है = रामं, रामेण, रामत्तो विना निवसणं ण सक्कइ।
जल से पृथक् कमल नहीं रह सकता = जलं, जलेण, जलत्तो वा पिहं कमलं चिट्ठिउं ण सक्कइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोहन के विना इसका रहना संभव नहीं = मोहरणेण विना तस्स णिवसएं ण सक्कइ।

९१. जिस विकृत अंग के द्वारा अंगी का विकार मालूम हो उस अंग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

वह पैर का लंगड़ा है = सो पायेण खंजो अत्थि।
वह कान का वहिरा है = सो कण्णेने बहिरो अत्थि।
तुम आंख के काने हो = तुमं नेत्तेण काणो अत्थि।

९२ जिस कारण या प्रयोजन से कोई कार्य किया जाता है या होता है, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

दण्डे से घड़ा उत्पन्न हुआ = दंडेण घडो जाओ।
पुण्य के कारण हरि दिखलायी पड़े = पुण्णेण दिट्ठो हरी।
अध्ययन के प्रयोजन से रहता है = अज्झणेण वसइ।

९३. जो जिस प्रकार से जाना जाय, उसके लक्षण में तृतीता विभक्ति होती है। यथा—

जटाओं से तपस्वी जान पड़ता है = जडाहिं तावसो पडिभाइ।
वह गमन में राम के सदृश है = गमणेण रामं अणुहरइ सो।

९४. कार्य, अर्थ, प्रयोजन, गुण तथा इसी प्रकार उपयोग या प्रयोजन प्रकट करनेवाले शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

उस पुत्र के उत्पन्न होने से क्या लाभ है, जो न विद्वान् है और न धर्मात्मा = को अत्थो पुत्तेण जो ण विउसो ण धम्मिओ।

धनी लोगों का कार्य तिनके से भी हो जाता है = तिणेण कज्जं हवइ ईसराणं।

९६. आर्ष प्रयोगों में सप्तमी के स्थान में तृतीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। यथा—

उस समय में = तेणं कालेणं, तेणं समएणं।
९७. दा धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—
ब्राह्मणों को गाय देता है = विप्पाय या विप्पस्स गावं देइ।
श्रमणों को भोजन देता है = समणाणं भोयणं देइ।
अतः इसको भिक्षा देकर अपने को निष्पाप करता हूँ = ता करेमि एयस्स भिक्खादाणेण विगय-कलुसमप्पाणं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९८. रोअ–रुच् धातु तथा रुच् के समान अर्थवाली अन्य धातुओं के योग में प्रसन्न होनेवाला सम्प्रदान कहलाता है और सम्प्रदान को चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

वालकको लड्डू अच्छे लगते हैं=वालअस्स मोअआ रोअन्ते।
मुझे तुम्हारा विचार अच्छा लगता है=मम तव वियारो रोयइ।
उसकी वात मुझे अच्छी नहीं लगती=तस्स वाया मज्झं न रोयइ।

९९. सलाह (श्लाघ), हुण, चिट्ठ (स्था) और सव-शप् धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

गोपी कामदेव के वश से श्रीकृष्ण के अर्थ अपनी श्लाघा करती है, स्थित होकर कृष्ण को अपना अभिप्राय वताती है तथा कृष्ण के लिए अपना उपालम्भ करती है=गोवी समरत्तो किसणाय किसणस्स वा सलाहइ, चिट्ठइ, सवइ वा।

१००. धर, उधार लेना—कर्ज लेना धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

हरि भक्त के लिए मोक्ष को धारण करते हैं=भत्ताय, भत्तस्स वा धरइ मोक्खं हरी।
श्याम ने अश्वपति से एक सौ कर्ज लिए=सामो अस्सपइणो सइं धरइ।

१०१. सिह–स्पृह धातु के योग में जिसे चाहा जाय, वह सम्प्रदान संज्ञक होता है और सम्प्रदान को चतुर्थी विभक्ति में रखते हैं। यथा—

फूलों की चाहना करता है=पुप्फाणं सिहइ।

१०२. कुज्झ, दोह, ईस तथा असूअ धातुओं के योग में तथा इन धातुओं के समान अर्थवाली धातुओं के योग में जिनके ऊपर क्रोधादि किये जाते हैं, उनको चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

हरि के ऊपर क्रोध करते हैं, द्रोह करते हैं, ईर्ष्या करते हैं, घृणा करते हैं=हरिणो कुज्झइ, दोहइ, ईसइ, असूअइ वा।

१०३. निश्चितकाल के लिए वेतन इत्यादि पर किसी को रखा जाना परिक्रयण कहलाता है, उस परिक्रयण में जो करण होता है, उसको विकल्प से चतुर्थी विभक्ति में रखा जाता है। यथा—

सौ रुपये के वेतन पर रखा गया=सयेण सयस्स वा परिकीणइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०४. जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाय, उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

मुक्ति के लिए हरि को भजता है=मुत्तिणो हरिं भजइ।

भक्ति ज्ञान के लिए होती है=भत्ती णाणाय कप्पइ, संपज्जइ, जाअइ वा।

१०५. हित और सुख के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

ब्राह्मण के लिए हितकर या सुखकर=वंभणस्स हिअं सुहं वा।

१०६. नमो, सुत्थि, सुहा, सुआहा और अलं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

हरि को नमस्कार हो=हरिणो नमो।

प्रजा का कल्याण हो=पआणं सुत्थि।

पितरों को समर्पित है=पिअराणं सुहा।

मल्ल दूसरे मल्ल के लिए पर्याप्त है=अलं मल्लो मल्लस्स।

१०७. जब कोई वस्तु किसी से अलग होती है, तो उसे पञ्चमी विभक्ति में रखा जाता है। यथा—

दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है=धवन्तो अस्सत्तो पडइ।

१०८. दुगुञ्छ, विराम और पमाय तथा इनके समानार्थक शब्दों के साथ पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—

पाप से घृणा करता है या दूर होता है=पावत्तो दुगुञ्छइ, विरमइ वा।

१०९. जिसके कारण डर मालूम हो अथवा जिसके डर के कारण रक्षा करनी हो, उस कारण को पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—

राम कलह से डरता है=रामो कलहत्तो बीहइ।

वहाँ साँप का भय है=तत्थ सप्पओ भयं अत्थि।

वह चोर से डरता है=सो चोरओ बीहइ।

११०. 'भी' धातु के योग में पञ्चमी के अर्थ में चतुर्थी विभक्ति भी पायी जाती है। यथा—

दुष्टों से कौन नहीं डरता है=दुट्ठाणं को न बीहइ।

१११. पञ्चमी के अर्थ में षष्ठी विभक्ति भी देखी जाती है। यथा—

चोर से डरता है=चोरस्स बीहइ।

११२. परापूर्वक जि धातु के योग में जो असक्त होता है, उसकी अपादान संज्ञा होती है और पञ्चमी विभक्ति हो जाती है। यथा—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्ययन से हारता है = अज्झयणत्तो पराजयइ ।

११३. जन धातु के कर्त्ता का आदि कारण अपादान होता है । यथा—

काम से क्रोध उत्पन्न होता है = कामत्तो कोहो अहिजाअइ ।
क्रोध से मोह उत्पन्न होता है = कोहत्तो मोहो अहिजाअइ ।
हिमालय से गंगा निकलती है = हिमवत्तो गंगा पवहइ ।

११४. स्वस्वामिभावादि सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है । यथा—

कौए के अंगों की प्रशंसा करता है = काअस्स अंगाणि पसंसेइ ।
उसे बुलाने के लिए माधवी नाम की दासी को भेजा = तस्स वाहरणत्थं माहवी अहिहाणा चेडी पेसिया ।
माता को याद करता है = माआए सुमरइ ।

११५. हेतु शब्द के योग में भी जो शब्द कारण या प्रयोजन रहता है, वह और हेउ (हेतु) शब्द दोनों ही षष्ठी में रखे जाते हैं । यथा—

अन्न-प्राप्ति के प्रयोजन से रहता है = अन्नस्स हेउस्स वसइ ।

११६. अधिकरण तथा दूर एवं अन्तिक अर्थवाले शब्दों में सप्तमी विभक्ति होती है । यथा—

चटाई पर कौआ है = कडे आसइ कागो
गाँव से दूर अथवा निकट में = गामस्य दूरे अन्तिए वा ।

११७. सामी, ईसा, अहिवइ, दायाद, साखी, पडिहू और पसूअ इन सात शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियाँ होती हैं । यथा—

गायों का स्वामी = गवाणं गोसु वा सामी ।
गायों से उत्पन्न = गवाणं गवासु वा पसूओ ।
व्यवहार में जामिन = ववहारस्स ववहारे वा पडिभू ।

११८. यदि वस्तु का अपने समुदाय की अन्य वस्तुओं में से किसी विशेषण द्वारा वैशिष्ट्य निर्देश किया जाय तो समुदायवाचक शब्द सप्तमी अथवा षष्ठी विभक्ति में रखा जाता है । यथा—

कवियों में हरिचन्द्र सबसे बड़े कवि हैं = कईसु कईणं वा हरिचन्दो सेट्ठो ।
गायों में काली गाय अधिक दूध देनेवाली है = गवाणं गवासु वा कसिणा बहुक्खीरा ।
विद्यार्थियों में गोविन्द तेज है = छत्ताणं छत्तेसु वा गोइन्दो पडू ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११९. मध्य अर्थ, बतलाने के लिए सप्तमी विभक्ति होती है। यथा—

इसके बीच में यह तपोवन में पहुँचा=एत्थंतरम्मि पत्तो एसो तवोवणं।
बिना जानी हुई वस्तु के लिए आग्रह नहीं करना चाहिए=अन्नाय सरूवे अ वत्थुम्मि न किज्जइ पडिबन्धो।

समास (Compound)

१२०. समास करने पर पूर्वपदों की विभक्तियों का लोप हो जाता है और जो अन्त में पद रहता है, उसी में वचन के अनुसार विभक्तियाँ आती हैं। समस्यन्त पदों का प्रयोग करने से रचना में सौन्दर्य आ जाता है। यथा—

राजा का पुत्र जाता है = रायपुत्तो गच्छइ।
भोजन के पश्चात् वे सब पढ़ते हैं = अणुभोयणं ते पढन्ति।
घर घर में दीपावली मनायी जा रही है = पइघरं दीवावली संपज्जइ।
छत्र सहित राजा सिंहासन पर बैठता है=छत्तं रायो सीहासने उवविसइ।
बादल के समान काले वर्ण की वस्तु दिखलाई पड़ती है = घणसामं वत्थुं पासामि हं।
पुण्य और पाप बन्धन के कारण हैं=पुण्णपावाइं बंधस्स कारणानि संति।
उत्कृष्ट पुण्यशाली व्यक्ति कहाँ जाता है=पपुण्णो जणो कत्थ गच्छइ।
पुत्र सहित वह यहाँ आया है = सपुत्तो एत्थ सो आयओ अत्थि।
रास्ते का अतिक्रमण कर रथ गिरता है = अइमग्गो रहो पडइ।

समास के मूल चार भेद हैं—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुब्रीहि और द्वन्द्व।

१२१. जिसमें पूर्वपद के अर्थ की प्रधानता होती है, वही अव्ययीभाव होता है। यथा—

हरिम्मि इइ = अइहरि	गुरुणो समीवं = उवगुरु
सिद्धिगिरिणो समीवं = उवसिद्धगिरि	भोयणस्स पच्छा = अणुभोयणं
भद्दाणं समिद्धि = सुभद्दं	मच्छिआणं अहाओ = णिम्मच्छिअं
हिमस्स अच्चओ = अइहिमं	नयरं नयरंति = पइनयरं
दिणं दिणं पइ = पइदिणं	घरे घरे पइ = पइघरं
सत्तिं अणइक्कमिऊण = जहासत्ति	चक्केण जुगव = सचक्कं

१२२. जिसमें उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता होती है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राइणो पुरिसो = रायपुरिसो
उत्तरं गामस्स = उत्तरगामो
किसणं सिओ = किसणसिओ
जिणेण सरिसो = जिणसरिसो
आयारेण निउणो = आयारनिउणो
कलसाय सुवण्णं = कलससुवण्णं
भूयाणं बली = भूयबली
बहुजणस्स हिओ = बहुजणहिओ
दंसणाय भट्ठो = दंसणभट्ठो
थेणाओ भीओ = थेणभीओ
विज्जाए ठाणं = विज्जाठाणं
कलासु कुसलो = कलाकुसलो
इंदियं अतीतो = इंदियातीतो
सुहं पत्तो = सुहपत्तो
दिवं गओ = दिवगओ
दयाए जुत्तो = दयाजुत्तो
गुडेन मिस्सं = गुडमिस्सं
लोयाय हिओ = लोयहिओ
बंभणाय हिअं = बंभयहिअं
संसाराओ भीओ = संसारभीओ
बाघओ भयं = वाघीभयं
देवस्स मंदिरं = देवमन्दिरं
देवस्स पुज्जओ = देवपुज्जओ
जिणेसु उत्तमो = जिणोत्तमो
नरेसु सेट्ठो = नरसेट्ठो

न लोगो = अलोगो
न देवो = अदेवो
पगतो आयरियो = पायरिओ
कुंभं करइ त्ति = कुंभआरो
रत्तो अ एसो घडो = रत्तघडो
महंतो सो वीरो = महावीरो
वीरो अ एसो जिणिन्दो = वीरजिणेन्दो
सीअं च तं उण्हं य = सीउण्हं
घणो इव सामो = घणसामो
संजमो एव धणं = संजमधणं
नवण्हं तत्ताणं समाहारो = नवतत्तं
नाणम्मि उज्जओ = नाणोज्जओ
न इट्ठं = अणिट्ठं
न सच्चं = असच्चं
उग्गओ वेलं = उव्वेलो
अइक्कंतो पल्लंकं = अइपल्लंको
सुंदरा य एसा पडिमा = सुन्दरपडिमा
कण्हो य सो पक्खो = कण्हपक्खो
कुमारी अ सा गब्भिणी = कुमारगब्भिणी
चंदो इव मुहं = चन्दमुहं
मुहं चंदो व्व = मुहचंदो
चउण्हं कसायाणं समूहो = चउक्कसायं
तिण्हं लोगाणं समूहो = तिलोयं

१२३. जब समास में आये हुए दो या अधिक पद किसी अन्य शब्द के विशेषण हों तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। यथा—

पीअं अंबरं जस्स सो = पीअंबरो
आरूढो वाणरो जं रुक्खं सो = अरूढवाणरो रुक्खो
नट्ठो मोहो जाओ सो = नट्ठमोहो
महंता बाहुणो जस्स सो = महाबाहू

चंदो इव मुहं जाए = चंदमुहीकन्ना
नत्थि पुत्तो जस्स सो = अपुत्तो
नत्थि उज्जमो जस्स सो = अणुज्जमो पुरिसो
विगयं रूवं जत्तो सो = विरूवो जणो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मियनयणाइं इव नयणाणि जाए सा= मियनयणा
चरणं चेअ धणं जाणं = चरणधणा साहवो
पुण्णेण सह = सपुण्णो लोयो
फलेण सह = सफलं
चेलेण सह = सचेलं ण्हाणं
पणि पुण्णं जस्स सो = पपुण्णो जणो
विगओ धवो जाए सा = विहवा
अवगतं रूवं जस्स सो = अवरूवो
जिओ कामोजेण सो = जिअकामो
भट्ठो आयरो जाओ सो = भट्ठायारो
आसा अंबरं जेसिं ते = आसंबरा
नीलो कंठो जस्स सो=नीलकंठो मोरो
धुओ सव्वो किलेसो जस्स सो= धुअसव्वकिलेसो जिणो
नत्थि नाहो जस्स सो = अणाहो
निग्गआ दया जस्स सो=निद्दयोजणो
विगओ रसो जत्तो तं=विरसं भोयणं
गज्जाणण इव आणणो जस्स सो = अजाणणो
सीसेण सह = ससीसो आयरिओ
कम्मणा सह = सकम्मो नरो
मूलेण सह = समूलं
कलत्तेण सह = सकलत्तो नरो
निग्गया लज्जा जस्स सो=निल्लज्जो
अइक्कंतो मग्गो जेण सो=अइमग्गो रहो
परिअअं जलं जाए सा = परिजला परिहा

१२४. दो या दो से अधिक संज्ञाएँ एक साथ रखी गई हों और इन्हें य शब्द के द्वारा जोड़ा गया हो तो वह द्वन्द्व समास कहलाता है। यथा—

पुण्णं य पावं य = पुण्णपावाइं
अजिओ य संतीअ = अजियसंतिणो
उसहो य वीरो य = उसहवीरा
देवा य दाणवा य गंधव्वा य = देव-दाणवगंधव्वा
वाणरो य मोरो य हंसो य = वानर मोरहंसा
देवा य देवीओ य = देवदेवीओ
सुहं य दुक्खं य = सुहदुक्खाइं
जिणे अ जिणो अ जिणो अ त्ति=जिणा
माआ य पिआ य = पिअरा
असणं य पाणं य एएसिं समाहारो = असणपाणं
तवो य संजमो य एएसि समाहारो = तवसंजमं
नाणं य दंसणं य चरित्तं य एएसिं समाहारो = नाणदंसणचरित्तं
नेत्तं अ नेत्तं य त्ति = नेत्ताइं
सासू य ससुरो अ त्ति = ससुरा

तद्धित (Nominal Affixes)

१२५ भाववाचक अव्ययसंज्ञा एवं सामान्यवृत्ति को अभिव्यक्त करने के लिए तद्धित का व्यवहार किया जाता है। यथा—

शिव का लड़का पढ़ता है = सेवो पढइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसुदेव का पुत्र पटना में रहता है = वासुदेवो पाडलिपुत्तम्मि णिवसइ।
नड का लड़का घर जाता है = नाडायणो घरं गच्छइ।
यह ग्रामीण चतुर है = गामिल्लो चउरो अत्थि।
यह वृक्ष के नीचे पैदा हुआ व्यक्ति है = एसो तरुल्लो जणो अत्थि।
जटाधारी व्यक्ति कहाँ जाता है = जडालो जणो कत्थ गच्छइ?
चाँदनी रात अच्छी लगती है = जोण्हाली रत्ती रुचइ।
घमंडी उन्नति नहीं कर सकता है = गव्विरो उण्णत्ति ण लहइ।
धनवान् की प्रतिष्ठा सर्वत्र होती है = धणमन्तस्स सव्वत्थ पइट्ठा होइ।
मुझे कड़ुआ तेल अच्छा लगता है = मज्झ कडुएल्लं रोयइ।
नया आदमी कैसा काम करता है = नवल्लो जणो केरिसं कज्जं करेइ?
वह अकेला क्या करेगा = सो एकल्लो किं करिस्सइ?
यह अपना आदमी है = अयं अप्पणयं अत्थि।
यह दूसरे की पुस्तक है = इदं परक्कं पोत्थयं अत्थि।
यह मेरी घड़ी है = इमा मईया घडिआ अत्थि।
वह सर्वथा ऐसा करता है = सो सव्वहा एरिसं करेइ।
जितना उसने दिया है = जेत्तिलं तेण दत्तो अत्थि।
इतना अधिक संचय ठीक नहीं है = एत्तिअं अहियं संचयं वरं णत्थि।
कितने रुपयों की आवश्यकता है = केत्तिअ रूवगाणं आवस्सकया अत्थि?
एक समय इस नगर में श्रेणिक रहता था = एक्कसिअं अस्सिं णयरे सेणियो णिवसीअ।
जितना तुम्हें चाहिए, उतना मिल जायगा = जित्तिअं तुए आवस्सया-तित्तियं मिलस्सइ।
मथुरा के समान पटना में भवन हैं = महुरव्व पाडलिपुत्ते पासाया सन्ति।
तुम्हारी स्थूलता बढ़ रही है = तुम्हाणं पीणिमा बड्ढइ।
सौवार मैंने उससे कहा है = सयहुत्तं मए तं भणियं।
ईर्ष्यालु व्यक्ति दुःख पाता है = ईसालू जणो कट्ठं अणुहवइ।
वह विचारवान् व्यक्ति है = सो वियारुल्लो जणो अत्थि।

केर

अम्ह + केर = अम्हकेरं—हमारा।
तुम्ह + केर = तुम्हकेरं, तुम्हकेरो—तुम्हारा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर + केर = परकेरं—दूसरे का ।

राय + केर = रायकेरं—राजा का ।

एच्चय

तुम्ह + एच्चय = तुम्हेच्चय—तुम्हारा ।

अम्ह + एच्चय = अम्हेच्चय—हमारा ।

अ—अपत्यार्थक

सिव + अ = सेवो—शिवका लड़का ।

दसरह + अ = दासरही—दशरथ का पुत्र ।

वसुदेव + अ = वासुदेवो—वसुदेव का पुत्र ।

आयण—अपत्यार्थक

नड + आयण = नाडायणो = नडका पुत्र ।

नर + आयण = नारायण = नर का पुत्र

इल्ल और उल्ल—भावार्थक—

गाम + इल्ल = गामिल्लं—ग्राम में उत्पन्न हुआ, ग्रामीण ।

पुर + इल्ल = पुरिल्लं = नगर में उत्पन्न हुआ—नागरिक ।

हेट्ठ + इल्ल = हेट्ठिल्लं—नीचे उत्पन्न हुआ ।

उवरि + इल्ल = उवरिल्लं—ऊपर में उत्पन्न हुआ ।

अप्प + उल्ल = अप्पुल्लं—आत्मा में उत्पन्न हुआ ।

तरु + उल्ल = तरुल्लं—वृक्ष के नीचे उत्पन्न हुआ ।

नयर + उल्ल = नयरुल्लं—नगर में उत्पन्न हुआ ।

इमा—भाववाचक

पीण + इमा = पीणिमा—स्थूलता ।

पुप्फ + इमा = पुप्फिमा—पुष्प का भाव ।

त्तण—भाववाचक

मणुअ + त्तण = मणुअत्तणं—मनुष्यता ।

पीण + त्तण = पीणत्तणं—स्थूलता ।

हुत्तं—बार अर्थ सूचक

एय + हुत्तं = एयहुत्तं—एक बार ।

दु + हुत्तं = दुहुत्तं—दो बार ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ति + हुत्तं = तिहुत्तं—तीन बार।
सय + हुत्तं = सयहुत्तं—सौ बार।
सहस्स + हुत्तं = सहस्सहुत्तं—हजार बार।

आल—वाला अर्थसूचक

रस + आल = रसालो—रसवाला।
जडा + आल = जडालो—जटावाला।
जोण्हा + आल = जोण्हालो—चाँदनी वाला।
सद्द + आल = सद्दालो—शब्दवाला।

आलु—वाला अर्थसूचक

ईसा + आलु = ईसालू—ईर्ष्यावाला।
दया + आलु = दयालू—दया करने वाला।
नेह + आलु = नेहालू—स्नेह करनेवाला।
लज्जा + आलु = लज्जालू—लज्जावाला।

वाला अर्थसूचक इल्ल और उल्ल प्रत्यय

सोह + इल्ल = सोहिल्लो—शोभावाला।
छाया + इल्ल = छाइल्लो—छायावाला।
घाम + इल्ल = घामिल्लो—घामवाला।
वियार + उल्ल = वियारुल्लो—विचारवाला।
मंस + उल्ल = मंसुल्लो—दाढ़ीवाला।
दप्प + उल्ल = दप्पुल्लो—दर्पवाला।

वाला अर्थसूचक मण, मंत और वंत प्रत्यय

धण + मण = धणमाणो—धनवाला।
सोहा + मण = सोहामणो—शोभावाला।
बीहा + मण = बीहामणो—भयवाला।
हनु + मंत = हणुमंतो—हनुवाला।
सिरि + मंत = सिरीमंतो—श्रीवाला—धनवाला।
पुण्ण + मंत = पुण्णमंतो—पुण्यवाला।
धण + वंत = धणवंतो—धनवाला।
भत्ति + वंत = भत्तिवंतो—भक्तिवाला।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचमी के अर्थबोधक त्तो और दो प्रत्यय

सव्व + त्तो = सवत्तो, सव्वदो, सव्वओ—सब ओर से।
एक + त्तो = एकत्तो, एकदो, एकओ = एक ओर से।
अन्न + त्तो = अन्नत्तो, अन्नदो, अन्नओ—अन्य ओर से।
कु + त्तो = कुत्तो, कुदो, कुओ—कहाँ से, किस ओर से।
ज + त्तो = जत्तो, जदो, जओ—जहाँ से, जिस ओर से।
त + त्तो = तत्तो, तदो, तओ—वहाँ से, उस ओर से।
इ + त्तो = इत्तो, इदो, इओ—यहाँ से, इस ओर।

सप्तमी के अर्थबोधक हि, ह और त्थ प्रत्यय

ज + हि = जहि, जह, जत्थ—जहाँ पर।
त + हि = तहि, तह, तत्थ—वहाँ पर।
क + हि = कहि, कह, कत्थ—कहाँ पर।
अन्न + हि = अन्नहि, अन्नह, अन्नत्थ—अन्य स्थान पर।

परिमाणार्थक इत्तिअ प्रत्यय

ज + इत्तिअ = जित्तिअं—जितना; जेत्तिअं।
त + इत्तिअ = तित्तिअं—तितना; तेत्तिअं।
एतद् + इ = इत्तिअ = इत्तिअ—इतना; एत्तिअं।
के + इत्तिअं = कित्तिअ—कितना; केत्तिअं

कालबोधक सि, सिअं और इआ प्रत्यय

एक्क + सि = एक्कसि—एक समय में।
एक्क + सिअं = एक्कसिअं— ,, ,,
एक्क + इआ = एक्कइआ— ,, ,,

स्वार्थिक ल, ल्लो, अ, इल्ल, उल्ल प्रत्यय

विज्जु + ल = विज्जुला।
पत्त + ल = पत्तलं।
पीअ + ल = पीअलं।
अन्ध + ल = अंधलो।
नव + ल्लो = नवल्लो।
एक + ल्लो = एकल्लो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्द + अ = चंदओ।
वहुअ + अ = बहुअअं।
पिअ + उल्ल = पिउल्लो।
पल्लव + इल्ल = पल्लविल्लो
पुरा + इल्ल = पुरिल्लो।

शब्दकोष (अव्यय)

अतिशय = अइ
अतीव = अईव
आगे = अग्गओ
आपस में = अण्णमण्णं
पश्चात् = अणंतरं
भीतर = अंतो
अन्यथा = अण्णहा
दूसरे दिन = अपरज्जु
जिस प्रकार = अहा
इस समय सम्प्रति = संपइ
किल = दूर
अन्यथा = इहरा
थोड़ा = ईसिं
ऊपर = उवरिं
एक प्रकार = एगज्झं
यहाँ = एत्थ
कहाँ से = कओ
कल = कल्लं
कहाँ = कहिं, कहि
निरन्तर = अभिक्खं
अवश्य = अवस्सं
अनेक वार = असइं
अथवा = अहवा, अहव
नीचे = अहे
बलात्कार = आहच्च
इस समय = इयाणिं, दाणिं, दाणि
यहीं = इह
ऊँचे = उच्चअ
ऊपर = उप्पिं, उवरि
इतना = एयावया
इस तरह = एवमेव
कैसे = कहं, कह
समय से = कालओ
कब = काहे
जो = जइ
जहाँ = जत्थ
जिस प्रकार से = जहेव
जब तक = जाव
जैसे तैसे = जहतहा, जह-जहा
परन्तु, केवल = णवर
तब = तए
वहाँ = तत्थ
इस तरह = तहा, तह
वहाँ = तहिं
थोडा = दर
निश्चय = धुवं
उलटा = पच्चुअ
पीछे = पच्छा
और भी = चिअ, चेअ
क्योंकि = जओ
जो = जं
झटिति, जल्दी = झत्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदाहरण, जैसे = तं जहा
इसको आदिकर = तप्पभिइं
रात दिन = दिवारत्तं
दो प्रकार = दुहओ
समान = पडिरूवं
विमुख = परंमुहं
प्रायः = पायो, पाओ
आगे, सम्मुख = पुरत्था
अलग = पुहं, पिहं
पीछे = मग्गतो
झूठ = मुसा
बीता हुआ कल = ह्हो
एक बार = सइ
शीघ्र = सज्जो
सदा = सया
कथञ्चित् = सिय
परसों = परसवे
परलोक में = पेच्च
थोड़ा = मणयं
बार-बार = मुहु
व्यर्थ = मोदुउल्ला
व्याघ्र = वीसुं
नहीं तो = णो चेअ
अपूर्व = ओसिअं
छोटा = खुड्डओ
खेल = खेड्डं
गायिका = गत्तडी
लतागृह = कुडङ्गो
गोष्ठी = गोट्ठी, घडिओ
गायन = घाअणो
चौक = चउक्कं
चोर = छेणो

दीप = जोइक्खो
परिधान = णिअद्धणं
शय्या = तल्लं, तलं
कलहकारिणी = डुम्मइणी
खिड़की = पासावा
दूती = पेसणआली, मदोली
बैल = वइल्लो
मनस्वी = माणंसी
विवाह = वारिज्जो
कुटुम्बी = वावडी
स्तन = सिह्णिं
इस समय, अब = अहुणा
बाहर = बहिं, बाहिर
न पुनः = नउणा
निमित्त = कए, कएण
तथापि = तहवि
कोई-केनचित् = केणइ
यथाशक्ति = जहासत्ति
महावर = वल्लविअं
बरामदा = वरण्डो
वनराजि = वणइ
विलासी = वेल्लहल्लो
केश = वेल्लरीओ
गली = वीली, संकरो
लज्जा = हीरणा
उसके बाद = तओ
अन्यत्र = अन्नहि
प्रायः = पाओ, पाएणं, पायसो
धीरे-धीरे = सणियं
पूर्ण, पर्याप्त = अलं
शीघ्र = खिप्पं
उसके समान = तारिस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Translate into Prakrit पाइयभासाए अणुवायं कुणन्तु

एक किसान के तीन लड़के थे। वे रोज आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। बेचारा किसान तरह-तरह से उन्हें समझा बुझाकर हार गया; किन्तु उन्होंने नहीं समझा। तब उस किसान ने एक लकड़ी का गट्ठर मँगवाया और लड़कों के सामने ला रखा। उसने प्रत्येक लड़के से कहा, इस गट्ठर को तोड़ डालो। बारी-बारी से तीनों लड़कों ने कोशिश की, पर व्यर्थ हुई। तब बूढ़े किसान ने कहा—'अच्छा, अब एक-एक लकड़ी को अलग-अलग कर तोड़ डालो'। यह सुनते ही लड़कों ने लकड़ियों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। किसान ने कहा, देखो! यदि तुम लोग मिलजुल कर रहोगे तो गट्ठर की भाँति सबल बने रहोगे, पर यदि आपस में बँटे रहोगे, तो कष्ट होते देर न लगेगी।

ईश्वरचन्द्र बड़े ही दयालु प्रकृति के थे। कोई भी भिक्षुक उनके द्वार से निराश होकर नहीं लौटता था। एक दिन उन्होंने देखा, एक फटे-पुराने कपड़े पहने हुई बुढ़िया सड़क के किनारे बैठी है। भूख-प्यास के मारे उसका कंठ सूख गया है और उसमें बोलने की शक्ति भी नहीं रह गयी है। यह देखकर विद्यासागर का हृदय दया से पिघल गया और उन्होंने मिठाई खरीदकर बुढ़िया को भरपेट खिला दी। एक बार विद्यासागर रेल में सफ़र कर रहे थे। एक स्टेशन पर उन्होंने देखा कि एक वृद्ध गाड़ी पर चढ़ना चाहता है, किन्तु बार-बार प्रयत्न करने पर भी उससे अपना सामान गाड़ी पर नहीं चढ़ाया जाता। इतने में घंटी बज गयी।

श्री ... वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान ...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Translate into Prakrit

Exercise 1

पटना नगर में एक राजा रहता था। उसकी पत्नी का नाम मायादेवी था। उनकी तीन सन्तानें थी। सबसे बड़ा लड़का कॉलेज में पढ़ता था। दूसरा लड़का नवीं श्रेणी का छात्र था। कन्या कुसुमलता मोहनी देवी स्कूल में पढ़ती थी। जब परीक्षा हुई तो सभी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

Or

There lived a king in Patna City. The name of his wife was Mayadevi. He had three children. The elder son was reading in the college. The second son was the student of class IX. The daughter Kusumlata read in Mohinidevi School. When the examination was held they all passed in first division.

Exercise 2

आरा छोटा-सा नगर है। यहाँ चार कॉलेज और नौ हाई स्कूल हैं। शिक्षा के क्षेत्र में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्नातकोत्तर अध्ययन के लिए यहाँ के छात्र गया जाते हैं। गया भी हिन्दुओं के लिए प्रमुख तीर्थस्थान है। पितृपक्ष में यहाँ मेला लगता है। दूर-दूर के यात्री यहाँ पिण्डदान के लिए आते हैं। फल्गू नदी का तट प्रातः-काल में सुन्दर मालूम पड़ता है।

Or

Arrah is a small town. There are four colleges and nine high schools. In the field of education it has got an important place. Students of this place go to Gaya for Post-Graduate studies. Gaya is also an ancient place of pilgrimage. Here a fair is held in *Pitripaksha*. Pilgrims from the different places come for *Pind-dan* (पिण्डदान). The bank of Falgu river looks very nice in dawn.

Exercise 3

राजगिर एक ऐतिहासिक नगर है। यहाँ प्राचीन समय में बिम्बिसार राज्य करता था। इस राजा का दूसरा नाम श्रेणिक भी है। श्रेणिक बहुत ही प्रतापी और प्रभावशाली राजा था। इसके पुत्र का नाम अजातशत्रु था। अजातशत्रु अपने पिता से नाराज हो गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यही कारण था कि उसने अपने पिता को कारागार में बन्द कर दिया था। राजगिर में गर्म पानी के झरने भी हैं।

Or

Rajgir is a historical town. In ancient time Bimbisar ruled here. His another name is Shrenika also. Shrenika was a mighty and impressive king. The name of his son was Ajatashatru. Ajatashatru became displeased with his father. This was the reason why he had imprisoned his father. There are also so many geysers in Rajgir.

Exercise 4

नालन्दा के विश्वविद्यालय को हम सभी जानते हैं। यहाँ दस हजार विद्यार्थी पढ़ते थे। परीक्षा में उत्तीर्ण हुए बिना कोई भी विद्यार्थी प्रवेश नहीं पाता था। प्रधान आचार्य को पीठाध्यक्ष भी कहा जाता था। आज भी नालन्दा में पालिशोध-संस्थान है। इस संस्थान के निर्देशक भी बहुत बड़े विद्वान् हैं। विदेश के विद्यार्थी भी यहाँ आकर पालि-त्रिपिटक का अध्ययन करते हैं।

Or

The University of Nalanda is well-known to us. About ten thousand students read here. No student was admitted without passing the examination. The Principal was called Vice-Chancellor. Even at present, there is a Pali-Research Institute. The director of this Institute is also a great scholar. The students of foreign-countries also come here to study the Pali-Tripitakas.

Exercise 5

वैशाली गणतन्त्र का सर्वप्रथम नगर है। लिच्छबि राजाओं ने यहाँ पर प्रजातन्त्र की नींव डाली थी। यहीं पर भगवान् महावीर का जन्म हुआ था। आज भी चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन मेला लगता है। इस मेले के अवसर पर लगभग एक लाख मनुष्य एकत्र होते हैं। हाल ही में बिहार सरकार ने यहाँ प्राकृत-शोध-प्रतिष्ठान की स्थापना की है।

Or

Vaishali is the first and foremost town of the republic

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Lichhivi Kings had established here the democratic Government. Lord Mahabir was born here, Now-a-days a fair is also held in Chaitra Sukla Trayodasi. On the occasion of this fair about one lac people gather here. Recently the Bihar Government has established here a Prakrit Research Institute.

Exercise 6

अभी हाल में गया में मगध विश्वविद्यालय की स्थापना हुई है। इसके उपकुलपति डा० कालिकिंकर दत्त हैं। ये इतिहास के बहुत बड़े विद्वान् हैं। इनके निर्देशन में विश्वविद्यालय में संस्कृत के अध्ययन की पूर्ण व्यवस्था है। वस्तुतः वर्तमान उपकुलपति प्राचीन पीठाध्यक्ष मालूम पड़ते हैं।

Or

Recently the University of Magadh has been founded at Gaya. The Vice-Chancellor of Magadh University is Dr. Kali Kinkar Dutta. He is a great historian. In his direction the teaching of Sanskrit literature is fully organised in this University. Of course, the present Vice-Chancellor seems to be an ancient Pithadhyaksha.

Exercise 7

एक मधुमक्खी पानी में गिर पड़ी। एक बत्तख पेड़ पर बैठा था और उसने मधुमक्खी को देखा। उसने एक पत्ता गिरा दिया। मधुमक्खी तैर कर उस पर आई और उसने अपने को बचाया। अन्य किसी समय पुनः बत्तख पेड़ पर बैठा था। एक खिलाड़ी ने बत्तख को देखा और उसे बाण का लक्ष्य बनाना चाहा। लेकिन छोटी मधुमक्खी ने उसे काट लिया और बत्तख के जीवन को बचाया।

Or

A bee had fallen into the water. A dove was sitting on a tree and saw the little bee. It threw down a leaf. The bee swam on it and saved itself. Another time the dove was again sitting on the tree. A sportsman saw the dove and aimed his arrow at him. But the little bee stung the sportsman and saved the dove's life.

Exercise 8

एक बढ़ई किसी नदी के किनारे खड़ा होकर रो रहा था; क्योंकि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसकी कुल्लाड़ी अचानक पानी में गिर गई थी। जलदेवी ने उस पर दया दिखाई और जल से एक सोने की कुल्हाड़ी लाकर उससे पूछा— 'क्या यही तुम्हारी कुल्हाड़ी है ?' उसने सत्य बोलते हुए कहा—'नहीं यह हमारी नहीं है। तदुपरान्त देवी ने एक चाँदी की कुल्हाड़ी दिखाई, लेकिन उसने उसे भी अस्वीकार कर दिया। अन्त में देवी ने उसे अन्य कुल्हाड़ियों के साथ उसकी अपनी कुल्हाड़ी भी दी। उसे लेकर वह मनुष्य प्रसन्नतापूर्वक चला गया।

Or

A woodcutter stood weaping on the bank of a river, because his axe had fallen into the water by chance. The goddess of the river took pity on him and bringing out of the water a golden axe, asked him it was his. He spoke the truth that it was not his. The goddess then showed a silver axe and again the man would not accept it. At last she gave him his own axe and also the other two. The man received them and departed happily.

Exercsie 9

रानी ने सुग्गे से पूछा—यह सर्पों को विषरहित, देवताओं को शक्तिहीन तथा सिंहों को गतिहीन बनाता है और तो भी बच्चे इसे अपने हाथों में रखते हैं। यह क्या है ? सुग्गे ने तुरत उत्तर दिया— 'एक चित्रकार की तूलिका।' इस प्रकार रानी ने समझ लिया कि यह चालाक सुग्गा मेरे पति विक्रम को छोड़कर कोई दूसरा नहीं है। एक दिन विक्रम की आत्मा सुग्गे के शरीर को छोड़कर छिपकली के शरीर में प्रवेश कर गई। रानी जब सुग्गे के मृतक शरीर को देखती है तब वह विलाप करती हुई उसी के साथ जल जाना चाहती है। रानी को बचाने के लिए वह राजा पुनः सुग्गे के शरीर में प्रवेश कर जाता है। उसी समय विक्रम की आत्मा अपने शरीर में प्रवेश करती है और रानी के सम्मुख विक्रम प्रकट हो जाता है।

Or

The queen asks the parrot, "It makes snakes poisonless, the Gods powerless, lions motionless and yet children hold it in their hands. What is it ?" The parrot answers at once, "A painter's brush." In this way the queen comes to know that the wise parrot is none other than real king Vikrama, her

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

husband. One day Vikrama's soul leaves the body of the parrot and enters into the body of a lizard. When the queen sees the dead body of the bird, she begins to lament and wishes to burn herself with it. In order to save the queen the false king enters into the body of the parrot. That very moment the soul of Vikrama enters his own body and appears before the queen.

Exercise 10

प्राचीन समय में भारत के उत्तरी भाग में महाराज शुद्धोदन अपनी पत्नी माया देवी के साथ रहते थे। उन्हें एक सुन्दर बालक हुआ जिसका नाम उन्होंने सिद्धार्थ रखा। पिता ने उसे अत्यन्त सावधानी से पाला। उन्होंने राज्य में एक ही साथ सभी बुद्धिमानों को एक युवक राजकुमार के योग्य शिक्षा देने के लिए बुलाया। राजकुमार शीघ्र ही अच्छे विद्वान् हो गये—इसलिए उनके शिक्षक उन्हें अधिक नहीं पढ़ा सके। यद्यपि वे पुस्तकी विद्या तथा बहुत प्रकार के शस्त्रों के चलाने में दक्ष थे, फिर भी उन्होंने घमंड कभी नहीं किया। अपितु अपने शिक्षकों के साथ आदर का व्यवहार किया और अपने साथियों के साथ नम्रता तथा प्रेम का वर्ताव किया।

Or

Long long ago, in the north of India, there lived a king named Shuddhodana and his queen was Maya. A beautiful son was born to them; they named him Sidhartha. He was very carefully brought up by his father, who called together all the wisest men in the kingdom to teach him all that a young prince should know. Prince Sidhartha soon grew very learned, so that his teachers could teach him no more. Though he was learned in books and skilled in the use of all kinds of weapons, he never grew vain or proud, but always treated his teachers with reverence and his companions with gentleness and affection.

Exercise 11

एक कुत्ता अपने मुँह में एक मांस का टुकड़ा लिए एक झरने से होकर गुजरा। वहाँ उसने स्वच्छ जल में अपने प्रतिबिंब को देखा। उसने दूसरा कुत्ता समझकर मांस के टुकड़े को छीनना चाहा। ज्योंही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वह उसपर झपटा उसका अपना टुकड़ा भी मुँह से गिर पड़ा और जल में डूब गया। इस प्रकार कुत्ते ने अपना सब कुछ खो दिया।

Or

A dog was carrying a piece of meat in his mouth and crossed with it through a stream. There he saw his image in the clear water. He thought this was another dog and wished to snatch the piece of meat from him. As he snatched at it, his own fell out of his own mouth and sank into the water. Thus the dog lost everything.

Exercise 12

एक समय एक बहुत बड़ा विद्वान् किन्तु गरीब आदमी एक राजा के घर उसके साथ खाने के लिए गया। फटे वस्त्रों से सज्जित होने के कारण राजा ने एक भी स्वागत का शब्द नहीं कहा। पंडित ने शीघ्र ही इसे समझ लिया कि इस तरह के व्यवहार का कारण मेरे ये वस्त्र ही हैं और दूसरे दिन वह अच्छे वस्त्रों से भूषित होकर उसी सज्जन के घर गया। राजा ने उसका स्वागत किया तथा आदर किया। वह उन्हें भोजन-गृह में ले गया। भोजन करने के पहले ही, अतिथि ने अपने ऊपर के वस्त्रों को पृथ्वी पर फैला दिया और तीन मुट्ठी भात उन उन पर फेंक दिया। जब ब्राह्मण से पूछा गया कि आपने ऐसा क्यों किया तब उसने उत्तर दिया—कल मैं आपके पास गन्दे वस्त्रों में आया था। आपने मुझे कुछ शब्दों के योग्य भी न समझा। लेकिन आज इन वस्त्रों के कारण ही आपने मुझे आदर दिया है।

Or

Once a very learned but very poor man went to the house of a lord to dine with him. As he was clad in rugged garments, the rich man did not even offer him a word of welcome. The Pandit easily guessed that his clothes were the cause of such treatment and the next day he went to the house of the same gentleman well-dressed. The lord welcomed and duly honoured him. He took him to the dining hall. Before beginning to eat, however, the guest spread out his upper cloth on the ground and threw two or three handfuls or rice on the cloth. When the Brahmin was asked why he did so, he replied yesterday I came to you, clothed in dirty garments. You did

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

not consider me worthy of even a few words. But today it is only by virtue of this cloth, that you have treated me well.

Exercise 13

एक वृद्ध मनुष्य अपने उद्यान में आम्रवृक्षों के रोपने में अत्यन्त परिश्रम कर रहा था। एक युवक मनुष्य ने उन्हें देखकर हँसी उड़ायी और कहा—"आपके ये प्रयत्न अत्यन्त निरर्थक हैं। आप अत्यन्त वृद्ध हैं और वस्तुतः इन वृक्षों के फलों का स्वाद लेने के लिए आप जीवित नहीं रहेंगे।" वृद्ध मनुष्य ने शान्तिपूर्वक अपनी आँखें उठायीं और युवक पुरुष की ओर देखते हुए कहा—'प्यारे बच्चे! तुमने यथोचित प्रश्न किया है। मेरे जन्म लेने के पूर्व ही किसी ने इन विशाल वृक्षों को उद्यान में रोपा था और मैं उनके मधुर फलों को खा रहा हूँ। अब मैं इन वृक्षों को रोपता हूँ ताकि तुम्हारे जैसे नवयुवक लोग मेरी मृत्यु के बाद खा सकें।' इसे सुनकर वह लड़का लज्जित हुआ और उसने वृद्ध मनुष्य के अच्छे विचारों की प्रशंसा की।

Or

An old man was taking great efforts in planting mango trees in his garden. A young man who saw him rediculed and said. "How vain are these efforts of yours? You are very old and certainly will not live to taste the fruits of these trees." The old man calmly raised his eyes and looking up at the young man said, "Dear lad, you have put a proper question. Some one, before I was born had planted these fruit trees in the garden and I am eating their sweet fruits. I now plant these trees so that young men like you may eat my fruit, when I am dead." On hearing this the boy was ashamed of rudness and praised the good sense of the old man.

Exercise 14

एक बार एक राजा अपना कारावास देखने गया। उसने वहाँ के सभी कैदियों को देखना चाहा। कारावास का अधिकारी सभी कैदियों को एक-एक करके राजा के सामने लाया। राजा ने सबों से अपने दोष को कहने के लिए कहा, जिसके कारण उन्हें कारावास का दण्ड मिला था। सबों ने कहा कि हम निर्दोष थे। राजा ने पुनः उन लोगों को कारावास में भेज दिया। अन्त में एक योग्य मनुष्य आया और राजा के सामने खड़ा हो गया। राजा ने वही प्रश्न उससे भी किया। उसने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर दिया—मैंने अपने गाँव में एक धनी मनुष्य की कीमती अँगूठी चुरा ली है। इसलिए मैं इस दण्ड के योग्य हूँ। राजा उसकी दोष स्वीकृति पर प्रसन्न हो गया और मुक्ति के लिए आज्ञा देते हुए कहा—इसने चोरी की, इसलिये यह दण्डित हुआ। अब यह सत्य बोलता है, अतएव यह पुरस्कार के योग्य है।

Or

Once a king went to inspect his prison-house. He wished to see all the prisoners there. The guardian of the prison brought the prisoners one by one before the king. He asked each one of them to narrate the crime for which he was punished with imprisonment. Everyone of them said that he was innocent. The king put them back in prison. At last a young man came and stood before the king. The king put the same question to him. He replied, "I stole the valuable ring of a richman in my village. I, therefore, deserve this punishment." The king was pleased with his confession of his crime. He ordered his release saying. "He committed a theft, so he was punished. Now he speaks the truth and so deserves a reward.

Exercise 15

राजा पिंगल अत्यन्त दुष्ट था। जब उसकी मृत्यु हुई तो सम्पूर्ण शहर आनन्दित हुआ। उसके द्वारपाल को छोड़कर कोई नहीं रोया। बोधिसत्व ने उससे पूछा—'तुम क्यों रोते हो?' उसने कहा--'मैं महापिंगल के मर जाने से नहीं रोता हूँ। प्रत्येक समय वह महल से आया और गया उसने मेरे माथे पर आठ बार गदा से प्रहार किया। अभी भी मैं डरता हूँ जबकि वह इस समय दूसरे संसार में है कि वह यमराज के साथ भी वैसा ही व्यवहार करेगा तो वह पुनः उसे पृथ्वी पर भेज देगा। तब पुनः मैं आठ बार मार खाऊँगा। इसीलिए मैं रो रहा हूँ।'

Or

King Mahapingal was very wicked. When he died, the whole city rejoiced. Only his doorkeeper wept. The Bodhisattva asked him, "Why do you weep?' He replied, 'I am not weeping because Mahapingal is dead. Every time he came from the palace and went in, he gave me eight blows on

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

the head with club. Now I fear when he is in the other world, he will do the same to Yama and Yama will send him back to earth. Then I will get my eight blows again. Therefore I am weeping.'

Exercise 16

भद्दा एक राजकीय कोषाध्यक्ष की लड़की थी। एक दिन उसने मृत्यु के लिए ले जाये जाते हुए चोर को देखा और वह उसके प्रेम में फँस गयी। घूस के सहारे उसके पिता ने उस चोर को छुड़ा लिया और उसके साथ इसकी शादी कर दी। लेकिन वह चोर केवल उस लड़की के आभूषणों की चाह में रहता था। एक दिन वह उसके आभूषणों को चुराने के लिए उसे एकान्त स्थान में ले गया। किसी प्रकार वह उसके विचारों को जान गयी और आलिंगन के बहाने उसने उसे चोटी पर से ढकेल दिया। इस दुस्साहस के बाद वह पिता के घर नहीं लौटना चाही और भिक्षुणी बन गयी।

Or

Bhadda was the daughter of a royal Treasurer. One day she saw a robber who was being led to his death and she fell in love with him. By means of bribery, the father released the robber and married him to his daughter. But the robber cared only for the girl's jewels. He took her to a lonely spot in order to rob her. However, she perceived his intention, and pretending to embrace him, she pushed him over a cliff. After this adventure, she did not want to return to her father's house but became a nun.

Exercise 17

एक बालिका ने भगवान् बुद्ध के चरणों को चन्दनतैल से अभिषिक्त किया। इसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण शहर चन्दन की गंध से भर गया। इस रहस्य से वह बालिका अत्यन्त खुश हुई और भगवान् बुद्ध के चरणों में गिरकर आगत जन्म में, 'प्रत्येकबुद्ध' होने के लिये प्रार्थना करने लगी। बुद्ध हँसे और उन्होंने भविष्यवाणी की—'तुम गन्धमादन नामक प्रत्येकबुद्ध होओगी।'

Or

A poor girl anointed the feet of Buddha with sandalwood oil. In consequence of this, the whole town was filled with

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

the perfume of sandalwood. The girl delighted with the miracle, fell at the feet of Buddha and prayed that she might become a Pratyeka-Buddha in a future birth. Buddha smiled and prophesied that she will one day be a Pratyeka-Buddha named Gandhamadana.

Exercise 18

एक सौदागर को चार पुत्रवधुएँ थीं। उन सबों को जाँचने के लिये उसने प्रत्येक को चावल के पाँच दाने दिए और सुरक्षित रखने को कहा। पहली पुत्रवधू दानों को फेंककर सोचने लगी--धान्यागार में तो बहुत से अन्न हैं ही--इसके बदले मैं उन्हें दूसरा अन्न दे दूँगी। दूसरी ने भी ऐसा ही किया। तीसरी ने उन्हें आभूषणों की छोटी पेटी में सुरक्षित रख दिया। लेकिन चौथी ने उन दानों को रोप दिया और अन्न उपजाया। पाँच वर्ष के बाद उसने चावलों का विशाल भण्डार इकट्ठा कर लिया। सौदागर जब लौटा तो उसने चौथी पुत्रवधू को गृह की स्वामिनी बना दिया।

Or

A merchant had four daughters-in-law. In order to test them, he gives each of them five grains of rice and orders them to preserve them. The first daughter-in-law throws the grains away and thinks—"There are plenty of grains in the granary. I shal give him other instead." The second thinks in the same way. The third preserves them carefully in her jewel-casket. But the fourth one plants the grains and reaps. At the end of five years she accumulates a large store of rice. The merchant returns and makes the fourth daughter-in-law the head of the household.

Exercise 19

दो गरीब भाई एक स्वर्ण-पिण्ड लेकर यात्रा से लौटे। रास्ते में दोनों ने एक दूसरे को मारकर अपने लिये सोने को रख लेने का विचार किया। वे दोनों किसी प्रकार अपने बुरे विचारों के लिए लज्जित हुए और दोनों ने अपनी गलती स्वीकार की। तब उन लोगों ने उस स्वर्ण-पिण्ड को एक नदी में फेंक दिया। उसको एक मछली निगल गयी। वह मछली दो भाइयों की बहिन के द्वारा लायी गयी और दासी ने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसके पेट में स्वर्ण पिण्ड को देखा। दासी और उस स्त्री के बीच कलह प्रारम्भ हो गया और इसी सिलसिले में उस स्त्री की मृत्यु हो गयी।

Or

Two poor brothers returned from a journey with a lump of gold. On the way each of them thought of killing the other and keep the gold for himself. They however, become ashamed of their intentions and confess to each other. Then they throw the lump of gold in the river. It is swallowed by a fish. The fish is bought by the sister of the two brothers, and the maidservant finds the lump in its stomach. A quarrel arises between the maidservant and the woman, in coures of which the woman loses her life.

Exercise 20

एक राजा ने एकबार स्वप्न में देखा कि मेरे सभी दाँत गिर गये हैं। इसे अपशकुन जानकर उसने एक ज्योतिषी को बुलाया और स्वप्न की व्याख्या पूछी। उसने कहा, 'इसका अर्थ बड़ा बुरा है। आपके सभी होनहार लड़के आपकी मृत्यु के पहले ही मर जायेंगे।' यह सुनकर राजा क्रुद्ध हो गया और ज्योतिषी को कैद में बन्द कर देने को कहा। उसने पुनः दूसरे ज्योतिषी को बुलाया और स्वप्न का अर्थ पूछा। वह बड़ा होशियार था। उसने बड़े आनन्द से उसका उत्तर दिया। 'महानुभाव! स्वप्न बड़ा अच्छा है! इसका अर्थ है कि आप अपने सभी सम्बन्धियों की मृत्यु के अन्तर भी जीवित रहेंगे। राजा उसके उत्तर से बहुत प्रसन्न हुआ और उसने ज्योतिषी को बहुमूल्य उपहार दिये।

Or

A king saw in a dream that all his teeth had fallen out. Thinking it to be an ill omen he called an astrologer and asked him the interpretation of his dream. He said, "The meaning is inauspicious. All your majesty's children would die before you." The king was enraged and ordered the astrologer to be thrown in a cellar. He then sent for another and asked him the meaning of his dream. He was clever and answered with a countenance full of joy, "My Lord, the dream is very auspicious. It means that your majesty would

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

survive all your relatives." The king was greatly pleased with this answer and gave the astrologer many rich presents.

Exercise 21

सभी गुणों से विभूषित सर्वशक्तिमान् राजा विक्रम ने किसी साधु से एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करने की ऐन्द्रजालिक कला सीखी। उसी समय एक ब्राह्मण ने भी उसके साथ वह कला सीखी। विक्रम ने अपने शरीर को छोड़कर एक हाथी के शरीर में प्रवेश किया। इसी समय उस ब्राह्मण ने भी महाराज विक्रम के मृत शरीर में प्रवेश किया। जब राजा की आत्मा ने इसे जान लिया तब वह हाथी के शरीर को छोड़कर सुग्गे के शरीर में प्रवेश कर गयी। तत्पश्चात् वह सुग्गा एक शिकारी के द्वारा पकड़ा गया और एक रानी के हाथ बेच दिया गया। वह सुग्गा रानी का परम प्रिय बन गया और रानी से बातें भी करने लगा।

Or

The mighty King Vikrama, who is endowed with all the virtues, learns from a sage the magic art of penetrating into another body. At the same time with him a Brahmin learns the same art. Vikrama abandons his own body and enters the body of an elephant. At that very moment the Brahmin enters the body of King Vikrama. When the soul of the King Vikrama knows this he abandons the body of the elephant and enters the body of a dead parrot. He is caught by a hunter and is sold to a queen. The parrot becomes the queen's favourite and converses with her.

Exercise 22

एक वृद्ध आदमी को छः पुत्र थे। वे हमेशा एक दूसरे से लड़ते थे। बूढ़ें आदमी ने हर प्रकार उनके बीच पारस्परिक स्नेह उत्पन्न करने का प्रयत्न किया, लेकिन उसके सारे प्रयास व्यर्थ हुए। अन्ततः एक दिन उसने सबों को अपने समक्ष बुलवाया। उसने उन्हें छड़ियों का एक बंडल दिया और बारी-बारी से उसे तोड़ने का आदेश दिया। क्रमानुसार प्रत्येक ने पूरे बल के साथ प्रयत्न किया लेकिन कार्य सिद्ध न हुआ। तदन्तर पिता ने बंडल को खोल देने की आज्ञा दी। उसमें से प्रत्येक को एक छड़ी देकर उसने अपने पुत्रों को उसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दो भागों में तोड़ने का आदेश दिया। बिना किसी प्रयास के प्रत्येक ने छड़ी तोड़ दी। तब पिता ने लड़कों को संबोधित किया—ओ, मेरे पुत्रो ! एकता की शक्ति का अवलोकन करो। यदि तुम लोग मित्रता के बन्धन में एक रहोगे, तो कोई भी तुम्हें हानि पहुँचाने में समर्थ न होगा, लेकिन अगर तुम एक दूसरे से घृणा करोगे और आपस में कलह करोगे तो तुम लोग आसानी से अपने शत्रुओं के शिकार हो जाओगे।

Or

An old man had six sons. They always quarreled with one another. The old man tried by all means to create mutual affection among them; but all his efforts were in vain. At last one day, he summoned them all before him. He gave them a bundle of sticks and ordered them, one by one, to break it. Each in turn tried with his full strength but to no purpose. Then the father ordered the bundle to be disunited. Giving a single stick to each of them, he ordered his sons to break it into two. Each son broke the stick without any effort. Then the father addressed the boys, 'Oh, my sons ! hold the power of unity. If you stand united by bonds of friendship, no one will be able to hurt you; but if you hate one another and are disunited you will easily become a victim to your enemies.

Exercise 23

एक कुत्ता जिसने अपने आश्रयदाता की अनेक वर्षों तक सेवा की, बूढ़ा और कृश हो गया। एक दिन कुछ चोर उस आदमी के घर में घुसे और उसकी सारी सम्पत्ति के साथ भाग निकले। कुत्ता अधिक वृद्धावस्था से तेज नहीं दौड़ सका, और चोरों को नहीं पकड़ सका। कृशकाय होने से वह न जोर से भूँक सका और न मालिक को जगा सका। वह आदमी प्रातः उठा और उसने अपनी सारी सम्पत्ति गायब पायी। क्रोध के आवेश में उसने कुत्ते से कहा—'दुष्ट जीव मैंने अपनी सारी सम्पत्ति खो दी, क्योंकि तुमने अपना कर्त्तव्य नहीं किया है। तुम्हें अबसे खिलाने-पिलाने का कोई लाभ नहीं है। मैं तत्क्षण तुम्हें इस छड़ी से पीटकर मार डालूँगा।" कुत्ते ने दयनीय होकर उत्तर दिया—"मालिक जब मैं युवक था मैंने भलीभाँति लम्बी अवधि तक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आपकी सेवा की। मैं वृद्ध हो गया हूँ। कैसे इसे दूर कर सकता हू। मेरी युवावस्था के दिनों की सेवा का स्मरण कर आपको मेरी वृद्धावस्था में मेरे प्रति दयालु होना चाहिए। क्या आप अपने पुत्रों से आशा नहीं रखते कि जब आप बूढ़े होंगे और कुछ भी नहीं कमा सकेंगे, तब वे आपको आश्रय देंगे ?" इन शब्दों को सुनकर वह आदमी अपनी ही अकृतज्ञता पर लज्जित हुआ और तबसे कुत्ते के प्रति दयार्द्र बना रहा।

Or

A dog which served its master faithfully for many years, bacame very old and feeble. One day some thieves entered the house of the man and ran away with all his property. The dog being too old, could not run quickly and catch the thief. Being too weak, it could not bark loudly, and wake up the master. The man woke up next morning and found all his wealth lost. In a fit of anger he said to the dog, "You mean creature, I have lost all my wealth because you have not done your duty. There is no use in feeding you any longer. I will presently kill you by striking you with this stick." The dog answered piteously, "Master, I served you well and long when I was young. Now I have gone old. How can I avoid it ? Recollecting the services of my younger days, you must be kind to me in my old age. Do you not expect your sons to protect you, when you grow old and can not earn anything ?" On hearing these words the man was ashamed of his own ingratitude and was ever after kind to the dog.

Exercise 24

एक समय हस्तिनापुर में विलास नाम का धोबी रहता था। उसका गधा बड़ा कमजोर हो गया। इसे पुनः मजबूत बनाने के लिए धोबी ने गधे को बाघ की खाल से ढँककर दूसरे के खेत में छोड़ दिया। गधे ने स्वतंत्र होकर खूब खाया और मोटा हो गया। इसे वास्तविक बाघ समझकर खेत के मालिक लोग डर से भाग खड़े हुए। लेकिन इस पशु की स्वाभाविक प्रकृति के बारे में एक आदमी को संदेह हो गया। वह अपने को गधे की खाल से ढँककर अपने खेत की ओर गया। बाघ की खाल से ढँके गधे ने उसे देखकर समझा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कि यह हमारा दूसरा साथी है और रेंकना शुरू किया तथा उसके समीप गया। खेत के सभी रखवालों ने उस जानवर को गधा समझ-कर शीघ्र ही मार डाला।

Or

Once there lived at Hastinapur a washerman named Vilasa. His ass became very weak. To make it strong again the washerman covered the ass with a tiger's hide and let it into the corn-field of others. The ass ate freely and became fat. Taking it to be really a tiger, the owners of the field ran away in fright. But one intelligent man became doubtful about the true nature of the animal. He covered himself with an ass's hide and went about his field. The ass in the tiger's hide thinking that there was a fellow ass in the field began to bray and ran towards him. All the keepers of the field thus understood the animal to be a donkey and immediately killed it.

Exercise 25

एक किसान के पास एक मुर्गी थी जो प्रतिदिन सोने का एक अण्डा दिया करती थी। वह लालची मनुष्य इससे सन्तुष्ट नहीं था। एक दिन उसने सोचा "यह मुर्गी मुझे प्रतीदिन एक ही अण्डा देती है। इसके पेट में सोने के ऐसे बहुत से अण्डे होंगे। यदि मैं सबों को एक ही समय पाऊँ तो मैं धनी हो सकता हूँ। अतएव उसने मुर्गी को मार कर उसके पेट को छुरी से काट दिया। लेकिन उसके पेट में एक अण्डा भी नहीं मिला। इस प्रकार जो वह सोने का अण्डा प्रतिदिन पाता था, समाप्त हो गया। साथ ही वह मुर्गी भी समाप्त हो गई। किसान ने अपनी मूर्खता पर खेद प्रकट किया और पश्चात्ताप में डूब गया। वस्तुतः असन्तोष और लालच सब दुःखों की जड़ है।

Or

A farmer had a hen which laid a golden egg every day. The greedy man was not contented with this. One day he thought within himself—"This hen gives me only one egg every day. Surely there must be many such golden eggs in its belly. If I can get them all at one time, I can become very

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

rich." So he killed the hen and cut its belly with a knife; but alas ! he found no egg there. Thus the golden egg that he got every day and the hen that laid were both lost for ever. The farmer bemoaned his foolishness and was immersed in repentance. Really discontent and greed are the root of all misery.

Exercise 26

गोदावरी नदी के तट पर एक विशाल वट वृक्ष था। उसकी डालियों पर अपना-अपना घोसला बनाकर अनेक पक्षी आरामपूर्वक रहते थे। एक बार वर्षा ऋतु में एक बन्दरों का झुण्ड आया और वृक्ष के नीचे ठहरा। जोरों की वर्षा हो रही थी और शीत के मारे बन्दर लोग काँप रहे थे। वृक्ष पर रहने वाले पक्षियों में से एक ने दया प्रकट करते हुए कहा—"भाइयो ! मैं अपने घोंसले में आराम से रहता हूँ। तुम्हें मनुष्यों की तरह हाथ पैर हैं, अपने लिए तुम हम लोगों से अच्छा घर बना सकते हो। बिना घर के तुम क्यों कष्ट उठा रहे हो ?" उस पक्षी की राय सुनकर बन्दर बड़े क्रुद्ध हो गये। वृक्ष पर चढ़कर उन लोगों ने पक्षियों के घोसलों को नष्ट कर दिया।

Or

On the bank of the river Godavari there was a huge banyan tree. Several birds were living comfortably there, having built their nest on its branches. Once in the rainy season a group of monkeys came and took shelter at the foot of the tree. The rains were pouring heavily and the monkeys were shivering with cold. One of the birds living in the tree took pity on them and said "Brothers ! we live comfortably in our nests. You have hands and feet like men and you can build for yourselves home better than ours. Why then do you suffer without a home ?" The monkeys grew furious at the birds on hearing their advice. They climbed the tree and destroyed the nests of the birds.

Exercise 27

परशुराम को सुधा नाम की एक बहन थी। वह अपने भाई से छोटी थी, किन्तु चालाक थी। वह प्रतिदिन स्कूल जाती और अपना पाठ याद करती थी। किन्तु परशुराम आलसी और झगड़ालू था। एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिन उसने भूमि पर पड़े एक गेंद को देखा और लेने की इच्छा की। लेकिन सुधा ने कहा—'यदि इस गेंद को हमलोग लेंगे तो लोग हमें चोर कहेंगे।' उनके पिता ने अचानक सुधा की बात सुन ली और उसे बहुत से उपहार दिये।

Or

Parsuram had a sister called Sudha. She was younger than her brother but was cleverer. She went to school every day and learnt her lesson. But Parsuram was lazy and quarrelsome. One day he saw a ball lying on the ground and wanted To Take it. But Sudha said, "If we take this ball, people will call us thieves." Their father heard these words of Sudha accidently and gave her many presents.

Exercise 28

प्राचीन काल में एक साधु अपनी पत्नी के साथ एक जंगल में रहते थे। वे दोनों कालक्रम से अन्धे और कमजोर हो गये। सिन्धु नाम का एक छोटा लड़का ही उन लोगों की खुशी का एकमात्र साधन था। वह लड़का कर्तव्य-परायण, स्नेही और दयालु था। वह आवश्यकताओं को पूरा करता हुआ माता-पिता की सेवा करता था। वह फलों को लाने के लिए जंगलों में घूमता था। वह पानी लाता और उनके लिए सदा भोजन बनाता था। माता-पिता अपने पुत्र को इतना प्यार करते थे कि उसका नाम सदा उनके होठों पर रहता था।

Or

In days gone by there lived in a forest a sage and his wife. They were blind and weak with age. Their only joy was a little boy named Sindhu. A dutiful, loving and kind son he was. He looked after his parents, attending to their wants. He wandered about the woods to gather fruits for his parents. He brought them water and cooked their food. The parents loved their child so well that his name was ever on their lips.

Exercise 29

एक बार एक भूखे भेड़िये ने एक मेमने का पीछा किया। वह मेमना अपने को बचाने के लिए भागकर एक मन्दिर में घुस गया। पुरोहितों के भय के कारण भेड़िया मन्दिर में नहीं जा सका। मन्दिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के सामने खड़ा होकर उसने मेमने को बुलाया और बड़े करुण स्वर में कहा—शीघ्र चले आओ। हम दोनों मित्रवत् जंगल में चलें, नहीं तो पुरोहित पकड़ लेंगे और बलि दे देंगे। मेमने ने उत्तर दिया—तुम्हारे द्वारा खाये जाने की अपेक्षा मन्दिर में बलि हो जाना श्रेयस्कर है। इस मन्दिर से मैं बाहर कभी नहीं आऊँगा। थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के बाद भेड़िया निराश लौट गया।

Or

A hungry wolf once pursued a lamb. The lamb quickly fled and entered into a temple for refuge. The wolf could not enter into the temple as she was afraid of the priests. Standing in front of the temple the wolf called out to the lamb and said in a sympathetic voice, "Come out soon and we will go out as friends into the forests; or else the priests will catch you as an offering in sacrifice." The lamb replied— 'It would be better to besacrificed in the temple than to be eaten by you. I will never come out of this temple.' The wolf after waiting for some time went away disappointed.

Exercise 30

पंचाल नरेश के तीन पुत्र थे। वृद्ध हो जाने पर उन्होंने अपना राज्य अत्यन्त योग्य पुत्र को देना चाहा। उन्होंने सबों को अपने पास बुलाया और प्रत्येक से पूछा—'आपके जीवन में क्या लक्ष्य है?' सबसे बड़े पुत्र ने कहा—'पूज्य पिता जी! मैं वेदों तथा शास्त्रों का अध्ययन करना चाहता हूं तथा अपने को ईश्वर की पूजा में लगाना चाहता हूँ।' दूसरे पुत्र ने कहा—'मुझे पवित्र ब्राह्मणों के साथ यात्रा करने की इच्छा है।' पिता ने दोनों को प्रचुर धन देकर उन्हें बाहर भेज दिया। अन्तिम पुत्र जब बुलाया गया तब उसने पिता को नमस्कार कर कहा—'पूज्य पिताजी मैंने क्षत्रिय कुल में जन्म लिया है और क्षत्रिय के समान रहना चाहता हूँ। मैं आपके राज्य को प्राप्त कर अन्य राज्यों पर विजय प्राप्त करना चाहता हूँ। पिता ने प्रसन्न होकर कहा—'मेरे प्यारे! मेरा राज्य तुम्हारा ही होगा।'

Or

The King of Panchala had three sons. When he grew old he wanted to give his kingdom to the most deserving son. He called them all to him and asked each of them, in turn,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

what his ambition in life was. The eldest son said, "Revered father! I desire to study the Vedas and the Shastras and devote myself to worship of God. The second told his father that his desire was to go on a pilgrimage with pious Brahmins. The father gave them both plenty of money and sent them away. The last son, when called forth bowed before his father and said, "Dear father! I am born a Kshatriya and want to live like a Kashatriya. I want to inherit your throne and many more kingdoms." The father was pleased and said, 'My darling! My kingdom shall be thine.'

Exercise 31

राजा भीम ने दमयन्ती के स्वयंवर की घोषणा की तथा सभी देशों के राजकुमारों को आमंत्रित किया। दमयन्ती की सुन्दरता को सुनकर प्रधान देवों ने भी उससे विवाह करना चाहा और उन लोगों ने भी स्वयंवर में भाग लिया। उन लोगों ने दमयन्ती के पास अपनी अभिलाषा को कहने के लिए एक दूत को भी भेजा। वे समझ गये कि दमयन्ती का हृदय नल पर अनुरक्त हो गया है और इसलिए ये चार देवता ठीक नल के रूप में स्वयंवर में प्रकट हुए। दमयन्तो पांच नलों को देखकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गयी और वास्तविक नल को नहीं चुन सकी। उसने देवों की प्रार्थना की,—"मैंने नल के गुणों को सुना है तथा मैंने उन्हें अपने पति के रूप में वरण किया है। सत्य के लिए, देवता लोग अपने स्वरूप को ग्रहण कर लें और मेरे लिये उन्हें प्रत्यक्ष करें।" उसकी दृढ़ धारणा देखकर उन्होंने अपने स्वरूप को ग्रहण कर लिया। तब दमयन्ती ने नल के गले में माला डाल दी। देवताओं ने प्रसन्न होकर वर-वधू को अनेक वरदान दिये।

Or

King Bhima announced the Svayamvara of Damayanti and he invited the princes of all the countries. Hearing the beauty of Damayanti even the principal gods desired to marry her and they attended the Svayamvara. They sent also a messenger to Damayanti conveying their wish. They understood that Damayanti's heart was set on Nala and so the four gods appeared exactly like Nala at the Svayamvara.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Damayanti seeing five Nalas was perplexed and could not choose the real Nala. She then prayed to the gods, "Ever since I heard virtues of Nala have chosen him as my lord. For the sake of truth, let the gods assume there own forms and reveal him to me." Seeing her fixed resolve, they assumed their real form. Damayanti then threw the garland round Nala's neck. The gods pleased with the couple, granted them many boons.

Exercise 32

ग्रीष्म ऋतु में किसी दिन एक यात्री जंगल से होकर जा रहा था। जब अपराह्ण काल हुआ, तब उसे प्यास लग गयी। सभी जलाशयों और नदियों के सूख जाने के कारण वह अपनी प्यास को बुझाने के लिए कहीं भी पानी नहीं पा सका। अन्त में वह नारियल वृक्ष के नीचे आया। इस पर कई कोमल नारियल लगे थे। किन्तु वृक्ष के अधिक लम्बे होने के कारण नारियल के फल तक उसकी पहुँच नहीं थी। वृक्ष पर अनेक बन्दरों को बैठा हुआ देखकर उस चतुर यात्री ने एक उपाय सोचा। उसने भूमि पर से कुछ पत्थरों को लेकर लगातार बन्दरों के ऊपर फेंका। इसके बाद बन्दरों ने भी जिनकी आदत दूसरों का अनुकरण करना है। नारियल (फल) को तोड़ कर यात्री को मारने के लिए फेंका। उसने उन नारियलों को बड़े आनन्द से चुन लिया (तथा) उसके मधुर जल से प्यास बुझाकर वह अपने पथ पर चल पड़ा। सहज बुद्धि मनुष्य का परम साथी है।

Or

On a certain day in summer, a traveller was walking through a forest. When it became noon, he grew very thirsty. As all the pools and rivers were dry, he could get no water anywhere to quench his thirst. At last he came to the foot of a coconut tree. There were many tender coconuts on it; but the tree was very tall and coconuts were beyond his reach. Seeing many monkeys sitting on the tree, the wise traveller hit upon a plan. He took a few stones from the ground and threw them repeatedly at the monkeys. Thereupon the monkeys, whose habit is to imitate other, plucked the coconuts and threw them at the traveller to hit him. He

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

picked up those coconuts with great joy, quenched his thirst with sweet water in them and went on his way. Common sense is the best companion for man.

Exercise 33

एक समय दुष्यन्त नाम का राजा रहता था। एक दिन वह शिकार खेलने के लिए गया। उसने एक मृग का पीछा किया और अन्ततोगत्वा वह कण्व के आश्रम में पहुँच गया। ऋषि तीर्थ करने के लिए बाहर चले गये थे। कण्व की कन्या शकुन्तला ने राजा का स्वागत किया। वह अत्यन्त सुन्दरी थी। दुष्यन्त ने उससे अपनी रानी बनने के लिए निवेदन किया और गन्धर्व रीति से उसके साथ विवाह कर लिया। तत्पश्चात् वह अपनी राजधानी को लौट गया। कुछ महीनों के बाद उसको एक पुत्र हुआ जो चक्रवर्ती के सभी चिह्नों से युक्त था। जब शकुन्तला पुत्र-सहित दुष्यन्त के पास गयी तो उसने साक्षात्कार तक के ज्ञान को अस्वीकृत कर दिया। तब एक स्वर्गीय ध्वनि यह कहते हुए सुनाई पड़ी—"ओ राजन्, शकुन्तला तुम्हारी पत्नी है।" इसके बाद उसने उसे स्वीकार किया और उसे अपनी प्रथम रानी बनाया।

Or

Once upon a time there lived a king, called Dushyanta. One day he went out on a hunt. He persued a deer and at last he reached the hermitage of Kanva. But the sage had gone out on a pilgrimage. The king was received by Sakuntala, the daughter of the sage. She was very beautiful. Dushyanta requested her to become his queen and married her according to the Gandharva form of marriage. He then returned to his capital. After some months, she gave birth to a son who had all the marks of royalty. When Sakuntala stood before Dushyanta with the boy, he he denied all knowledge of having even seen her Then a heavenly voice was heard saying "O King! Sakuntala is your wife." He thereupon accepted her and made her his first queen.

Exercise 34

एक समय विन्ध्यपर्वत बहुत ऊपर की ओर उठ रहा था और उसने सूर्य का पथ रोक दिया। दक्षिण में सूर्य का प्रकाश न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देखकर इन्द्र तथा दूसरे देवों ने कैलास स्थित अगस्त्य के समीप पहुँच कर विन्ध्यपर्वत के दर्प को कम करने का निवेदन किया। महर्षि अगस्त्य उन लोगों की प्रार्थना स्वीकार कर दक्षिण की ओर आये और उन्होंने जोर से विन्ध्य को पुकारा। महर्षि को देखकर घमण्डी विन्ध्य अपने उपदेष्टा के स्वागत में झुक गया और उसने कहा—अपने विनीत सेवक को आशीष दें। इसके बाद महर्षि ने कहा—जब तक मैं नहीं आऊँ तब तक तुम इसी तरह अपना मस्तक झुकाये रहो। लेकिन आज तक महर्षि अगस्त्य नहीं लौटे और पर्वत भी अपने उपदेष्टा के आज्ञापालन में बढ़ने से रुक गया। इस प्रकार देवताओं की आकांक्षा पूर्ण हो गयी।

Or

Once the Vindhya Mountain was rising higher and higher and it obstructed the path of the sun. Indra and other gods, seeing that there was no sunlight in the South, approacbed Agastya who was then in Kailasa and requested him to subdue the pride of the Vindhya Mountain. The holy Agastya acceded to their request, came towards the South and called aloud to the Vindhya. The proud Vindhya seeiug the sage, bowed down out of reverence for its preceptor and said—"Bless your humble servant." Thereupon the sage replied—"Remain thus with your head low until I come to you again." But Agastya has not returned up to this day and the mountain also, in obedience to his preceptor's command, has ceased to grow. The wishes of the gods were thus fulfilled.

Exercise 35

राजा जनक मिथिला के शासक थे। जब वे यज्ञ के लिए पवित्र भूमि को हल से जोत रहे थे, उन्होंने एक अपूर्व सुन्दर सन्तान पायी। जनक ने उसका नाम सीता रखा तथा अपनी कन्या की भाँति उसका पालन किया। उसके घर में शिव का एक विशाल धनुष था। वह इतना बड़ा और भारी था कि कोई इसे हटा भी नहीं सका। राजा ने सभी देशों के राजकुमारों को स्वयंवर में आमंत्रित कर घोषणा की—"जो राजकुमार इस धनुष को तोड़ देगा उसे ही मैं सीता को विवाह में दे दूँगा।" अनेक विख्यात राजकुमार वहाँ एकत्र हुए लेकिन कोई भी धनुष को उसके स्थान से डिगा नहीं सका। अन्त में विश्वामित्र के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साथ राम अपने भाई लक्ष्मण सहित जनक के मण्डप में पहुँचे। ऋषि की आज्ञा से राम ने धनुष को उठाकर उसे मध्य भाग से तोड़ दिया। अपनीं प्रतिज्ञा के अनुसार, जनक ने अपनी कन्या सीता से राम का विवाह कर दिया।

Or

King Janak ruled at Mithila. While he was ploughing the sacred ground for a sacrifice, he found a child of celestial beauty lying there. Janak called her Sita, and brought her up as his own daughter. He had in his home a mighty bow belonging to Shiva. It was so huge and heavy that no one could even more it. King Janak invited all the princes of the land to a Svayamvara and proclaimed—'I will give Sita in marriage to the hero who will bend this Shiva's bow." Numberless princes of great fame were assemble there but not one of them could even move the bow from its place. At last prince Ram and his brother Lakshman came to Janaka's hall, following the sage Vishva-mitra. With the permission of the sage, Ram took up the bow, bent it very easily and broke it in the middle. According to his word, Janak gave his daughter, Sita, in marriage to Ram.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत-प्रबोध

भाग २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१.

वरुणकहा

इण्हि नरिंद निसुणसु कहिज्जमाणं मए समासेणं ।
वसणाण सिरोरयणं व सत्तमं चोरिया वसणं ॥ १ ॥
परदव्वहरणपावदुमस्स धणहरणमारणाईणि ।
वसणाइं कुसुमनियरो नारयदुक्खाइं फलरिद्धी ॥ २ ॥
जग्गंतो सुत्तो वा न लहइ सुक्खं दिणे निसाए वा ।
संकाछुरियाए छिज्जमाणहियओ धुवं चोरो ॥ ३ ॥
जं चोरियाए दुक्खं उब्बंधणसूलरोवणप्पमुहं ।
एत्थ वि लहेइ जीवो तं सव्वजणस्स पच्चक्खं ॥ ४ ॥
दोहग्गभंगच्छेयं पराभवं विभवमंससमन्नं पि ।
जं पुण परत्थ पावइ पाणी तं केत्तियं कहिमो ॥ ५ ॥
हरिऊण परस्स धणं कयाणुतावो समप्पए जइ वि ।
तह वि हु लहेइ दुक्खं जीवो वरुणो व्व परलोए ॥ ६ ॥

रन्ना भणियं—को सो वरुणो ? गुरुणा वुत्तं सुण—

इत्थेव भरहखित्ते नयरी नामेण अत्थि मायंदी ।
मायंदपमुहपायव - अभिरामारामरमणिज्जा ॥ ७ ॥
तत्थ निवो नरचंदो अरिवहुमुहकमलपुन्निमाइंदो ।
मायंदु व्व दुमाणं सिरोमणी सव्वनिवईणं ॥ ८ ॥
सोहग्गमंजरी मंजरि व्व पसरंतसीलसुरहिगुणा ।
नयणभमराण वीसाममंदिरं से महादेवी ॥ ९ ॥

कयाइ तीए समुप्पन्नो पुत्तो । कराविअं रन्ना वद्धावणयं । कयं से 'नरसिंहो' त्ति नामं । पत्तो सो कुमारभावं । गहाविओ कलाकलावं पवन्नो अणन्नसामन्नलायन्नपुन्नं तारुन्नं ।

सा तस्स रूवसोहा संजाया पिच्छिऊण जं मयणो ।
लज्जाए विलिणंगो नूणमणंगत्तणं पत्तो ॥ १० ॥

अन्नया विन्नत्तो कुमारो पडिहारेण—देव ! दुवारे चिट्ठंति कुमार दंसणत्थिणो कुसलनिउणनामाणो चित्तयरदारया । कुमारेण वुत्तं—सिग्घं पवेसेहि । पवेसिया पडिहारेण । पणमिऊण कुमारं उवविट्ठा ते । समप्पिया- चित्तवट्टिया ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अह पेच्छिऊण एयं परिओसविसट्टलोयणजुवण ।
भणियं नरसिंहेणं का एसा देवया एत्थ ॥ ११ ॥
हसिऊण तेहिं भणियं न देवया किंतु माणुसी एसा ।
तो कुमरेण वुत्तं – न एरिसी माणुसी होइ ॥ १२ ॥
अह माणुसी वि जइ होज्ज एरिसी ता कुणंति जं कट्ठं ।
के वि हु सग्गनिमित्तं तेसिं सव्वं पि तं विहलं ॥ १३ ॥
ता तुम्ह नूणमेयं अणुत्तरंचित्तकम्म चउरत्तं ।
इय मज्झ फुरइ चित्ते, तो भणियं कुसलनिउणेहिं ॥ १४ ॥
अम्हाणमिह न किंचि वि चित्तकरं चित्त-कम्म-चउरत्तं ।
दट्ठुं पि पडिच्छंदं न जेहिं सम्मं इमा लिहिया ॥ १५ ॥
एकस्स पयावइणो वन्नसु विन्नाण – कोसलं एत्थ ।
जेण पडिच्छंदयमंतरेण बाला विणिम्मविया ॥ १६ ॥
इय तव्वयणं सोउं वियसियमुहपंकएण कुमरेण ।
भणियं – कहेइ भद्दा ! का एसा कस्स वा धूया ॥ १७ ॥

तेहिं भणियं—कुमार ! सुण । अत्थि कणगउरनयरे कणगद्धओ राया, कणगावली से भज्जा ; ताण कणगवई नाम धूया ।

पसरंतेण समंता कणगुज्जल कायकंतिपडलेण ।
कणयाभरणाइं पिव जा दीसइ दिसापुरंधीणं ॥ १८ ॥

सा य रुवाइसएण मुणीण वि मणहारिणी, कलाकुसलत्तणेण असरिसी अन्नकन्नयाणं, पत्तजोव्वणा समागया पिउपायपणामत्थमत्थाणमंडवे । आयन्नियं तीए वंदिणा कीरंतं कुमार । तुह गुणकित्तणं । तप्पभिइं च परिचत्तसेसवावारा अद्धाणदिन्नसुन्नहुंकारा कंठलोलंतपंचमुग्गारा गरुयपसरंत नीसासा कुमारगुणसंकहामेत्तपत्तआसासा संजाया सा । सुणियमिणं से सहीहिंतो रन्ना । किं इमीए ठाणे अणुराओ ; कुमारस्स वि केरिसं इमं पइ चित्तं त्ति जाणणत्थं, कुमारस्स पडिच्छंदयं आणेउं, इमं कणगवई-पडिच्छंदयं च दंसिउं पेसिया इत्थ अम्हे । कुमार ! नगरुज्जाणे राहावेहेण धणुव्वेयमब्भसंतो पुरपरिसरे विविहतुरंगवग्गवग्गणविणोयमणुहवंतो सीह-दुवारे वारणारोहकीलं कुणंतो य दिट्ठो तुमं । तओ सरीरसुन्देरदलियकं-दप्पदप्पस्स कुमारस्स अहो अविकलं कलाकोसल्लं ति पत्ता विम्हया अम्हे । इमं च सोऊण मयणसरगोयरं गओ कुमारो । तहा वि नियमागारं गूहंतेण तेण भणियं-भण भो मइसार ! किं पि समस्सापयं ! पहसियमुहेण जंपियं मइसारेण—'करि सफल उं अप्पाणु' । सिग्घमेव भणियं कुमारेणं—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडिवज्जिवि दय देव गुरु देवि सुपत्तिहि दाणु।
विरइवि दीणजणुद्धरणु करि सफलउं अप्पाणु॥ १६॥

कुसलेण वुत्तं—अहो कुमारस्स कव्वकरणसत्ती! कुमारेण जंपियं—बुद्धिसार! तुमं पढसु। तेण पढियं—'इहु भज्झिम पव्जंतु'।

कुमारेण भणियं—

'पुत्तु जु रंजइ जणयमणु थी आराहइ कंतु।
भिच्चु पसन्नु करइ पहु इहु भज्झिम पव्जंतु॥' २०॥

अहो अइसओ त्ति भणियं निउणेण—कुमार! मए वि समस्सा चिंतिया अत्थि तं पूरेसु। कुमारेण वुत्तं—पढसु। पढिया निउणेण—

'मरगयवन्नह पियह उरि पिय चंपय-पहदेह'।

तक्कालमेव कुमारेण भणियं—

'कसवट्टइ दिन्निय सहइ नाइ सुवन्नइ रेह॥' २१॥

निउणेण भणियं—जं चेव चिंतियं उत्तरद्धं मए तं चेव कुमारस्स वि फुरियं। अहो बुद्धिपगरिसो। कुसलेण वुत्तं—ममावि समस्सं पूरेसु। पढिया तेण—

'चूडउ चुन्नी होइसइ मुद्धि कवोलि निहित्तु।'

कुमारेण भणियं—

'सासानलिण झलक्कियउ वाहसलिलसंसित्तु॥' २२॥

कुसलेण वुत्तं—अहो अच्छरियं। पच्छक्खसरस्सई कुमारो। भणिओ कुमारेण कुबेरो नाम भंडागारिओ—भो एयाणं देहि दीणार-लक्खं कुबेरेण वुत्तं—जं देवो आणवेइ त्ति। चिंतियं च—अहो मुद्धया कुमारस्स जं अलक्खं दाणमेव नत्थि। नूणं न याणइ लक्ख परिमाणमिमो। ता तं संपाडेमि एएसिं कुमारपुरओ चेव जेण लक्खो महापमाणो त्ति मुणिऊण न पुणो थेवकज्जे एवमाणवइ त्ति। तओ तेण तत्थेव आणाविओ दीणार-लक्खो, पुंजिओ कुमार पुरओ। भणियं कुमारेण—भो कुबेर! किमेयं त्ति? तेण वुत्तं—देव! एस सो दीणारलक्खो, जो पसाईकओ कुमारेण एएसिं कुसल निउणाणं। कुमारेण चिंतियं—हंत! किमेयं संपयं संपयाण दंसणं, नूणं पभूओ खु लक्खो एयस्स पडिहाइ। ता मं सुहित्तणेण किर पडिबोहिऊण एयस्स दंसणेण नियत्तेइ इमाओ अपरिमियमहादाणाओ, नेच्छइ य मज्झ संपया परिब्भंसं ति। अहो मूढया कुबेरस्स। एगंतबज्झे, अणाणुगामिए सहजीवेण, साहारणे अग्गितक्कराईणं, पयाणमित्तफले,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमत्थओ आवयाकारए अत्थे वि पडिबंधो। ता पडिबोहेमि एयं। तओ भणियं—अज्ज कुबेर! किसेसो लक्खो? कुबेरेण भणियं—देव एसो। कुमारेण वुत्तं—भो किं दोण्हं एगमित्तेण, कित्तिओ वा एगलक्खो? न खलु एएण इत्थं पि जम्मे एए चित्तद्दारया परिमिएणावि वएण सुहिणो भवंति। न य असंपयाएण अपरिब्भंसो संपयाए। अवि य खीणे य पुन्न संभारे नियमा विणस्सइ।

तहा—

अणुदियहं दिंतस्स वि झिज्जंति न सायरस्स रयणाइं।
पुन्नक्खएण झिज्जइ ता रिद्धी न उण चाएण॥ २३॥

अदिज्जमाणा वि अन्नेसिं, अपरिभुज्जमाणा वि अत्तणा, गोविज्जमाणा वि पच्छन्ने, रक्खिज्जमाणा वि पयत्तेण, असंसयं नस्सइ एसा। किं वा दाणभोग रहियाए अवित्तिकम्मयरमेत्ताए संपयाए त्ति वा बीयं पि लक्खं देहि। कुबेरेण वुत्तं—जं देवो आणवेइ। अहो उदारया कुमारस्स त्ति विम्हिया कुसल निउणा। चित्तवट्टियं पुणो पुणो पिच्छंतेण पढियं कुमारेण—

मयणघरिणी नूणं दासीदसं पि न पावए।
ति-णयण-पिया पत्ता लोए तणं व लहुत्तणं॥
सलिलनिहिणो धूया धूलीसमा वि न सोहए।
अमर महिला हीलाठाणं इमीए पुरो भवे॥ २४॥

चिंतियं कुसलनिउणेहिं—कयत्था कणगवई कुमारी जा कुमारेण एवं बहुमण्णिज्जइ। संपत्तमम्हाण समीहिअं। एत्थंतरे मज्जणसमउ त्ति उट्ठिओ कुमारो। गया नियावासं कुसलनिगुणा। एवं कुमार सेवा परा ठिया कित्तियं पि कालं। कुमाररूवं आलिहिऊण चित्तवट्टए पत्ता कणगपुरं। दंसिओ कुमारपडिच्छंदओ कणगद्धयस्स। कहिओ कुमारवुत्तंतो। भणियं रन्ना—ठाणे अणुराओ कुमारीए। इमं पइ अणुरत्तो य कुमारो। तओ चउरंग बलकलिया पेसिया कणगवई।

पत्ता मायंदीए इंदीवरलोणया पसत्थदिणे।
परिणीया कुमरेणं एसा लच्छि व्व कण्हेण॥ २५॥
अह नरचंदो राया रज्जम्मि निवेसिऊण नरसिंहं।
पव्वज्जं पडिवन्नो मुणिचंद मुणीसर समीवे॥ २६॥
ता नरसिंहो राया अणुरायपरव्वसो विसयगिद्धो।
चिट्ठइ पेसंतो च्चिय कणगवईए वयणकमलं॥ २७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो नट्टगीयवाइत्तचित्तकम्माइणा विणोएण ।
तीए च्चिय अक्खित्तो तणं व रज्जं पि मन्नेइ ॥ २८ ॥
करि तुरयकोसचिंतं न कुणइ, न महायणं पलोएइ ।
नियदेसं पि न रक्खइ पच्चंतनिवेहि भज्जंतं ॥ २९ ॥
तो गुत्तिएण सूरेण मंतिउं सह पहाणपुरेसेहिं ।
गहिउं रज्जं निस्सारिओ य एसो पियासहिओ ॥ ३० ॥
सो भमइ महीवलयं छुहापिवासाइदुहभरक्कंतो ।
कामाउराणमहवा कित्तियमेयं मणुस्साणं ॥ ३१ ॥
अह काणणम्मि एक्कम्मि मग्गखिन्नस्स वीसमंतस्स ।
दइउच्छंग निवेसियसिरस्स तस्सागया निद्दा ॥ ३२ ॥
एत्थंतरम्मि हरिया कणगवई खेयरेण केणावि ।
हा नाह ! रक्ख रक्ख त्ति करुणसद्दं विलवमाणी ॥ ३३ ॥
रन्ना वि विबुद्धेणं कड्ढियखग्गेण जंपिओ खयरो ।
सुत्तस्स मे पियथमं तुमं हरंतो न लज्जेसि ॥ ३४ ॥
ता मुंच पियं मह होसु संमुहो जइ तुमं मणुस्सोसि ।
जेण तुह सिक्खमिमिणा करेमि तिक्खग्ग खग्गेण ॥ ३५ ॥
इय तस्स भणंतस्स वि खणेण खयरो अदंसणं पत्तो ।
तत्तो विसण्णचित्तो नरसिंहो विलवए एवं ॥ ३६ ॥
हा ! कमल विउलनयणे ! मयंक वयणे ! सुहामहुरवयणे ।
तुमए विणा विणासो सुहस्स मह संपयं जाओ ॥ ३७ ॥
अमओवमेण तुह दंसणेण परिओसमुव्वहंतस्स ।
मह न मणुव्वेगकरं रज्जपरिब्भंसदुक्खं पि ॥ ३८ ॥
करि तुरय रह समिद्धं रज्जं हरिऊण किं न तुट्ठोसि ।
जं हयविहि ! हरसि तुमं मह हिययासासणं दइयं ॥ ३९ ॥
वसणम्मि ऊसवम्मि यं अभिन्नहियया हवंति सप्पुरिसा ।
इय चिंतिऊण एसो नरसिंहो धरइ धीरत्तं ॥ ४० ॥
अजिइंदियत्तणेणं भंसं रज्जस्स अहमिणं पत्तो ।
तत्तो विवज्जइस्सं अओ परं रमणि संभोगं ॥ ४१ ॥
जा पुण वि रज्जलाभो न होइ इय नियमणम्मि संठविउं ।
सो बहुविह देसेसुं परिब्भमंतो गमइ कालं ॥ ४२ ॥
अह सिरिउरम्मि नयरे वीसंतो नयर देवयायथणे ।
सो तत्थ निवं दइयं दट्ठुं परिओसमावन्नो ॥ ४३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जंपइ तुमं पिययमे कहमिह पत्ता अणब्भवुट्ठि व्व ।
सा भणइ खेयरेणं नीयाऽहं तेण नियनयरे ॥ ४४ ॥
अणुरायपरवसेणं बहुसो अब्भत्थिया य भोगत्थं ।
नय मन्निओमए सो जणयसुयाए व्व दहवयणो ॥ ४५ ॥
तत्तो विलक्खचित्तेण तेण इह आणिऊण मुक्काऽहं ।
रन्ना भणिसं—को कुणइ परिभवं सीलवंतीणं ॥ ४६ ॥
अह वल्लहं पि मिल्लाविऊण नहलच्छिसंगमं सूरो ।
हय दिव्वनिओगेणं गमिओ अत्थ गिरिसिहरवणं ॥ ४७ ॥
तो पयडिउं पवत्ता पढमं संज्झा सुनिब्भरं रायं ।
खुद्दमहिल व्व पच्छा संजाया तक्खणं विराया ॥ ४८ ॥
रयणीए पत्थिवो तत्थ पत्थरे विहियसत्थरे सुत्तो ।
एसा वि य सुत्ता तस्स चेव आसन्नदेसम्मि ॥ ४९ ॥
तम्मि समयम्मि वट्टइ हेमंतो कामवसियरणमंतो ।
अग्घवियतेल्लकुंकुम कामिणी थण जलण पावरणो ॥ ५० ॥
अह जंपिय इमीए-नाह ! दढं पीडियम्हि सीएण ।
नियपडपेरंतेणं पावरिया तो इमा रन्ना ॥ ५१ ॥
सा पाणिपल्लवेहिं आढत्ता फरिसिउं सिवस्स तणुं ।
तह पीडिउं पवत्ता थणकलसभरेण वच्छयलं ॥ ५२ ॥
तो रन्ना पडिसिद्धा सा जंपइ—नाह ! किं निवारेसि ।
विरहानलसंतत्तं चिराउ मं किं न निव्वहसि ॥ ५३ ॥
सो भणइ—रज्ज लाभं जाव मए वज्जिओ जुवइसंगो ।
सा वि विलक्खा तं भेसिउं कुणइ अत्तणो वुड्ढि ॥ ५४ ॥
तं दट्ठुं वड्ढंतिं दइयाविसरिसवियारजुत्तं च ।
मज्झ पिया कणगवई न इम त्ति विणिच्छियं रन्ना ॥ ५५ ॥
हियडा संकुडि मिरिय जिंव इंदियपसरु निवारी ।
जित्तिउ पुज्जइ पंगुरणु तित्तिउ पाउ पसारि ॥ ५६ ॥
एअं पि तए न सुअं आ पावे ! फिट्टसु त्ति चिंतेण ।
हणिऊण मत्थए सा हत्थेण गलत्थिया दूरं ॥ ५७ ॥

तओ देवयारूवं पयडिऊण भणिओ तीए राया—भद्द, अहं नयरदेवया। तुह रूवखित्तचित्ताए चिंतियं मए—मयणो व्व मणहरो किं एस एगागि त्ति जाणिया य ते भज्जा खेयरेण अवहरिया। ता तीए रूवं काऊण भोगत्थमब्भत्थिओ तुमं। सत्तसारत्तणेण तुमए न खंडिओ नियमो। पच्छा तुह भेसणत्थं वड्ढिउं पवत्ता। तहावि खोहिउं न सक्किओ तुमं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ता महासत्त! तुह तुट्ठाऽहं। किं पि पत्थेसु पत्थिवेणं वुत्तं—अउन्नजण-दुल्लहं दिव्वदंसणं दिंतीए तुमए किं न दिन्नं। अओ परं किं पत्थेमि? अमोहं दिव्वदंसणं ति भणंतीए देवयाए बद्धं रन्नो भुआए अणप्प माहप्पमणिसणाहं रक्खाकडयं, भणियं च—इमिणा बाहुबद्धेण न पहवंति जक्खरक्खसाइणो।

ता वच्च कंचणउरे तुह होहि तत्थ रज्ज सम्पत्ती।
इय जंपिऊण पत्ता अदंसणं देवया झत्ति ॥ ५८ ॥
सो पच्चूसे चलिओ कमेण कंचणउरम्मि संपत्तो।
रज्जप्पयाणपडहं वज्जंतं तत्थ निसुणेइ ॥ ५९ ॥
तो विम्हिएण इमिणा वत्थव्वो तत्थ पुच्छिओ पुरिसो।
किं दिज्जंतं पि इमं रज्जं न हु को वि गिण्हेइ ॥ ६० ॥

तेण कहियं—जो एत्थ रज्जे निवसइ सो पढमनिसाए चेव विणस्सइ। नरसीहेण छित्तो पडहो। नीओ सो भवणं। निवेसिओ रज्जे। विविह विणोएहिं अइक्कंतं दिणं, आगया रयणी। जग्गंतस्स भयं नत्थि त्ति पल्लंकं मुत्तूण दीवच्छायाए गहियखग्गो जग्गंतो ठिओ राया मज्झरत्ते पत्तो रक्खसो। दिन्नो तेण खग्गघाओ पल्लंके जाव न कोइ विणासिओ, ताव जोइया दिसाओ। दिट्ठो राया। रन्नावुत्तं—को तुमं जो सुत्तेसु पहरसि? तेण वुत्तं—अहं रक्खसो। को पुण तुमं? रन्ना वुत्तं—अहं भेक्खसो।

तो रक्खसेन हसिऊण जंपियं—भद्द! अवितहं जायं।
जं 'हुंति रक्खसाणं पि भेक्खसा' लोयवयणमिणं ॥
अन्न च सुण नरेसर, इह नयरे आसि दुम्मई राया।
तत्थ विमलस्स वणिणो भज्जा रइसुंदरी नाम ॥
रइसमरुव त्ति निवेण तेण अंतेउरम्मि सा छूढा।
तव्विरहे नेहवसेण भोयणं चउविहं चइउं ॥
विमलो मरणो पत्तो संजाओ रक्खसो, इमो सोऽहं।
संभरियपुव्ववेरेण दुम्मई सो मए निहओ ॥
जो को वि तस्स रज्जम्मि निवसए तं पि झत्ति निहणेमि।
भद्द! तुमं तु परत्थीपरम्मुहो तेण तुट्ठोऽहं ॥
ता कुणसु इमं रज्जं तुमंति वुत्तुं तिरोहिओ रक्खो।
कयलोयचमक्कारो नरसीह निवो कुणइ रज्जं ॥ ६१ ॥
अह तत्थ समोसरिओ संतिजिणो तस्स वंदणनिमित्तं।
राया गओ जिणिंदं नमिउं परिसाए विणिविट्ठो ॥ ६२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अह कणगवइं देविं समप्पिउं खेयरेण नरसीहो।
भणिओ एवं—नरनाह ! जं मए मयणवसएण ॥ ५३ ॥
अवहरिया तुह देवी तमहं कुलदेवयाइ सिक्खविओ।
तुमए कयं अजुत्तं जं आणाया इमा देवी ॥ ६४ ॥

एयं महासइं खलु खलीकरंतो लहिस्ससि अणत्थं।
ता संतिसमोसरणे नेउं अप्पसु इमं तस्स ॥ ६५ ॥
संति समोसरणठिओ तुममेत्तियकालाओ मए दिट्ठो।
ता खमसु मे महायस ! देवी अवहारअवराहं ॥ ६६ ॥

कम्माण एस दोसो न तुह त्ति खमापरो भणइ राया।
जम्हा चयंति वेरं विरोहिणो जिणसमोसरणे ॥ ६७ ॥
अह भणइ संतिनाहो सव्वमिमं एस कम्मदोसो त्ति।
पत्तोसि रज्जविगमप्पमुहदुहं तव्वसेण जओ ॥ ६८ ॥

तं पुण सुण पत्थिव ! इत्थ अत्थि, वित्थिन्नवाविकूवसरं।
सीहउरं नाम पुरं तत्थ वणी गंगणागो त्ति ॥ ६९ ॥

जो वीयराय भत्तो मुणिजणपयपज्जुवासणासत्तो।
नीसेस दोस चत्तो गुरुसत्तो मुणियनव तत्तो ॥ ७० ॥
तस्सासि पयइभद्दो वरुणो नामेण गेहकम्मयरो।
सो पत्तो सह इमिणा मुणीण पासे सुणइ एयं ॥ ७१ ॥
पर दोह वट्ट वाडणवंदग्गह खत्त खणणपमुहाइं।
पर धणलुद्धो जो कुणइ लहइ सो तिक्खदुक्खाइं ॥ ७२ ॥

वरुणो गिण्हइ नियमं जाजीवं चोरिया मए चत्ता।
गेह गयण सिरिए घरिणीए तेण कहियमिणं ॥ ७३ ॥
जुत्तं विहियं तुमए ममावि नियमो इमो त्ति भणइ सिरी।
इय नियमपराणं ताण नेहपवराणं जंति दिणा ॥ ७४ ॥

अह गंगणागगेहे वरुणेण सुवन्नसंकलं दिट्ठं।
चलियमणेणं गहिऊण अप्पियं तं नियपियाए ॥ ७५ ॥
मुणिऊण गंगणागो तं नट्ठं सोगनिब्भरो भणइ।
हा निक्किन्नेण केण वि हरियं मह जीवियं व इमं ॥ ७६ ॥
तं विलवंतं दट्ठुं दया-परा जंपए पिया वरुणं।
एयं सुवन्नसंकलमप्पसु पिय ! गंगणागस्स ॥ ७७ ॥
एयं कयम्मि सत्थो होइ नियमपालणं च भवे।
वरुणेण अप्पियं तं इमस्स जाओ सो य सत्थो ॥ ७८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वरुणो कमेण मरिउं जाओसि तुमं नरिंद ! नरसीहो।
तुह पुव्वजम्मभज्जा जाया एसा उ कणगवई ॥ ७९ ॥
जं चोरियाए नियमो गहिओ तं पावियं तए रज्जं।
जं संखलं तु गहियं रज्जाओ तेण चुक्कोसि ॥ ८० ॥

जं पुण समप्पियमिणं साणुकोसेण गंगणागस्स।
तं नरसीह नराहिव ! पुणो वि पत्तोसि रज्जसिरिं ॥ ८१ ॥

इयसोउं संभरिओ पुव्वभवो तो पयंपियं रन्ना।
देवीए य अवितहं नाह ! तए अक्खियं एयं ॥ ८२ ॥

दोहिं पि देसविरई पडिवन्ना संतिनाहपयमूले।
भवभयहरणो भयवं विहरिओ अन्नठाणेसु ॥ ८३ ॥

पालियजिणधम्माइं दुन्नि वि समए समाहिणामरिउं।
सोहम्मदेवलोयं पत्ताइं कमेण मोक्खं च ॥ ८४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाणक्ककहाणगं

गोल्लविसए चणयगामो, तत्थ चणगो माहणो सो य सावओ। तस्स घरे साहू ठिया। पुत्तो से जाओ सह ढाढाहिं। साहूणं पाएसु पाडिओ। कहियं च—राया भविस्सइ त्ति। 'मा दोग्गइं जाइस्सइ' त्ति दंता घट्ठा। पुणो वि आयरियाण कहियं—किं किज्जउ? एत्ताहे वि बिंबंतरिओ राया भविस्सइ। उम्मुक्कबालभावेण चोद्दस विज्जाठाणाणि आगमियाणि—

अंगाइं चउरो वेया, मीमांसा नायवित्थरो।
पुराणं धम्मसत्थं च ठाणा चोद्दस आहिया॥ १॥
सिक्खा वागरणं चेव, निरुत्तं छंद जोइसं।
कप्पो य अवरो होइ, छच्च अंगा वियाहिया॥ २॥

सो सावओ संतुट्ठो। एगाओ दरिद्दभद्दमाहणकुलाओ भज्जा परिणीआ। अन्नया भाइविवाहे सा माइघरं गया। तीसे य भगिणीओ अन्नेसिं खद्धादाणियाणं[1] दिन्नाओ। ताओ अलंकियभूसियाओ आगयाओ। सव्वो परियणो ताहिं समं संलवइ, आयरं च करेइ। सा एगागिणी अवगीया अच्छइ। अद्धितीयजाया। घरं आगया। दिट्ठा य ससोगा चाणक्केण, पुच्छिया सोगकारणं। न जंपए, केवलं अंसुधाराहिं सिंचंती कवोले नीससइ दीहं। ताहे निब्बंधेण लग्गो। कहियं सगग्गयवाणीए जहट्ठियं। चिंतियं च तेण—अहो! अवमाणणाहेउ निद्धणत्तणं जेण माइघरे वि एवं परिभवो? अहवा—

अलियं पि जणो धणइत्तमस्स सयणत्तणं पयासेइ।
परमत्थबंधकेण वि लज्जिज्जइ हीणविहवेण॥ १॥

तहा—

कज्जेण विणा नेहो, अत्थविहूणाण गउरवं लोए।
पडिवन्ने निव्वहणं, कुणन्ति जे ते जए विरला॥ २॥

ता धणं उवज्जिणामि केणइ उवाएण, नंदो पाडलिपुत्ते दियाईणं धणं देई, तत्थ वच्चामि। तओ गंतूण कत्तियपुन्निमाए पुव्वन्नत्थे आसणे पढमे निसन्नो। तं च तस्स पल्लीवइ राउलस्स सया ठविज्जइ। सिद्धपुत्तो य नंदेण समं तत्थ आगओ भणइ—एस बंभणो नंदवंसस्स छायं अक्कमिऊण ट्ठिओ। भणिओ दासीए—भयवं! बीए आसणे निवेसाहि।

---

१. धनाढ्येभ्यः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'एवं होउ' बिइए आसणे कुंडियं ठवेइ, एवं तइए दंडयं, चउत्थे गणेत्तियं पंचमे जन्नोवइयं । 'धट्ठो' त्ति विच्छूढो । पदोसमावन्नो भणइ—

कोशेन भृत्यैश्च निबद्धमूलं, पुत्रैश्च मित्रैश्च विवृद्धशाखम् ।
उत्पाट्य नंदं परिवर्त्तयामि, महाद्रुमं वायुरिवोग्रवेगः ॥ १ ॥

निग्गओ मग्गइ पुरिसं । सुयं च णेण—बिंबंतरिओ राया होहामि त्ति । नंदस्स मोरपोसगा तेसि गामे गओ परिव्वायलिंगेण । तेसिं च मयहरधूयाए चंदपियणम्मि दोहलो । सो समुयाणिंतो[1] गओ । पुच्छंति । सो भणइ—मम दारगं देह तो णं पाएमि चंदं । पडिसुणंति । पडमंडवो कओ, तद्दिवसं पुन्निमा, मज्झे छिड्डुं कयं, मज्झण्हगए चंदे सव्वरसालूहिं दव्वेहिं संजोइत्ता खीरस्स थालं भरियं सद्दाविया पेच्छइ पियइ य । उवरि पुरिसो उच्छाडेइ । अवणीए डोहले कालक्कमेण पुत्तो जाओ । चंदगुत्तो से नामं कयं । सो वि ताव संवड्ढइ । चाणक्को वि धाउबिलाणि मग्गइ । सो य दारएहिं समं रमइ । रायनीईए विभासा । चाणक्को य पढिपइ । पेच्छइ । तेण वि मग्गिओ—अम्ह वि दिज्जउ । भणइ—गावीओ लएहिं । या मारिज्जा कोइ । भणइ—वीरभोज्जा पुहई । नायं—जहा विन्नाणं पि से अत्थि । पुच्छिओ—कस्स ? त्ति । दारगेहिं कहियं—परिव्वायगपुत्तो एस । अहं सो परिव्वायगो, जामु जा ते रायाणं करेमि । सो तेण समं पलाइओ । लोगो मेलिओ ।

पाडलिपुत्तं रोहियं । नंदेण भग्गो परिव्वायगो पलाणो । अस्सेहिं पच्छओ लग्गा पुरिसा । चंदगुत्तं पउमिणीसंडे छुभेत्ता रयओ जाओ चाणक्को' नंदसंतिएण जच्चवल्हीगकिसोरगएणमासवारेण पुच्छिओ—कहिं चंदगुत्तो ? । भणइ—एस पउमसरे पविट्ठो चिट्ठइ । सो आसवारेण दिट्ठो । तओ णेण घोडगो चाणक्कस्स अप्पिओ, खडगं मुक्कं । जाव निगुडिओ, जलोयरणट्ठयाए । कंचुगं मेल्लइ ताव णेण खग्गं घेत्तूण दुहा कओ । पच्छा चंदगुत्तो हक्कारिय चडाविओ । पुणो पलाणो । पुच्छिओ णेण चंदगुत्तो जं वेलं सि सिट्ठो तं वेलं किं चिंतयं तए ? तेण भणियं—हंदि ! एवं चेव सोहणं भवइ, अज्जो चेव जाणइ त्ति । तओ णेण जाणियं—जोग्गो, न एस विपरिणमइ । पच्छा चंदगुत्तो छुहाइओ । चाणक्को तं ठवेत्ता भत्तस्स अइगओ, बीहेइ—मा एत्थ नज्जेज्जामो । डोडस्स[2] बहिं निग्गयस्स दहिकूरं गहाय आगओ । जिमिओ दारगो । अन्नत्थ समुयाणिंतो गामे परिभमइ । एगम्मि गिहे थेरीए

---

१. भिक्षामटन् । २. विप्रस्य ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुत्तभंडाणं विलेवी[1] पवड्ढिया[2]। एगेण हत्थो मज्झे छूढो। सो दड्ढो रोवइ। ताए भन्नइ—चाणक्कमंगल[3]। भेत्तुं पि न याणासि। तेण पुच्छिया भणइ—पासाणि पढमं घेप्पंति तं परिभाविय गओ हिमवंतकूडं। तत्थ पव्वयओ राया तेण समं मेत्ती कया। भणइ—नंदरज्जं समं समेण विभज्जयामो। पडिवन्नं च तेण। ओयविउमाढ़ता। एगत्थ नयरं न पडइ। पविट्ठो तिरंडी वत्थूणि जोएइ। इंद कुमारियाओ दिट्ठाओ। तासिं तेएण न पडइ। मायाए नीणावियाओ। गहियं नयरं। पाडलिपुत्तं तओ रोहियं।

नंदो धम्मदारं मग्गइ। एगेण रहेण जं तरसि तं नीणेहि। दो भज्जाओ एगा कन्ना दव्वं च नीणेइ। कन्ना निग्गच्छंती पुणो पुणो चंगुत्तं पलोएइ। नंदेण भणियं—जाहि त्ति। गया। ताए विलग्गंतीए चंदगुत्तरहे नव आरगा भग्गा। 'अमंगलं' ति निवारिया तेण। तिदंडी भणइ—मा निवारेहि। नव पुरिसजुगाणि तुज्झवंसो होही। पडिवन्नं। राउलमइगया। दो भागा कयं रज्जं। तत्थ एगा विसकन्ना आसि, तत्थ पव्वयगस्स इच्छा जाया। सा तस्स दिन्ना। अग्गिपरियंचणेण विसपरिगओ मरिउमारद्धो। भणइ—वयंस! मरिज्जइ। चंदगुत्तो 'संभामि' त्ति ववसिओ। चाणक्केण भिउडी कया इमं नीतिं सरंतेण—

तुल्यार्थं तुल्यसामर्थ्यं, मर्मज्ञं व्यवसायिनम्।
अर्द्धराज्यहरं भृत्यं यो न हन्यात्स हन्यते॥ १॥

ठिओ चंदगुत्तो। दो वि रज्जाणि तस्स जायाणि। नंदमणुस्सा य चोरियाए जीवंति। देसं अभिद्दवंति। चाणक्को अन्नं उग्गतरं चोरग्गाहं मग्गइ। गओ नयरबाहिरियं। दिट्ठो तत्थ नलदायो कुविंदो। पुत्तयडसणामरिसिओ खणिऊग बिलं जलणपज्जालणेण मूलाओ उच्छायंतो मक्कोडए। तओ 'सोहणो एस चोरग्गाहो' त्ति वाहराविओ। सम्माणिऊण य दिण्णं तस्साऽऽरक्खं। तेण चोरो भत्तदाणाइणाकओवयारा वीसत्था सव्वे सकुडुंबा वावाइया। जायं निक्कंटयं रज्जं। कोसनिमित्तं च चाणक्केण महिड्ढियकोडुंबिएहिं सद्धिं आढत्तं मज्जपाणं। वायावेइ होलं। उट्ठिऊण य तेसिं उप्फेसणत्थं गाएइ इमं पणच्चंतो गीइयं—

दो मज्झ धाउरत्ताइं, कंचणकुंडिया तिदंडं च।
राया वि मे वसवत्ती, एत्थ वि ता मे होलं वाएहि॥

---

१. महेरी—एक प्रकार का खाद्य। २. परोक्ष।
३. यहाँ मंगल शब्द समानार्थवाचक है।

M.V. 1981

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इमं सोऊण अन्नो असहमाणो कस्सइ अपयडियपुव्वं नियरिद्धिं पयडंतो नच्चिउमारद्धो। जओ—

कुवियस्स आउरस्स य, वसणं पत्तस्स रागरत्तस्स।
मत्तस्स मरंतस्स य, सब्भावा पायडा होंति॥

पढियं च तेण—

गयपोययस्स मत्तस्स, उप्पइयस्स य जोयणसहस्सं।
पए पए सयसहस्सं, एत्थ वि ता मे होलं वाएहि॥

अन्नो भणइ—

तिल आढयस्स वुत्तस्स, निप्फन्नस्स बहुसइयस्स।
तिले तिले सयसहस्सं, एत्थ वि ता मे होलं वाएहि॥

अन्नो भणइ—

णवपाउसम्मि पुन्नाए, गिरिनदियाए सिग्घवेगाए।
एगाहमहियमेत्तेण, नवणीएण पालिं बंधामि॥
—एत्थ वि ता मे होलं वाएहि॥

अन्नो भणइ—

जच्चाण णवकिसोराण, तद्दिवसेण जायमेत्ताणं।
केसेहि नभं छाएमि एत्थ वि ता मे होलं वाएहि॥

अन्नो भणइ—

दो मज्झ अत्थि रयणाइं, सालिपसूई य गद्दभीया य।
छिन्ना छिन्ना वि रुहंति, एत्थ वि ता मे होलं वाएहि॥

अन्नो भणइ—

सय सुक्किल निच्चसुयंधो, भज्ज अणुव्वय णत्थि पवासो।
निरिणो य दुपंचसओ, एत्थ वि ता मे होलं वाएहि॥

एवं नाऊण दव्वं मग्गियं जहोचियं। कोट्ठारा भरिया सालीणं, ताओ छिन्ना छिन्ना पुणो जायंति। आसा एगदिवसजाया मग्गिया एगदेवसियं नवणीयं। सुवन्नुप्पायणत्थं च चाणक्केण जंतपासयाकया। कई भणंति—वरदिन्नया। तओ एगो दक्खो पुरिसो सिक्खाविओ। दीणारथालं भरियं सो भणइ—जइ ममं कोइ जिणइ, तो थालं गिह्णउ। अह अहं जिणामि तो एगं दीणारं गिह्णामि। तस्स इच्छाए पासा पडंति। अओ न तीरए जिणिउं। जह सो न जिप्पइ एवं मणुसलंभो वि।

—उत्तराध्ययन : सुखबोध टीका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आहीरीवंचगवणिगकहाणगं

एगम्मि नयरे एगो वाणियगो अंतरावणे ववहरइ। एगा आभारी उज्जुगा दो रूवगे घेत्तूण कप्पासनिमित्तमुवट्ठिया। कप्पासो य तया समग्घो य वट्टइ। तेण वाणियगेण सगस्स रूवगस्स दो वारे तोलेउं कप्पासो दिन्नो। सा जाणइ 'दोण्ह वि रूवगाण दिन्नो' त्ति सा पोट्टलयं वंधेउं गया। पच्छा सो वाणियगो चिंतेइ—एस रूवगो मुट्टा लद्धो, तओ अहं एयं उवभुंजामि। तेण तस्स रूवगस्स समियं घयं गुलो य किणिउं घरे विसज्जियं। भज्जा संलत्ता—घयपुन्ने करेज्जासि त्ति। ताए कया घयपुन्ना।

एत्थंतरे ऊसुगो जामाउगो से सवयंसगो आगओ। सो ते य घयपूरे भुंजिउं गओ। वाणियो ण्हाओ, भोयणत्थमुवगओ। ताए साभावियं भत्तं परिवेसियं। तेण भन्नइ—किं न कया घयपूरया? ताए भन्नइ—कया, परं जामाउगेण सवयंसेण खाइया। सो चिंतेइ—पेच्छ, जारिसं कयं मया, सा वराई आभारी वंचेउं परनिमित्तं अप्पा अपुन्नेण संजोइओ। सो य सचिंतो सरीरचिंताए निग्गओ। गिम्हो य तया वट्टइ। सो य मज्झण्हवेलाए कयसरीरचिंतो एगस्स रुक्खस्स हेट्ठा वीसमइ। साहू य तेणोगासेण भिक्खनिमित्तं जाइ। तेण सो भन्नइ—भयवं! एत्थ रुक्खच्छायाए वीसमह मया समाणं ति। साहुणा भणियं— तुरियं मए नियमकज्जेण गंतव्वं।

वणिएण भणियं—किं भयवं! को वि परकज्जेणावि गच्छइ? साहुणा भणियं जहा तुमं चिय भज्जाइनिमित्तं किलिस्ससि। स मम्माणीव सिट्ठो तेणेव एक्कवयणेण संवुद्धो भणइ—भयवं तुब्भे कत्थ अच्छह? तेण भन्नइ—उज्जाणे। तओ तं साहुं कयपज्जत्तियं नाऊण तस्स सगासं गओ। धम्मं सोउं भणइ—पव्वयामि जाव सयणं आपुच्छामि। गओ नियमं घरं। वंधवे भज्जं च भणइ—

जहा आवणे ववहरंतस्स तुच्छो लाभगो ता दिसावाणिज्जं करेमि। दो य सत्थवाहा, तत्थेगो मुल्लभंडं दाऊण सुहेण इट्ठपुरं पावेइ, तत्थ य विढत्तं न किंचि गिण्हइ, वीओ न किंचि भंडमुल्लं देइ पुव्वविढत्तं च लुंपेइ, तं कयरेण सत्थेण सह वच्चामि? सयणेण भणियं—पढमएण सह वच्चसु। तेहिं सो समणुन्नाओ वंधुसंगओ गओ उज्जाणं। तेहिं भण्णइ—कयरो सत्थवाहो? तेण भण्णइ—णणु परलोगसत्थवाहो एस साहू असोगच्छायाए उवविट्ठो नियएण मंडेणं ववहरावेइ, एएण सह निव्वाणपट्टणं जामि त्ति। एवं सो पव्वइओ।

सुखबोधटीका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कविलकहाणगं

अत्थि कोसंबी नाम नयरी। जियसत्तू राया। कासवो बंभणो चोद्दसविज्जाणपारगो राइणो बहुमओ। वित्ती से उवकप्पिया। तस्स जसा नाम भारिया! तेसिं पुत्तो कविलो नाम कासवो तम्मि कविले खुड्डुलए चेव कालगओ। ताहे तम्मि मए तं पयं राइणा अन्नस्स मरुयगस्स दिन्नं। सो य आसेण छत्तेण य धरिज्जमाणेण वच्चइ। तं दट्ठूण जसा परुन्ना। कविलेण पुच्छिया। ताए सिट्ठं—जहा पिया ते एवं विहाए इड्ढीए निग्गच्छियाइओ, जेण सो विज्जासंपन्नो। सो भणइ—अहं पि अहिज्जामि। सा भणइ—इह तुमं मच्छरेण न कोइ सिक्खावेइ, वच्च सावत्थीए नयरीए पियमित्तो इंददत्तो नाम माहणो सो तुमं सिक्खावेही। सो गओ सावत्थी, पत्तो य तस्समीवं, निवडिओ चलणेसु। पुच्छिओ—कओ सि तुमं। तेण जहावत्तं कहियं, विणयपुव्वयं च पंजलिउडेण भणियं—भयवं। अहं विज्जत्थी तुम्हं तायनिव्विसेसाणं पायमूलमागओ, ता करेह मे विज्जाए अज्झावणेण पसाओ। उवज्झाएण वि पुत्तयसिणेहमुव्वहतेण भणियं—वच्छ! जुत्तो ते विज्जागहणुज्जमो, विज्जाविहीणो पुरिसो पसुणो निव्विसेसो होइ, इहपरलोए य विज्जा कल्लाणहेऊ।

ता अहिज्जसु विज्जं, साहीणाणि य तुह सव्वाणि विज्जासाहणाणि, परं भोयणं मम घरे निप्परिग्गहत्तणओ नत्थि, तमंतरेण न संपज्जए पढणं। तेण भणियं—भिक्खामित्तेण वि संपज्जइ भोयणं। उवज्झाएण भणियं—न भिक्खावित्तीहिं पढियं सक्किज्जए, ता आगच्छ पत्थेघे किंचि इब्भं तुह भोयण निमित्तं। गया ते दो वि तन्निवासिणो सालिभद्दइब्भस्स सयासं। कया पसत्थी। पुच्छिओ इब्भेण पओयणं। उवज्झाएण भणियं—एस मे मित्तस्य पुत्तो कोसंबीओ विज्जत्थी आगओ, तुज्झ भोयणनिस्साए अहिज्जइ विज्जं मम सयासे, तुज्झ महंतं पुन्नं विज्जोवग्गहकरणेण। सहरिसं च पडिवन्नं तेण। सो तत्थ जिमिउं जिमिउं अहिज्जइ। दासचेडी य तस्स परिवेसेइ। सो य सभावेण हसणसीलो, विगारबहुलयाए जोव्वणस्स दुज्जयत्तणओ कामस्स तीए अणुरत्तो, सा वि य तम्मि। भणिओ य तीए—तुमं चेव ममं पिओ, परं न तुह किंचि अत्थि। ता मा रूसेज्जसु, पोत्तमोल्लनिमित्तं अहं अन्नेहिं समं अच्छामि। पडिवन्नं तेण। अन्नया दासीण महो आगओ। सा य तेण समं निव्विन्ना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उव्विग्गा अच्छइ। तेण पुच्छिया—कओ ते अरई! तीए भण्णइ—मा अधियं करेहि, एत्थ धणो नाम सेट्ठी, अप्पहाए चेव जो णं पढमं वद्धावेइ सो तस्स दो सुवन्नमासाए देइ। तत्थ तुमं गंतूण वद्धावेहि।

'आमं' ति तेण भणिए तीए 'लोभेण अन्नो गच्छिहि' त्ति अइप्पभाए पेसिओ। वच्चंतो य आरक्खियपुरिसेहिं गहिओ बद्धो य। तओ पभाए पसेणइस्स सो उवणीओ। राइणा पुच्छिओ। तेण सब्भावो कहिओ! राइणा भणियं—जं मग्गसि, तं देमि। सो भणइ—चिंतिउं मग्गामि। राइणा 'तह' त्ति भणिए असोगवणियाए चिंतेउमारद्धो—दोहिं मासेहिं वत्थाभरणाणि न भविस्संति ता सुवन्नसयं मग्गामि, तेण वि भवणजाण-वाहणाइं न भविसंति ता सहस्सं मग्गाम्मि। इमेण वि डिंभरूवाण परिणयणाइवओ न पूरेइ लक्खं मग्गाम्मि। एसो वि सुहिसयणवंधुसम्मा-णदीणाणाहाइदाणविसिट्ठभोगोवभोगाण ण पज्जत्तो ता कोडिं कोडिसयं कोडिसहस्सं वा मग्गामि। एवमाइ चिंततो सुहकम्मोदयेण तक्खणमेव सुहपरिणाममुवगओ संवेगमावन्नो लग्गो परिभाविउं—'अहो! लोभस्स विलसियं, दोण्हं सुवन्नमासाण कज्जोणागओ लाभमुवट्ठियं दट्ठूण कोडीहिं—पि न उवरमइ मणोरहो, अन्नं च विज्जापढणत्थं विदेसमागओ जाव ताव अवहोरिऊण जणणिं अवगणिऊण उवज्झायहियउवएसं, अवमण्णिऊण कुलं, एईए इयररमणीए जाणमाणो विमोहिओ, ता अवितहमेयं।

ताव फुरइ वेरग्गु चित्ति कुललज्ज वि तावहिं,
ताव अकज्जह तणिय संक गुरुयणभय तावहि।
ताविंदियह वसाइ जसह सिरि हायइ तावहिं
रमणिहिं मणमोहणिहिं पुरिसु वसु होइ न जावहिं॥ १॥

सो सुकयकम्मु सो निउणमइ, सिवहमग्गि सो संघडिउ।
परमोहण ओसहिसरिसियहं, जो वालियहं पिढि नवि पडिओ॥ २॥

ता अलं सुवन्नेण, अलं विसयसंगेण, अलं संसारपडिवंधेण। एवमाइ भावेमाणो जाइं सरिऊण जाओ सयंबुद्धो। सयमेव लोयं काऊण देवया-विदिन्नगहियायारभंडगो आगओ राइसगासं। राइणा भणियं—किं चिंतियं? तेण य नियमणोरह वित्थरो कहिओ। पढियं च—

जहा लाभो तहा लोभो, लाभा लोभो पवड्ढइ।
दोमासकयं कज्जं, कोडीए वि न निट्ठियं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राया पहट्ठमणो भणइ—कोडिं पि देमि, गिण्हसु अज्जो। इयरेण भणियं—पज्जत्तं अत्थेण, परिचत्तो मए घरवासो, ता तुब्भे वि—

अत्थु असारउ अथिरु वंधु तणु रोगकिलंतउ,
आवइ जर वेरग्गु धरह जमु एइ तुरंतउ।
णत्थि सोक्खु संसारि किं पि जिणधम्मि पयट्टह,
पंचहं दिवसह रेसि राय! मं पाविहिं वट्टह॥

एवमाइ उवइसिऊणं धम्मलाभिऊण निग्गओ।

—सुखबोधटीका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अरिट्ठणेमि कहाणगं

एगम्मि सन्निवेसे गायाहिवस्स सुतो आसि धणनामो कुलपुत्तओ। माउलदुहिया धणवई तस्स भारिया। अन्नया ताइं गिम्हयाले मज्झण्हे गयाइं पओयणवसेणमरन्नं। दिट्ठो य तत्थ पंथपरिब्भट्ठो तण्हाछुहापरिस्समाइरेगेण निमीलिय लोयणो किच्छपाणो भूमितलमइगतो किससरीरो एगो मुणी। तं च दट्ठूण 'अहो! महातवस्सी एस कोइ इममवत्थं पत्तो' ति संजायभत्तिकरुणेहिं सित्तो जलेण, वीइतो चेलंचलेण, संवाहियाणि य धणेण अंगाइं। जातो समासत्थो. नीतो सग्गामं, पडियरिओ य पच्छाऽऽहाराईहिं। मुणिणा वि दिन्नो उचिओवएसो, जहा—इह दुहपउरे संसारे परलोगहियं अवस्सं जणेण कायव्वं, ता तुम्हे वि ताव मंस-मज्ज-पारद्धिमाईणं करेह निव्वित्तिं जइ सक्केइ पालेउं, जतो बहुदोसाणि एयाणि, तहाहि—

पंचिंदियवहभूयं, मंसं दुग्गंधमसुइ बीभत्थं।
रक्खपरितुलिय भक्खग-मामय जणयं कुगइमूलं॥ १॥

तहा—

गुरुमोह-कलह-निद्दा-परिहव-उवहास-रोस-भयहेऊ।
मज्जं दोग्गइमूलं, हिरि-सिरि-मइ-धम्मनासकरं॥ २॥

अवि य—

मज्जे महुम्मि मंसे य, नवणीयम्मि चउत्थए।
उप्पज्जंति असंखा, तव्वण्णा तत्थ जंतुणो॥ ३॥

तहा—

सपरोवघायजणया, इहेव तह नरयतिरियगइमूलं।
दुहमारणसयहेऊ, पारद्धी वेरवुड्ढिकरा॥ ४॥

इमं च सोऊण संविग्गेहिं तेहिं भणियं—भयवं! देहि अम्ह अप्पणयं धम्मं गिहत्थावत्थोचियं। तेणावि—

सो धम्मो जत्थ दया, दसट्ठदोसा न जस्स सो देवो।
सो हु गुरू जो णाणी, आरंभपरिग्गहोवरतो॥ ५॥

इच्चाइ सवित्थरं कहिऊण दिन्नो सम्मत्तमूलो य सावयधम्मो। परितुट्ठाइं ताइं अणुसासियाइं मुणिणा, जहा—

तत्थ वसेज्जा सड्ढो, जईहिं सह जत्थ होइ संजोगो।
जत्थ य चेइयभवणं, अन्न वि य जत्थ साहम्मी॥ ६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवगुरूण तिसंझं, करेज्ज तह परमवंदणं विहिणा।
तह पुप्फवत्थमाईहिं पूयणं सव्वकालं पि ॥ ७ ॥

अन्नं च—

अप्पुव्व नाणगहणं, पच्चक्खाणं सुधम्मसवणं च।
कुज्जा सइ जहसत्तिं, तवसज्झायाइं जोगं च ॥ ८ ॥

अन्नं च—

भोयणसमए सयणे, विबोहणे पसवणे भए वसणे।
पंचनमोक्कारं खलु, सुमरेज्जा सव्वकज्जेसु ॥ ९ ॥

एवमाइधम्मो थिरीकाऊण ताइं आपुच्छिऊण य गतो अहाविहारं साहू। ताइं वि कुणंति साहूवइट्ठमणुट्ठाणं, बद्धं च तेहिं तवस्सिवच्छल्लपच्चयं सुहाणुबंधि महंतं पुन्नं। अवि य—

वेयावच्चं कीरइ, समणाणं सुविहियाण जं किंचि।
पारंपरेण जायइ, मोक्खसुहपसाहगं तं पि ॥ १० ॥

पडिवन्नो य तेहिं कालेण जइधम्मो। कालं काऊण सोहम्मे सामणितो जातो धणो, इयरा वि जातो तस्सेव मित्तो। तत्थ दिव्वं सुरसुहमणुभविउं चुतो संतो धणो उववन्नो वेयड्ढे सूरतेयराइणो पुत्तो चित्तगइनामा विज्जाहरराया। धणवई वि सूररायकन्नगा होऊण जाया तस्सेव भारिया रयणवई नाम। आसेवियमुणिधम्मो माहिंदे धणो सामाणितो, इयरा य तम्मित्तो जातो। ततो चुतो धणो अवराजितो नाम राया जातो, सावि पिइमई तस्स पत्ती। काऊण समणधम्मं गयाइं आरणके कप्पे। धणो सामाणितो जाओ, इयरा वि तम्मित्तो। ततो चुओ धणो संखराया जाओ, सावि जसमई तस्सेव कंता। तत्थ संखो पडिवन्नमुणिधम्मो अरहंतवच्छल्लाइहेऊहिं निबद्धतित्थयरनामो उववन्नो अवराइयविमाणे। जसमई वि साहूधम्मपहावेण तत्थेवोववण्णा। तओ चविऊण धणो सोरियपुरे नयरे दसण्हं दसाराणं जेट्ठस्स समुद्दविजयस्स राइणो सिवादेवीए भारियाए कुच्छिंसि सोडसमहासुमिणसूइतो कत्तियकिण्हबारसीए उववन्नो पुत्तत्ताए। उचियसमएण य सावणसुद्धपंचमीए पसूया सिवादेवी दारयं। दिसाकुमारिकयजायकम्मसुरासुरविहियजम्माभिसेयाणंतरं कयं राइणा वद्धावणयं। दिट्ठो रिट्ठरयणमतो नेमी सुमिणे गब्भगए इमम्मि सिवाए त्ति 'अरिट्ठनेमि' त्ति कयं पिउणा नामं। जातो अट्ठवरिसो।

एत्थंतरे य हरिणा कंसे विणिवाए जीवजसावयणेण जायवाणमुवरिआसुरुट्ठो जरासंधो महाराया'। तया संकाए गया पच्छिम समुद्दं ते जायवा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्थ केसवाराहियवेसमणकयाए सव्वकंचणमयाए वारसजोयणायामाए नवजोयणवित्थराए वारवईए सुहेण चिट्ठंति। कालेण य निहयजरासंधा राम-केसवा भरहद्धाहिवइणो राया जाया। अरिट्ठनेमी य भयवं जोव्वणमणुपत्तो विसयपरम्मुहो विसिट्ठकीलाहिं कीलंतो सव्वजायवपिओ हिंडइ जहिच्छाए। अन्नया समाणवयवेसा—आयारेहिं निवकुमारेहिं सह रमंतो गतो हरिणो आउहसालाए, दिट्ठाइं देवयाहिट्ठियाइं अणेगाइं आउहाइं। ततो दिव्वं कालवट्ठं गेण्हंतो पाएसु निवडिऊण भणिओ आउहपालेण कुमार। किमणेण सयंभुरमणवाहतरणविब्भमेण असक्काणुट्ठाणेणं? न खलु महुमहणं वज्जिय सदेवमणुयासुरे वि लोए इमं आरोविउं कोइ सत्तो। तओ ईसिहसंतेण तमवगणिऊणं आरोवियं लीलाए, अप्फालिया जीवा। तीए रवेण य कंपिया मेइणी, थरहरिउमारद्धा गिरिणो, उत्तट्ठहियया इतो ततो पलायंति जल-थल-खहचारिणो जंतुगणा। ततो अच्चंत विम्हिया-णाऽऽरक्खियनराणं मोत्तूण कालवट्ठं पुणरुत्तं वारंताण वि गहितो पंचयण्णो संखो, आऊरितो य कोउगेण। तस्स सद्देण बहिरियं सव्वं पि भुयणं, आकंपियं सदेवमणुयासुरं पि जयं, विसेसतो सा नयरी। ततो 'किमेस पलयकालसन्निहो संखोहो?' त्ति विगप्पंतस्स हरिणो निवेइतो आउहपालेहिं। जहट्ठितो वइयरो। विम्हितो हरी। ततो मुणियकुमारसामत्थेण भणितो बलदेवो हरिणा—जस्सेरिसं बालस्स वि सामत्थं नेमिणो सो वड्ढंतो रज्जं हरिस्सइ, तो पुणो बलं परिक्खिय रज्जरक्खोवायं चिंतेयो।

बलदेवेण भणियं अलमेयाए संकहाए त्ति,
जह चिंतिय दिण्णफलो एसो पणईण कप्परुक्खोव्व।
सो कह नरिंद! रज्जं, घेप्पइ कुमरो तुमाहिंतो॥

जेण पुव्वं केवलिनिद्दिट्ठो उप्पण्णो एस बावीसइमो नेमितित्थयरो, तुमं पुण भरहद्धसामो नवमवासुदेवो, ता एस भयवं कयरज्जो परिचत्त-सयलसावज्जजोगो पव्वज्जं काहिति। अणुदियहंपि रज्जहरणसंकाए वारिज्जंतेणावि हरिणा उज्जाणमुवगतो भणितो नेमीकुमार! निय-नियबल-परिक्खणनिमित्तं बाहुजुद्धेण जुज्झामो। नेमिणा भणियं—किमणेण बुहजणणिंदणिज्जेण इयरजणबहुमएणं बाहुजुज्झववसाएणं? विउसजणपसंसणिज्जेणं वायाजुज्झेण जुज्झामो, अण्णं च मए डहरएण तुज्झाभिभूयस्स महंतो अयसो। हरिणा पलत्तं—केलीए जुज्झंताणं केरिसो अयसो? ततो पसारिया वामा बाहुलया नेमिणा—एयाए नामियाए विजितो मित्ति। अवि य—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवहासं खलु जम्हा, तुज्झ गोविंद तेण बाहाए।
बालियमित्ताए च्चिय, विजितो हं नत्थि संदेहो ॥ १ ॥

अंदोलिया वि दूरं, नियसामत्थेण विण्हुणा बाहा।
थेवं पि सा न चलिया, यणं व मयणस्स बाणेहिं ॥ २ ॥

एवं च विनियत्तरज्जहरणसंकस्स दसारचक्कपरिवुडस्स हरिणो समइक्कंतो कोइ कालो। अन्नया संपत्तजोव्वणं विसयसुहनिप्पिवासं नेमिं निएऊण भणितो समुद्दविजयाइणा दसारचक्केण केसवो—तहा उवयरसु कुमारं जहाझत्ति पयट्टए विसएसु। तेण वि भणियातो रुप्पिणि-सच्चभामापमुहातो नियभारियाओ। ताहिं वि जहावसरं सपणयं भणितो एसो कुमारो—सव्वतिहुयणाइक्कंतं तुह रुवं, निरुवमसोहग्गाइगुणोववेयं निरामयं देहं, सुरसुंदरीण वि उम्मायजणणं तारुण्णं, ता अणुरूवदारसंगहेण करेसु सफलं दुल्लहलंभ मणुयत्तणं। ततो हसिऊण भणियं नेमिनाहेणमुद्दातो! असुइरूवाणं बहुदोसालयाणं तुच्छसुहनिबंधणाणं अथिरसंगमाणं रमणीणं संगेण न होइ सफलं नरत्तणं।

अवि य एगंतसुद्धाए निक्कलंकाए निरुवमसुहाए सासयसंजोगाए सिद्धिवहूए चेवोवज्जणेण तस्स सफलत्तं। जओ—

माणुसत्ताइसामग्गी, तुच्छभोगाणकारणे।
कोडिं वराडियाए व्व, हारिंति अबुहा जणा ॥ १ ॥

अहं सिद्धिनिमित्तमेव जइस्सं। साहितो ताहिं कुमाराभिप्पातो हरिणो। तओ तेण सयं चिअ भणिओ नेमी-कुमार। उसभाइणो वि तित्थयराकाऊण दारसंगहं जणिऊण तणए पूरिऊण पणइजणमणोरहे पच्छिमवयम्मि पव्वइया तहा वि संपत्ता मोक्खं, तो एस परमत्थो—दारसंगहेण पूरेसु दसारचक्कस्स मणोरहे। ततो निव्वंधं नाऊण भाविपरिणामं च वियाणंतेण पडिवन्नं हरिवयणं नेमिणा। कहियं च तं दसारचक्कस्स हरिणा। तेण वि संजायहरिसाइरेगेण भणितो हरी—वरेसु कुमाराणुरूवं रायकुमारियं। दिट्ठा गवेसंतेण उग्गसेणरायदुहिया रायमई कन्नगा। सा पुणधणवइजीवो अपराजियविमाणातो चविऊण य तत्थोववन्ना। ततो 'सा चेवाणुरूव' त्ति मग्गितो उग्गसेणो। तेण वि सहरिसेण 'मणोरहाइरित्तो एस अणुग्गहो' त्ति भणिऊण दिन्ना। ततो कारावियं दोसु वि कुलेसु वद्धावणयं। अन्नदियहम्मि कारावितो वारेज्जमहूसवो। तओ निव्वत्तिएसु तयणुरूवेसुभत्तवत्थालंकाराईसु करणिज्जेसु परमाणंदेण पत्तो वारिज्जियवासरो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहाविहिं पउंखियारायमई, कया सव्वालंकारसारा। कुमारो वि पसाहिओ दिव्वरमणीहिं समारूढो मत्तवारणं। समागया दसारा[1] सह बलदेव वासुदेवेहिं। समाहयाइं तूराइं, ऊसियं[2] सियायवत्तं,[3] आऊरिया जमलसंखा, पगाइयाइं, मंगलाइं, जयजयाविंयं मागहेहिं। ततो थुव्वंतो नरदेवसंघेण अहिलसिज्जंतो सुरनररमणीहिं पेच्छिज्जंतो सव्वलोएणं महाविच्छड्डेण पत्तो विवाहमंडवासन्नं। रायमई वि नेमिकुमारं दट्ठूण आणंदपरव्वसा संजाया। अवि य-का हं? किमेत्थ वट्टइ? कत्थ व चिट्ठामि? को इमो कालो? जिणदंसणुत्थपहरिस-हरियमणा वेयइ न किंपि।

एत्थंतरे कलुणरावे सोऊण जाणंतेण वि नेमिनाहेण पुच्छितो सारही—भो! काण पुण मरणभीरुयाणं च एस कलुणो सद्दो? तेण कहियं—देव! एए हरिणाइणो सत्त तुज्झ वारेज्जयपरमाणंदे वावाइय लोगो भोयाविज्जिस्सइ। ततो तस्साऽऽहरणाणि पणामिऊण भणिया लोगा नेमिणा—'भो! भो! केरिसो परमाणंदो जम्मि निरवराहाण दीणाण भीयाण एयाण वहो कीरइ? ता किं इमिणा संसारपरिभमणहेउणा वारिज्जएणं? ति भणिऊण वालाविओ करी। सारहिणा वि भयवओ अहिप्पायं नाऊण मोइया ते सत्ता। नेमिं च वलंतं विरत्तचित्तं पेच्छिय अयंडवज्जपहारताडियव्व मुच्छावसेण निवडिया धरणीए रायमई। ससंभमेण य सहीयणेण सित्ता सीयलजलेण, वीइता तालविंटेण, लद्धचेयणा पभणिउं पयत्ता—अहो! मे मूढया जमप्पाणमयाणिऊण अच्चंतदुल्लहे भुवणनाहे अणुरायं कुणंतीए लहुईकतो अप्पा, किं कयाइ कायकंठिया परममोत्तियहारसंगं पावई? गुरुयाणुराएण जिणमुद्दिसिउं विलवइ—

धी मे सुकुलुप्पत्ती, धी रूवं जोव्वणं च मे नाह।
धी मे कलाकुसलया पणिवज्जियं जं तुमे चत्ता॥

एवं च महासोयभरोत्थया विलवंती 'पियसहितो! उल्लंघणिज्जो दिव्वपरिणामो, ता अवलंबेसु धीरयं, अलमेत्थ विलविएणं, सत्तपहाणतो होंति रायधूयाओ' त्ति भणिऊण संठविया सा सहियणेण। भणियं च तीए पियसहीतो! अज्ज चेव मे सुमिणए आगतो एरावणारूढो वहुदेवदाणवपरिवुडो दुवारदेसे एगो दिव्वपुरिसो, तक्खणं च नियत्तिय सो समारूढो सुरसेलं, निसन्नो सीहासणे, अणेगे समागया जन्तुणो, अहं वि तत्थेव गया, सो चउरो चउरो सारीरमाणसदुहपणासगाणि

---

१. समुद्रविजयादि दस यादव। २. ऊंचा किया।
३. श्वेतातपत्र—छाता या छत्र।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कप्पपायवफलाणि तेसिं दिंतो मए भणिओ—भयवं ! मम वि देसु इमाणि, दिन्नाणि त तेण, तयणंतरं च पडिबुद्धा अहं। सहीहिं भणियं: पियसहि ! मुहकडुओ वि ते एस सुमिणतो झत्ति परिणामसुन्दरो होहित्ति। इतो ततो नियत्तो नेमिनाहो। चलियासणेहिं पडिबोहिओ 'भयवं सव्व जगज्जीवहियं तित्थं पवत्तेहिं' त्ति भणंतेहिं लोगंतिअदेवेहिं पव्वज्जिओ नेमिनाहो।

—सुखबोध टीका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इब्भपुत्तकहाणगं

एगम्मि किर नयरे का वि गणिया रूववती गुणवती परिवसइ। तीसे य समीवे महाधणा रायाऽमच्च–इब्भपुत्ता उवगया परिभुत्तविभवा वच्चंति। सा य ते गमणनिच्छए पभणइ—जइ अहं परिचित्ता, निग्गुणओ ता किंचि सुमरणहेउं घेप्पउ। एवं भणिआ य ते हारअद्धहार–कडग–केऊराणि तीय परिभुत्ताणि गहाय वच्चंति। कयाइं च एगो इब्भपुत्तो गमणकाले तहेव भणितो। सो य पुण रयणपरिक्खाकुसलो। तेण य तीसे कणगमयं पायपीढं पंचरयणमंडियं महामल्लं दिट्ठं। तेण भणिया—सुंदरि! जइ मया अवस्सं घेत्तव्वं तो इमं पायपीढं तव पादसंसग्गिसुभगं, एएण मे कुणह पसायं। सा भणति—किं एएणं ते अप्पमोल्लेणं? अन्नं किंचि गिण्हसु त्ति। सो विदियसारो, तीए वि दिन्नं, तं गहेऊणं तओ सविसए रयण-विणिओगं काऊण दीहकालं सुहभागी जाओ। एस दिट्ठंतो।

अयमुपसंहारो—जहा सा गणिया, तहा धम्म सुई। जहा ते रायसुयाई तहा सुर–मणुयसुहभोगिणो पाणिणो। जहा आभरणाणि, तहा देसविरति-सहियाणि तवोवहाणाणि। जहा सो इब्भपुत्तो, तहा मोक्खकंखी पुरिसो। जहा परिच्छाकोसल्लं, तहा सम्मणाणं। जहा रयणपायपीढं, तहा सम्म-दंसणं। जहा रयणाणि तहा महव्वयाणि। जहा रयणविणिओगो, तहा निव्वाणसुहलाभो त्ति।

किञ्च—

वरं प्रवेष्टुं ज्वलितं हुताशनं न चापि भग्नं चिरसंचितं व्रतम्।
वरं हि मृत्युः सुविशुद्धकर्मणो, न चापि शीलस्खलितस्य जीवितम्॥१॥

अवि य—

निम्मम निरहंकारा, उज्जुत्ता संजमे तवे चरणे।
एगक्खेत्ते वि ठिया, खवंति पोराणयं कम्मं॥ २॥

तहा य—

एगो जायइ जीवो एगो मरिऊण तह उवज्जेइ।
एगो भमइ संसारे एगो चिय पावए सिद्धिं॥ ३॥
सव्वे वि दुक्खभीरु सव्वे वि सुहाभिलासिणो जीवा।
सव्वे वि जीवणप्पिया सव्वे मरणाओ बीहेंति॥ ४॥

अवि य—

धम्मो मंगलमउलं ओसहमउलं च सव्वदुक्खाणं।
धम्मो बलमवि विउलं धम्मो ताणं च सरणं च॥ ५॥

—वसुदेवहिंडी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुवेरदत्ताकहाणगं

महुराए नयरीए कुवेरसेणा गणिआ पढमगब्भदोहलखेदिया जणणीए तिगिच्छियस्स दंसिआ। तेण भणिया—जमलगब्भदोसेण एईसे परिवाहा, नत्थि कोइ वाहिदोसो दीसइ। एवमुवलद्धत्थाय जणणीए भणिया—पुत्ति! पसवणकालसमए मा णे सरीरपीडा भवेज्जा, गालणोवायं गवेसामि, तओ निरामया भविस्ससि, परिभोगवाधाओ य न होहिति, गणियाए य किं पुत्तमंडेहिं? तीए न इच्छियं, भणइ जायपरिच्चायं करिस्सं। तहाणुमए य समए पसूया दारगं दारिगं च। जणणीए भणिया उज्झिज्जंतु। तीए भणियं दसरायं ताव पूरिज्जउ। तओ अ णाए दुवे मुद्दाओ कारियाओ नामं कियाओ—कुवेरदत्तो कुवेरदत्ता य।

अतीत दसराइए डहरिकासु नावासु सुवण्णरयणपूरिआसु छोढूण जउणाए पवाहियाणि। वुज्झंतावि य भवियव्वयाए सोरियनयरो पच्चूसे दोहिं इब्भदारएहिं दिट्ठाणि। धरियाउ नावाउ। गहिओ एगेण दारगो, इक्केण दारिया। 'सधणाइं' ति तुट्ठेहिं सयाणि गिहाणि नीयाणि त्ति। कमेण परिवड्ढियाणि पत्तजोव्वणाणि 'जुत्त संबंधो त्ति कुवेरदत्ता कुवेरदत्तस्स दिन्ना। कल्लाणदिवसेसु य वट्टमाणेसु बहुसहीहिं वरेण सह जूयं पयोजितं। नाममुद्दा य कुवेरदत्तहत्थाओ गहेऊण कुवेरदत्ताए हत्थे दिण्णा। सीसे पेच्छमाणीए सरिसघडणनामतो चिंता जाया—केण कारणेण भन्ने नाम-मुद्दाकारसमया इमासिं मुद्दाणं? ण य मे कुवेरदत्ते भत्तारचित्तं, न य अम्हं कोइ पुव्वजो एयनामो सुणिज्जइ, तं भवियव्वं एत्थ रहस्सेणंति चिंतेऊण वरस्स हत्थे दो वि मुद्दाउ ठावियाओ। तस्स वि पस्समाणस्स तहेव चिंता समुप्पन्ना। सो वहूए मुद्दं अप्पेऊण माउसमीवं गतो। सा य णेण सवहसाविया पुच्छिया 'तीए जहासुतं कहियं' तेण भणिया—अम्मो! अजुत्तं वे (भे) जाणमाणेहिं कयं ति। सा भणइ 'मोहियामो, तं होउ पुत्त। वधूहत्थग्गहणमेत्तदूसिआ, न एत्थ पावगं। अहं विसज्जेहामि दारिगं सगिहं। 'तत्र पुण दिसाजत्तातो पडिनियत्तस्स विसिट्ठं संबंधं करिस्सं' एवं वोत्तूण कुवेरदत्ता सगिहं पेसिया। तीइवि जणणी तहेव पुच्छिया। तीए जहावत्तं कहियं।

सा तेण निव्वेएण समाणी पव्वइया, पवत्तिणीए सह विहरइ 'मुद्दा य णाए सारक्खिया पवत्तिणिवयणेण। विसुज्झमाणचरित्ताए ओहिनायं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुप्पन्नं। आभोइओ अ णाए कुबेरदत्तो कुबेरसेणाए गिहे वत्तमाणो। 'अहो' 'अन्नाण दोसु' त्ति चिंतेऊण तेसिं संबोहणनिमित्तं अज्जाहिं समं विहरमाणो महुरं गया, कुबेरसेणाए गिहे वसहिं मग्गिऊण ठिया। तीए वंदिऊण भणिया—अज्जाओ! अहं नाम गणिया कुलवहूचिट्ठिया, असं-कियाउ वसहित्ति। तीसे य दारगो बालो, सा तं अभिक्खं, साहुणीसमीवे निक्खिवइ। तओ तेसिं खणं जाणिऊण अज्जा पडिबोहनिमित्तं दारगं परियंदेइ।

बालय! भाया सि मे, देवरो सि मे, पुत्तो सि मे, सवत्तिपुत्तो सि मे, भत्तिज्जओ सि मे, जस्स आसि पुत्तो सो वि मे भाया, भत्ता, पिया, पिआमहो, ससुरो, पुत्ता वि; जीसे गब्भजा सि सा वि मे माया, सासू, सवित्ती, भाउज्जाया, पियामही, वधू।

तं च तहाविहं परियंदणयं सोऊण कुबेरदत्तो वंदिऊण पुच्छइ—अज्जे! कह इमं च कस्स विसद्धसंबद्धकित्तणं? उदाहु दारग विणोयणत्थं अजुज्जमाणं भणियं। एवं पुच्छिए अज्जा भणइ—सावग! सच्चं एयं। तओ अ णाए ओहिणा दिट्ठं तेसिं दोण्ह वि जणाणं सपच्चयं कहियं, मुद्दा य दंसिया। कुबेरदत्तो य तं सोऊण जायतिव्वसंवेगो अहो! अन्नाणेण अपदं कारिओ त्ति विभवं दारगस्स दाऊणं, अज्जाए कयनमोक्कारो तुम्हेहिं मे कओ पडिबोहो, करिस्सं अत्तणो पत्थं ति तुरियं निग्गओ, साहुसमीवे गहियलिंगाऽऽयारो, अपरिवडियवेरग्गो, तवोवहाणेहिं विगिट्ठेहिं खवि-अदेहो गओ देवलोयं। कुबेरसेणा वि गहियगिहवासजोगनियमा साणुक्कोसा ठिया। अज्जा वि पवत्तिणीसमीवं गया। उक्तं च—

विसया विसं व विसमा विसया वेसानरव्व दाहकरा।
विसया पिसायविसहरवाघाणसमा मरणहेऊ॥ १॥

तो भे भणामि सावय विसयसुहं दारुणं मुणेऊणं।
चवलतडिविलसियं पिव मणुयत्तं भंगुरं तहय॥ २॥

सुयणसमागमसोक्खं चवलं जोव्वणं पिय असारं।
सोक्खनिहाणंमि सया धम्मंमि मइं दढं कुणसु॥ ३॥

अवि य—

गयकण्णचंचलाओ लच्छीओ नियसचावसारित्थं।
विसयसुहं जीवाणं बुज्झसु रे जीव! मा मुज्झ॥ ४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जह संझाए सउणाण संगमो जह पहे य पहिआणं।
सयणाणं संजोगो तहेव खणभंगुरो जीव ॥ ५ ॥
जीअं जलविन्दुसमं संपत्तीओ तरंगलोलाओ।
सुमिणयसमं च पिम्मं जं जाणसु तं करिज्जासु ॥ ६ ॥
कुसग्गे जह ओसबिंदुए थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए।
एवं मणुआणं जीवियं समयं गोयम मा पमायए ॥ ७ ॥

—वसुदेवहिंडी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धुत्तसियालकहाणगं

सियालेण भमंतेण हत्थी मओ दिट्ठो 'सो चिंतेइ—"लद्धो मए उवाएण ताव णिच्छएण खाइयव्वो"। जाव सिंहो आगओ।

तेण चिंतियं—"सचिट्ठेण ठाइयव्वं एयस्स"।

सिंहेण भणियं—"किं अरे! भाइणेज्ज! अच्छिज्जइ"।

सियालेण भणियं—आमं ति माम।

सिंहो भणइ—"किमेयं मयं?" ति।

सियालो भणइ—"हत्थी"।

केण मारिओ?

वग्घेण।

सिंहो चिंतेई—"कहं अहं ऊणजातिएण मारियं भक्खामि"।

गओ सिंहो। णवरं वग्घो आगओ। तस्स कहियं "सीहेण मारिओ, सो पाणियं पाउं णिग्गओ।

वग्घो णट्ठो। जाव काओ आगओ। सियालेण चिंतियं—
"जइ एयस्स ण देमि तओ 'काउ,' 'काउ' त्ति वायससद्देणं अण्णे कागा एहिंति 'तेसिं कागरडणसद्देणं सियालादि अण्णे बहवे एहिंति, कित्तिया वारेहामि? ता एयस्स उवप्पयाणं देमि"।

तेण तओ तस्स खंडं घित्ता दिण्णं। सो तं घेत्तूण गओ।

जाव सियालो आगओ। तेण णायं एयस्स हठेण वारणं करेमि त्ति भिउडिं काऊण वेगो दिण्णो। णट्ठो सियालो।

उक्तं च—

> उत्तमं प्रणिपातेन शूरं भेदेन योजयेत्।
> नीचमल्पप्रदानेन, सदृशं च पराक्रमैः॥ १॥

अवि य—

> जाइं रूवं विज्जा तिन्नि वि गच्छंतु कन्दरे विवरे।
> अत्थो च्चिय परिवड्ढउ जेण गुणा पायडा हुन्ति॥ २॥

—दशवैकालिकवृत्तिः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवासगे कुंडकोलिए

तेणं कालेणं तेणं समएणं कम्पिल्लपुरे नाम नयरे होत्था। तस्स कम्पिल्ल-पुरस्स नयरस्स बहिया सहस्सम्बवणे नाम उज्जाणे। तत्थं णं कम्पिल्ल-पुरे नयरे जियसत्तू राया होत्था।

तत्थं णं कम्पिल्लपुरे कुण्डकोलिए नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे... दित्ते अपरिभूए। तस्स णं कुण्डकोलियस्स पूसा नामं भारिया होत्था, कुण्डकोलिएणं गाहावइणा सद्धिं अणुरत्ता, अविरत्ता, इट्ठा, पञ्चविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ।

तस्स णं कुण्डकोलियस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीयोनिहाण-पउत्ताओ, छ हिरण्यकोडीयो वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीयो, छ वया दसगोसाहस्सिएण वएणं होत्था।

से णं कुण्डकोलिए गाहावई बहुणं सत्थवाहाणं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य णं कुटुंबस्स मेढी, पमाणं, आहारे सव्वकज्जवड्ढाव ए वायि होत्था।

तेणं कालेण तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समो सरिए। परिसा निग्गया। जियसत्तू निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पज्जुवासइ।

तए णं कुण्डकोलिए गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे सयाहो गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता कम्पिल्लपुरं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव सहस्सम्बवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ करित्ता वन्दइ नमंसइ...पज्जुवासइ।

तए णं समणे भगवं महावीरे कुण्डकोलियस्स गाहावइस्स वीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ—

तए णं से कुण्डकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे एवं वयासी—

"सद्दहामि णं भन्ते! निग्गन्थं पावयणं, पत्तियामि णं भन्ते! निग्गन्थं पावयणं, रोएमि णं भन्ते! निग्गन्थं पावयणं एवमेयं भन्ते! तहमेयं भन्ते! अवितहमेयं भन्ते! इच्छियमेयं भन्ते! से जहेयं तुब्भे वयह, त्ति कट्टु जहा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए बहवे, राईसर—तलवर—माडम्बिय—कोडुम्बिय सेट्ठि—सत्थवाहप्पभिइया मुण्डा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुण्डे भवित्ता पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए पञ्चाणुव्वइय, सत्तसिक्खावइयं, दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि।"

"अहासुहं, देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह"।

तए णं से कुण्डकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइय, सत्तसिक्खावइयं, दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वन्दइ वन्दित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियाओ सहस्सम्बवणाओ उज्जाणओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव कम्पिल्लपुरे नयरे, जेणेव सएगिहे, तणेव उवागच्छइ।

तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ बहिया जणवयविहारं विहरइ।

तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे उवलद्ध पुण्णपावे आसवसंवरनिज्जरकिरिया—अहिगरणबंधमुक्खकुसले, असहेज्जे देवासुरनागसुवण्णजक्खरक्खसकिंनरकिंपुरिसगरूलगंधव्वमहोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गन्थे पावयणे निस्संकिये, निक्कंखिये, निव्वितिगिच्छे, अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते 'अयं आउसो। निग्गंठे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे" असियफलिहे अवंगुयदुवारे, चियत्तंतेउरपरघरदारप्पवेसे, चउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडि पुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेत्ता समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुछणेणं ओसह भेसजेणं पाडिदारिएणं य पीढ़फलगसेज्जासंथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ।

तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासये अन्नया कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयसि जेणेव असोगवणिया, जेणेव पुढविसिलापट्टए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नाममुद्दगं च उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टएठवेइ, ठवित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णति उवसम्पज्जिताणं विहरइ। तए णं तस्स कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तए णं से देवे नाममुद्दं च उत्तरिज्जं च पुढविसिलापट्टयाओ गेण्हइ, गेण्हित्ता सखिखिणि अन्तलिक्खपडिवन्ने कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वायसी।

"हं भो कुण्डकोलिया समणोवासया! सुन्दरी णं देवाणुप्पिया गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्ती, नत्थि उट्ठाणे इ वा, कम्मे इ वा बले इ वा कम्मे इ वा वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे इवा, नियया सव्वभावा, मङ्गुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती; अत्थि उट्ठाणे इ वा.....जाव परक्कमे इ वा, अणियया सव्वभावा"।

तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वायसी—

"जइ णं देवा! सुन्दरी गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती, मङ्गुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती, तुमे णं, देवा! इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किणा लद्धे किणा पत्ते अभिसमन्नागए, किं उट्ठाणेणं...जाव पुरिसक्कारपरक्कमेणं ?" उदाहु अणुट्ठाणेणं अक्कमेणं...जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं ?"

तए णं से देवे कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वायसी एवं खलु देवाणुप्पिया। मए इमेयारूवा दिव्वा देविड्ढी अणुट्ठाणेणं...जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया।"

तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वायसी "जइ णं देवा! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी....अणुट्ठाणेणं...जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणे इ वा... ते किं न देवा? अह णं, देवा। तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी.... उट्ठाणेणं...जाव परक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया तो जं वदसि 'सुन्दरी णं गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती, मङ्गुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती त्तं ते मिच्छा।"

तए णं से देवे कुण्डकोलिएणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे सङ्किए, कङ्खिए, विइगिच्छासमावन्ने कलुस्स भावन्ने नो संचाएइ कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स किंचि पमोक्खं आइक्खित्तए, नाममुद्दयं च उत्तरिज्जयं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

(उवासगदसाओ-अध्ययनम् ६)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रोहिणीए दृक्खत्तणं

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नाम नयरे होत्था। तत्थ णं रायगिहे णयरे सेणिए नामं राया होत्था।

तत्थं णं रायगिहे नयरे धण्णे नामं सत्थवाहे परिवसति अड्ढे, दित्ते, विउलभत्तपाणे अपरिभूए। तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था, अहीण पंचिंदियसरीरा, कंता पियदंसणा, सुरूवा।

तस्स णं धन्नस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्था, तं जहा—धणपाले, धणदेवे, धणगोवे धणरक्खिए।

तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, तं जहा—उज्झिया, भोगवतिया, रक्खतिया, रोहिणिया।

तते णं तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था—

"एवं खलु अहं रायगिहे णयरे बहूणं राईसर पभिईणं सयस्स कुडुंवस्स बहूसु कज्जेसु य करणिज्जेसु य कुडुंबेसु य मंतणेसु गुज्झे, रहस्से निच्छए, ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाणे, आहारे, आलंबणे, चक्खुमेढीभूते सव्वकज्जवड्ढावए।

तं ण णज्जइ जं मए गयंसि वा चुयंसि वा मयंसि वा भग्गंसि वा लुग्गंसि वा सडियंसि वा पडियंसि वा विदेसत्थंसि वा विप्पवसियंसि इमस्स कुडुंवस्स किं मन्ने आहारे वा आलंबे वा पडिबन्धे वा भविस्सति?

"तं सेयं खलु मम कल्लं विपुलं असणं पाणं खादिमं सादिमं उपक्खडावेत्ता मित्तणातिणियगसयणसंबंधिपरियणे, चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेत्ता तं मित्तणाइणियगसयण० चउण्हं य सुण्हाणं, कुलघर-वग्गं विपुलेणं असणपाणखादिमसादिमेणं धूवपुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाति० चउण्हं य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरतो चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्टयाए पंच पंच सालिअक्खए दलइत्ता जाणमि तावका किहं वा सारक्खेइ वा सगोवेई संवड्ढेति वा?"

एवं संपेहेइ संपेहित्ता मित्तणाति० चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ, आमंतित्ता विपुलं असणं पाणं खादिमं सादिमं.....जाव सक्कारेति समाणेति, सक्कारिता सम्माणित्ता तस्सेव मित्तणाति० चउण्हं य सुण्हाणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुलघरवग्गस्य पुरतो पंच सालि अक्खए गेण्हति, गेण्हित्ता जेट्ठा सुण्हा उज्झितिया तं सद्दावेति, सद्दवित्ता एवं वदासी—

"तुमं णं पुत्ता! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, गेण्हित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणी संगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं पुत्ता! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदिज्जाएज्जासि" त्ति कट्टु सुण्हाए हत्थे दलयति, दलइत्ता पडिविसज्जेति।

ततो णं सा उज्झिया धण्णसा "तह त्ति" इयमट्ठं पडिसुणेति पडिसुणित्ता धण्णस्स सत्थवाहस्स, हत्थाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हति, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमति, एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थए समुप्पज्जेत्था—

"एवं खलु तयाणं कोट्ठागारंसि वहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति, तं जया णं मम ताओ इमे पंच सालिअक्खए जाएस्सति, तया णं अहं पल्लंतराओ अन्ने पंच सालिअक्खए गहाय दाहामि" त्ति कट्ठु कट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता ते पंच सालिअखए एगंते एडेति, पडित्ता सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था। एवं भोगवतीयाए वि, णवरं सा छोल्लेति, छोलित्ता अणुगिलति अणुगिलित्ता सकम्मसंजुत्ता जाया। एवं रक्खिया वि नवरं गेण्हति गेण्हित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जेत्था—

एव खलु मम ताओ इमस्स मित्तणाति चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरतो सद्दावेत्ता एवं वयासी—'तुमं णं पुत्ता। मम हत्थाओ...जाव पडिदिज्जाएज्जासि ति कट्टु मम हत्थसि पंच सालिअक्खए दलयति, तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं" ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता ते पंच सालि अक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवेइ, पक्खिवेइ, पक्खिवित्ता ऊसीसामूले ठावेइ, ठावित्ता तिसंझं पडिजागरमाणी विहरइ।

तए णं से धण्णे सत्थवाहे तस्सेव मित० जाव चउत्थिं रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेति सद्दावित्ता...जाव "तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं, तं सेयं खलु मम एए सालिअक्खए सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए, संवड्ढमाणीए" ति कट्टु एवं संपेहेति संपेहित्ता कुलघरपुरिसे सद्दवेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—

"तुब्भे णं देवाणुप्पिया! एते पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकरेह कम्मियं करित्ता इमे पंच सालिअक्खए वावेह वावित्ता दोच्चंपि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्खयनिक्खए करेह करित्ता वाडिपक्खेवं करेह, करित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणुपुव्वेणं संवड्ढेह"।

तते णं ते कोडुंबिया रोहिणीए एतमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ते पंच सालिअक्खए गेण्हंति, गेण्हित्ता अणुपुव्वेण सारक्खंति संगोवंति विहरंति।

तए णं ते कोडुंबिया पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डायं केदारं सुपरिकम्मियं करेंति, करित्ता ते पंच सालि अक्खए ववंति ववित्ता दोच्चपि तच्चंपि उक्खयनिहए करेंति करित्ता वाडिपरिक्खेवं करेंति करित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेमाणा विहरंति। तते णं ते सालीअक्खए अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा साली जाया किण्हा किण्होभासा। निउरंबझया पासादीया, दंसणीया, अभिरूवा, पडिरूवा।

तते णं ते साली पत्तिया, वत्तिया, गब्भिया, पसूया, आगयगंधा, खीरइया, बद्धफला, पक्का परियागया सल्लइया पत्तइया हरियपव्वकंडा जाया यावि होत्था।

तते णं ते कोडुंबिया ते सालीए पत्तिए...जाव सल्लइए पत्तइए जाणित्ता तिक्खेहि णवपज्जणएहि असियएहिं लुणेंति, लुणिता करयलमलिते करेंति, करित्ता पुणंति, तत्थ णं चोक्खाणं, सूयाणं, अखंडाणं, अफोडियाणं छडुछड्डापूयाणं सालीणं मागहए पत्थए जाए।

तते णं ते कोडुंबिया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवंति, पक्खिवित्ता उपलिंपंति उपलिंपित्ता लंछियमुद्दते करेंति, करित्ता कोट्ठागारस्स एगदेसंसि ठावेंति, ठावित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरति।

तते णं ते कोडुंबिया दोच्चम्मि वासारत्तंसि पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति, करित्ता ते साली ववंति दोच्चं पि तच्चं पि उक्खयणिहए......जाव लुणेंति..... जाव चलणतलमलिए करेंति, करित्ता पुणंति, तत्थ णं सालीणं बहवे कुडए जाए...... जाव एगदेसंसि ठावेंति, ठावित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरंति।

तते णं ते कोडुंबिया तच्चंसि वासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि बहवे केदारे सुपरिकम्मिए करेंति, ...जाव लुणेति, लुणित्ता संवहंति, संवहित्ता खलयं करेति, करित्ता मलेंति,........जाव बहवे कुंभा जाया।

तते णं ते कोडुंबिया साली कोट्ठागारंसि पक्खिवंति.......जाव विहरंति। चउत्थे वासारत्ते बहवे कुंभसया जाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तते णं तस्स धण्णस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि पुव्वर-त्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था—

एवं खलु मम इओ अतीते पंचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए ते पंच सालिअक्खता हत्थे दिन्ना। तं सेयं खलु ममं कल्लं पंच सालिअक्खए परिजाइतए, जाणामि ताव काए किहं सारक्खिया वा सगोविया वा संवड्ढिया ? त्ति कट्टुकट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता कल्लं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं........जाव सम्माणित्ता वस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—

"एवं खलु अहं पुत्ता। इतो अतीते पचमंसि संवच्छरंसि इमस्स मित्तणाइ० चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरतो. तव हत्थंसि पंचसालिअक्खए दलयामि, 'जया णं अहं पुत्ता! एए पंच सालिअक्खए, पाडिदुज्जाएसि' त्ति कट्टु तं हत्थंसि दलयामि, से नूण पुवा अट्ठे समट्ठे ?"

"हंता अत्थि"

"तं णं पुत्ता! मम ते सालि अक्खए पडिनिज्जाए हि।"

तते णं सा उज्झितिया एयमट्ठं धण्णस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पल्लातो पंच सालिअक्खए गेण्हति, गेण्हित्ता, जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी—

"एए णं ते पंच सालिअक्खए" त्ति कट्टु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थंसि ते पंच सालिअक्खए दलयति। तते णं धण्णे सत्थवाहे उज्झियं सवहसावियं करेति, करित्ता एवं वयासी—

"किं णं पुत्ता! एए चेव पंच सालिअक्खए उदाहु अन्ने ?"

तते णं उज्झिया धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी—

"तं णो खलु ताओ! ते चेव पंच सालिअक्खए एएणं अन्ने"।

तते णं से धण्णे उज्झियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म असुरुत्ते मिसिमिसे माणे उज्झितियं तस्स मित्तनाति० चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झियं च छाणुज्झियं च कयवरुज्झियं च समुच्छियं च सम्मज्जिअं च पाउवदाइं च ण्हाणोवदाइं च वाहिरपेसणकारि ठवेति।

एवामेव समणाउसो। जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वतिते पंच य से महव्वयाति उज्झियाइं भवंति, से णं इह भवे चेव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं हीलणिज्जे संसारकंतारं अणुपरियट्टइस्सइ, जहा सा उज्झिया।

एवं भोगवइया वि। नवरं तस्स कुलघरस्स कंडितियं च कोट्टतियं च पीसतियं च एवं रुधंतियं च रंधतियं च परिवेसंतियं च परिभायंतियं च अब्भितरियं च पेसणकारिं महाणसिणिं ठवेइ।

एवामेव समणाउसो। जो अम्हं समणो वा समणी वा पंच य से महव्वयाइं फोडियाइं भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं, बहूणं सावयाणं, बहूणं सावियाणं हीलणिज्जे, जहा व सा भोगवतिया।

एवं रक्खितिया वि। नवरं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मंजूसं विहाडेइ, विहाडित्ता रयणकरंडगाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हाति, गेण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच सालिअक्खए धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थे दलयति।

तते णं से धण्णे सत्थवाहे रक्खितियं एवं वदासी—

"किं णं पुता! ते चेव एए पंच सालिअक्खए उदाहु अन्ने?", त्ति।

तते णं रक्खितिया धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी—

ते चेव ते पंच सालिअक्खए णो अन्ने।"

तते णं से धण्णे सत्थवाहे रक्खितियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठे तस्स कुलघरस्स हिरन्नस्स य कंसदूसविपुलधणसंतसारसावतेज्जस्स य भंडागारिणिं ठवेति। एवामेव समणाउसो! "जाव पंच य से महव्वयाति रक्खियाति भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं, बहूणं समणीणं, बहूणं सावयाणं, बहूणं सावियाणं अच्चणिज्जे जहा सा रक्खिया।

रोहिणिया वि एवं चेव। नवरं "तुब्भे ताओ। मम सुबहुयं सगडीसागडं दलाहिं जेणं अहं तुब्भं ते पंच सालिअक्खए पडिणिज्जाएमि।"

तते णं से धण्णे सत्थवाहे रोहिणिं एवं वदासी—

"कहं णं तुणं मम पुत्ता! ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाइस्ससि?"

तते णं सा रोहिणी धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी—

"एवं खलु तातो! इओ तुब्भे पंचमे संवच्छरे इभस्स मित्त...जाव बहवे कुंभसया जाया, तेणेव कमेणं। एवं खलु ताओ! तुब्भे ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाएमि।"

तते णं से धण्णे सत्थवाहे रोहिणीयाए सगडसागडं दलयति। तते णं, रोहिणी सुबहुं सगडसागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवागच्छित्ता कोट्ठागारे विहाडेति, विहाडित्ता पल्ले उब्भिदति उब्भिदित्ता सगडीसागडं भरेति, भरित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे, जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति।

तते णं रायगिहे नगरे बहुजणो अन्नमन्नं एवमातिक्खति—"धन्ने णं देवाणुप्पिया! धण्णे सत्थवाहे, जस्स णं रोहिणिया सुण्हा जीए णं पंच सालिअक्खए सगडसागडि एणं निज्जाएति।"

तते णं से धण्णे सत्थवाहे ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाएतिते पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठे पडिच्छति, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्तनाति० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरतो रोहिणीयं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसु म जाव रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं पमाणभूयं ठावेति।

एवामेव समणाउसो!......जाव पंच महव्वया संवड्ढिया भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं अगिज्जे संसारकंतारं वीतीवइस्सइ जहा वसा रोहिणीया।

(श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम्, अध्ययन ७)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुवे कुम्मा

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी होत्था।

तीसे णं वाणारसीए नयरीये बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभागे गंगाए महानदीए मयंगतीरद्दहे नामं दहे होत्था—अणुपुव्वसुजायवप्पूगंभीर-सीयलजले, अच्छविमलसलिलपलिच्छन्ने संछन्नपत्तपुप्फपलासे, बहुउप्पल—पउम—कुमुय—नलिणसुभय सोगन्धियपुंडरीय—सयपत्त—सहस्सपत्त—केसरपुप्फोवचिये पासादीये, दरिसणिज्जे, अभिरूवे, पडिरूवे।

तत्थ णं बहूणं मच्छाण य कच्छभाण य गाहाण य मगराण य संसुमाराण य सइयाण य साहस्सियाणय य सयसाहस्सियाण च जूहाइं निब्भमाइं, निरुविग्गाइं सुहंसुहेणं अभिरममाणगातिं अभिरममाणगातिं विहरंति।

तस्स णं मयंगतीरद्दहस्य अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए होत्था! तत्थ णं दुवे पावसियालगा परिवसंति, पावा, चंडा, रोद्दा तल्लिच्छा साहसिया, लोहितपाणी अभिसत्थी, आमिसाहारा, आमिसप्पिया आमिसलोला, आमिसं गवेसमाणा रतिं वियालचारिणो दिया पच्छन्नं चावि चिट्ठंति।

तते णं ताओ मयंगतीरद्दहातो अन्नया कदाइं सूरियंसि चिरत्थमियंसि लुलियाए संझाए, पविरलमाणुसंसि णिसंतपडिणिसंतंसि समाणंसि दुवे कुम्मगा आहारत्थी, आहारं गवेसमाणा सणियं सणियं उत्तरंति, तस्सेव, मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं सव्वतो समंता परिघोलेमाणा परिघोलेमाणा वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति।

तयणंतरं च णं ते पावसियालगा आहारत्थी, आहारं गवेसमाणा मालुयाकच्छयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ताजेणेव मयंगतीरे दहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं परिघोलेमाणा परिघोलेमाणा वित्तिं वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति।

तते णं ते पावसियाला ते कुम्मए पसंति पासित्ता जेणेव ते कुम्मए तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

तते णं ते कुम्मगा ते पावसियालए एज्जमाणे पासंति, पासित्ता भीता, तत्था, तसिया, उव्विग्गा, संजातभया हत्थे य पादे य गीवाए य सएहिं काएहिं साहरंति साहरित्ता निच्चला, निप्फंदा तुसिणिया संचिट्ठंति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ततें णं ते पावसियालया जेणेव ते कुम्मगा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता, ते कुम्मगा सव्वतो समंता उव्वत्तेंति, परियत्तेंति, आसारेंति, संसारेंति, चालेंति, घट्टेंति, फंदेंति, खोभेंति नहेहिं आलुपंति, दंतेहि य अक्खोडेंति, नो चेव णं संचाएंति तेसिं कुम्मगाणं सरीरस्स आबाहं वा पवाहं वा वावाहं वा उप्पाएत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए।

तते णं ते पावसियालया एए कुम्मए दोच्चं पि तच्चं पि सव्वतो समंता उव्वत्तेंति ''जाव णो चेव णं संचाएंति करित्तए। ताहे संता, तंता परितंता, निव्विन्ना समाणा सणियं सणियं पच्चोसक्केंति, एगंतमवक्कमंति, निच्चला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति। तत्थ णं एगे कुमग्गे ते पावसियालए चिरंगते दूरगए जाणित्ता सणियं सणियं एगं पायं निच्छुभति।

तते णं ते पावसियालया तेणं कुम्मएणं सणियं सणियं एगं पायं नीणियं पासंति, पासित्ता, ताए उक्किट्ठाए गईए सिग्घं, चवलं, तुरियं, चंडं, वेगितं जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तस्स णं कुम्मगस्स तं पायं नखेहिं आलुंपंति, दंतेहि अक्खोडेंति, ततो पच्छा मंसं च सोणियं च आहारेंति, आहारित्ता तं कुम्मगं सव्वतो समंता उव्वत्तेंति......जाव नो चेव णं संचाएंति करेत्तए, ताहे दोच्चं पि अवक्कमंति। एवं चत्तारि वि पाया जाव सणियं सणियं गीवं णीणेति। तते णं ते पावसियालगा तेणं कुम्मएणं गीवं णीणियं पासंति, पासित्ता सिग्घं, चवलं, तुरियं, चंडं नहेहिं दंतेहिं कवालं विहाडेंति, विहाडित्ता तं कुम्मगं जीवियाओ ववरोवेंति, ववरोवित्ता मंसं च सोणियं च आहारेंति।

एवामेव समणाउसो! जो अम्ह निग्गन्थो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए पव्वतिए समाणे पंच य से इंदियाइं अगुत्ताइं भवंति, से णं इह भवे बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं सावगाणं साविगाणं हीलणिज्जे परलोगे वि य णं आगच्छति बहूणं दंडणाणं संसारकंतारं अणुपरियट्टति, जहा से कुम्मए अगुत्तिंदिए।

तते णं ते पावसियालगा जेणेव से दोच्चए कुम्मए तेणेव उवागच्छंति उवागच्छिता, तं कुम्मगं सव्वतो समंता उव्वत्तेंति'''जाव दंतेहिं अक्खुडेंति''''चेव णं संचाएंति'''करेत्तए।

तते णं ते पावसियालगा पि तच्चं पि'''जाव नो संचाएंति तस्स कुम्भगस्स किंचि आबाहं वा विबाहं वा''''जाव छविच्छेयं वा करेत्तए, ताहे संता, तंता, परितंता, निव्विन्ना समाणा जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तते णं से कुम्मए ते पावसियालए चिरंगए दूरंगए जाणित्ता सणियं सणियं गीवं नेणेति, नेणित्ता दिसावलोयं करेइ, करित्ता जमगसमगं चत्तारि वि पादे नीणेति, नीणेत्ता ताए उक्किट्ठाए कुम्मगईए वीईवयमाणे वीईवयमाणे जेणेव मयंगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता मित्तनातिनिगसयण-संबंधिपरियणेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था।

एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं समणो वा समणी वा पंच से इंदियातिं गुत्तातिं भवंति से ण इहभवे अच्चणिज्जे जहा उ से कुम्मए गुत्तिंदिए।

(श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम् , अध्ययनम् ४)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिरिसिरिवालकहा

अरिहाइनवपयाइं, झाइत्ता हिअयकमलमज्झंमि ।
सिरिसिद्धकक्कमाहप्पमुत्तमं किंपि जंपेमि ॥ १ ॥
अत्थित्थ जंबुदीवे, दाहिणभरहद्धमज्झिमे खंडे ।
बहुधणधन्नसमिद्धो, मगहादेसो जयपसिद्धो ॥ २ ॥
जत्थुप्पन्नं सिरिवीरनाहतित्थं जयंमि वित्थरियं ।
तं देसं सविसेसं, तित्थं भासंति गीयत्था ॥ ३ ॥
तत्थ य मगहादेसे, रायगिहं नाम पुरवरं अत्थि ।
वेभारविउलगिरिवरसमलंकियपरिसरपएसं ॥ ४ ॥
तत्थ य सेणियराओ, रज्जं पालेइ तिजयविक्खाओ ।
वीरजिणचलणभत्तो, विहिअज्जिय तित्थयरगुत्तो ॥ ५ ॥
जस्सत्थि पढमपत्ती, नंदा नामेण जोइ वरपुत्तो ।
अभयकुमारो बहुगुणसारो चउबुद्धिभंडारो ॥ ६ ॥
चेडयनरिंद्धूया, बीया जस्सत्थि चिल्लणा देवी ।
जीए असोगयंदो पुत्तो हल्लो विहल्लो अ ॥ ७ ॥
अन्नाउ अणेगाओ धारणीपमुहाउ जस्स देवीओ ।
मेहाइणो अणेणो, पुत्ता पियमाइपयभत्ता ॥ ८ ॥
सो सेणियनरनाहो, अभयकुमारेण विहियउच्छाहो ।
तिहुयणपयडपयाडो, पालइ रज्जं च धम्मं च ॥ ९ ॥
एयंमि पुणो समए, सुरमहिओ वद्धमाण तित्थयरो ।
विहरंतो संपत्तो, रायगिहासन्ननयरंमि ॥ १० ॥
पेसेइ पणमसीसं, जिट्ठं गणहारिणं गुणगरिट्ठं ।
सिरिगोयमं मुणिंदं, रायगिहलोयलाभत्थं ॥ ११ ॥
सो लद्धजिणाएसो, संपत्तो रायगिहपुरोज्जाणे !
कइवयमुणिपरियरिओ, गोयम सामी समोसरिओ ॥ १२ ॥
तस्सागमणं सोउं, सयलो नरनाहपमुहपुरलोओ ।
नियनियरिद्धिसमेओ, समागओ भत्ति उज्जाणे ॥ १३ ॥
पंचविहं अभिगमणं, काउं तिपयाहिणाउ दाऊणं ।
पणमिय गोयम चलणे, उवविट्ठो उचियभूमीए ॥ १४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भयवंपि सजलजलहर–गंभीरसरेण कहिउमाढत्तो।
धम्मसरूवं सम्मं, परोवयारिक्कतलिच्छो॥ १५॥
भो भो महाणुभागा! दुलहं लहिऊण माणुसं जंमं।
खित्तकुलाइपहाणं, गुरुसामग्गिं च पुण्णवसा॥ १६॥
पंचविहंपि पमायं गुरुयावायं विवज्जिउं झत्ति।
सद्धम्मकम्मविसए, समुज्जमो होइ कायव्वो॥ १७॥
सो धम्मो चउभेओ, उवइट्ठो सयलजिणवरिंदेहि।
दाणं सीलं च तवो भावोऽवि अ तस्सिमे भेया॥ १८॥
तत्थवि भावेण विणा, दाणं नहु सिद्धिसाहणं होई।
सीलंपि भाववियलं; विहलं चिय होइ लोगंमि॥ १९॥
भावं विणा तवोवि हु, भवोहवित्थारकारणं चेव।
तम्हा नियभावुच्चिय, सुविसुद्धो होइ कायव्वो॥ २०॥
भावोवि मणोविसओ, मणं च अइदुज्जयं निरालंबं।
तो तस्स नियमणत्थं, कहियं, सालंबणं झाणं॥ २१॥
आलंबणाणि जइवि हु, बहुप्पयाराणि संति सत्थेसु।
तह वि हु नवपयझाणं बिंति जगसुपहाणंगुरुणो॥ २२॥
अरिहंसिद्धायरिया, उज्झाया साहुणो अ सम्मत्तं।
नाणं चरणं च तवो, इत्र पयनवगं मुणेयव्वं॥ २३॥
तत्थऽरिहंतेऽट्ठारसदोषविमुक्के विसुद्धनाणमए।
पयडियतत्ते नयसुरराए झाएह निच्चंपि॥ २४॥
पनरसभेयपसिद्धे, सिद्धे घणकम्मबंधणविमुक्के।
सिद्धाणंतचउक्के, झायह तम्मयमणा सययं॥ २५॥
पंचायारपवित्ते, विसुद्धसिद्धंतदेसणुज्जुत्ते।
परउवयारिक्कपरे, निच्चं झाएह सूरिवरे॥ २६॥
गणतित्तीसु निउत्ते, सुत्तत्थज्झावणंमि उज्जुत्ते।
सज्झाए लीणमणे, सम्मं झाएह उज्झाए॥ २७॥
सव्वासु कम्मभूमिसुं, विहरंते गुणगणेहि संजुत्ते।
गुत्ते मुत्ते झायह, मुणिराए भिट्ठियकसाए॥ २८॥
सव्वन्नुपणीयागमपयडियतत्तत्थसद्दहणरुवं।
दंसणरयणपईवं, निच्चं धारेह मणभवणे॥ २९॥
जीवाजीवाइपयत्थ सत्थ तत्तावबोहरूवं च।
नाणं सव्वगुणाणं, मूलं सिक्खेह विणएणं॥ ३०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असुह किरियाण चाओ, सहासुकिरियासु जोय-अपमाओ।
तं चारित्तं उत्तममुवजुत्तं पालह निरुत्तं ॥ ३१ ॥
घणकम्मतमोभरहरणभाणुभूयं दुवालसंगधरं ।
नवरमकसायतावं, चरेह सम्मं तवोकम्मं ॥ ३२ ॥
एयाइं नवपयाइं, जिणवरधम्मंमि सारभूयाइं ।
कल्लाणकारणाइं, विहिणा आराहियव्वाइं ॥ ३३ ॥
अन्न च-एएहिं नवपएहिं, सिद्धं सिरिसिद्धचक्कमाउत्तो।
आराहंतो संतो, सिरिसिरिपालुव्व लहइ सुहं ॥ ३४ ॥
तो पुच्छइ मगहेसो को एसो मुणिवरिंद ! सिरिपालो।
कह तेण सिद्धचक्कं, आराहिय पावियं सुक्खं ? ॥ ३५ ॥
तो भणइ मुणी निसुणसु, नरवर ! अक्खाणयं इमं रम्मं ।
सिरिसिद्धचक्कमाहप्पसुंदरं परमचुज्जकरं ॥ ३६ ॥

तथाहि—

इत्थेव भरहखित्ते, दाहिणखंडंमि अत्थि सुपसिद्धो ।
सव्वड्ढिकयपवेसो, मालवनामेण वरदेसो ॥ ३७ ॥

सो य केरिसो ? :—

पए पए जत्थ सुगुत्तिगुत्ता, जोगप्पवेसा इव संनिवेसा ।
पए पए जत्थ अगंजणीया, कुडुंबमेला इव तुंगसेला ॥ ३८ ॥
पए पए जत्थ रसाउलाओ, पणंगणाओव्व तरंगिणीओ।
पए पए जत्थ सुहंकराओ, गुणावलीओव्व वणावलीओ ॥ ३९ ॥
पए पए जत्थ सवाणियाणि, महापुराणीव महासराणी ।
पए पए जत्थ सगोरसाणि, सुहीमुहाणीव सुगोउलाणि ॥ ४० ॥
तत्थ य मालवदेसे, अकयपवेसे दुकालडमरेहिं ।
अत्थि पुरी पोराणा, उज्जेणी नाम सुपहाणा ॥ ४१ ॥

सा य केरिसा ? :

अणेगसो जत्थ पयावईओ, नरुत्तमाणं च न जत्थ संखा ।
महेसरा जत्थ गिहे गिहेसु, सचीवरा जत्थ समग्गलोया ॥ ४२ ॥
घरे घरे जत्थ रमंति गोरी-गणा सरीओ अ पए पए अ ।
वणे वणे यावि अणेगरंभा, रई अ पीईविय ठाणठाणे ॥ ४३ ॥
तीसे पुरीई सुरवर पुरीई अहियाइ वण्णणं काउं ।
जइ निउणवुद्धिकलिओ, सक्कगुरु चेव सक्केइ ॥ ४४ ॥
तत्थत्थि पुहविपालो, पयपालो नामओ अ गुणओ अ ।
जस्स पयावो सोमो, भीमो विय सिट्ठ दुट्ठजणे ॥ ४५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तस्सवरोहे बहुदेहसोह अवहरिय गोरिगव्वेवि।
अच्चंतं मणहरणे, निउसाओ दुन्नि देवीओ ॥ ४६ ॥
सोहग्गलडहदेहा, एगा सोहग्गसुन्दरीनामा।
बीया अ रूवसुंदरी, नामा रूवेण रइतुल्ला ॥ ४७ ॥

पढमा माहेसर कुलसंभूया तेण मिच्छदिट्ठित्ति।
बीया साअवधूया तेणं सा सम्मदिट्ठित्ति ॥ ४८ ॥
तओ सरिसवयाओ, समसोहग्गाउ सरिसरुवाओ।
सावत्तेवि हु पायं, परुप्परं पीतिकलिआओ ॥ ४९ ॥

नवरं ताण मणट्ठियधम्मसरुवं वियारयंताणं।
दूरेण विसंवाओ, विसपीऊसेहिं सारिच्छो ॥ ५० ॥
तओ अ रमंतीओ, नवनवलीलाहिं नरवरेण समं।
थोवंतरंमि समए, दोवि सगब्भाउ जायाओ ॥ ५१ ॥

समयंमि पसूयाओ, जायाओ कन्नगाउ दोहिंपि।
नरनाहोवि सहरिसो, वद्धावणयं करावेई ॥ ५२ ॥
सोहग्गसुंदरी नंदणाइ सुरसुंदरित्ति वरनामं।
बीयाइ मयणसुंदरि, नामं च ठवेइ नरनाहो ॥ ५३ ॥

समये समप्पियाओ, तओ सिवधम्मजिणमयविऊणं।
अज्झावयाण रन्ना, सिवभूतिसुबुद्धिनामाणं ॥ ५४ ॥
सुरसुंदरी अ सिक्खइ, लिहियं गणियं च लक्खणं छंदं।
कव्वमलंकारजुयं, तक्कं च पुराणसमिईओ ॥ ५५ ॥

सिक्खेइ भरहसत्थं, गीयं नट्टं च जोइसतिगिच्छं।
विज्जं मंतं तंतं, हरमेहलचित्तकम्माइं ॥ ५६ ॥
अन्नाइंपि कुंडलहाराइं करलाघवाइकम्माइं।
सत्थाइं सिक्खियाइं, तीइ चमुक्कारजणयाइं ॥ ५७ ॥

सा कावि कला तं किंपि, कोसलं तं च नत्थि विन्नाणं।
जं सिक्खियं न तीए, पन्नाअभिओगजोगेणं ॥ ५८ ॥
सविसेसं गीयाइसु, निउणा वीणाविणीयलीणा सा।
सुरसुन्दरी वियट्ठा,—जाया पत्ता य तारुन्नं ॥ ५९ ॥

जारिसओ होइ गुरु, तारिसओ होइ सीसगुणजोगो।
इत्तुच्चिय सा मिच्छ—दिट्ठि उक्किट्ठदप्पा अ ॥ ६० ॥
तह मयणसुंदरीवि हु, पया उ कलाओ लीलमित्तेण।
सिक्खेइ विमलपन्ना, धन्ना विणएण संपन्ना ॥ ६१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिणमयनिउणेणज्झावएण सा मयणसुंदरीबाला।
तह सिक्खविया जह जिणमयंमि कुसलत्तणं पत्ता ॥ ६२ ॥
एगा सत्ता दुविहो नओ य कालत्तयं गइचउक्कं।
पंचेव अत्थिकाया, दव्वछक्कं च सत्त नया ॥ ६३ ॥
अठ्ठेव य कम्माइं नवतत्ताइं च दसविहो धम्मो।
एगारस पडिमाओ बारस वयाइं गिहीणं च ॥ ६४ ॥
इच्चाइ वियाराचारसारकुसलत्तणं च संपत्ता।
अन्ने सुहुमवियारेवि मुणइ सा नियंयनामं वि ॥ ६५ ॥
कम्माणं मूलुत्तरपयडीओ गणइ मुणइ कम्मठिइं।
जाणइ कम्मविवागं, बंधोदयदीरणं संतं ॥ ६६ ॥
जीसे सो उज्झाओ, संतो दंतो जिइदिओ धीरो।
जिणमयरओ सुबुद्धि, सा किं नहु होइ तस्सीला ? ॥ ६७ ॥
सयलकलागमकुसला, निम्मलसम्मत्तसीलगुणकलिया।
लज्जा सज्जा सा मयणसुंदरी जुव्वणं पत्ता ॥ ६८ ॥
अन्नदिणे अब्भितरसहानिविठ्ठेण नरवरिंदेण।
अज्झावयसहियाओ, अणाविआओ कुमारीओ ॥ ६९ ॥
विणओणयाउ ताओ, सरुवलावन्नखोहिअसहाओ।
विणिवेसिआउ रन्ना, नेहेणं उभयपासेसु ॥ ७० ॥
हरिसवसेणं राया, तासिं बुद्धिपरिक्खणनिमित्तं।
एगं देइ समस्सा—पयं दुन्हंपि समकालं ॥ ७१ ॥
यथा "पुन्निहिं लब्भइएहु ,"........ ...... ॥
तो तक्कालं अइचंचलाइ अच्चंतगव्वगहिलाए।
सुरसुन्दरीइ भणियं, हुं हुं पूरेमि निसुणेह ॥ ७२ ॥
यथा—धणजुव्वण सुवियड्ढपण, रोगरहिअ निअ देहु।
मण वल्लह मेलावडउ, पुन्निहिं लब्भइ एहु ॥ ७३ ॥
तं सुणिय निवो तुठ्ठो, पसंसए साहु साहु उज्झाओ।
जेणेसा सिक्खविआ, परिसावि भणेइ सच्चमिणं ॥ ७४ ॥
तो रन्ना आइठ्ठा, मयणा विहु पूरए समस्सं तं।
जिणवयणरया संता दंता ससहावसारिच्छं ॥ ७५ ॥
यथा— विणयविवेयपसण्णमणु सीलसुनिम्मलदेह ।
परमप्पहमेलावडउ, पुण्णेहि लब्भइ एहु ॥ ७६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तो तीए उवज्झाओ, मायावि अ हरिसिआ न उण सेसा।
जेण तत्तोवएसो न कुणइ हरिसं कुदिट्ठिणं ॥ ७७ ॥

इओ अ—

कुरुजंगलंमि देसे, संखपुरीनामपुरवरी अत्थि।
जा पच्छा विक्खाया, जाया अहिछत्तनामेणं ॥ ७८ ॥
तत्थत्थि महीपालो कालो इव वेरिआण दमिआरी।
पइवरिसं सो गच्छइ, उज्जेणि निवस्स सेवाए ॥ ७९ ॥
अन्नदिणे तप्पुत्तो, अरिदमनो नाम तारतारुन्नो।
सम्पत्तो पिअठाणे, उज्जेणि रायसेवाए ॥ ८० ॥
तं च निवपणमणत्थं समागयं तत्थ दिव्वरूवधरं।
सुरसुन्दरी निरिक्खइ, तिक्खकडक्खेहिं ताडंति ॥ ८१ ॥
तत्थेव थिरनिवेसिआदिट्ठी दिट्ठा निवेण सा बाला।
भणिया य कहसु वच्छे! तुज्झ वरो केरिसो होउ? ॥ ८२ ॥
तो तीए हिट्ठाए, धिट्ठाए मुक्कलोअलज्जाए।
भणियं तायपसाया, जइ लब्भइ मग्गियं कहवि ॥ ८३ ॥
ता सव्वकलाकुसलो, तरुणोवररुवपुण्णलावन्नो।
एरिसओ होउ वरो, अहवा ताओच्चिअ पमाणं ॥ ८४ ॥
जेणं ताय तुमं चिय, सेवयजणमणसमीहियत्थाणं।
पूरणपवणो दीससि, पच्चक्खो कप्परुक्खव्व ॥ ८५ ॥
तो तुट्ठो नरनाहो, दिट्ठिनिवेसेण नायतीइमणा।
पभणेइ होउ वच्छे! एसऽरिदमणो वरी तुज्झ ॥ ८६ ॥
तो सयलसभालाओ, पभणइ नरनाह एस संजोगो।
अइसोहणोऽहिवल्लीपूगतरूणं व निब्भंतं ॥ ८७ ॥
अह मयण सुन्दरीवि हु, रन्ना नेहेण पुच्छिया वच्छे।
केरिसओ तुज्झ वरो, कीरउ? मह कहसु अविलंबं ॥ ८८ ॥
सा पुण जिण वयणवियारसारसंजणियनिम्मलविवेआ।
लज्जागुणिक्कसज्जा, अहोमुही जा न जंपेइ ॥ ८९ ॥
ताव नरिंदेण पुणो पुट्ठा सा भणइ ईसि हसिऊणं।
ताय विवेयसमेओ, मं पुच्छसि तंसि किमजुत्तं ॥ ९० ॥
जेण कुलबालिआओ, न कहंति हवेउ एस मज्झवरो।
जो किर पिऊहिं दिन्नो, सो चेव पमाणियव्वुत्ति ॥ ९१ ॥
अम्मा पिउणोवि निमित्तमित्तमेवेह वरपयाणंमि।
पायं पुव्वनिबद्धो, सम्बन्धो होइ जीवाणं ॥ ९२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जं जेण जया जारिसमुवज्जियं होइ कम्म सुहमसुहं ।
तं तारिसं तयासे, संपज्जइ दोरियनिबद्धं ॥ ९३ ॥
जा कन्ना वहुपुन्ना, दिन्ना कुकुलेवि सा हवइ सुहिया ।
जा होइ हीणपुन्ना, सुकुले दिन्नावि सा दुहिया ॥ ९४ ॥
ता ताय ! नायतत्तस्स, तुज्झ नो जुज्जए इमो गव्वो !
जं मज्झ कयरसयापसायओ सुहदुहे लोए ॥ ९५ ॥
जो होइ पुन्न वलिओ, तस्स तुमं ताय ! लहु पसीएसि ।
जो पुण पुण्णविहूणो, तस्स तुमं नो पसीएसि ॥ ९६ ॥
भवियव्वया सहावो, दव्वाइया सहाइणो वावि ।
पायं पुव्वोवज्जियकम्माणुगया फलं दिंति ॥ ९७ ॥
तो दुम्मिओय राया, भणेइ रे तंसि मह पसाएण ।
वत्थालंकाराइ, पहिरंती कीसिमं भणसि ? ॥ ९८ ॥
हसिऊण भणइ मयणा, कयसुकयवसेण तुज्झ गेहंमि ।
उप्पन्ना ताय ! अहं, तेणं माणेमि सुक्खाइं ॥ ९९ ॥
पुव्वकयं सुकयं चिअ, जीवाणं सुक्खकारणं होइ ।
दुक्कयं च कयं दुक्खाण, कारणं होइ निब्भंतं ॥ १०० ॥
न सुरासुरेहिं, नो नरवरेहिं, नो बुद्धिबलसमिद्धेहिं ।
कहवि खलिज्जइ इंतो, सुहासुहो कम्मपरिणामो ॥ १०१ ॥
तो रुट्ठो नरनाहो, अहो अहो अप्पपुन्निआ एसा ।
मज्झ कयं किंपि गुणं, नो मन्नइ दुव्वियड्ढा य ॥ १०२ ॥
पभणेइ सहालोओ, सामिय ? किमियं मुणेइ मुद्धमई ।
तं चेव कप्परुक्खो, तुट्ठो रुट्ठो कयंतो य ॥ १०३ ॥
मयणा भणेइ धिद्धी, धणलवमित्तत्थिणो इमे सव्वे ।
जाणंतावि हु अलिअं, मुहप्पियं चेव जंपंति ॥ १०४ ॥
जइ ताय ! तुह पसाया, सेवयलोआ हवंति सव्वेवि ।
सुहिया ता समसेवानिरया किं दुक्खिया एगे ? ॥ १०५ ॥
तम्हा जो तुम्हाणं, रुच्चइ सो ताय ! मज्झ होउवरो ।
जइ अत्थि मज्झपुन्नं, ता होही निग्गुणोवि गुणी ॥ १०६ ॥
जइ पुण पुन्नविहिणा, ताय ! अहं ताव सुंदरोवि वरो ।
होही असुंदरुच्चिय, नूणं मह कम्मदोसेणं ॥ १०७ ॥
तो गाढयरं राया, रुट्ठो चिंतेइ दुव्वियड्ढाए ।
एयाइ कओ लहुओ, अहं तओ वेरिणी एसा ॥ १०८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रोसेण वियडभिउडी भीसणवयणं पलोइऊण निवं ।
दिक्खो भणेइ मंती, सामिय! रइवाडियासमओ ॥ १०९ ॥
रोसेण धमधमंतो, नरनाहो तुरयरयणमारूढो ।
सामंतमंतिसहिओ, विणिग्गओ रायवाडीए ॥ ११० ॥

जाव पुराओ बाहिं, निग्गच्छइ नरवरो सपरिवारो ।
ता पुरओ जणवंदं, पिच्छइ साडंबरमियंतं ॥ १११ ॥
तो विम्हिएण रन्ना, पुट्ठो मंती स नायवुत्तंतो ।
विन्नवइ देव निसुणह, कहेमि जणवंद परमत्थं ॥ ११२ ॥

सामिय! सरूवपुरिसा, सत्तसया नववया ससोंडीरा ।
दुट्ठक्कुट्ठभिभूया, सव्वे एगत्थ संमिलिया ॥ ११३ ॥
एगो य ताणु बालो, मिलिओ उंबरयवाहिगहियंगो ।
सो तेहिं परिगहिओ, उंबरराणुत्ति कयनामो ॥ ११४ ॥

वरमेसरिमारूढो, तयद्दोसी छत्तधारओ तस्स ।
गयनासा चमरधरा, घिणिघिणिसद्दा य अग्गपहा ॥ ११५ ॥
गयकन्ना घंटकरा, मंडलवइ अंगरक्खगा तस्स ।
दद्दुल थइआइत्तो गलीअंगुलि नामओ मंती ॥ ११६ ॥

केवि पसूइयवाया, कच्छादब्भेहिं केवि विकराला ।
केवि विचंचिअपामासमन्निया सेवगा तस्स ॥ ११७ ॥
एवं सो कुट्ठिअपेडएण परिवेढिओ महीवीढे ।
रायकुलेसु भमंतो, पंजिअदाणं पगिण्हेइ ॥ ११८ ॥
सो एसो आगच्छइ, नरवर! आडंबरेण संजुत्तो ।
ता भग्गमिणं मुत्तुं, गच्छह अन्नं दिसं तुब्भे ॥ ११९ ॥
तो वलिओ नरनाहो, अन्नाइ दिसाइ जाव ताव पुरो ।
तो पेडयंपि तीए, दीसाइ वलियं तुरिअ तुरितं ॥ १२० ॥
राया भणेइ मंति. पुरओ गंतूणिमे निवारेसु ।
मुहमग्गियंपि दाउं, जेणेसिं, दंसणं न सुहं ॥ १२१ ॥
जा तं करेइ मंती, गलिअंगुलिनामओ दुयं ताव ।
नरवर पुरओ ठाउं, एवं भणिउं समाढत्तो ॥ १२२ ॥
सामिअ! अम्हाण पहू, उंबरनामेण राणओ एसो ।
सव्वत्थ वि मन्निज्जइ, गरुएहिं दाणमाणेहिं ॥ १२३ ॥
तेणऽम्हाणं धणकणयचीरपमुहेहिं कीरइ न किंपि ।
एतस्स पसायेणं, अम्हे सव्वेवि अइसुहिणो ॥ १२४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किंच—एगो नाह ! समत्थि अम्ह मणचिंतिओ विअप्पुत्ति ।
जइ लहइ राणओ राणियंति ता सुन्दरं होइ ॥ १२५ ॥
ता नरनाह ! पसायं, काऊणं देहि कज्जगं एगं ।
अवरेण कणगकप्पणदाणेणं तुम्ह पज्जतं ॥ १२६ ॥
तो भणइ रायमंती अहो अजुत्तं विमग्गिअं तुमए ।
को देइ नियं धूयं कुट्ठकिलिट्ठस्स जाणंतो ॥ १२७ ॥
गलिअंगुलिणा भणियं, अम्हेहि सुया निवस्सिमा कित्ती ।
जं किल मालवराया, करेइ नो पत्थणाभंगं ॥ १२८ ॥
तो सा निम्मलकित्ती, हारिज्जउ अज्ज नरवरिंदस्स ।
अहवा विज्जउ कावि हु, धूया कुकुलेवि संभूया ॥ १२९ ॥
पभणेइ नरवरिंदो, दाहिस्सइ तुम्ह कन्नगा एगा ।
को किर हारइ कित्ति, इत्तियमित्तेण कज्जेण ? ॥ १३० ॥
चिंतेइ मणे राया, कोवानलजलियनिम्मलविवेगो ।
नियधूयं अरिभुयं, तं दाहिस्सामि एयस्स ॥ १३१ ॥
सहसा वलिऊण तओ, नियआवासंमि आगओ राया ।
बुल्लावइ तं मयणासुन्दरिनामं नियं धूयं ॥ १३२ ॥
हुं अज्जवि जइ मन्नसि, मज्झ पसायस्स संभवं सुक्खं ।
ता उत्तमं वरं ते, परिणाविय देमि भूरि धणं ॥ १३३ ॥
जइ पुण नियकम्मं चिय, मन्नसि ता तुज्झ कम्मणाणीओ ।
एसो कुट्ठिअराणो, होउ वरो किं वियप्पेण ? ॥ १३४ ॥
हसिऊण भणइ बाला, आणीओ मज्झ कम्मणा जो उ ।
सो चेव मह पमाणं, राओ वा रंकजाओ वा ॥ १३५ ॥
कोवंधेणं रन्ना, सो उंबरराणओ समाहूओ ।
भणिओ य तुममिमीए, कम्माणीओसि होसु वरो ॥ १३६ ॥
तेणुत्तं नो जुत्तं, नरवर ! वुत्तंपि तुज्झ इय वयणं ।
को कणयरयणमालं बंधइ कागस्स कंठंमि ॥ १३७ ॥
एगमहं पुव्वकयं, कम्मं भुंजेमि एरिसमणज्जं ।
अवरं च कहगिमीए, जम्मं बोलेमि जाणंतो ? ॥ १३८ ॥
ता भो नरवर ! जइ देसि कावि ता देसु मज्झ अणुरूवं ।
दासी विलासिणिधूयं, नो वा ते होउ कल्लाणं ॥ १३९ ॥
तो भणइ नरवरिंदो, भो भो महनंदणी इमा किंपि ।
नो मज्झकयं मन्नइ, नियकम्मं चेव मन्नेइ ॥ १४० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेणं चिश्र कम्मेणं, आणीओ तंसि चेव जो इ वरो।
जइ सा निअकम्मफलं, पावइ ता अम्ह को दोसो ? ॥ १४१ ॥
तं सोउणं बाला, उट्ठित्ता झत्ति उंवरस्स करं।
गिण्हइ नियकरेणं, विवाहलग्गंव साहंति ॥ १४२ ॥
सामंतमंतिअंतेउरिउ वारंति तहवि सा बाला।
सरयससिसरिसवयणा, भणइ सई सुच्चि अपमाणं ॥ १४३ ॥
एगत्तो माउलओ, एगत्तो रुप्पसुंदरीमाया।
एगत्तो परिवारो, रुयइ अहो केरिसमजुत्तं ? ॥ १४४ ॥
तहवि न नियकोवाओ, वलेइ राया अईव कढिणमणो।
मयणावि मुणियतत्ता, निअसद्धाओ न पचलेइ ॥ १४५ ॥
तं वेसरिमारोविश्र, जा चलिओ उंबरो निअयठाणं।
ता भणइ नयरलोओ, अहो अजुत्तं अजुत्तंति ॥ १४६ ॥
एगे भणंति धिद्धी, रायाणं जेणिमं कयमजुत्तं।
अन्ने भणंति धिद्धी, एयं अइदुव्विणीयंति ॥ १४७ ॥
केवि निंदंति जणणिं, तीए निंदंति केवि उवज्झायं।
केवि निंदंति दिव्वं, जिणधम्मं केवि निंदंति ॥ १४८ ॥
तहवि हु वियसियवयणा, मयणा तेणुंवरेण सहजंति।
न कुणइ मणे विसायं, सम्मं धम्मं वियाणंति ॥ १४९ ॥
उंवरपरिवारेणं, मिलिएणं हरिसनिब्भरंगेणं।
निअपहुणो भत्तेणं, विवाहकिच्चाइं विहियाइं ॥ १५० ॥
इत्तो—रन्ना सुरसुंदरीइ वीवाहणत्थमुज्झाओ।
पुट्ठो सोहणलग्गं, सो पभणइ राय ! निमुणेसु ॥ १५१ ॥
अज्जं चिय दिणसुद्धी, अत्थि परं सोहणं गयं लग्गं।
तइया जइया मयणाइ, तीइ कुट्ठिअकरो गहिओ ॥ १५२ ॥
राया भणेइ हुं हुं नाओ लग्गस्स तस्स परमत्थो।
अहुणावि हु निअधूयं एयं परिणावइस्सामि ॥ १५३ ॥
रायाएसेण तओ, खणमित्तेणावि विहिअसामग्गिं।
मंतीहिं पहिट्ठेहिं, विवाहपव्वं समाढत्तं ॥ १५४ ॥

तं च केरिसं :—

ऊसिअतोरणपयडपडायं, वज्जिरतुरगहीरनिनायं।
नच्चिरचारुविलासिणिथट्टं, जयजयसद्दकरंत सुभट्टं ॥ १५५ ॥
पट्टं सुयघड ओलिज्जमालं, कूरकपूरतंबोल विसालं।
धवलदिंअंतसुवासिणिवग्गं वुड्ढपुरंधिकहिअविहिमग्गं ॥ २५६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मग्गणजणदिज्जंतसुदानं, सयण सुवासिणिकयसम्माणं।
मद्दलवायचउप्फललोयं जणजणवयमणि जणियपमोयं ॥ १५७ ॥
कारिअसुरसुंदरिसिणगारं, सिंगारिअअरिदमनकुमारं।
हथलेवइ मंडलविहिचंगं करमो-यण करिदाणसुरंगं ॥ १५८ ॥

एवं विहिअविवाहो, अरिदमणो लद्धहयगयसणाहो।
सुंदरीसमेओ, जा निगच्छइ पुरवरीओ ॥ १५९ ॥
ता भणइ सयललोओ, अहोऽगुरुवो इमाण संजोगो।
धन्ना एसा सुरसुंदरी य जीए वरो एसो ॥ १६० ॥
केवि पसंसंति निवं, केवि वरं केवि सुंदरिं कन्नं।
केवि तीएँ उज्झायं, केवि पसंसंति सिवधम्मं ॥ १६१ ॥
सुरसुंदरीसमाणं, मयणाइ विडंबणं जणो दट्ठुं।
सिवसासणप्पसंसं, जिणसासणनिंदणं कुणइ ॥ १६२ ॥

इओ य-निअपेडयस्स मज्झे रयणीए उंबरेण सा मयणा।
भणिआ भद्दे! निसुणसु, इमं अजुत्तं कयं रन्ना ॥ १६३ ॥
तहवि न किंपि विणट्ठं, अज्जवि तं गच्छ कमवि नररयणं।
जेण होइ न विहलं, एयं तुह रुवनिम्माणं ॥ १६४ ॥
इअ पेडयस्स मज्झे, तुज्झवि चिट्ठंतिआइ नो कुसलं।
पायं कुसंगजणिअं, मज्झवि जायं इमं कुट्ठं ॥ १६५ ॥

तो तीए मयणाए, नयणंसुयनीरकलुसवयणाए।
पइपाएसु निवेसिअ-सिराइ भणिअं इमं वयणं ॥ १६६ ॥
सामिअ! सव्वं मह आइसेसु किंचेरिसं पुणो वयणं।
नो भणियव्वं जं दूहवेइ मह माणसं एयं ॥ १६७ ॥

अन्नं च पढमं महिलाजम्मं, केरिसयं तंपि होइ जइ लोए।
सीलविहूणं नूणं, ता जाणह कंजिअं कुहिअं ॥ १६८ ॥

सीलं चिअ महिलाणं, विभूसणं सीलमेव सव्वस्सं।
सीलं जीवियसरिसं, सीलाउ न सुंदरं किंपि ॥ १६९ ॥
ता सामिअ! आमरणं, मह सरणं तंसि चेव नो अन्नो।
इअ निच्छियं वियाणह, अवरं जं होइ तं होउ ॥ १७० ॥

एवं तीए अइनिच्च—लाइ ददसत्तपिक्खणनिमित्तं।
सहसा सहस्सकिरणो, उदयाचलचूलिअं पत्तो ॥ १७१ ॥
मयणाए वयणेणं, सो उंबरराणओ पभायंमि।
तीए समं तुरंतो, पत्तो सिरिरिसहभवणंमि ॥ १७२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आणंदपुलइ अंगेहिं तेहिं दोहिवि नमंसिओ सामी ।
मयणा जिणमयनिउणा, एवं थोउं समाढत्ता ॥ १७३ ॥

भत्ति भरनमिरसुरिंदवंद—वंदिअपयपढमजिणंदचंद ।
चंदूज्जल केवल कित्तिपूरपूरियभुवणंतरवेरिसूर ॥ १७४ ॥

सूरुव्व हरिअतमतिमिरदेवदेवासुरखेयरविहिअसेव ।
सेवागयगयमयरायपायपायडियपणामह कयपसाय ॥ १७५ ॥

सायरसमसमयामयनिवास, वासवगुरुगोयरगुणविकास ।
कासुज्जलसंजमसीललील, लीलाइविहिअमोहावहील ॥ १७६ ॥

हीलापरजंतुसु अकयसाव, सावयजणजणिअआणंदभाव ।
भावलयअलंकिअ रिसहनाह, नाहत्तणु करिहरि दुक्खदाह ॥ १७७ ॥

इअ रिसह जिणेसर भुवणदिणेसर, विजयविजयसिरिपालपहो !
मयणाहिअ सामिअ सिवगइगामिअ, मणह मणोरह पूरिमहो ॥ १७८ ॥

एवं समाहिलीणा, मयणा जा थुणइ ताव जिणकंठा ।
करठिअफलेण सहिआ उच्छलिआ कुसुमवरमाला ॥ १७९ ॥

मयणा वयणाओ उंबरेण सहसत्ति तं फलं गहिअं ।
मयणाइ सयं माला, गहिया आणंदिअमणाए ॥ १८० ॥

भणिअं च तीइ सामिअ फिट्टिस्सइ एस तुम्ह तणुरोगो ।
जेणेसो संजोगो जाओ जिणवरकयपसाओ ॥ १८१ ॥

तत्तो मयणा पइणा सहिआ मुनिचंदगुरुसमीवंमि ।
पत्ता पमुइअचित्ता भत्तीए नमइ तस्स पए ॥ १८२ ॥

गुरुणो य तया करुणापरित्तचित्ता कहंति भवियाणं ।
गंभीरसजलजलहरसरेण धम्मस्स फलमेवं ॥ १८३ ॥

सुमाणुसत्तं सुकुलं सुरूवं, सोहग्गमारूग्गमतुच्छमाउ ।
रिद्धि च विद्धि च पहुत्त किंत्ति पुन्नप्पसाएण लहंहि सत्ता ॥ १८३ ॥

इच्चाइ देसणंते गुरुणो पुच्छंति परिचियं मयणं ।
वच्छे कोऽयं धन्नो वरलक्खणलक्खिअसुपुन्नो ? ॥ १८५ ॥

मयणाइ रुअंतीए कहिओ सव्वोवि निअयवुत्तंतो ।
विन्नतं च न अन्नं भयवं ! मह किंपि अत्थि दुहं ॥ १८६ ॥

एयं चिअ मह दुक्खं जं मिच्छादिट्ठिणो इमे लोआ ।
निंदंति जिणहधम्मं सिवधम्मं चेव संसंति ॥ १८७ ॥

ता पहु कुणह पसायं किंपि उवायं कहेह मह पइणो ।
जेणेस दुट्ठवाही जाइ खयं लोअवायं च ॥ १८८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पभणेइ गुरूभद्दे ! साहूण न कप्पए हु सावज्जं।
कहिउं किंपि तिगिच्छं विज्जं मंतं च तंतं च ॥ १८९ ॥
तहवि अणवज्जमेगं समत्थि आराहणं नवपयाणं।
इहलोइअपरलोइअसुहाणमूलं जिणुद्दिट्ठं ॥ १९० ॥

अरिहं सिद्धायरिआ उज्झाया साहुणो य सम्मत्तं।
नाणं चरणं च तवो, इअ पयनवगं परमतत्तं ॥ १९१ ॥
ए एहिं नवपएहिं, रहिअं अन्नं न अत्थि परमत्थं।
ए एसु च्चिअ जिण सासणस्स सव्वस्स अवयारो ॥ १९२ ॥
जे किर सिद्धा, सिज्झंति जे अ, जे आवि सिज्झइस्संति।
ते सव्वेवि हु नवपयझाणेणं चेव निब्भं तं ॥ १९३ ॥
ए एसिं च पयाणं पयमेगयरं च परम भत्तीए।
आराहिऊण णेगे संपत्ता विजयसामित्तं ॥ १९४ ॥

ए एहिं नवपएहिं सिद्धं सिरिसिद्धचक्कमेअं जं!
तस्सुद्धारो एसो पुव्वायरिएहिं निद्दिट्ठो। १९५ ॥
गयणमकलिआयंतं उड्ढाहसरं सनायबिन्दुकलं।
सपणव बीआणाहय—मंतसरं सरह पीढंमि ॥ १९६ ॥

झायह अउदलवलए, सपणवमायाइएसुवाहंते।
सिद्धाइए दिसासुं विदिसासुं दंसणाईए ॥ १९७ ॥
बी अवलयंमि अडदिसि, दलेसु साणाहए सरहवग्गे।
अंतरदलेसु अट्ठसु, झायह परमिट्ठिपढमपए ॥ १९८ ॥
तइ अवलएवि, अडदिसि, दिप्पंत अणाहएहिं अंतरिए।
पायाहिणेण तिहिपंतिआहिं झाएह लद्धिपए ॥ १९९ ॥

ते पणवबीअअरिहं, नमो जिणाणंत्ति एवमाईआ।
अडयालीसं णेआ, संमं सुगुरुवएसेणं ॥ २०० ॥
तं तिगुणेणं मायाबीएणं सुद्धसेयवण्णेणं।
परिवेढिऊण परिहीइ तस्स गुरुपायए नमह ॥ २०१ ॥

अरिहं सिद्धगणीणं गुरुपलादिट्ठणंतसुगुरूणं।
दुरणंताण गुरुण य सपणवबीयाओ ताओ य ॥ २०२ ॥
रेहादुगकयकलसागारामिअमंडलंत तं सरह।
चउदिसि विदिसि कमेणं जयाइजंमाइकयसेवं ॥ २०३ ॥

सिरिविमलसामिपमुहाहिट्ठायगसयलदेवदेवीणं।
सुह गुरुमुहाओ जाणिअ ताण पयाणं कुणह झाणं ॥ २०४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तं विज्जादेविसासणसुरसासणदेविअट्ठपासं ।
मूलगहं कंठगिहिं, चउपडिहारं च चउवीरं ॥ २०५ ॥
दिसिवालखित्तवालेहि सेविअं धरणिमंडलपइट्ठं ।
पूयंताण नराणं नूणं पूरेइ मणइट्ठं ॥ २०६ ॥
एयं च विमलधवलं जो झायइ सुक्कझाणजोएण ।
तवसंघमेण जुत्तो, सो पावइ निज्जरं विउलं ॥ २०७ ॥
अक्खयसुक्खो मुक्खो जस्स पसाएण लब्भए तस्स ।
झाणेणं अन्नाओ सिद्धाओ हुंति किं चुज्जं ? ॥ २०८ ॥
एयं च परमतत्तं, परमरहस्सं च परममंतं च ।
परमत्थं परमपयं, पन्नत्तं परमपुरिसेहिं ॥ २०९ ॥
तत्तो विजयपसिद्धं अट्ठमहासिद्धिदायगं सुद्धं ।
सिरिसिद्धचक्कमेअं, आराहइ परमभत्तीए ॥ २१० ॥
खंतो दंतो संतो, एयस्साराहगो नरो होइ ।
जो पुण विवरीयगुणो, एयस्स विराहगो सो उ ॥ २११ ॥
तम्हा एयस्साराहगेण एगंतसंतचित्तेणं ।
निम्मलसीलगुणेणं मुणिणा गिहिणा वि होयव्वं ॥ २१२ ॥
जो होइ दुट्ठचित्तो एयस्साराहगोवि होऊण ।
तस्स न सिज्झइ एयं किंतु अवायं कुणइ नूणं ॥ २१३ ॥
जो पुण एयस्साण्हगस्स उवरिंमि सुद्धचित्तस्स ।
चिंतइ किंपि विरूवं तं नूणं होइ तस्सेव ॥ २१४ ॥
एएण कारणेणं पसन्नचित्तेणं सुद्धसीलेण ।
आराहणिज्जमेअं सम्मं तवकम्मविहिपुव्वं ॥ २१५ ॥
आसोअसेअअट्ठमिदिणाओ आरंभिऊणमेयस्स ।
अट्ठविहपूयपुव्वं, आयामे कुणह अट्ठ दिणे ॥ २१६ ॥
नवमंमि दिणे पंचामएण ण्हवणं इमएस काऊणं ।
पूयं च वित्थरेणं, आयंबिलमेव कायव्वं ॥ २१७ ॥
एवं चित्तेवि तहा, पुणो पुणाऽट्ठाहियाण नवगेणं ।
एगासीए आयंबिलाण एयं हवइ पुन्नं ॥ २१८ ॥
एयंमि कीरमाणे, नवपयझाणं मणंमि कायव्वं ।
पुन्ने य तवोकम्मे, उज्जमणंपि विहेयव्वं ॥ २१९ ॥
एअं च तवोकम्मं, संमं जो कुणइ सुद्धभावेणं ।
सयलसुरासुरनरवररिद्धीउ न दुल्लहा तस्स ॥ २२० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एयंमि कए न हु दुट्ठकुट्ठखयजरभगंदराईआ।
पहवंति महारोगा पुव्वुप्पन्नावि नासंति ॥ २२१ ॥
दासत्तं पेसत्तं विकलत्तं दोहग्गत्तमंधत्तं ।
देहकुट्ठजुंगियत्तं न होइ एयस्स करणेणं ॥ २२२ ॥
नारीणवि दोहग्गं, विसकन्नत्तं कुरंडरंडत्तं।
वंझत्तं मयवच्छत्तणं च न हवेइ कइयावि ॥ २२३ ॥
किं बहुणा जीवाणं, एयस्स पसायओ सयाकालं।
मणवंछियत्थसिद्धी, हवेइ नत्थित्थ संदेहो ॥ २२४ ॥
एवं तेसिं सिरिसिद्धचक्कमाहप्पमुत्तमं कहिउं ।
सावय समुदायस्सवि गुरुणो एवं उवइसंति ॥ २२५ ॥
एएहिं उत्तमेहिं, लक्खिज्जइ लक्खणेहिं एसनरो।
जिणसासणस्स नूणं, अचिरेण पभावगो हो ही ॥ २२६ ॥
तम्हा तुम्हं जुज्जइ, एसिं साहम्मिआण वच्छल्लं।
काउं जेण जिणिंदेहिं वन्निअं उत्तमं पयं ॥ २२७ ॥
तो तुट्ठेहिं तेहिं, सुसावएहिं वरंमि ठाणंमि।
ते ठाविऊण दिन्नं, धणकणवत्थाइयं सव्वं ॥ २२८ ॥
न य तं करेइमाया, नेव पिया नेव बंधुवग्गो अ।
जं वच्छल्लं साहम्मिआण सुस्सावओ कुणइ ॥ २२९ ॥
तत्थ ठिओ सो कुमरो मयणावयणेण गुरूवएसेणं।
सिक्खेइ सिद्धचक्कप्पसिद्धपूआविहिं सम्मं ॥ २३० ॥
अह अन्नदिणे आसोअसेअअट्ठमितिहीइ सुमुहुत्ते।
मयणासहिओ कुमरो, आरंभइ सिद्धचक्कतवं ॥ २३१ ॥
पढमं तणुमणसुद्धिं काऊण जिणालए जिणच्चं च।
सिरिसिद्धचक्कपूयं अट्ठपयारं कुणइ विहिणा ॥ २३२ ॥
एवं कयविहिपूओ पच्चक्खाणं करेइ आयामं।
आणंदपुलइअंगो जाओ सो पढमदिवसे वि ॥ २३३ ॥
बीअदिणे सविसेसं संजाओ तस्स रोगउवसामो।
एवं दिवसे दिवसे रोगखए वड्ढए भावो ॥ २३४ ॥
अह नवमे दिवसंमी पूअं काऊण वित्थरविहीए।
पंचामएण ण्हवणं करेइ सिरिसिद्धचक्कस्स ॥ २३५ ॥
ण्हवणूसवंमि विहिए तेणं संतीजलेण सव्वंगं।
संसित्तो सो कुमरो जाओ सहसत्ति दिव्वतणू ॥ २३६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वेसिं संजायं अच्छरिअं तस्स दंसणे जाव।
ताव गुरु भणइ अहो एयस्स किमेयमच्छरिअं ?॥ २३७॥
इमिणा जलेण सव्वे दोसा गहभूअसाइणीपमुहा।
नासंति तक्खणेणं, भविआणं सुद्धभावाणं॥ २३८॥

खयकुट्ठजरभगंदरभूया वाया विसूइआइआ।
जे केवि दुट्ठरोगा ते सव्वे जंति उवसामं॥ २३९॥
जलजलणसप्पसावयभयाइं विसवेअणा उ ईईओ।
दुपयचउप्पयमारीउ नेव पहवंति लोअंमि॥ २४०॥

वंझाणवि हुंति सुया, निंदूणवि नंदणा य नंदंति।
फिट्टंति पुट्ठदोसा, दोहग्गं नासइ असेसं॥ २४१॥
इच्चाइ पहावं निसुणिऊण दट्ठूण तं च पच्चक्खं।
लोआ महप्पमोआ संतिजलं लिंति सविसेसं॥ २४२॥

तं कुट्ठिपेयडं पि हु तज्जलसंसित्तगत्तमचिरेण।
उवसंतप्पायरुअं जायं धम्मंमि सरुई य॥ २४३॥
मयणापइणो निरुवमरूवं च निरुविऊण साणंदा।
पभणेइ पइं सामिअ! एसो सव्वो गुरुपसाओ॥ २४४॥

माअपिअसुअसहोअरपमुहावि कुणंति तं न उवयारं।
जं निक्कारणकरुणापरो गुरु कुणइ जीवाणं॥ २४५॥
तं जिणधम्मगुरूणं, माहप्पं मुणिय निरुवमं कुमरो।
देवे गुरुंमि धम्मे, जाओ एगंतभत्तिपरो॥ २४६॥

धम्मपसाएणं चिय जह जह माणंति तत्थ सुक्खाइं।
ते दंपईउ तह तह धम्मंमि समुज्जमा निच्चं॥ २४७॥
अह अन्नया उ ते जिणहराउ जा नीहरंति ता पुरओ।
पिक्खंति अद्धवुड्ढं एगं नारिं समुहमिंतिं॥ २४८॥

तं पणमिऊण कुमरो पभणइ रोमंचकंचुइज्जंतो।
अहो अणब्भा वुट्ठी संजाया जणणिदंसणओ॥ २४९॥
मयणा वि हु पिय जणणिं नाउं जा नमइ ता भणइ कुमरो।
अम्मा! एस पहावो सव्वो इमिए तुह ण्हुहाए॥ २५०॥
साणंदा सा आसीसदाणपुव्वं सुयं च सुण्हं च।
अभिनंदिऊण पभणइ तइयाऽहं वच्छ! तं मुत्तुं॥ २५१॥
कोसंबीए विज्जं सोऊणं जाव तत्थ वच्चामि।
ता तत्थ जिणायथणे, दिट्ठो एगो मुणिवरिंदो॥ २५२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खंतो दंतो संतो, उवउत्तो गुत्तिमुत्तिसंजुत्तो।
करुणारसप्पहाणो अवितहनाणो गुणनिहाणो ॥ २५३ ॥
धम्मं वागरमाणो पत्थावे नमिय सो मए पुट्ठो।
भयवं! किं मह पुत्तो कयावि होही निरुयगत्तो ॥ २५४ ॥
तेण मुणिंदेणुत्तं, भद्दे! सो तुज्झ नंदणो तत्थ।
तेणं चिय कुट्ठियपेडएण दट्ठूण संगहिओ ॥ २५५ ॥
विहिओ उंबरराणुत्ति नियपहू लद्धलोयसम्माणो।
संपइ मालवनरवइधूयापाणप्पिओ जाओ ॥ २५६ ॥
रायसुयावयणेणं गुरुवइठ्ठं स सिद्धवरचक्कं।
आराहिऊण सम्मं संजाओ कणयसमकाओ ॥ २५७ ॥
सो य ०साहम्मिएहिं, पूरियविहवो सुधम्मकम्मपरो।
अच्छइ उज्जेणीए, घरणीइ समन्निओ सुहिओ ॥ २५८ ॥
तं सोऊणं हरिसिअचित्ताऽहं वच्छ! इत्थ संपत्ता।
दिट्ठोसि वहूसहिओ, जुण्हाइ ससिव्व कयहरिसो ॥ २५९ ॥
ता वच्छ! तुमं वहुयासहिओ जयजीव नंद चिरकालं।
एसुच्चिय जिणधम्मो, जावज्जीवं च मह शरणं ॥ २६० ॥
जिणरायपायपउमं, नमिऊणं वंदिऊण सुगुरुं च।
तिन्निवि करंति धम्मं, सम्मं जिणधम्मविहिनिउणा ॥ २६१ ॥
ते अन्नदिणे जिगवरपूअं काऊण अंगअग्गमयं।
भावच्चयं करंता, देवे वंदंति उवउत्ता ॥ २६२ ॥

इओ य :—

धूयादुहेण सा रुप्पसुंदरी रुसिऊण सह रन्ना।
निअभायपुण्णपालस्स मंदिरे अच्छइ ससोया ॥ २६३ ॥
वीसारिऊण सोअं, सणिअं सणिअं जिणुत्तवयणेहिं।
जग्गिअचित्तविवेआ समागया चेइयहरंमि ॥ २६४ ॥
जा पिक्खइ सा पुरओ, तं कुमरं देववंदणापउणं।
निउणं निरुवमरूवं पच्चक्खं सुरकुमारं व ॥ २६५ ॥
तप्पुठ्ठीइ ठिआओ जणणीजायाउ ताव तस्सेव।
दठ्ठूण रुप्पसुंदरि राणी चिंतेइ चित्तंमि ॥ २६६ ॥
ही एसा क लहुया वहुया दीसेइ मज्झ पुत्तिसमा।
जाव निउणं निरिक्खइ उवलक्खइ ताव तं मयणं ॥ २६७ ॥
नूणं मयणा एसा, लग्गा एयस्स कस्सवि नरस्स।
पुट्ठीइ कुट्ठिअं तं मुत्तूणं चत्तसइमग्गा ॥ २६८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मयणा जिणमयनिउणा संभाविज्जइ न एरिसं तीए।
भवनाडयंमि अहवा ही ही किं किं न संभवइ ?॥ २६९॥
विहिअं कुले कलंकं आणीअं दूसणं च जिणधम्मे।
जीए तीइ सुयाए न मुयाए तारिसं दुक्खं ॥ २७०॥
जारिसमेरिस असमंजसेण चरिएण जीवयंतीए।
जायं मज्झ इमीए धूयाइ कलंकभूयाए ॥ २७१॥
एवं चिंतंती रुप्पसुंदरी दुक्खपूरपडिपुण्णा ।
करुणसरं रोयंती भणेइ एयारिसं वयणं ॥ २७२॥
धिद्धी अहो अकज्जं निवडउ वज्जं च मज्झ कुच्छीए।
जत्थुप्पन्नावि वियक्खणावि ही एरिसं कुणइ ॥ २७३॥
तं सोऊणं मयणा जा पिक्खइ रुप्पसुंदरीजणणिं।
रुयमाणिं ता नाओ तीए जणणीअभिप्पाओ ॥ २७४॥
चिअवंदणं समग्गं काऊणं मयणसुंदरी जणणिं।
कर वंदणेण वंदिअ विअसिअवयणा भणइ एवं ॥ २७५॥
अम्मो ! हरिसट्ठाणे कीस विसाओ विहिज्जए एवं ?।
जं एसो नीरोगो जाओ जामाउओ तुम्हं ॥ २७६॥
अन्नं च जं वियप्पह तं जइ पुव्वाइ पच्छिमदिसाए।
उग्गमइ कहवि भाणू तहवि न एयं निय सुयाए॥ २७७॥
कुमरजणणीवि जंपइ सुंदरि। मा कुणसु एरिसं चित्ते।
तुज्झ सुआइ पभावा मज्झ सुओ सुंदरो जाओ॥ २७८॥
धन्नासि तुमं जीए कुच्छीए इत्थिरयणमुप्पन्नं।
एरिसमसरिससीलप्पभावचिंतामणिसरिच्छं ॥ २७९॥
हरिसवसेणं सा रुप्पसुन्दरी पुच्छए किमेअं ति ?।
मयणावि सुविहिनिउणा पभणइ एआरिसं वयणं ॥ २८०॥
चेइअहरंमि वत्तालावंमि कए निसीहिआभंगो।
होइ तओ मइ गेहे वच्चह साहेमिमं सव्वं॥ २८१॥
तत्तो गंतूण गिहं मयणाए साहिओ समग्गोवि।
सिरिसिद्धचक्कमाहप्पसंजुओ निययवुत्तंतो॥ २८२॥
तं सोऊणं तुट्ठा रुप्पा पुच्छेइ कुमरजणणिंपि।
वंसुप्पत्तिं तुह नंदणस्स सहि ! सोउमिच्छामि॥ २८३॥
पभणेइ कुमरमाया अंगादेसंमि अत्थि सुपसिद्धा।
वेरिहिं कयअकंपा चंपानामेण वरनयरी॥ २८४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्थ य अरिकरिसीहो सीहरहो नाम नरवरो अत्थि ।
तस्स पिया कमलपहा कुंकुण नरनाहलहुभइणी ॥ २८५ ॥
तीए अपुत्तिआए चिरेण वरसुविणसूइओ पुत्तो ।
जाओ जणि आणंदो वद्धावणयं च कारवियं ॥ २८६ ॥
पभणेइ तओ राया अम्हं अणाहाइ रायलच्छीए ।
पालणखमो इमो ता हवेउ नामेण सिरिपालो ॥ २८७ ॥
सो सिरिपालो बालो जाओ जा वरिसजुयलपरियाओ ।
ता नरनाहो सूलेण झत्ति पंचत्तमणुपत्तो ॥ २८८ ॥
कमलप्पहा रुयंती मइसायरमंतिणा निवारित्ता ।
धाईउच्छंगठिओ सिरिपालो थापिओ रज्जे ॥ २८९ ॥
जं बालस्सवि सिरिपालनाम रन्नो पवत्तिआ आणा ।
सव्वत्थवि तो पच्छा, निवमियकिच्चंपि कारवियं ॥ २९० ॥
बालोवि महीपालो रज्जं पालेइ मंतिमुत्तेणं ।
मंतीहिं सव्वत्थवि रज्जं रक्खिज्जए लोए ॥ २९१ ॥
कइवयदिणपज्जंते बालयपित्तिज्जओ अजिअसेणो ।
परिगहभेअं काउं, मंतइ निवमंतिवहणत्थं ॥ २९२ ॥
तं जाणिऊण मंती कहिउं कमलप्पभाइ सव्वंपि ।
विन्नवइ देवि जह तह रक्खिज्जसु नंदणं नियमं ॥ २९३ ॥
जीवंतेण सुएणं होही रज्जं पुणोवि निब्भंतं ।
ता गच्छ इमं वित्तुं कत्थवि अहयंपि नासिस्सं ॥ २९४ ॥
तत्तो कमला घित्तूण नंदणं निग्गया निसिमुहंमि ।
मा होउ मंतभेओ त्ति सव्वहा चत्तपरिवारा ॥ २९५ ॥
निवभज्जा सुकुमाला वहियव्वो नंदणो निसा कसिणा ।
चंकमणं चरणेहिं ही ही विहिविलसियं विसमं ॥ २९६ ॥
पिअमरणं रज्जसिरीनासो एगागिणित्तमरितासो ।
रयणीवि विहायंती हा संपइ कत्थ वच्चिस्सं ? ॥ २९७ ॥
इच्चाइ चिंतयंती जा वच्चइ अग्गओ पभायंमि ।
ता फिट्टाए मिलियं कुट्ठियनरपेडयं एगं ॥ २९८ ॥
तं दट्ठूणं कमला, निरुपमरूवा महग्घआहरणा ।
अबला बालिक्कसुआ भयकंपिरतणुलया रुयइ ॥ २९९ ॥
तं रुयमाणिं दट्ठुं पेडयपुरिसा भणंति करुणाए ।
भद्दे ! कहेसु अम्हं काऽसि तुमं कीस बीहेसि ? ॥ ३०० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीए निअबंधूणं व, कहिओ सव्वोऽवि निययवुत्तंतो।
तेहिं च सा सभइणिव्व सम्ममासासिआ एवं॥ ३०१॥
मा कस्सवि कुणसु भयं, अम्हे सव्वे सहोअरा तुज्झ।
एयाइ वेसरीए आरूढा चलसु वीसत्था॥ ३०२॥

तत्तो जा सा वरवेसरीए चडिआ ः पडेण पिहिअंगी।
पेडयमज्झंमि ठिया, नियपुत्तजुआ सुहं वयइ॥ ३०३॥
ता पत्ता वेरिभडा उब्भडसत्थेहिं भीसणायारा।
पुच्छंति पेडयं भो दिट्ठा किं राणिआ एगा?॥ ३०४॥

पेडयपुरिसेहिं तओ, भणिअं भो अत्थि अम्ह सत्थंमि।
रउताणियावि नूनं, जइ कज्जं ता पगिण्हेह॥ ३०५॥
एगेग भडेण तओ, नायं भणिअं च दिंति मे पामं।
सव्वं दिज्जइ संतं, तो कुट्ठभएण ते नट्ठा॥ ३०६॥
तेहिं गएहिं कमला, कमेण पत्ता सुहेण उज्जेणिं।
तत्थ ठिआ य सपुत्ता, पेडयमन्नत्थ संपत्तं॥ ३०७॥
भूसणधणेण तणओ, जा विहिओ तीइ जुव्वणाभिमुहो।
ता कम्मदोसवसओ, उंबररोगेण सो गहिओ॥ ३०८॥

बहुएहिंपि कएहिं, उवयारेहिं गुणो न से जाओ।
कमलप्पहा अदन्ना, जणं जणं पुच्छए ताव॥ ३०९॥
केणवि कहिअं तीसे, कोसंबीए समत्थि वरविज्जो।
जो अट्ठारसजाइ, कुट्ठस्स हरेइ निब्भंतं॥ ३१०॥
कमला पुत्तं पाडोसिआण सम्मं भलाविऊण सयं।
विज्जस्स आणणत्थं, पत्ता कोसंबिनयरीए॥ ३११॥

तं विज्जं तित्थगयं, पडिक्खमाणी चिरं ठिआ तत्थ।
मुणिवयणाओ मुणिऊण पुत्तसुद्धिं इहं पत्ता॥ ३१२॥
साऽहं कमला सो एस मज्झ पुत्तुत्तमो (त्थि) सिरिपालो।
जाओ तुज्झ सुयाए, नाहो सव्वत्थ विक्खाओ॥ ३१३॥

सीहरहरायजायं, नाउं जामाउअं तओ रुप्पा।
साणंदं अभिणंदइ, संसइ पुन्नं च धूयाए॥ ३१४॥

गंतूण गिहं रुप्पा, कहेइ तं भायपुण्णपालस्स।
सोऽवि सहरिसो कुमरं, सकुडुंबं नेइ नियगेहं॥ ३१५॥
अप्पेइ वरावासं पूरइ धणधन्नकंचणाईयं।
तत्थऽच्छइ सिरिवालो दोगुंदुगदेवलीलाए॥ ३१६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्नदिणे तस्सावासपाससेरीइ निग्गओ राया।
पिक्खइ गवक्खसंठिअकुमरं मयणाइसंजुत्तं ॥ ३१७ ॥
तो सहसा नरनाहो मयणं दट्ठूण चिंतए एवं।
मयणाइ मयणवसगाइ मह कुलं मइलियं नूणं ॥ ३१८ ॥
इक्कं मए अजुत्तं कोवंधेणं तया कयं बीअं।
कामंधाइ इमीए विहियं ही ही अजुत्तयरं ॥ ३१९ ॥
एवं जावविसायस्स तस्स रन्नो सुपुण्णपालेण।
विन्नत्तं तं सव्वं धूयाचरिअं सअच्छरिअं ॥ ३२० ॥
तं सोऊणं राया विम्हिअचित्तो गओ तमावासं।
पणओ य कुमारेणं मयणासहिएण विणएणं ॥ ३२१ ॥
लज्जाऽऽणओ नरिंदो पभणइ धिद्धी ममं गयविवेअं।
जं दप्पसप्पविसमुच्छिएण कयमेरिसमकज्जं ॥ ३२२ ॥
वच्छे! धन्नाऽसि तुमं कयपुन्ना तंसि तंसि सविवेआ।
तं चेव मुणियतत्ता जीए एयारिसं सत्तं ॥ ३२३ ॥
उद्धरिअं मज्झ कुलं उद्धरिया जीइ नियय जणणी वि।
उद्धरिओ निरधम्मो सा धन्ना तंसि परमिक्का ॥ ३२४ ॥
अन्नाणतमंधेणं दुद्धरऽहंकारगयविवेगेणं।
जो अवराहो तइआ कओ मए तं खमसु वच्छे! ॥ ३२५ ॥
विणओणया य मयणा भणेइ मा ताय! कुणसु मण खेयं।
एयं मह कम्मवसेण चेव सव्वंपि संजायं ॥ ३२६ ॥
नो देइ कोइ कस्सवि, सुक्खं दुक्खं च निच्छओ एसो।
निअयं चेव समज्जिअमुवभुञ्जइ जंतुणा कम्मं ॥ ३२७ ॥
मा वहउ कोइ गव्वं जं किर कज्जं मए कयं होइ।
सुरवरकयंपि कज्जं कम्मवसा होइ विवरीअं ॥ ३२८ ॥
ता ताय! जिणुत्तं तत्तमुत्तमं मुणसु जेण नाएणं।
नज्जइ कम्मजियाणं बलाबलं बंधमुक्खं च ॥ ३२९ ॥
तत्तो धम्मं पडिवज्जिऊण राया भणेइ संतुट्ठो।
सीहरहराय तणओजं जामाया मए लद्धो ॥ ३३० ॥
तं पत्थरमित्तकए हत्थंमि पसारियंमि सहसत्ति।
चडिओ अचिंतिओ च्चिय नूनं चिंतामणी एसो ॥ ३३१ ॥
जामाइयं च धूयं आरोविय गयवरंमि नरनाहो।
महया महेण गिहमाणिऊण सम्माणइ घणेहिं ॥ ३३२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जायं च साहुवायं मयणाए सत्तसीलकलियाए।
जिण सासणप्पभावो सयले नयरंमि वित्थरिओ ॥ ३३३ ॥
अन्नदिणे सिरिपालो हयगयरहसुहडपरियरसमेओ।
चडिओ रायवाडीए पच्चक्खो सुरकुमारुव्व ॥ ३३४ ॥
लोए अ सप्पमोए पिक्खंते चडिअ चंदसालासुं।
गामिल्लएण केणवि नागरिओ पुच्छिआ कोवि ॥ ३३५ ॥
भो भो कहेसु को एस जाइ लीलाइ रायतणउव्व ?।
नागरिओ भणइ अहो, नरवर जामाउओ एसो ॥ ३३६ ॥
तं सोऊण कुमारो सहसा सरताडिओव्व विच्छाओ।
जाओ वलिऊण समागओ अगेहंमि सविसाओ ॥ ३३७ ॥
तं तारिसं च जणणी दट्ठूण समाकुला भणइ एवं।
किं अज्ज वच्छ! कोवि हु तुह अंगे बाहए वाही ? ॥ ३३८ ॥
किंवा आखंडल सरिस तुज्झ केणावि खंडिया आणा ?।
अहवा अघडंतोवि हु पराभवो केणवि कओ ते ? ॥ ३३९ ॥
किंवा कन्नारयणं, किंपि हु हियए खडुक्कए तुज्झ।
वरणीकओ अविणओ, सो मयणाए न संभवइ ॥ ३४० ॥
केणावि कारणेणं, चिंतातुरमत्थि तुह मणं नूणं।
जेणं तुह मुहकमलं, विच्छायं दीसई वच्छ! ॥ ३४१ ॥
कुमरेण भणिअ अम्मो! एएसि मज्झओ न एक्कंपि।
कारणमत्थित्थमिमं, अन्नं पुण कारणं सुणसु ॥ ३४२ ॥
नाहं निअयगुणेहिं, न तायनामेण नो तुह गुणेहिं।
इह विक्खाओ जाओ, अहयं सुसुरस्स नामेणं ॥ ३४३ ॥
तं पुण अहमाहमत्तकारणं वज्जिअं सुपुरिसेहिं।
तत्तुच्चिय मज्झ मणं दूमिज्जइ सुसुरवासेणं ॥ ३४४ ॥
तो भणिअं जणणीए, बहुसिन्नं मेलिऊण चउरंगं।
गिण्हसु निअपिअरज्जं, मह हियय कुणसु निस्सल्लं ॥ ३४५ ॥
कुमरेणुत्तं सुसुरयबलेण जं गिण्हणं सरज्जस्स।
तं च महच्चिअ दूमइ, मज्झं चित्तं धुवं अम्मो! ॥ ३४६ ॥
ता जइ सभुयज्जिअ सिरिबलेण गिण्हामि पेइअं रज्जं।
ता होइ मज्झ चित्तंमि निव्वुई अन्नहा नेव ॥ ३४७ ॥
तत्तो गंतूणमहं, कत्थवि देसंतरंमि इक्किल्लो।
अज्जिअलच्छिबलेणं, लहुं गहिस्सामि पिअरज्जं ॥ ३४८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तं पइजंपइ जणणी, बालो सरलोऽसि तं सि सुकुमालो ।
देसंतरेसु भमणं, विसमं दुक्खावहं चेव ॥ ३४९ ॥
तो कुमरो जणणीं पइ, जंपइ मा माइ ! एरिसं भणसु ।
तावच्चिय विसमत्तं, जाव ण धीरा पवज्जंति ॥ ३५० ॥

पभणइ पुणाऽवि माया, वच्छय ! अम्हे सहागमिस्सामो ।
को अम्हं पडिबंधो तुमं विणा इत्थ ठाणंमि ? ॥ ३५१ ॥
कुमरो कहेइ अम्मो ! तुम्हेहिं सहागयाहिं सव्वत्थ ।
न भवामि मुक्कलपओ, ता तुम्हे रहह इत्थेव ॥ ३५२ ॥

मयणा भणेइ सामिअ ! तुम्हं अणुगामिणी भविस्सामि ।
भारंपि हु किंपि अहं न करिस्सं देहछायव्व ॥ ३५३ ॥
कुमरेणुत्तं उत्तमधम्मपरे देवि ! मज्झ वयणेणं ।
नियसस्सूसुस्सूसणपरा तुमं रहसु इत्थेव ॥ ३५४ ॥

मयणाऽऽह पइपवासं सइओ इच्छंति कहवि नो तहवि ।
तुम्हं आयेसुच्चिय महप्पमाणं परं नाह ! ॥ ३५५ ॥
अरिहंताऽऽइपयाइं खणंपि न मणाउ मिल्हियव्वाइं ।
तियजणणिं च सरिज्जसु कइयावि हु मंऽपि नियदासीं ॥ ३५६ ॥

जणणीवि तस्स नाऊण निच्छयं तिलयमंगलं काउं ।
पभणइ तुह सेयत्थं नवपयझाणं करिस्समहं ॥ ३५७ ॥
मयणा भणेइ अहयंपि नाह ! निच्चंपि निच्चलमणेणं ।
कल्लाणकारणाइं झाइस्सं ते नवपयाइं ॥ ३५८ ॥

तेणं मयणावयणामएण सित्तो नमित्तु माइपए ।
संभासिऊण दइयं सिरिपालो गहिअ करवालो ॥ ३५९ ॥
निम्मलवारुणमंडल मंडिअससिचारपाणसुपवेसे ।
तच्चरणपढमकमणं कमेण चल्लेइ गेहाओ ॥ ३६० ॥

सो गामागरपुरपत्तनेसु कोऊहलाइं पिक्खंतो ।
निब्भयचित्तो पंचाणणुव्व गिरिपरिसरं पत्तो ॥ ३६१ ॥
तत्थ य एगंमि वणे नंदणवणसरिससरसपुप्फफले ।
कोइल कलरव रम्मं तरुपंतिं जा निहालेइ ॥ ३६२ ॥

ता चारुचंपयतले आसीणं पवररूवनेवत्थं ।
एगं सुंदरपुरिसं पिक्खइ मंतं च झायंतं ॥ ३६३ ॥
सो जावसमत्तीए विणयपरो पुच्छिओ कुमारेण ।
कोऽसि तुमं किं झायसि एगागो किं च इत्थ वणे ? ॥ ३६४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेणुत्तं गुरुदत्ता विज्जा मह अत्थि सा मए जविआ ।
परमुत्तरसाहगमंतरेण सा मे न सिज्जेइ ॥ ३६५ ॥

जइ तं होऽसि महायस ! मह उत्तरसाहगो कहवि अज्ज ।
ताऽहं होमि कयत्थो, विज्जासिद्धीइ निब्भंतं ॥ ३६६ ॥

तत्तो कुमरकएणं साहज्जेणं स साहगो पुरिसो ।
लीलाइ सिद्धविज्जो जाओ एगाइ रयणीए ॥ ३६७ ॥

तत्तो साहगपुरिसेण तेण कुमरस्स ओसहीजुअलं ।
पडिउवयारस्स कए दाऊणं भणियमेयं च ॥ ३६८ ॥

जलतारिणी अ एगा परसत्थनिवारिणी तहा बीया ।
एयाउ ओसहीओ तिधाउमढियाउ धारिज्जा ॥ ३६९ ॥

कुमरेण समं सो विज्जसाहगो जाइ गिरिनियंबंमि ।
ता तत्थ धाउवाइअ पुरिसेहिं परिसं भणिओ ॥ ३७० ॥
देव ! तुह दंसिएणं कप्पपमाणेण साहयंताणं ।
केणावि कारणेणं अम्हाण न होइ रससिद्धो ॥ ३७१ ॥

कुमरेण तओ भणियं भो मह दिट्ठीइ साहह इमंति ।
ता तेहिं तहाविहिए जाया कल्लाणरससिद्धी ॥ ३७२ ॥
काऊण कंचणं साहगेहिं भणिअं कुमार ! अम्हाणं ।
जं जाया रससिद्धी तुम्हाणं सो पसाओत्ति ॥ ३७३ ॥

ता गिण्ह कणगमेयं नो गिण्हइ निप्पिहो कुमारो य ।
तहवि हु अलयंतस्सवि किंपि हु बंधंति ते वत्थे ॥ ३७४ ॥
तत्तो कुमरो पत्तो कमेण भरुयच्छनामयं नयरं ।
कणगव्वएण गिण्हइ वत्थालंकारसत्थाइं ॥ ३७५ ॥

काऊण धाउमढियं ओसहिजुयलं च बंधइ भुयंमि ।
लीलाइ भमइ नयरे सछंदं सुरकुमारुव्व ॥ ३७६ ॥

इओ य—

कोसंबीनयरीए धवलो नामेण वाणिओ अत्थि ।
सो बहुधणुत्ति लोए, कुबेरनामेण विक्खाओ ॥ ३७७ ॥
बहुकणयकोडिगाहिअकयाणगो णेगवाणिउत्तेहिं ।
सहिओ सो सत्थवई भरुयच्छे आगओ अत्थि ॥ ३७८ ॥

जाओ य तत्थ लाहो पवरो सो तहवि दव्वलोहेणं ।
परकूलगमणपउणो पउणइ बहुजाणवत्ताइं ॥ ३७९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मज्झिमजुंगो एगो सोलसवरकूवएहिं कयसोहो।
चत्तारि य लहुजुंगा चउचउकूवेहिं परिकलिआ॥ ३८०॥

वउसफरपवहणाणं एगसयं वेडियाण अट्ठसयं।
चउरासी दोणाणं चउसट्ठी वेगडाणं च॥ ३८१॥

सिल्लाणं चउपन्ना आवत्ताणं च तह य पंचासा।
पणतीसं च खुरप्पा एवं सयपंच बोहित्था॥ ३८२॥

गहिऊण निवाएसं भरिया विविहेहिं ते कयाणेहि।
ना खुड्डयमालमेहिं अहिट्ठिया वाणिउत्तेहिं॥ ३८३॥

मरजीवएहिं गब्भिज्जएहि खुल्लासएहिं खेलेहिं।
सुंकाणिएहिं सययं कयजालवणीविहिविसेसा॥ ३८४॥

नाणविहसत्थविहत्थहत्थसुहडाण दससहस्सेहिं ।
धवलस्स सेवगेहिं रक्खिज्जंता पयत्तेणं॥ ३८५॥

बहुचमरछत्तसिक्करिधयवडवरमउडविहिअसिंगारा ।
सिढदोरसारनंगरपक्खरभेरीहिं कयसोहा ॥ ३८६॥

जलसंवलइंधणसंगहेण ते पूरिऊण समुहुत्ते।
धवलो य सपरिवारो चडिओ चालावए जाव॥ ३८७॥

ताव बलीसुवि दिज्जंतयासु वज्जंततारतूरेसुं।
निज्जामएहिं पोआ चालिज्जंतावि न चलंति॥ ३८८॥

तत्तो स संजाओ धवलो चिंताइ तीइ कालमुहो।
उत्तरिय गओ नयरिं पुच्छइ सीकोत्तरिं चेगं॥ ३८९॥

सा कहइ देवयाथंभियाइं पयाइं जाणवत्ताइं।
बत्तीससुलक्खणवरबलीइ दिन्नाइ चल्लंति॥ ३९०॥

तत्तो धवलो सुमहग्घवत्थुभिट्टाइ तोसिऊण निवं।
विन्नवइ देव! एगं बलिकज्जे दिज्जउ नरं मे॥ ३९१॥

रन्ना भणियं—जो कोऽवि होइ वइदेसिओ अणाहो अ।
तं गिण्ह जहिच्छाए अन्नो पुण नो गहेयव्वो॥ ३९२॥

तत्तो धवलस्स भडा जाव गवेसंति तारिसं पुरिसं।
ता सिरिपालो कुमरो विदेसिओ जाणिओ तेहिं॥ ३९३॥

बत्तीसलक्खणधरो कहिओ धवलस्स तेहिं पुरिसेहिं।
धवलेण पुणो रायाएसो गहिओ य तग्गहणे॥ ३९४॥

सो सिरिपालो चउहट्टयंमि लीलाइ संनिविट्ठोवि।
धवलभडेहिं बब्भडसत्थेहिं झत्ति अक्खित्तो॥ ३९५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रे रे तुरिअं चल्लपु रुट्ठो तुह अज्जधवलसत्थवई ।
तं देवया वलीए दिज्जसि मा कहसि नो कहिअं ।। ३९६ ।।

कुमरेणुत्तं रेरे देह वलिं तेण धवलपसुणावि ।
पंचाणणेण कत्थवि किं केणवि दिज्जए हु वली ? ।। ३९७ ।।

तत्तो पयडंति भडा किंपि बलं जाव ताव कुमरकयं ।
सोऊण सीहनायं गोमाउगणुव्व ते नट्ठा ।। ३९८ ।।

धवलस्स पेरिएणं रन्नावि हु पेसियं नियं सिन्नं ।
तंपि हु कुमरेण कयं हयप्पयावं खणद्धेणं ।। ३९९ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीलवई कहाणगं

इत्थेव जंबुदीवे भारह वासंमि वासवपुरं व।
कय-विबुह जणाणंदं नंदणपुरमत्थि वर-नयरं।।
पडिहय-पडिवक्ख-बलो हरि व्व अरि-मद्दणो तहिं राया।
गुण-रयण-निही रयणायरु त्ति सिट्ठी तहिं अत्थि।।
तस्स सिरीनाम-पिया रूव-गुणेणं सिरि व्व पच्चक्खा।
तीए न अत्थि पुत्तो तेण दढं तम्मए सेट्ठी।।

अन्नया भणिओ भज्जाए–अज्जउत्त! अत्थि इत्थेव नयरुज्जाणे अणिय-जिणिंद–मंदिर–दुवार–देसे अजियबला देवया अपुत्ताण पुत्तं, अवित्ताण वित्तं, अरज्जाण रज्जं, अविज्जाण विज्जं, असुक्खाण सुक्खं, अचक्खूण चक्खुं, सरोयाण रोय–क्खयं देइ एसा। कयं सेट्ठिणा तीए ओवाइयं। कमेण जाओ पुत्तो। तस्स कयं 'अजियसेणो' त्ति नामं। जाओ जिण-धम्मुज्जुओ सिट्ठी। जणयमणोरहेहिं सह वड्ढिओ अजियसेणो। सिक्खिय–कलाकलावो लावन्नलच्छि–पुन्नं पवन्नो तारुन्नं। तस्स य सयल–जणब्भहिए रूवाइ–गुणे पिच्छिऊणचिंतियं सेट्ठिणा–जइ एस मह नंदणो निय–गुणाणु-रूवं कलत्तं न लहइ ता इमस्स अकयत्था गुणा।

जओ—

सामी अविसेसन्नू अविणीओ परियणो पर–वसत्तं।
भज्जा य अणणुरूवा चत्तारि मणस्स सल्लाइं।।

इत्थंतरे आगओ एगो वाणिउत्तो। पणमिऊण सिट्ठिं निविट्ठो समीवे। पुट्ठो य सेट्ठिणा ववहार–सरूवं। कहियं तेण सव्वं। अन्नं च, तुहाएसेण गओहं कयंगलाए नयरीए। जाओ मे जिणदत्त–सिट्ठिणा समं ववहारो। निमंतिओऽहं तेण भोयणत्थं। दिट्ठा मए तीग्गहे चंदकंतेणं वयणेणं पओ-अराएहिं हत्थपाएहिं पवालेणं अहरेणं दिप्पमाणेहिं रयणेहिं रयएणं नियंवेणं सुवन्नेणं अंगेणं मयण–महाराय–भंडार–मंजूस व्व संचारिणी एगा कन्नगा। पुट्ठो मए सिट्ठी का एस त्ति। सिट्ठिणा वुत्तं भद्द! मह धूया–मिसेण मुत्तिमई एसा चिंता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जओ—

किं लट्ठं लहिही वरं पियथमं किं तस्स संपज्जिही
किं लोयं ससुराइयं नियगुण-ग्गामेण रंजिस्सए ।
किं सीलं परिपालिही पसविही किं पुत्तमेवं ध्रुवं
चिंता मुत्तिमई पिऊण भवणे संवट्टए कन्नगा ॥

एसा य सरीर-सुंदरिम-दलिय-देव-रमणी-मडप्फा अणप्प-गुण-सोहिया हियाहिए-विचार-कुसला सलाहणिज्ज-सीला सीलमइ त्ति गुण-निप्फन्ननामा बालत्तणओ वि पुव्व-कय-सुकय-वसेण सउणरुय-पज्जंताहि कलाहिं सहीहिं व पडिवन्ना। इमीए अणुरूवं वरं अलहंतस्स मे अच्चंतं चिंता। अओ मए एसा वि चिंत त्ति वुत्ता। मए भणियं सिट्ठि। मा संतप्प, अत्थि नंदणपुरे रयणायरसिट्ठिणो विसिट्ठरूवाइ-गुणो, पुत्तो अजियसेणो सो तुह धूआए अणुरूवो वरो त्ति। जिणदत्तेण वुत्तं भद्द! तुमए मे महंत-चिंता समुद्द-मग्गस्स पवर-वरो-वएस-वोहित्थेण नित्थारो कओ त्ति भणिऊण तेण अजियसेणस्स सीलमइं दाउं पेसिओ जिणसेहरो निय-पुत्तो मए समं। सो इहागओ चिट्ठइ। ता जहा जुत्तमाइसउ सिट्ठी। जुत्तं कयं तुमए त्ति भणिऊण हक्काराविओ जिणसेहरो सिट्ठिणा। सगोरवं दिन्ना तेण अजियसेणस्स सीलमई। अजियसेणेणावि तत्थेव सह गंतूण कयंगलाए परिणीया सीलमई। वित्तूण तं आगओ स-नयरं अजियसेणो। भुंजए भोए। अन्नया मज्झ-रत्ते घडं घित्तूण गिहाओ निग्गया सीलमई। कित्तिय-वेलाए आगया दिट्ठा ससुरेण। चिंतियं नूणं एसा कुसील त्ति गोसे गहिणी-समक्खं वुत्तो पुत्तो वत्थ! तुहेसा घरिणी कुसीला, जओ अज्ज मज्झ-रत्ते निग्गंतूण कत्थवि गया आसि, ता एसा न जुज्जइ गिहे धरिउं।

जओ—

घण-रस-वसओ उम्मग्ग-गामिणी-भग्ग-गुण दुमा कलुसा।
महिला दो वि कुलाइं कूलाइं नइ व्व पाडेइ ॥

ता पराणेमि एयं पिइ-हरं। पुत्तेण वुत्तं ताय! जं जुत्तं तं करेसु। भणिया वहुया—भद्दे! आगओ 'सीलवइं सीग्घं पेसिज्जसु' त्ति तुह जणयसंदेसओ। ता चलसु जेण तुमं सयं पराणेमि। सा वि 'रयणि-निग्गमणेण ममं कुसीलं संकमाणो एवमाइसइ ससुरो, पिच्छामि ताव एयं पि' त्ति चिंतिऊण चलिया रहारूढेण सिट्ठिणा समं। वच्चंतो सेट्ठी पत्तो नइं। सेट्ठिणा वुत्ता वहू—पाणहाओ मुत्तूण नइं ओयरसु। तीए न मुक्काओ ताओ। सेट्ठिणा चिंतियं अविणीय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्ति। अग्गओ दिट्ठं पढम-वत्ता-पइन्नं अच्चंत-फलियं मुग्गखेत्तं। सेट्ठिणा भणियं-अहो! सुफलियं मुग्ग-खेत्तं। सव्व-संपया खेत्तसामिणो। तीए भणियं एवमेयं, जइ न खद्धं ति। सेट्ठिणा चिंतियं अक्खयं पेक्खंती वि! खद्धंति अक्खइ। अओ असंबद्ध-प्पलाविणी एसा। गओ एगं समिद्ध-पमुइय-जण-संकुलं नगरं। सेट्ठिणा भणियं अहो! रम्मत्तणं इमस्स तीए भणियं जइ न उव्वसं ति। सेट्ठिणा चिंतियं उल्लंठ-भासिणी इमा।

अग्गओ गच्छंतेण सेट्ठिणा दिट्ठो परूढाणेगप्पहारो पहरण-करो ताव कुट्टिओ। सेट्ठिणा चिंतियं किं न सूरो जो सत्थेहिं कुट्टिज्जइ, परं अजुत्त-जंपिरी इमा। गओ अग्गओ नग्गोह-तले वीसंतो सेट्ठी। वहू उण नग्गोह-च्छायं छड्डिऊण ठिया दूरे। सेट्ठिणा भणियं अच्छसु छायाए, न तत्थ ठिया। सेट्ठिणा चिंतियं सव्वहा विवरीय त्ति। पत्तो गाममेक्कं। वहूए वुत्तो सेट्ठी, एत्थ अत्थि मे माउलगो तं जाव पेच्छामि ताव तुब्भे पडिवा-लेह त्ति गया सा मज्झे। दिट्ठा माउलगेण ससंभमं भणिया वच्छे! कत्थ पत्थियासि?। तीए भणियं-ससुरेण सह पिइहरं पत्थियम्हि। तेण भणियं कत्थ ते ससुरो?। तीए वुत्तं बाहिं चिट्ठइ। गंतूण माउलेण हक्कारिओ सायरं सेट्ठी। सकसाउ त्ति अणिच्छंतो वि नीओ निब्बंधेण गेहं। भोयणं काऊण आगओ बाहिं। मज्झण्हसमओ त्ति वीसमिओ रहब्भंतरे। शीलमई वि निसन्ना रह-च्छायाए। एत्थंतरे करीर-त्थंबावलंबी पुणो पुणो वासए वायसो। भणियं अणाए-अरे! काय! किं न थक्कसि करयंतो।

एक्के दुन्नय जे कया तेहिं नीहरिय घरस्स।
बीजा दुन्नय जइ करउं तो न मिलउं पियरस्स॥

सुयमिणं सेट्ठिणा भणिआ सा-वच्छे! किमेवं जंपसि? वहूए भणियं न किं चि। सेट्ठिणा भणियं कहं न किंचि। वायसमुद्दिसिऊण 'एक्के दुन्नय' त्ति जं पढियं तं साहिप्पायं। वहूए वुत्तं-जइ एवं ता सुणेउ ताओ।

सोरब्भ-गुणेणं छेय-घरिसणाईणि चंदणं लहइ।
राग-गुणेणं पावइ खंडण-कढणाइं मंजिट्ठा॥

एवं ममावि गुणो सत्तू संजाओ। जओ-सयल-कला-सिरोमणि-भूयं सउण-रुयं अहं सुणेमि। तओ अइक्कंतदिण-रयणीए सिवाए वासंतीए साहियं, जहा-नईए पूरेण वुब्भमाणं मडयं कड्डिऊण सयं आहरणाणि गिण्हसु। मम भक्खं तं खिवसु। इमं सोऊण गयाहं घेत्तूण घडगं। तं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हियए दाऊण पविट्ठा नइं। कड्ढियं मडयं। गहियाणि आभरणाणि। खित्तं सिवं सिवाए। आगया अहं णिहं। आभरणाणि घडए खिविऊण निखियाणि खोणीए एवं एक्क-दुन्नयस्स पभावेण पत्ता एत्तियं भूमिं। संपयं तु वासंतो वायसो कहइ, जहा-एयस्स करीर-त्थंबस्स हेट्ठा दस-सुवण्ण-लक्ख-प्पमाणं निहाणमत्थि तं घेत्तूण मम करंबयं देसु त्ति। इमं सोऊण सहसा उट्ठिओ सेट्ठी भणइ-वच्छे! सच्चमेयं? बहूए जंपियं-किं अलियं जंपिज्जए ताय-गायाणं पुरओ। अहवा हत्थत्थे कंकणे किं दप्पणेणं ति निहालेउ ताओ। तओ तत्थेव ठिओ सेट्ठी गहियं निहाणं रयणीए। अहो! मुत्तिमंती इमा लच्छि त्ति जाय बहु-माणो बहुं रहे आरोविऊण नियत्तो सेट्ठी। पत्तो नग्गोहं। पुच्छए बहुं-किं न तुमं इमस्स छायाए ठिया? बहूए अक्खियं-रुक्ख-मूले अहि-दंसाइ भयं, चिरासणे चोराइ-भयं, हेट्ठओ काग-बगाइ-विट्ठा-पडण-भयं, दूर-ट्ठियाणं तु न सव्वमेयं। पुणो पुट्ठं सेट्ठिणा वुत्तं-कहमेयमुव्वसं? तीए वुत्तं-जत्थ नत्थि सयणो सागय-पडिवत्ति कारओ तं कहं वसिमं। खेत्तं दट्ठूण सेट्ठिणा पुट्ठं-कहमेयं खद्धं ति? तीए वुत्तं-ववहरणाओ दव्वं वुड्ढीए कहिऊण खेत्तसामिणा खद्धं ति खद्धं। नइं दट्ठूण भणियं सेट्ठिणा-किं तए नईए पाणहाअ। न मुक्काओ? तीए जंपियं-जल-मज्झे-कीड-कंटगाइ न दीसइ त्ति। पत्तो गिहं सेट्ठी। दंसियाइं तीए महि-निहित्ता-हरणाइं। तुट्ठेण सेट्ठिणा भज्जाए सुयस्स सव्वं कहिऊण कया सा घर-सामिणी।

अह जीवियस्स तरलत्तणेण पंचत्तमुवगओ सेट्ठी।
निहणं गया सहयरी सिरी वि छाय व्व तव्वि रहे॥

अजियसेणो वि जिण-धम्म-परो कालं बोलेइ। अन्नया अरिमद्दण-नरिंदो एगूण-पंच-सयाणं मंतीणं पहाणं मंतिं मग्गेमाणो नायरए पत्तेयं पुच्छइ-भो भो! जो मं पाएण पहणइ तस्स किं कीरइ? पुच्छिओ अजियसेणो। तेण वुत्तं-परिभाविऊण कहिस्सं। गिहागएण पुच्छिया तस्सुत्तरं सीलवई। तीए चउव्विह-बुद्धि-जुत्ताए जंपियं-जहा-तस्स महंतो सक्कारो कीरइ। भत्तुणा भणियं कहमेयं? तीए वुत्तं-वल्लहाए विणा नत्थि अन्नस्स गयाणं पाएण पहणेमि त्ति चिंतिउं पि जोग्गया, किं पुण पहणिउं। तओ गओ सो रायसहाए, कहियं पुव्वुत्तं। तुट्ठो राया। कओ अणेण सव्व-मंतीण सिरोमणी सो। अन्नया रन्नो विउत्थिओ सीहरहो पच्चंतो राया। तस्सोवरिं चलंत-मय-गल-मय-जलासार-सित्त-महि यलो-तरल-तुरय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खुरुक्खय-खोणि-रेणु-घण-पडल-पूरिय-नहंगणो संचरंत-रह-धवल-धयवडाया-वलाय-पंति-मणोहरो गहि-खज्जिराउज्ज-गज्जि-जज्जरिय-वंभंड-भंडोयरो . नव-पाउसु व्व चलिओ राया। अजियसेणो वि दिट्ठो सीलमईए चिंताउरो। पुच्छिओ चिंताए कारणं। तेण वुत्तं गंतव्वं मए रन्ना समं। तुमं घेत्तूण वच्चंतस्स मे गिहं सुन्नं। तहा जइ वि तुमं अक्खलिय-सीला तहवि एगागिणीं गिहे मुत्तूण वच्चंतस्स मे न मणनिव्वुई। अओ चिंताउरोम्हि। तीए वुत्तं—

जलणो वि होइ सिसिरो रवी वि उग्गमइ पच्छिम-दिसाए।
मेरु-सिहरं पि कंपइ उच्छलइ धरणि-वीढं पि॥
जायइ पवणो वि थिरो मिल्लइ जलही वि नियय-मज्जायं।
तहवि मह सील-भंगं सक्को वि न सक्कए काउं॥
तहवि तुमं मण-निव्वुइ-हेउं गिह्नसु इमं कुसुम-मालं।
मह सील-पभावेणं अमिलाणा च्चिय इमा ठाही॥
जइ, पुण मिलाइ तो सील-खंडणं निम्मियं ति जंपंती।
सा खिवइ निय-करेहिं पइणो कंठे कुसुम-मालं॥
तो अजियसेण-मंती सीलमइं मंदिरंमि मुत्तूण।
निव्वुय-चित्तो चलिओ सह अरिमद्दण नरिंदेण॥
अणवरय-पयाणेहिं तम्मि पएसंमि नरवई पत्तो।
जत्थ न हवंति कुसुमाइं जाइ-सयवत्तियाईणि॥
दट्ठूण कुसुम-मालं अमिलाणं अजियसेण-कंठंमि।
तं भणइ निवो कत्तो तुह अमिलाणा कुसुम-माला॥
अच्छरियमिणं गरुयं मए गवेसावियाइं सव्वत्थ।
निय-पुरिसे पठ्ठविउं तहवि न पत्ताइं कुसुमाइं॥
जंपइ मंती जह मह पियाइ पत्थाण-वासरे खित्ता।
स च्चिय माला न मिलाइ तीइ सील-प्पभावेण॥
तं सोउं नरनाहो विम्हिय-हियओ गए अजियसेणे।
निय-नम्म-मंति-मण्डलमालवइ वियार-सारमिणं॥
जं अजियसेण-सचिवेण जंपियं तं किमित्थ संभवइ।
कामंकुरेण वुत्तं कत्तो सीलं महिलियाणं॥
ललियंगएण भणियं सच्चं कामंकुरो भणइ एयं।
रइ-केलिणा पलित्तं देवस्स किमित्थ संदेहो॥
भणियमसोगेणं पठ्ठवेसु मं देव! जेण सीलमइं।
वियलिय-सीलं काउं देवस्स हरामि संदेहं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तो नरवइणा एसो आइट्ठो अप्पिऊण बहु दव्वं।
पत्तो य नंदणपुरे सीलवईए गिहासन्ने ॥
गिहाइ गरुयं गेहं कंठ-पघोलंत-पंचमुग्गा रो।
किन्नर-गीयाणुगुणं गायइ गीयं गवक्ख-गओ ॥

पयडिय-उज्जल-वेसी पलोयए साणुराय-दिट्ठीए।
निच्चं पयासए चाय-भोय-दुलल्लियमप्पाणं ॥
एवं बहु-प्पयारे कुणइ त्रियारो इमो तओ एसा।
चिंतइ नूणं मह सील-खलणमिच्छइ इमा काउं ॥

फणि-फण-रयणुक्खणणं व जलण-जालावली कवलणं व।
केसरि-केसर-गहणं व दुक्करं तं न मुणइ जडो ॥

पिच्छामि ताव कोउगं ति विचिंतिऊण पयट्टा तं पलोइउं। असोगो वि सिद्धं मे समोहियं ति मन्नंतो पट्ठवेइ दूइं। भणिया तीए सीलमई-भद्दे। कुसुमं व थोव-काल-मणहरं जुव्वणं। ता इमं विसय-सेवणेण सहलं काउं जुत्तं। भत्ता य तुह रन्ना समं गओ। एसो य सुहओ तुमं पत्थेइ। तीए चिंतियं सु-हओ त्ति सुट्ठुहओ वराओ जो एरिसे पावे पयट्टइ। दुईए भणियं। पसयच्छि। पसीयसु मयग-जलण-जाला कलाव संतत्तं।

निय-अंग-संगमामय-रसेण निव्ववसु मम गत्तं ॥
सीलमईए वुत्तं-जुत्तमिणं, किं तु पर-पुरिस-संगो।
कुल-महिलाण अजुत्तो दव्व पसंग व्व साहूणं ॥
नवरं इमो वि कीरइ जइ लब्भइ भग्गियं धणं कहवि।
उच्छिट्ठं पि हु भत्तं भक्खिज्जइ नेह लोहेण ॥
तीए-वुत्तं-मग्गसि कित्तियमित्तं धणं तुमं भद्दो।
सीलमई जंपइ अद्ध-लक्खमिद्धिं समप्पेउ ॥
गहिऊण अद्ध-लक्खं निसाइ पंचम-दिणे सयं एउ।
जेण अपुव्वं वियरेमि रइ-सुहं तस्स सुहयस्स ॥

तीए य कहियमेयं असोगस्स। तेणावि समप्पियं अद्ध-लक्खं। सीलमईए वि गूढ-ओयरए पच्छन्न-पुरिसेहिं खणाविया खड्डा। ठाविया तीए उवरि वर-वत्थ-पच्छाइया अवुणिया खड्डा। पंचम-दिण रयणीए दाऊण अद्ध-लक्खं आगओ असोगो। निविट्ठो खट्टाए। धस त्ति निवडिओ खड्डाए। सीलमई वि दयाए तस्स दिणे दिणे डोर-बद्ध-सरावेण भोयणं देइ। पुण्णे य मासे रन्ना भणिया नम्म-मंतिणो-किं नागओ असोगो ?। तेहिं वुत्तं नयाणीयइ कारणं। रइकेलिणा वुत्तं देह ममाएसं जेणाहं साहेमि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिग्घं चेव चिंतियत्थं। रन्ना बहु-दव्वं अप्पिऊण विसज्जिओ सो। आगओ नयरे। सो वि लक्खं दाऊण तहेव निविट्ठो खड्डाए, पडिओ खड्डाए। एवं लीलयंगयकामंकुरा वि लक्खं दाऊण पडिया खड्डाए। असोग-क्कमेण चेव स-सोगा चिट्ठंति। अरिमद्दण-नरिंदो वि वसीकाऊण सीहरहं समागओ निय-नयरं। भणिया सीलमई कामंकुराईहिं—

जे अप्पणो परस्स य सत्तिं न मुणंति माणवा मूढा।
वर-सीलवंति जं ते लहंति तं लद्धमम्हेहिं॥

ता दिट्ठं तुह माहप्पं, सिद्धा अम्हे। करेहि पसाय। नीसारेहि एक्कवारं नरयाओ व्व विसमाओ इमाओ अगडाओ। तीए वुत्तं-एवं करिस्सं, जइ मह वयणं करेह। तेहिं वुत्तं समाइससु जं कायव्वं। तीए वुत्तं जयाइहं एवं होउ त्ति भणेमि, तया तुब्भेहिं पि एवं होउ त्ति वत्तव्वं। पडिवन्नमणेहिं। तीए वुत्तो मंतीनिमंतेसु रायाणं। तेण तहेव कयं। आगओ राया। कया पडिवत्ती। तीए य पच्छन्नं कया भोयणाइ-सामग्गी। रन्ना चिंतियं—निमंतिओऽहं ताव न दीसएभोयणोवक्कमो को वि। ता किमेयंति?।

तीए य खड्डाए काऊण कुसुमाईहिं पूयं, भणियं—भो! भो! जक्खा रसवई सव्वा वि होउ, तेहि भणियं 'एवं होउ' त्ति। तओ आगया रसवई। रन्ना कयं भोयणं। तओ पुव्व—पउणो कयाइं तंबोल-फुल्ल-विलेवण-वत्था-हरणाइं ताइ च चत्तारि लक्खाइं इच्चाइं सव्वं पि होउ त्ति तीए जंपिए खड्डागएहिं जंपियं 'एवं होउ' त्ति। सव्वं ढुक्कं समप्पियं रन्नो। चिंतियं रन्ना—अहो? अउव्वा सिद्धि जं खड्डा-समुट्ठिए वयणेणंतरमेव सव्वं संपज्जइ त्ति। विम्हियमणेण पुट्ठा सीलमई—भद्दे! किमेयमच्छेरयं? तीए वुत्तं—देव! मह सिद्धा चिट्ठंति चत्तारि जक्खा ते सव्वं संपाडंति। रन्ना वुत्तं—समप्पेहि मे जक्खे। तीए वुत्तं देव। गिण्हेसु। तुट्ठो राया गओ नियावासं।

तीए वि ते चच्चिया चंदणेण, अच्चिया कुसुमेहिं, चउसु चुल्लगेसु चत्तारि वि खित्ता, सगडेसु आरोविऊण वज्जंतेहिं तूरेहिं नीया रायभवणं संझाए। पभाए य अज्ज जक्खा भोयणाइं दाहिंति त्ति निवारिया रन्ना सूयाराइणो। भोयण—समए सयं कुसुमाईहिं पूइऊण चुल्लगाइं भणियं 'रसवई होउ' चुल्लग-गएहिं वुत्तं 'एवं होउ' त्ति जाव न किं पि होइ, रन्ना विलक्ख-वयणेण उग्घाडियाइं चुल्लगाइं। दिट्ठा छुहा-सुसियत्तणेण पणट्ठ-मंस-सोणिया फुडीवलक्खिज्जमाणअट्ठि—संचया पयड—दीसंत—नसा—जाला गिरी—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कंदर-सोयरोयरा खाम-कवोला मिलाण-लोयणा असंसत्त-सीय-वायत्तणेण विच्छाय-काय-च्छविणो विसन्नचित्ता पयाव-चत्ता चत्तारि जणा। अहो! न हुंति एए जक्खा, किं तु रक्खस त्ति भणंतो भणिओ अणेहिं राया-देव! न जक्खा न रक्खस। अम्हे, किन्तु कामंकुराइणो तुह वयंसय त्ति जंपंता पडिया पाएसु। रन्ना वि सम्मं निरुवंतेण उवलक्खिऊण भणिया स-विम्हयं भद्दा! कहं तुम्हाणमेरिसी अवत्था जाया। तेहिं पि कहिओ जहावित्तो वुत्तंतो। हक्कारिऊण रन्ना-अहो! ते बुद्धि कोसल्लं, अहो! ते सील-पालण-पयत्तो, अहो! ते उभय-लोय-भयालोयण-प्पहापयत्ति सलाहिया सीलमई। वुत्तं च अमिलाण-कुसुममाला-दंसणेण, पयडं पि ते सील-माहाप्पं असद्दहंतेण मए चेव इमे पट्ठविया, ता न कायव्वो कोवो त्ति खमाविया। तीए वि धम्मं कहिऊण पडिबोहिओ राया। राय-नम्म-सचिवा य कराविया सव्वे पर-दार-निवित्तिं। रन्ना य सक्कारिया सीलमई। गया सट्ठाणं। अन्नया आगओ गंध-गओ व्व कलहेहिं परिगओ समणेहिं चउनाणी दमघोसो आयरियो। गओ तस्स वंदणत्थं समं सील-मईए अजियसेणो। वंदिऊण गुरुं निविट्ठो पुरओ।

भणिया गुरुणा सीलमई—भद्दे! धन्ना तुमं पुव्व-भवब्भासाओ चेव ते सील-परिपालणपयत्तो। मंतिणा वुत्तं-भयवं! कहमेयं ति? वागरियं गुरुणा-कुसमउरे नयरे कुसलाणुट्ठाण-लालसो पावकम्म-करणालसो सुलसो सावओ। तस्स सुजसा भज्जा ताण घरे पयइ-भद्दओ दुग्गओ कम्मयरो। दुग्गिला से घरिणी। कयाइ सुजसाए समं गया दुग्गिला साहुणीणं सयासं। कया सुजसाए तत्थ सवित्थरं पुत्थय-पूया पसत्थ-वत्थ-कुसुमाईहिं। वंदिया चंदणा पवत्तिणी। विहीयं उववास-पच्चक्खाणं। पणमिऊण पुच्छिया दुग्गि-लाए पवत्तिणी-भयवइ। किमज्ज एवं? भणियं भयवईए-अज्ज सियपंचमी सुय-तिहि त्ति सा जिण-मए समक्खाया। एयाइ नाण-पूया तवो य सत्ति कायव्वो।

इह पुत्थयाइं जे वत्थ-गंध-कुसुमुच्चएहिं अच्चंति।
ढोयंति ताण पुरओ नेवज्जं दीवयं दिंति।।
सत्तीए कुणंति तवं ते हुंति विसुद्ध-बुद्धि-संपन्ना।
सोहग्गाइ-गुणड्ढा सव्वन्नु-पयं च पावंति।।
तो दुग्गिलाइ वुत्तं धन्नामह सामिणी इमा सुजसा।
अत्थि तवे सामत्थं जीए धम्मत्थमत्थो य।।
अम्हारिसो उण जणो अधणो तव-करण-सत्ति-रहिओ य।
किं कुणउ मंदभग्गो पवत्तिणीए तओ भणियं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्तीए चाग-तवो करेसु सीलं तु अप्प-वसमेयं।
पर-नर-निवित्ति-रुवं जावज्जीवं तुमं धरसु ॥
अट्ठमि-चउद्दसीसु य तिहीसु तह निय-पइं पि वज्जिज्जा।
एयं कयंमि भद्दे ! तुमं पि पाविहिसि कल्लाणं ॥
पडिवन्नमिमं तीए मन्नंतीए कयत्थमप्पाणं।
गेहं गयाइ कहियं निय-पइणो सो वि तं सोउं ॥
तुट्ठ-मणो बहु मन्नइ तए फलं जीवियस्स पत्तं ति।
भणइ य अओ परमहं काहं पर-दार-परिहारं ॥
पव्व-तिहिसु इमासु य विरइस्सं निय-कलत्त-नियमं पि।
इय कय-नियमेहिं कमेण तेहिं पत्तं च सम्मत्तं ॥
अह दुग्गिला विसेसुल्लसंत-सद्धा सयं तवं काउं।
पूएइ पुत्थएसु य तिहीसु तद्दियह-वित्तीए ॥
कालेण दो वि मरिउं सोहम्मे सुर-वरत्तणं लहिउं।
चइऊण दुग्ग-जीवो जाओसि तुमं अजियसेणो ॥
एसा य दुग्गिला तुह सीलमई भारिया समुपन्ना।
नाणाराहण-वसओ विसिट्ठ-मइ-भायणं जाया ॥
तो जाय-जाईसरणेहिं तेहिं भणियं मुणिंद ! जं तुमए।
अक्खायं तं सच्चं तो एवं वागरइ गुरु ॥
जइ देसओ वि परिवालियस्स सीलस्स फलमिणं पत्तं।
ता कुणह पयत्तं सव्वओ वि परिपालणे तस्स ॥
तं सव्व-संग-परिहाररूव-दिक्खाइ होइ गहणेण।
तेहिं भणियं पसायं काउं तं देहि अम्हाणं ॥
तो दिक्खियाइं दुन्नि वि गुरुणा संवेग-परिगय, मणाइं।
पालंति जावजीवं अकलंकं सव्वओ सीलं ॥
मरिऊण बंभलोयं गयाइं भुत्तूण तत्थ दिव्व-सुहं।
ततो चुयाइं दुन्नि वि निव्वाण पयंमि पत्ताइं ॥

कुमारपाल प्रतिबोध (तृतीय प्रस्ताव)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मागधी

[शकार वसंतसेना को रोकता हुआ कहता है]

चिस्ट वशंत शेणिए ! चिस्ट,
किं याशि धावशि पलाअशि पक्खलंती
वाशू ! पशीद ण मलिस्तशि चिस्ट दाव ।
कामेण दज्झदि हु मे हडके तवश्शी
अंगालल्लाशि पडिदे विअ मंशखंडे ॥ १८ ॥

[चेट भी रुकने को कहता है]

अज्जुके ! चिट्ठ, चिट्ठ,
उत्ताशिता गच्छशि अंतिका मे शंपुण्णपच्छा विअ गिम्हमोरी ।
ओवग्गदी शामिअभश्टके मे वण्णे गडे कुक्कडशावके व्व ॥ १९ ॥

शकारः—चिस्ट वशंतशेणिए ! चिस्ट,
मम मअणमणंगं मम्मथं वड्ढअंती
णिशि अ शऊणके मे णिद्दअं अक्खिवंती ।
पशलशि भअभीदा पक्खलंती खलंती
ममवशमणुजादा लावणश्शेव कुंती ॥ २१ ॥

शकारः—भावे भावे !
एशा णाणकमूशिकामकशिका मच्छाशिका लाशिका,
णिण्णाशा कुलणाशिका अवशिका कामस्स मंजूशिका ।
एशा वेशवहू शुवेशणिलआ वेशंगणा वेशिआ
एशे शे दशणामके मयि कले अज्जावि मं णेच्छदि ॥२३॥

झाणज्झणंत वहुभूशणशद्दमिश्शं,
किं दोव्वदी विअ पलाअशि लामभीदा ?
एशे हलामि शहश त्ति जधा हणूमे
विश्शावशुश्श बहिणिं विअ तं शुभद्दं ॥ २५ ॥

चेटः—

लामेहि अ लाअवल्लहं तो क्खाहिशि मच्छमंशकं ।
एदेहिं मच्छमंशकेहिं शुणआ मडअं ण शेवंदि ॥ २६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शकारः—

अम्हेहिं चंडं अहिशालिअंती वणे शिआली विअ कुक्कुलेहिं।
पलाशि शिग्घं तुलिदं शवेग्गं शवेंटणं मे हलअं हलंती॥ २८॥

भावे भावे! मणुण्णे मणुण्णे।
भावे भावे! इत्थिअं अण्णेशदि।

इश्यिआणं शदं मालेमि।

वशंतशेणिए विलव विलव पलहुदिअं वा पल्लवअं वा शव्वं वा वशंतमाशं। मए अहिंशालिअंतीं तुमं के पलित्ता इश्शदि?

किं भीमशेणे जमदग्गिपुत्ते कुंतीशुदे वा दशकंधले वा।
एशे हगे गेण्हिय केशहश्ते दुश्शाशणश्शाणुकिदिं कलेति॥ २९॥

णं पेक्ख णं पेक्ख
अशी शुतिक्खे वलिदे अ मश्तके
कप्पेम शीशं उद मालएम वा।
अलं तवेदेण दलाइदेण
मुमुक्खु जे होदि ण शे खु जीअदि॥ ३०॥
अदो ज्जेव्व ण मालीहशि।
हग्गे वरपुलिशमणुश्शे वाशुदेवके कामइदव्वे।

(सतालिकं विहस्य)—

भावे भावे! पेक्ख दाव। मं अंतलेण शुशिणिद्धा एशा गणिआदालिआ णं। जेण मं भणदि—

'एहि। शंते शि। किलिंते शि' त्ति। हग्गे ण गामंतलं ण णगलंतलं वा गडे। अज्जुके! शवामि भावश्श शीशं अत्तणकेहिं पादेहिं। तव ज्जेव्व पश्चाणुपश्चिआए आहिंडंते शंते किलिंते म्हि शंवुत्ते।

भावे भावे! एशा गब्भदाशी कामदेवाअदणुज्जाणादो पहुदि ताह दलिद्दचालुदत्ताह आणुलत्ता ण मं कामेदि। वामदो तश्श घलं। जधा तव मम अ हश्तादो ण एशा पलिब्भंशदि तधा कलेदु भावे।

अध इं। वामदो तश्श घलं।

भावे भावे! वलिए खु अंधआले माशलाशिपविश्टा विअ मशिगुडिआ दीशंती ज्जेव्व पणश्टा वशंतशेणिआ।

भावे भावे! अण्णेशामि वशंतशेणिअं।

—मृच्छकटिक—प्रथमोऽङ्कः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाटकीय शौरसेनी

[प्रतिमागृह की व्यवस्था के लिए सुधाकार और भट का वार्तालाप]

सुधाकारः (सम्मार्जनादीनि कृत्वा)—भोदु दाणि किदं एत्थ कय्यं अय्य संभवअस्स आणत्तं। जाव मुहुत्तं सुविस्सं।

भटः (चेटमुपगम्य ताडयित्वा)—अंघो दासीए पुत्त। किं दाणि कम्मं ण करोसि।

सुधाकारः (बुद्ध्वा)—तालेहि मं तालेहि मं।

भटः—ताडिदे तुवं किं करिस्ससि ?

सुधाकारः—अहण्णस्स मम कत्तवीअस्स विअ बाहुसहस्सं णत्थि।

भटः—बाहुसहस्सेण किं कय्यं ?

सुधाकारः—तुवं हणिस्सं।

भटः—एहि दासिए पुत्त ! मुदे मुंचिस्सं (पुनरपि ताडयति)

सुधाकारः (रुदित्वा)—सक्कं दाणि भट्टा ! मे अवराहं जाणिदुम्।

भटः—णत्थि किल अवराहो णत्थि। ण मए संदिट्ठो भट्टिदारअस्स रामस्स रज्जविब्भट्ठकिदसंदावेण सग्गं गदस्स भट्टिणो दसरहस्स पडिमा-गेहं देट्ठुं अज्ज कोसल्लापुरोएहि सव्वेहि अंतेउरेहि इह आअंतव्वं त्ति' एत्थ दाणि तुए किं किदं ?

सुधाकारः—पेक्खदु भट्टा अवणीदकवोदसंदाणअं दाव गब्भगिहं। सोहवण्णअदत्तचंदणपंचांगुला भित्तीओ। आसत्तमल्लदामसोहीणि दुवा-राणि। पइण्णा वालुआ। एत्थ दाणि मए किं ण किदं।

भटः—जइ एवं, विस्सत्थो गच्छ। जाव अहं वि सव्वं किदं त्ति अमच्चस्स णिवेदेमि।

—प्रतिमानाटक—तृतीय अंक

× × ×

[विजया और नन्दिनिका का वार्तालाप]

विजया—हला णंदिणिए ! भणेहि भणेहि। अज्ज कोसल्लापुरोगेहि सव्वेहि अवंतवुरेहि पडिमागेहं दट्ठुं गदेहि तहिं किल भट्टिदारओ भरदो दिट्ठो ? अहं च मंदभाआ दुवारे ट्ठिदा।

नन्दिनिका—हला ! दिट्ठो अम्हेहि कोदूहलेण भट्टिदारओ भरदो।

विजया—भट्टिणी कुमारेण किं भणिदा।

नन्दिनिका—किं भणिदं ? ओलोइदुं वि णेच्छदि कुमारो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विजया—अहो अच्चाहिदं रज्जलुद्धाए भट्टिदारअस्स रामस्स रज्जविब्भट्ठं करंतीए अत्तणो वेहव्वं आदिट्ठं। लोआ वि णिव्विसं प्रमिओ। णिग्घिणा हु भट्टिणी। पापअं किदं।

नन्दिनिका—हला सुणाहि। पइदीहि आणीदं अहिसेअं विसज्जिअ राम तवोवणं गदो कुमारो।

विजया—हं, एवं गदो कुमारो। णन्दिणिए। एहि अम्हे भट्टिणीं पेक्खामो।

—प्रतिमा नाटक—चतुर्थ अंक

[विदूषक—मृगयाशील राजा दुष्यन्त की मित्रता के कारण अपने कष्टों का वर्णन करता हुआ कहता है।

भो दिट्ठं। एदस्स मअआसीलस्स रण्णो वअस्सभावेण णिव्विण्णो म्हि। अअं मओ अअं वराहो अअं सद्दूलो त्ति मज्झण्णे वि गिम्हविरअपाअवच्छाआसु वणराईसु अहिण्डीअदि अडवीदो अडवी। पत्तसंकरकसाआइं कदुण्हाइं गिरिणईजलाइं पीअंति। अणिअदवेलं सुल्लमंसभूइट्ठो आहारो अण्हीअदि। तुरगाणुधावणकण्डिदसन्धिणो रत्तिम्मि वि णिकामं सइदव्वं णत्थि। तदो महन्ते एव्व पच्चूसे दासीएपुत्तेहिं सउणिलुद्धएहिं वणग्गहणकोलाहलेण पडिबोधिदो म्हि। एत्तएण दाणिं वि पीडा ण णिक्कमदि। तदो गण्डस्स उवरि पिण्डओ संवुत्तो। हिओ किल अम्हेसु ओहीणेसु तत्तहोदो मआणुसारेण अस्समपदं पविट्ठस्स तावसकण्णआ सउन्दला मम अधण्णदाए दंसिदा। संपदं णअरगमणस्स मणं कहं वि ण करेदि। अज्ज वि से तं एव्व चिन्तअन्तस्स अच्छीसु पभादं आसि। का गदी। जाव णं किदाचारपरिकम्मं पेक्खामि। एसो बाणासणहत्थाहिं जवणीहिं वणपुप्फमालाधारिणीहिं पडिवुदो इदो एव्व आअच्छदि पिअवअस्सो। होदु। अङ्ग-भङ्गविअलो विअ भविअ चिट्ठिस्सं। जइ एव्वं वि णाम विस्सामं लहेअं।

—शाकुन्तल—द्वितीय अंक

× × ×

[शकुन्तला राजा को पहचान के लिए अंगूठी दिखलाना चाहती है, पर अंगूठी नहीं मिलती—इसीका वर्णन किया गया है]

होदु। जइ परमत्थतो परपरिग्गहसंकिणा तुए एव्वं वत्तुं पउत्तं वा अहिण्णाणेण इमिणा तुह आसंकं अवणइस्सं।

हद्धी। अंगुलीअसुण्णा मे अंगुली।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णूणं दे सक्कावदारब्भन्तरे सचीतित्थसलिलंवंदमाणाए पब्भट्टं अंगुलीअअं।

एत्थ दाव विहिणा दंसिदं पहुत्तणं। अवरं दे कहिस्सं।

णं एक्कस्सिं दिअहे णोमालिअमंडवे णलिणीपत्तभाअणगअं उअअं तुह हत्थे सण्णिहिदं।

तक्खणं सो मे पुत्तकिदओ दीहापंगो णाम मिअपोदओ उवट्टिओ। तुए अअं दाव पढमं पिअउ त्ति अणुऊंपिणा उवच्छन्दिदो उअएण। ण उण दे अपरिचआदो हत्थब्भासं उवगदो। पच्छा तस्सिं एव्व मए गहिदे सलिले णेण किदो पणओ। तदा तुमं इत्थं पहसिदा सि। सव्वो सगन्धेसु विस्ससिदि। दुवेवि एत्थ आरण्णआ त्ति।

—शाकुन्तल पंञ्चम अंक

महाराष्ट्री

अदंसणेण पेम्मं अवेइ अइदंसणेण वि अवेइ।
पिसुणजणजंपिएण वि अवेइ एमेअ वि अवेइ॥ १।८१॥

णूमेन्ति जे पहुत्तं कुविअं दासा व्व जे पसाअन्ति।
ते व्विअ महिलाणं पिआ सेसा सामि व्विअ वराआ॥ १।९१॥

अदंसणेण महिलाअणस्स अइदंसणेण णीअस्स।
मुक्खस्स पिसुणअणजम्पिएण एमेअ वि खलस्स॥ १।८२॥

पोट्टपडिएहिं दुःखं अच्छिज्जइ उण्णएहिं होऊण।
इअ चिन्तआणँ मण्णे थणाणँ कसणं मुहं जाअं॥ १।८३॥

सो तुज्झ कए सुन्दरि तह छीणो सुमहिला हलिअउत्तो।
जह से मच्छरिणीएँ वि दोच्चं जाआएँ पडिवण्णं॥ १।८४॥

दक्खिण्णेण वि एन्तो सुहअ, सुहावास अह्म हिअआइं।
णिक्कइअवेण जाणं गओसि का णिव्वुदी ताणं॥ १।८५॥

एक्कं पहरुव्विण्णं हत्थं मुहमारुएण वीअन्तो।
सो वि हसन्तीएँ मए गहिओ वीएण कंठम्मि॥ १।८६॥

अवलम्बिअमाणपरम्मुहीएँ एन्तस्स माणिणि पिअस्स।
पुट्ठपुलउग्गमो तुह कहेइ संमुहट्ठिअं हिअअं॥ १।८७॥

जाणाइ जाणावेउं अणुणअविदविअमाणपरिसेसं।
अइरिक्कम्मि वि विणआवलम्बणं सच्चिअ कुणन्ती॥ १।८८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुहमारुएण तं कह्न गोरअं राहिआएँ अवणेन्तो।
एताएँ वल्लवीणं अण्णाण वि गोरअं हरसि ॥ १८९ ॥
किं दाव कआ अहवा करेसि कारिस्सि सुहअ एत्ता हे।
अवराहाणँ अञ्जञ्जिर साहसु कअए खमिज्जन्तु ॥ १९० ॥
तइआ कअग्घ महुअर ण रमसि अण्णासु पुप्फजाईसु।
बद्धफलभारिगुरुइँ मालइँ एह्निं परिच्चअसि ॥ १९२ ॥
अविअहुपेम्खणिज्जेण तक्खणं मामि तेण दिट्ठेण।
सिविणअपीएण व पाणिएण तण्ह च्चिअ ण फिट्टा ॥ १९३ ॥
सुअणो जं देसमलंकरेइ तं विअ करेइ पवसंतो।
गामासण्णुम्मूलि—अमहावडट्ठाणसारिच्छं ॥ १९४ ॥
सो णाम संभरिज्जइ पब्भसिओ जो खणं पि हिअआहि।
संभरिअव्वं च कअं गअं च पेम्म णिरालम्ब ॥ १९५ ॥
— गाथाशप्तशती

विन्ध्यवासिनी-स्तुति

वन्दी-कय-महिसासुर-कुल-कण्ठुम्मोइएहिंव तुमाए ।
माहवि घंटादामेहिं मण्डियं तोरण-हारं ॥ २८५ ॥
दिट्ठं साहेज्जारूढ-तुहिण-गिरी-खण्ड-दिण्ण-पीढं व ।
महिसासुरस्स सीसं तुह चलण-णह-प्पहा-भरियं ॥ २८६ ॥
सोहसि नारायणिरणिर णेउराराव-मिलिअ-हंस-उले ।
भवणम्मि कत्रालाविल-मसाण-राएणव ममंती ॥ २९१ ॥
तुह दारं थाम-त्थाम-दिण्ण-सहिरोवहारमाभाइ ।
हर-पणय-रोस-विससिय-संज्झा-सयलावइण्णं व ॥ २९४ ॥
णिमिसंपि णेअ मुचइ आययणोब्वण-मण्डलं तुज्झ।
संण्णिहिअ-कुमार मऊर-णेह-रसिएहिंव सिहीहि ॥ २९९ ॥
वीर-विइण्ण-विकोसासिधेणु-करवाल-कन्ति कज्जलियं।
दिअसम्मिवि देवि असंक-कोसियं गब्भ-भवणं ते ॥ ३०६ ॥
सुलहोवहार-रुहिर-प्पवाह-संभावणाए लिब्भन्ति ।
अरुण पडाया-पडिमा-गब्भाओ लिला इह सिवाहिं ॥ ३१० ॥
—गौडवहो

सेलसिलाहआ समुद्दोअरे मणीणं
चुण्णिज्जन्ति वित्थरा रअणगामणीणम्।
भरइ णहङ्गणं अणिव्विण्णमेहलाणं
हंसाउलावलीए वणराइमेहलाणम् ॥ ७६० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भमिओ अ तह धाराहरपहरुच्छिक्तसलिलो णहम्मि समुद्दो ।
मरिहराअमइलाइं जह धोआई समअं दिसाए मुहाइं ॥८।३१॥

धरिआ भुएहि सेला, सेलेहि दुमा, दुमेहि घणसंघाआ ।
ण'त्रि णज्जइ किं पवआ सेउं बन्धन्ति ओ मिणेन्ति णहअलम् ॥७।५८॥

—सेतुबन्ध

हा जीविएस हा सुयणु हा अणंत-गुण-भूमि हा दरय ।
हा णिकारण-वच्छल कत्थ पुणो तं सि दीसिहसि ॥७०८॥

जं पढम-दंसणाणंद-बाह-पडिपूरिएहिं अच्छीहिं ।
सच्चविओ सिग सुइरं तं इण्हिं किं णियच्छिस्सं ॥७०९॥

जं तंगुलियाहरण-च्छलेण सुदूरं णिपीडिओ तुम्हि ।
सो मे तह लग्गो च्चिय अज्ज वि हत्थो ण वीसरइ ॥७१०॥

दिण्णाइँ जाइँ माहविलयाइ जह तुह स-हत्थ-लिहियाइँ ।
अमय-मयाइँ व लेहक्खराइँ इण्हिं विसायंति ॥७११॥

—लीलावई (कुवलयमाला द्वारा महानुमति की मनोदशाका चित्रण)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूलदेवो

१. अत्थि उज्जेणी नयरी। तीए य असेस-कला-कुसलो अणेग-विन्नाण-निउणो उदार-चित्तो कयन्नू पडिवन्न-सूरो गुणाणुराई पियंवओ दक्खो रूव-लावण्ण-तारुण्ण-कलिओ मूलदेवो नाम रायउत्तो पाडलिपुत्ताओ जूय-वसणासत्तो जणगावमाणेण पुहविं परिब्भमंतो समागओ। तत्थ गुलिया-पओगेण परावत्तिय-नेसो वामणयागारो विम्हावेइ विचित्त-कहाहिं गंधव्वाइ-कलाहिं नाणा-कोउगेहि य नायर-जणं। पसिद्धो जाओ। अत्थि य तत्थ रूव-लावण्ण-विण्णाण-गव्विया देवदत्ता नाम पहाणा गणिया। सुयं च तेण, न रंजिज्जइ एसा केणइ सामन्न-पुरिसेण अत्त-गव्विया। तओ कोउगेण तीइ खोहणत्थं पच्चूस-समए आसन्न-त्थेण आढत्तं सु-महुर-रवं बहु-भंगि-घोलिर-कंठं अन्नन्न-वण्ण-संवेह-रमणिज्जं गंधव्वं। सुयं च तं देवदत्ताए। चिंतियं च। अहो, अउव्वा वाणी, ता दिव्वो एस कोइ, न मणुस्स-मेत्तो। गवेसाविओ चेडीहिं। गविट्ठो दिट्ठो मूलदेवो वामण-रूवो। साहियं जहट्ठियमेईए। पेसिया तीए तस्स वाहरणत्थं माहवा-भिहाणा खुज्ज-चेडी। गंतूण विणय-पुव्वं भणिओ तीए। भो महासत्त, अम्ह सामिणी देवदत्ता विन्नवेइ। कुणह पसायं-एह अम्ह घरं। तेण य वियड्ढयाए भणियं। न पओयणं मे गणिया-जण-संगेण, निवारिओ विसिट्ठाण वेसा-जण-संसग्गो। भणियं च—

> या विचित्र-विट-कोटि-निघृष्टा मद्य-मांस-निरतातिनिकृष्टा।
> कोमला वचसि चेतसि दुष्टा तां भजन्ति गणिकां न विशिष्टाः ॥१॥
> योपतापन-पराग्नि-शिखेव चित्त-मोहन-करी मदिरेव।
> देह-दारण-करी छुरिकेव गर्हिता हि गणिका शलिकेव ॥२॥

२. अओ नत्थि मे गमणाभिलासो। तीए वि अणेगाहिं भणिइ-भंगीहिं आराहिऊण चित्तं महा-निब्बंधेण करे घेत्तूण नीओ घरं। वच्चंतेण य सा खुज्जा कला-कोसल्लेण विज्जा-पओगेण य अप्फालिऊण कया पउणा। विम्हय-खित्त-मणाए पवेसिओ सो भवणे। दिट्ठो देवदत्ताए वामण-रूवो अउव्व-लावण्ण-धारी। विम्हियाए य दवावियमासणं। निसण्णो य सो, दिन्नो तंबोलो, दंसियं च माहवाए अत्तणो रूवं, कहिओ य वइयरो। सुट्ठुयरं विम्हिया, पारद्धो आलावो महुराहिं वियड्ढ-भणिईहिं। आगरिसियं च तेण तीए हिययं। भणियं च—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणुणय-कुसलं परिहास-पेसलं लडह-वाणि दुल्ललियं ।
आलवणं पि हु छेयाए कम्मणं किं च मूलीहिं ॥ ३ ॥

३. एत्थंतरे आगओ तत्थेगो वीणा-वायगो । वाइया तेण वीणा। रंजिया देवदत्ता । भणियं च, साहु भो वीणा-वायग, साहु सोहणा ते कला । मूलदेवेण भणियं, अहो अइनिउणो उज्जेणीजणो, जाणइ सुंदरासुंदर-विसेसं। देवदत्ताए भणियं, भो किमेत्थ खूणं । तेण भणियं, वंसो चेव असुद्धो, सगब्भा य तंती । तीए भणियं, कहं जाणिज्जइ। दंसेमि अहं समप्पिया वीणा, कड्ढिओ वंसाओ पाहणगो, तंतीए वालो । समारिऊण वाइउं पयत्तो । कया पराहीण-माणसा स-परियणा देवदत्ता । पच्चासन्ने य करेणुया सया रवण-सीला आसि । सा वि ठिया घुम्मंती ओलंबिय-कण्णा । अईव विम्हिया देवदत्ता वीणा-वायगो य । चिंतियं च, अहो पच्छन्न-वेसो विस्सकम्मा एस । पूइऊण तीए पेसिओ वीणा-वायगो । आगया भोयण-वेला । भणियं देवदत्ताए, वाहरह अंग-मद्दयं, जेण दो वि अम्हे मज्जामो । मूलदेवेण भणियं, अणुमन्नह, अहं चेव करेमि तुम्ह अब्भंगणकम्मं । किमेयं पि जाणासि । न-याणामि सम्मं परं ठिओ जाणगाण सयासे । आणियं चंपग-तेल्लं, आढत्तो अब्भंगिउं । कया पराहिण-मणा । चिंतियं च णाए, अहो विन्नाणाइसओ, अहो अउव्वो करयल-फासो । ता भवियव्वं केणइ इमिणा सिद्ध-पुरिसेण पच्छन्न-रूवेण, न पयईए एवं रूवस्स इमो पगरिसो त्ति । ता पयडीकरावेमि रूवं । निवडिया चलणेसु, भणिओ य, भो महाणु-भाव, असरिस-गुणेहिं चेव नाओ उत्तम-पुरिसो पडिवन्न-वच्छलो दक्खिण्ण-पहाणो य तुमं । ता दंसेहि मे अत्ताणयं । बाढं उक्कंठियं तुह दंसणस्स मे हिययं । मूलदेवेण य पुणो पुणो निब्बंधे कए ईसि हसिऊण अवणीया वेस-परावत्तिणी गुलिया । जाओ सहावत्थो । दिट्ठो दिण-नाहो व्व दिप्पंत-तेओ, अणंगो व्व मोहयंतो रूवेण सयल-जणं नव-जोव्वण-लायण्ण-संपुण्ण-देहो । हरिस-वसुब्भिन्न-रोमंचा पुणो निवडिया चलणेसु । भणियं च महा-पसाओ त्ति । अब्भंगिओ स-हत्थेहिं । मज्जियाइं दो वि जिमियाइं महा-विभूईए, पहिराविओ देव-दूसे, ठियाइं विसिट्ठ-गोट्ठीए । भणियं च तीए, महाभाग, तुमं मोत्तूण न केणइ अणुरंजियं मे अवर-पुरिसेण माणसं । ता सच्चमेयं,

नयणेहिं को न दीसइ केण समाणं न होंति उल्लावा ।
हिययाणंदं जं पुण जणेइ तं माणुसं विरलं ॥४॥

ता ममाणुरोहेण एत्थ घरे निच्चमेवागंतव्वं । मूलदेवेण भणियं, गुणराइणि,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्न-देसिएसु निद्धणेसु अम्हारिसेसु न रेहए पडिबंधो, न य थिरी-हवइ। ताएण सव्वस्स वि कज्ज-वसेण चेव नेहो। भणियं च,

वृक्षं क्षीण-फलं त्यजन्ति विहगाः शुष्कं सरः सारसाः
पुष्पं पर्युषितं त्यजन्ति मधुपा दग्धं वनान्तं मृगाः।
निर्द्रव्यं पुरुषं त्यजन्ति गणिका भ्रष्टं नृपं सेवकाः
सर्वः कार्यवशाज्जनोऽभिरमते कः कस्य को वल्लभः ॥ ५ ॥

तीए भणियं, स-देसो पर-देसो वा अकारणं सप्पुरिसाणं। भणियं च

जलहि-विसंघडिएण वि निवसिज्जइ हर-सिरम्मि चंदेणं।
जत्थ गया तत्थ गया गुणिणो सीसेण वुज्झंति ॥ ६ ॥

तहा अत्थो वि असारो, न तम्मि वियक्खणाण वहुमाणो। अवि य गुणेसु चेवाणुराओ हवइ त्ति। किं च,

वाया सहस्स-मइया सिणेह-निज्झाइयं सय-सहस्सं।
सब्भावो सज्जण-माणुसस्स कोडिं विसेसेइ ॥ ७ ॥

ता सव्वहा पडिवज्जसु इमं पत्थणं ति। पडिवन्नं तेण। जाओ तेसिं नेह-निब्भरो संजोगो ॥

४. अन्नया राय-पुरओ पणच्चिया देवदत्ता। वाइओ मूलदेवेण पडहो। तुट्ठो तीए राया। दिन्नो वरो। नासी-कओ तीए। सो य अईव जूय-पसंगी, निवसण-मेत्तं पि न रहए। भणिओ य साणुणयं तीए पिय-वाणीए। पिययम, को तुह इमं मयंकस्सेव हरिण-पडिबंधं तुम्हं सयल-गुणालयाणं कलंकं चेय जूय-वसणं। वहु-दोस-निहाणं च एयं। तहा हि

कुल-कलंकणु सच्च-पडिवक्खु गुरु-लज्जा-सोय-हरु
धम्म-विग्घु अत्थह पणासणु जु दाण-भोगहि रहिउ
पुत्त-दार-पिइ-माइ-मोसणु।
जहिं न गणिज्जइ देउ गुरु जहिं न वि कज्जु अकज्जु।
तणु-संतावणु कुगइ-पहु तहिं पिय जूइ म रज्जु ॥ ८ ॥

ता सव्वहा परिच्चयसु इमं। अइ-रसेण य न सक्कए मूलदेवो परिहरिउं ॥

५. अत्थि य देवदत्ताए गाढाणुरत्तो मूलिल्लो मित्तसेणो अयल-नामा सत्थवाह-पुत्तो। देइ सो जं मग्गियं, संपाडेइ वत्थाभरणाइयं वहइ य सो मूलदेवोवरि पओसं, मग्गइ य छिड्डाणि। तस्स संकाए न गच्छइ मूलदेवो तीए घरं अवसरमंतरेण। भणिया य देवदत्ता जणणीए। पुत्ति, परिच्चय मूलदेवं। न किंचि निद्धण-चंगेण पओयणमेएण। सो महाणुभावो दाया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अयलो पेसेइ पुणो पुणो बहुयं दव्व-जायं। ता तं चेव अंगीकरेसु सव्व-प्पणयाए। न एक्कम्मि पडियारे दोन्नि करवालाइं मायंति, न य अलोणियं सिलं कोइ चट्टेइ। ता मुंच य जूरियमिमं ति। तीए भणियं, नाहं अंब, एगंतेण धणाणुरागिणी· गुणेसु चेव मे पडिबंधो। जणणीए भणियं, केरिसा तस्स जूयगारिस्स गुणा। तीए भणियं, अंब केवल-गुणमओ खु सो। जओ

धीरो उदार-चित्तो दक्खिण्ण-महोयही कला-निउणो।
पिय-भासी य कयन्नू गुणाणुराई विसेसन्नू॥ ९॥

अओ न परिच्चयामि एयं। तओ सा अणेगेहिं दिट्ठंतेहिं आढत्ता पडिबोहिउं। अलत्तए मग्गिए नीरसं पणामेइ, उच्छुखंडे पत्थिए छोइयं पणामेइ, कुसुमेहिं जाइएहिं बेंट—मेत्ताइं पणामेइ। चोइया य पडिभणइ। जारिसमेयं तारिसो एसो ते पिययमो, तहा वि तुमं न परिच्चयसि। देवदत्ताए चिंतियं, मूढा एसा, तेणेवंविहे दिट्ठंते देइ॥

६. तओ अन्नया भणिया जणणी, अम्मो मग्गेहि अयलं उच्छुं। कहियं च तीए तस्स। तेण वि सगडं भरेऊण पेलियं। तीए भणियं, किमहं करिणिया जेणेवंविहं स-पत्त-डालं उच्छुं पभूयं पेसिज्जइ। तीए भणियं, पुत्ति, उदारो खु सो, तेण एवं पेसियं ति। चिंतियं च णेण, अन्नाणं पि सा दाहि त्ति। अवरदियहे देवदत्ताए भणिया माहवी। हला, भणाहि मूलदेवं जहा, उच्छूण उवरि सद्धा ता पेसेहि मे। तीए वि गंतूण कहियं। तेण वि गहियाओ दोन्नि उच्छु-लट्ठीओ, निच्छोलिऊण कयाओ दुयंगुल-पमाणाओ गंडियाओ, चाउज्जाएण य अवचुण्णियाओ, कपूरेण य मणागं वासियाओ मूलाहि य मणागं भिन्नाओ। गहियाइं अभिणव-मल्लगाइं, भरिऊण ताइं ढक्किऊण य पेसियाणि। ढोइयाइं च गंतूण माहवीए दंसियाणि तीए वि जणणीए। भणिया य, पेच्छ, अम्मो, पुरिसाण अंतरं ति। ता अहं एएसिं गुणाणमणुरत्ता। जणणीए चिंतियं। अच्चंत-मोहिया एसा, न परिच्चयइ अत्तणा इमं। ता करेमि किं पि उवायं जेण एसो वि कामुओ गच्छइ विएसं। तओ सुत्थं हवइ त्ति चिंतिऊण भणिओ अयलो। कहसु एईए पुरलो अलिय-गामंतर-गमणं। पच्छा मूलदेवे पविट्ठे मणुस्स-सामग्गीए आगच्छेज्जह विमाणेज्जह य तं, तेण विमाणिओ संतो देस-चायं करेइ। ता संजुत्ता चिट्ठेज्जह, अहं ते वत्तं दाहामि। पडिवन्नं च तेण। अन्नम्मि दिणे कयं तहेव तेण। निग्गओ अलिय-गामंतर-गमण-मिसेण। पविट्ठो य मूलदेवो। जाणाविओ जणणीए अयलो, आगओ महा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामग्गाए। दिट्ठो य पविसमाणो देवदत्ताए। भणिओ य मूलदेवो, ईइसो चेव अवसरो, पडिच्छियं च जणणीए एय-पेसियं दव्वं, ता तुमं, पल्लंक-हेट्ठओ मुहुत्तगं चिट्ठह ताव। ठिओ सो पल्लंक-हेट्ठओ। लक्खिओ अयलेणं। निसण्णो पल्लंके अयलो। भणिया य सा तेण, करेह ण्हाण-सामग्गिं। देवदत्ताए भणियं एवं ति, ता उट्ठह, नियंसह पोत्तिं, जेण अब्भंगिज्जइ। अयलेण भणियं। मए दिट्ठो अज्ज सुमिणओ जहा, नियत्थिओ चेव अब्भंगिय-गत्तो एत्थ पल्लंके आरूढो ण्हाओ त्ति। ता सच्चं सुमिणयं करेसु। देवदत्ताए भणियं, नणु विणासिज्जए महग्घियं तूलियं गंडुयमाइयं। तेण भणियं, अन्नं ते विसिट्ठतरं दाहामि। जणणीए भणियं, एवं ति। तओ तत्थ-ट्ठिओ चेव अब्भंगिओ उव्वट्टिओ उण्ह-खलि-उदगेहिं पमज्जिओ। भरिओ तेण हेट्ठ-ट्ठिओ मूलदेवो। गहियाउहा पविट्ठा पुरिसा। सन्निओ जणणीए अयलो। गहिओ तेण मूलदेवो वालेहिं भणिओ य। रे, संपयं निरूवेहि, जइ कोइ अत्थि ते सरणं। मूलदेवेण य निरूवियाइं पासाइं, जाव दिट्ठं निसियासि-हत्थेहिं वेढियमत्ताणयं माणूसेहिं। चिंतियं च, नाहमेएसिं उच्चरामि कायव्वं च मए वइर-निज्जायणं, निराउहो संपयं ता न पोरिसस्सावसरो त्ति चिंतिय भणियं। जं ते रोयइ तं करेहि। अयलेण चिंतियं, उत्तम-पुरिसो कोइ एस आगईए चेव नज्जइ। सुलभाणि य संसारे महा-पुरिसाण वसणाइं। भणियं च,

को एत्थ सया सुहिओ कस्स व लच्छी थिराइं पेम्माइं।
कस्स व न होइ खलियं भण को व न खंडिओ विहिणा॥ १०॥

भणिओ मूलदेवो। भो एवंविहावत्था-गओ मुक्को संपयं तुमं, ममं पि विहि-वसेण कयावि वसण-पत्तस्स एवं चेव करेज्जह।

७. तओ विमण-दुम्मणो निग्गओ नयराओ मूलदेवो। पेच्छ, कहं एएण छलिओ त्ति चिंतयंतो ण्हाओ सरोवरे, कया पडिवत्ती। चिंतियं, गच्छामो विएसं, तत्थ गंतूण करेमि किंपि इमस्स पडिविप्पियवायं। पट्ठिओ बेण्णायड-संमुहं। गाम-नगराइ-मज्झेण वच्चंतो पत्तो दुवालस-जोयण-पमाणाए अडवीए मुहं। चिंतियं च तत्थ, जइ कोइ वच्चंतो वाया-साहेज्जो वि दुइओ लब्भइ ता सुहं चेव छिज्जइ अडवी। जाव थेव-वेलाए आगओ विसिट्ठाकार-दंसणओ संबल-थइया-सणाहो ढक्क-बंभणो। पुच्छिओ य, भो भट्ट, केदूरं गंतव्वं। तेण भणियं, अत्थि अडवीए परओ वीरनिहाणं नाम ठामं, तं गमिस्सामि। तुमं पुण कत्थ पत्थिओ। इयरेण भणियं, बेण्णायडं। भट्टेण भणियं, ता एहि, गच्छम्ह। तओ पयट्टा दो वि। मज्झण्ह-समए य वच्चंतेहिं दिट्ठसरोवरं। ढक्केण भणियं, भो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीसमामो खणमेगं ति। गया उदग-समीवं, धोया हत्थ-पाया। गओ मूलदेवो पालि-संठिय-रुक्ख-च्छायं। ढक्केण छोडिया संबल-थइया, गहिया वट्टयम्मि सत्तुया। ते जलेण ओलित्ता लग्गो भक्खिउं। मूलदेवेण चिंतियं, एरिसा चेव बंभण-जाई भुक्का-पहाणा हवइ ता पच्छा मे दाही। भट्टो वि भुंजिता बंधिऊण थइयं पयट्टो। मूलदेवो वि, नूणं अवरण्हे दाहि त्ति चिंतेंतो अणुपयट्टो। तत्थ वि तहेव भुत्तं, न दिन्नं तस्स। कल्लं दाहि त्ति आसाए गच्छइ एसो। वंचंताण य आगया रयणी। तओ वट्टाओ ओसरिऊण वड-पायव-हेट्ठओ पसुत्ता। पच्चूसे पुणो वि पत्थिया, मज्झण्हे तहेव थक्का, तहेव भुत्तं ढक्केण, न दिन्न एयस्स। जाव तइय-दियहे चिंतियं मूलदेवेण। नित्थिण्ण-पाया अडवी, ता अज्ज अवस्सं मम दाही एस। जाव तत्थ वि न दिन्नं। नित्थिन्ना य तेहिं अडवी। जायाओ दोण्ह वि अन्नन्न-वट्टाओ। तओ भट्टेण भणियं, भो तुज्झ एसा वट्टा, ममं पुण एसा। ता वच्च तुमं एयाए। मूलदेवेण भणियं, भो भट्ट, आगओ हं तुज्झ पहावेणं, ता मज्झ मूलदेवो नामं, जइ कयाइ किंपि पओयणं मे सिज्झइ ता आगच्छेज्ज वेण्णायडे। किं च तुज्झ नामं। ढक्केण भणियं, सद्धडो, जण-कयावडंकेण निग्घिणसम्मो नाम। तओ पत्थिओ भट्टो स-गामं। मूलदेवो वि वेण्णायड-संमुहं ति।

८. अंतराले य दिठ्ठं वसिमं। तत्थ पविट्ठो भिक्खा-निमित्तं। हिंडिय असेसं गामं, लद्धा कुम्मासा, न किंपि अन्नं। गओ जलासया-भिमुहं। एत्थंतरम्मि य तव-सुसिय देहो महाणुभावो महातवस्सी मासोववास-पारणय-निमित्तं दिट्ठो पविसमाणो। तं च पेच्छिय हरिस-वसुब्भिन्न-पुलएण चिंतियं मूलदेवेण। अहो, धन्नो कयत्थो अहं, जस्स इमम्मि काले एस महा-तवस्सी दंसण-पहमागओ। ता अवस्सं भवियव्वं मम कल्लाणेण। अवि य,

मरुत्थलीए जह कप्प-रुक्खो दरिद्द-गेहे जह हेम-वुट्ठी।
मायंग-गेहे जह हत्थि-राया मुणी महप्पा एत्थ एसो ॥ ११ ॥

किं च,

दंसण-नाण-विसुद्धं पंच-महव्वय-समाहियं धीरं।
खंती-मद्दव-अज्जव-जुत्तं मुत्ति-प्पहाणं च ॥ १२ ॥
सज्झाय-ज्झाण-तवोवहाण-निरयं विसुद्ध-लेसागं।
पंच-समियं ति-गुत्तं अकिंचणं चत्त-गिहि-संगं ॥ १३ ॥
सुपत्तं एस साहू। ता
एरिस-पत्त-सुखेत्ते विसुद्ध-सद्धा-जलेण संसित्तं।
निहियं तु दव्व-सस्सं इह-पर-लोए अणंत-फलं ॥ १४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. ता एत्थ कालोचिया देमि एयस्स चेव कुम्मासा। जओ अदायगो एस गामो, एसो य महप्पा कइवय-घरेसु दरिसावं दाऊण पडिनियत्तइ। अहं पुण दो तिण्णि वारे हिंडामि, तो पुणो लभिस्सं। आसन्नो अवरो बिइओ गामो, ता पयच्छामि सव्वे इमे त्ति। पणमिऊण तओ समप्पिया भगवओ कुम्मासा। साहुणा वि तस्स परिणाम-पयरिसं मुणंतेण दव्वाइ-सुद्धिं च वियाणिऊण, धम्म-सील, थोवे देज्जह त्ति भणिऊण धरियं पत्तयं। दिन्ना य तेण पवड्ढमाणाइ-सएण। भणियं च तेण,

धन्नाणं खु नराणं कुम्मासा होंति साहु-पारणए।

१०. एत्थंतरम्मि गयणंतर-गयाए रिसि-भत्ताए मूलदेव-भत्ति-रंजियाए भणियं देवयाए। पुत्त मूलदेव, सुंदरमणुचिट्ठियं तुमे। ता एयाए गाहाए पच्छद्धेण मग्गह जं रोयए, जेण संपाडेमि सव्वं। मूलदेवेण भणियं,

गणियं च देवदत्तं दंति-सहस्सं च रज्जं च॥ १५॥

देवयाए भणियं, पुत्त, निच्चिंतो विहरसु। अवस्सं रिसि-चलणाणुभावेण अइरेण चेव संपज्जिस्सइ एयं। मूलदेवेण भणियं, भयवइ, एवमेयं ति। तओ वंदिय रिसिं पडिनियत्तो, रिसी वि गओ उज्जाणं। लद्धा अवरा भिक्खा मूलदेवेण। जेमिओ पत्थिओ य वेन्नायड-संमुहं, पत्तो य कमेण तत्थ॥

११. पसुत्तो रयणीए बाहिं पहिय-सालाए। दिट्ठो य चरिम-जामे सुमिणओ, पडिपुण्ण-मंडलो निम्मल-प्पहो मयंको उयरम्मि पविट्ठो। अन्नेण वि कप्पडिएण एसो चेव दिट्ठो, कहिओ तेण कप्पडियाणं। तत्थेगेण भणियं, लभिहिसि तुमं अज्ज घय-गुल-संपुण्णं महंतं रोट्टगं। न-याणंति एए सुमिणस्स परमत्थ ति न कहियं मूलदेवेण। लद्धो कप्पडिएण भिक्खा-गएण घर-छायणियाए जहोवइट्ठो रोट्टगो। तुट्ठो य एसो, निवेइओ य कप्पडियाणं। मूलदेवो वि गओ एगमारामं। आवज्जिओ तत्थ कुसुमोच्चय-साहिज्जेण मालागारो। दिन्नाइं तेण पुप्फ-फलाइं। ताइं घेत्तुं सुइ-भूओ गओ सुविण-सत्थ-पाढयस्स गेहं। कओ तस्स पणामो। पुच्छिया खेमारोग-वत्ता। तेण वि संभासिओ स-बहुमाणं, पुच्छिओ य पओयणं। मूलदेवेण य जोडिऊण कर-जुयलं कहिओ सुविणग-वइयरो। उवज्झाएण वि भणियं सहरिसेण। कहिस्सामि सुह-मुहुत्ते सुविणय-फलं, अज्ज ताव अतिही होसु अम्हाणं। पडिवन्नं च मूलदेवेण। ण्हाओ जिमिओ य विभूईए। भुत्तुत्तरे य भणिओ उवज्झाएण, पुत्त, पत्त-वरा मे एसा कन्नगा, ता परिणेसु ममोवरोहेण एयं तुमं ति। मूलदेवेण भणियं, ताय, कहं अन्नाय-कुल-सीलं जामाउयं करेसि। उवज्झाएण भणियं पुत्त, आयारेण चेव नज्जइ अ-कहियं पि कुलं। भणियं च

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचारः कुलमाख्याति देशमाख्याति जल्पितम्।
संभ्रमः स्नेहमाख्याति वपुराख्याति भोजनम्॥ १६॥

तहा

को कुवलयाण गंधं करेइ महुरत्तणं च उच्छूणं।
वर-हत्थीए य लीलं विणयं च कुल-प्पसूयाणं॥ १७॥

अहवा

जइ होंति गुणा तो किं कुलेण गुणिणो कुलेण न हु कज्जं।
कुलमकलंकं गुण-वज्जियाण गरुयं चिय कलंकं॥ १८॥

१२. एवमाइ-भणिईहिं पडिवज्जाविओ सुह-मुहुत्तेण परिणाविओ। कहियं सुविण-फलं, सत्त-दिणब्भंतरे राया होहिसि। तं च सोऊण जाओ पहट्ठ-मणो। अच्छइ य तत्थ सुहेणं। पंचमे य दिवसे गओ नयर-बाहिं, नुवण्णो य चंपग च्छायाए॥

१३. इओ य तीए नयरीए अपुत्तो राया काल-गओ। तत्थ अहि-यासियाणि पंच दिव्वाणि। ताणि आहिंडिय नयर-मज्झे निग्गयाणि बाहिं, पत्ताणि मूलदेव-सयासं। दिट्ठो सो अपरित्तमाण-छायाए हेट्ठओ। तं पेच्छिय गुलुगुलियं हत्थिणा, हेसियं तुरंगेण, अहिसित्तो भिंगारेण, वीइओ चामरेहिं, ठियमुवरि पुंडरीयं तओ कओ लोएहिं जयजया-रओ। चडाविओ गएण खंधे, पइसारिओ य नयरिं। अहिसित्तो मंति-सामंतेहिं। भणियं च गयण-तल-गयाए देवयाए। भो भो, एस महाणुभावो असेस-कलाधारगो देवयाहिट्ठिय-सरीरो विक्कमराओ नाम राया। ता एयस्स सासणे जो न वट्टइ, तस्स नाहं खमामि त्ति। तओ सव्वो सामंत-मंति-पुरोहियाइओ परियणो आणा-विहेओ जाओ। तओ उदारं विसय-सुहमणुवंतो चिट्ठइ। आढत्तो उज्जेणि-सामिणा वियारधवलेण सह संववहारो जाव जाया परोप्परं निरंतरा पीई॥

१४ इओ य देवदत्ता तारिसं विडंबणं मूलदेवस्स पेच्छिय विरत्ता अईव अयलोवरि। तओ य निब्भच्छिओ अयलो; भो अहं वेसा, न उण अहं तुज्झ कुल-घरिणी। तहा वि मज्झ गेहत्थो एवंविहं ववहरसि। ता मम-त्थाए पुणो न खिज्जियव्वं ति भणिय गया राइणो सयासं। भणिओ य निवडिय चलणेसु राया। सामि तेण वरेण कीरउ पसाओ। राइणा भणियं भण, कओ चेव तुच्छ पसाओ। किमवरं भणीयइ। देवदत्ताए भणियं। ता, सामि मूलदेवं वज्जिय न अन्नो पुरिसो मम आणावेयव्वो। एसो अयलो मम घरागमणे निवारेयव्वो। राइणा भणियं, एवं, जहा तुज्झ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रोयए, परं कहेह, को पुण वुत्तन्तो। तओ कहिओ माहवीए। रुट्ठो राय अयलोवरि। भणियं च, भो मम एईए नयरीए एयाइं दोन्नि रयणाइं ताइं पि खली-करेइ एसो। तओ हक्कारिय अंबाडिओ भणिओ य। रे, तुमं एत्थ राया जेण एवंविहं ववहरसि। ता निरूवेहि संपयं सरणं-करेमि तुह पाण-विणासं। देवदत्ताए भणियं, सामि, किमेइणा सुणह-पाएण पडिखद्धेणं ति। ता मुंचह एयं। राइणा भणिओ, रे, एईए महाणुभावाए वयणेणं छुट्टो संपयं, सुद्धी उण तेणेवेह आणिएणं भविस्सइ। तओ चलणेसु निवडिऊण निग्गओ राय-उलाओ। आढत्तो गवेसिउं दिसो-दिसिं। तहा वि न लद्धो। तओ तीए चेव ऊणिमाए भरिऊण भंडस्स वहणाइं पत्थिओ पारसउलं॥

१५. इओ य मूलदेवेण पेसिओ लेहो कोसल्लियाइं च देवदत्ताए तस्स य राइणो। भणिओ य राया, मम एईए देवदत्ताए उवरि महंतो पडिबंधो। ता जइ एईए अभिरुचियं, तुन्हं वा रोयए, तो कुणह पसायं, तेसेह एयं। तओ राइणा भणिया राय-दोवारिगा। भो किमेयं एवंविहं लिहावियं विक्कमराएण। किं अम्हाणं तस्स य अत्थि कोइ विसेसो। रज्जं पि सव्वं तस्सेयं, किं पुण देवदत्ता। परं इच्छउ सा। तओ हक्कारिया देवदत्ता। कहिओ वुत्तंतो, ता जइ तुम्ह रोयए, ताहे गम्मउ तस्स सगासं। तीए भणियं, महापसाओ, तुम्हाणुन्नायाण मणोरहा एए अम्हं। तओ महा-विभवेणं पूइऊण पेसिया गया य। तेण वि महा-विभूईए चेव पवेसिया। जायं च परोप्परसेगरज्जं। अच्छए मूलदेवो तीए सह विसयसुहमणुहवंतो जिण-भवण-बिंब-करण-पूयण-तप्परो त्ति॥

१६. इओ य सो अयलो पारस-उले विढविय बहुयं दव्वं पवरं च भण्डं भरेऊण आओ वेण्णायडं। आवासिओ य बाहिं। पुच्छिओ लोगो, किं-नामाभिहाणो एत्थ राया। कहियं च, विक्कमराओ त्ति। तओ हिरण्ण-सुवण्ण-मोत्तियाणं थालं भरेऊण गओ राइणो पेक्खगो। दवावियं राइणा आसणं। निसण्णो पच्चभिन्नाओ य। अयलेण य न नाओ एसो। रन्ना पुच्छियं, कुओ सेट्ठी आगओ। तेण भणियं, पारस-उलाओ। रन्ना पूइएण अयलेण भणियं, सामि, पेसेह कोवि उवरिगो, जो भंडं निरूवेइ। तओ राइणा भणियं, अहं सयमेव आगच्छामि। तओ पंच-उल-सहिओ गओ राया। दंसियं वहणेसु संख-फोप्फल-चंदणागरु-मंजिट्ठाइयं भंडं। पुच्छियं पंचउल-समक्खं राइणा। भो सेट्ठि, एत्तियं चेव इमं। तेण भणियं, देव, एत्तियं चेव। राइणा भणियं, करेह सेट्ठिस्स अद्ध-दाणं, परं मम समक्खं तोलेह चोल्लए। तोलियाइं पंचउलेण। भारेण य पाय-प्पहारेण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

य वंस-वेहेण य लक्खियं, मंजिट्ठमाइ-मज्झ-गयं सार-भंडं । राइणा उक्केल्लावियाइं चोल्लयाइं, निरूवियाइं समंतओ, जाव दिट्ठं कत्थइ सुवण्णं, कत्थइ रुप्पयं, कत्थइ मणि-मोत्तिय-पवालाई महग्घं भंडं । तं च दट्ठूण रुट्ठेण निय-पुरिसाण दिन्नो आएसो । अरे, बंधह पच्चक्ख-चोरं इमं ति । बद्धो य थरथरिंत-हियओ तेहिं । दाऊण रक्खवाले जाएसु गओ राया भवणं । सो वि आणिओ आरक्खिगेण राय-समीवं । गाढ-बद्धं च दट्ठूण भणियं राइणा । रे, छोडेह छोडेह । छोडिओ अन्नेहिं । पुच्छिओ राइणा, परियाणसि ममं । तेण भणियं सयल-पुहवि-विक्खाए महा-नरिंदे को न-याणइ । राइणा भणियं, अलं उवयार-भासणेहिं, फुडं साहसु, जइ जाणसि । अयलेण भणियं, देव, न-याणामि सम्मं । तओ राइणा बाहरा-विया देवदत्ता । आगया वरच्छर व्व सव्वंग-भूसण-धरा, विन्नाया अयलेण । लज्जिओ मणम्मि बाढं । भणियं च तीए, भो, एस सो मूलदेवो, जो तुमे भणिओ तम्मि काले, ममावि कयाइ विहि-जोगेण वसणं पत्तस्स उवयारं करेज्जह । ता एस सो अवसरो । मुक्को य तुमं अत्थ-सरीर-संसयमावन्नो वि पणय-दीण-जण-वच्छलेण राइणा संपयं । इमं च सोऊण विलक्ख-माणसो, महा-पसाओ त्ति भणिऊण निवडिओ राइणो देवत्ताए य चलणेसु । भणियं च, कयं मए जं तया सयल-जण-निव्वुइ-करस्स नीसेस-कला-सोहियस्स देवस्स निम्मल-सहावस्स पुण्णिमा-चंदस्सेव राहुणा कयत्थणं, ता तं खमउ मम सामी । तुम्ह कयत्थणामरिसेण महाराओ वि न देइ मे उज्जेणीए पवेसं । मूलदेवेण भणियं, खमियं चेव मए, जस्स तुह देवीए कओ पसाओ । तओ सो पुणो वि निवडिओ दोण्ह वि चलणेसु परमायरेण । ण्हाविओ य देवदत्ताए परिहाविओ महग्घ-वत्थे । राइणा मुक्कं दाणं । पेसिओ उज्जेणिं । मूलदेव-राइणो अब्भत्थणाए खमियं वियारधवलेण । निग्घिणसम्मो वि रज्जे निविट्ठं सोऊण मूलदेवं आगओ वेण्णायडं । दिट्ठो राया । दिन्नो सो चेव अदिट्ठ-सेवाए गामो तस्स रन्ना । पणमिऊण महा-पसाओ त्ति भणिऊण य सो गओ गामं ॥

१७. इओ य तेण कप्पडिएण सुयं जहा । मूलदेवेण वि एरिसो सुमिणो दिट्ठो जारिसो मए । परं सो आएस-फलेण राया जाओ । सो चिंतेइ, वच्चामि जत्थ गोरसो, तं पिबित्ता सुवामि, जाव तं सुमिणं पुणो वि पेच्छामि । अवि सो पेच्छेज्ज, न य माणुसाओ विभासा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करकंडु

१. चंपाए नयरीए दहिवाहणो राया। तस्स चेडग-धूया उपमावई देवी। अन्नया य तीसे दोहलो जाओ। किहाइं राय-नेवत्थेण नेवत्थिया महाराय-धरिय-छत्ता उज्जाण-काणणाणि हत्थि-खंध-वर-गया विहरेज्जा। सा ओलुग्गा जाया। राइणा पुच्छिया। कहिओ सब्भावो। ताहे राया सा य जय-हत्थिम्मि आरूढाइं। राया छत्तं धरेइ। गया उज्जाणं। पढम-पाउसो य तया वट्टइ। सीयलएणं सुरहि-गंध-मट्टिया-गंधेणं (हत्थी) अज्झाहओ वणं संभरेइ। करी वि पयट्टो वणाभिमुहो, पयाओ पहाओ। जणो न तरइ पिट्ठओ ओलग्गिउं। दो वि अडविं पवेसियाइं। राया वडरुक्खं पेक्खइ। देविं भणइ। पयस्स वडस्स हेट्ठेण जाहिइ, तओ तुमं साहं गेण्हेज्जासि। ताए पडिसुयं। न तरइ गेण्हिउं। राया दक्खो, तेण साहा गहिया। सो उत्तिण्णो निराणंदो किं कायव्वया-मूढो गओ चंपं॥

२. सा य पउमावई नीया निम्माणुसिं अडविं। जाव तिसाइओ ताव पेच्छइ तलागं महइ-महालयं हत्थी। तओ तत्थ ओइण्णो अभिरमइ। इमा वि सणियं सणियं ओइण्णा करिणो, उत्तिण्णा तलागाओ। दिसाओ न जाणइ, भय-भीया समंतओ तं वणं पलोएइ। तओ, अहो कम्माण परिणई, जेण अतक्कियमेव एरिसं वसणमहं पत्ता। ता किं करेमि, कत्थ गच्छामि, का मे गइ त्ति। सा य परव्वसा रोविउं पयत्ता। खण-मेत्तेण य काऊण धीरयं चिंतियं तीए। न नज्जइ बहु-दुट्ठ-सावय-संकुले एयम्मि भीसणे वणे किं पि हवइ। ता अप्पमत्ता हवामि। तओ कयं चउ-सरण-गमणं, गरहियाइं दुच्चरियाइं, खमिओ सयल-जीव-रासी, कयं सागारं भत्त-पच्चक्खाणं।

जइ मे होज्ज पमाओ इमस्स देहस्सिमाएँ वेलाए।
आहारमुवहि-देहं चरिमे समयम्मि वोसिरियं॥१॥

तहा पंच-नमोक्कारो मे सरणं। जओ सो चेव इह-लोग-पर-लोगेसु कल्लाणावहो। भणियं च

वाहि-जल-जलण-तक्कर-हरि-करि-संगाम-विसहर-भयाइं।
नासंति तक्खणेणं नवकार-पहाण-मंतेणं॥ २॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न य तस्स किंचि पहवइ डाइणि-वेयाल-रक्ख-मारि-भयं।
नवकार-पहावेणं नासंति य सयल-दुरियाइं ॥ ३ ॥

तहा

हियय-गुहाए नवकार-केसरी जाण-संठिओ निच्चं।
कम्मट्ठ-गंठि-दोघट्ट-घट्टयं ताण परिनट्ठं ॥ ४ ॥

३. तओ नवकारमणुसरंती पट्ठिया एग-दिसाए। जाव दूरं गया, ताव दिट्ठो एगो तावसो। तस्स मूलं गया। अभिवाइओ सो। पुच्छिया तेण। कओ सि अम्मो इहागया। ताहे कहेइ। अहं चेडगस्स धूया, जाव हत्थिणा आणीया। सो य तावसो चेडगस्स नियल्लओ। आसासिया मा वीहेहि त्ति। भणिया य, मा सोयं करेहि, ईइसो चेव एस संजोग-विओग-हेऊ जम्मण-मरण-रोग-सोग-पउरो असारो संसारो। वण-फलेहिं अणिच्छंती वि काराविया पाण-वित्तिं, नीया य वसिमं, भणिया य। एत्तो परेण हल-किट्ठा भूमी, तं न अक्कमामो अम्हे। एसो दंतपुरस्स विसओ दंतवक्को य एत्थ राया। ता तुमं निब्भया गच्छ एयम्मि नयरे, पुणो सुसत्थेण गच्छेज्जसु चंपं ति। नियत्तो तावसो। इयरा वि पविट्ठा दंतपुरं। गया य पुच्छंती साहुणी-मूलं। वंदिया पवत्तिणी। पुच्छिया, कुओ ताविगा। कहियं तीए जहट्ठियं। परुण्णा मणागं, संठविया पवत्तिणीए। महाणुभावे, मा कुणसु चित्त-खेयं, अलंघणीओ हु विहि-परिणामो। जओ

विहडावइ घडियं पि हु विहडियमवि किं चि संघडावेइ।
अइ-निउणो एस विही सत्ताण सुहासुह-करणे ॥५॥

किं च

खण-दिट्ठ-नट्ठ-विहवे खण-परियट्टत-विविह-सुह-दुक्खे।
खण-संजोग-विओगे संसारे नत्थि किं पि सुहं ॥६॥

जेणं चिय संसारो बहुविह-दुक्खाण एस भंडारो।
तेणं चिय इह धीरा अपवग्ग-पहं पवज्जंति ॥७॥

एवमाइ अणुसासिया संवेगमुवगया ताणं चेव मूले पव्वइया। पुच्छियाए वि दिक्खाए अदाण-भएण गब्भो न अक्खाओ। पच्छा नाए मयहरियाए सब्भाओ कहिओ। पच्छन्नं धरिया। पसूया समाणी सह नाम-मुद्दाए कंबल-रयणेण य सुसाणे छड्डेइ। पच्छा मसाण-पालेण गहिओ भज्जाए अप्पिओ। अवकिण्णओ त्ति नामं कयं। सा य अज्जा तीए पाणीए समं मेत्तिं करेइ त्ति। सा अज्जा ताहिं संजईहिं पुच्छिया। कहिं गब्भो। भणइ, मयगो जाओ, तो मे उज्झिओ। सो तत्थ संवड्ढइ। ताहे दारग-रूवेहिं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समं रमइ। सो ताणि डिंभ-रूवाणि भणइ। अहं तुब्भं राया, मम करं देह। सो लुक्ख-कच्छूए गहिओ। ताणि भणइ, ममं कंडूयह। ताहे से करकंडु त्ति नामं कयं। सो य ताए संजईए अणुरत्तो। सा य से मोयए देइ, जं वा भिक्खं लट्ठं लहेइ॥

४. संवड्ढिओ सो सुसाणं रक्खइ। तत्थ दो संजया तं मसाणं केणइ कारणेण अइगया, जाव एगत्थ वंस-कुडंगे दंडं पेच्छंति। तत्थ एगो दंड-लक्खणं जाणइ जहा।

एग-पव्वं पसंसंति दु-पव्वा कलह-कारिया।
ति-पव्वा लाभ-संपन्ना चउ-पव्वा मारणंतिया॥ ८॥
पंच-पव्वा उ जा लट्ठी पंथे कलह-निवारिणी।
छ-पव्वा य आयंको सत्त-पव्वा अरोगिया॥ ९॥
चउरंगुल-पइट्ठाणा अट्ठंगुल-समूसिया।
सत्त-पव्वा उ जा लट्ठी मत्त-गय-निवारिणी॥ १०॥
अट्ठं-पव्वा असंपत्ती नव-पव्वा जस-कारिया।
दस-पव्वा उ जा लट्ठी तहियं सव्व-संपया॥ ११॥
वंका कीड-क्खइया चित्तलया पोल्लडा य दड्ढा य।
लट्ठी य उब्भ-सुक्का वज्जेयव्वा पयत्तेण॥ १२॥
घण-वड्ढमाण-पव्वा निद्धा वण्णेण एग-वण्णा य।
एमाइ-लक्खण-जुया पसत्थ-लट्ठी मुणेयव्वा॥ १३॥

तओ तेण भणियं। जो एवं दंडं गेण्हिस्सइ सो राया होहिइ किं तु पडिच्छियव्वो, जाव अन्नाणि चत्तारि अंगुलाणि वड्ढइ, ताहे जोग्गो त्ति। तं तेण मायंग-चेडगेण सुयं, एक्केण य धिज्जाइएण। सो धिज्जाइओ अप्पसारियं तस्स चउरंगुलं खणिऊणं छिंदेइ। तेण य चेडगेणं दिट्ठो सो उद्दालिओ। सो तेण धिज्जाइएण करणं नीओ। भणइ, देहि दंडगं। सो भणइ, मम मसाणे एस वड्ढिओ अओ न देमि। धिज्जाइओ भणइ, अन्नं गेण्ह। सो नेच्छइ, भणइ य, एएण मम कज्जं ति। सो दारगो न देइ। तेहिं सो दारगो पुच्छिओ, किं न देसि। भणइ य, अहं एयस्स दंडगस्स पहावेण राया होहामि त्ति। ताहे कारणिया हसिऊण भणंति। जया तुमं राया होज्जासि, तया तुमं एयस्स गामं देज्जासि। पडिवन्नं तेण। धिज्जाइएण वि अन्ने धिज्जाइया भणिया जहा। एवं मारेत्ता दंडगं हरामो। तं तस्स पिउणा सुयं। ताणि तिण्णि वि नट्ठाणि जाव कंचणपुरं गयाणि। तत्थ राया अपुत्तो मओ। आसो अहिवासिओ। तस्स बाहिं सुयंतस्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूलमागओ, पयाहिणी-काऊण ठिओ। जाव आयरेण नायरा पेच्छंति लक्खणं-जुत्तं। जय-सद्दो कओ। नंदी-तूरमाहयं। इमो वि जंभंतो उट्ठिओ। वीसत्थो आसे विलग्गो पवेसिज्जइ। मायंगो त्ति धिज्जाइया न देंति पवेसं। ताहे तेण दंड-रयणं गहियं। तं जलिउमाढत्तं। ते भीया ठिया। ताहे तेण वाडहाणगा हरिएसा धिज्जाइया कया। उक्तं च—

दधिवाहन-पुत्रेण राज्ञा तु करकंडुना।
वाटधानक-वास्तव्यश्चांडाला ब्राह्मणीकृताः॥ १४॥

तस्स य घर-नामं अवकिण्णगो त्ति अवहीरिऊण तेहिं तं चेव चेडग-कयं नामं पइट्ठियं करकंडु त्ति। ताहे सो धिज्जाइओ आगओ। देहि मम गामं। भणइ जो ते रुच्चइ तं गेण्ह। सो भणइ, मम चंपाए घरं. ता तीए विसए देहि। ताहे दहिवाहणस्स लेहं देइ। देहि ममं गामं एगं, अहं तुज्झ जं रुच्चइ गामं वा नगरं वा तं देमि। सो रुट्ठो। दुट्ठ-मायंगो अप्पाणं न-याणइ त्ति। दूएण पडियागएण कहियं। करकंडु कुविओ। चंपा रोहिया। जुद्धं वट्टइ। ताए संजईए सुयं। मा जण-क्खओ होहि त्ति मयहरियं आपुच्छिऊण गया तं नयरिं। करकंडुं उस्सारित्ता रहस्सं भिंदइ, एस तव पिय त्ति। तेण ताणि अम्मा-पियरो पुच्छियाणि। तेहिं सब्भावो कहिओ। माणेणं न ओसरइ। ताहे सा चंपं अइगया। रण्णो घरं अईइ, नाया, पाय-वडियाओ दासीओ परुण्णाओ। राइणा वि सुयं। सो वि आगओ। वंदित्ता आसणं दाऊण तं गब्भं पुच्छइ। सा भणइ, एस सो जेण रोहियं नयरं। तुट्ठो निग्गओ मिलिओ। दो वि रज्जाणि तस्स दाऊण दहिवाहणो पव्वइओ॥

५. करकंडू य महा-सासणो जाओ। सो किल गोउल-प्पिओ। अणेगाणि तस्स गोउलाणि जायाणि। जाव सरय-काले एगं गो-वच्छं थोर-गत्तं सेयं पेच्छइ। भणइ, एयस्स मायरं मा दुहेज्जह। जया वड्ढिओ होज्जा तया अण्णाणं गावीणं दुद्धं पाएज्जाह। ते गोवा पडिसुणंति। सो उच्चत्त-विसाणो गंध-वसहो जाओ। राइणा दिट्ठो। सो जुद्धिक्कओ जाओ। पुणो कालेण राया आगओ पेच्छइ महाकायं जुण्ण-वसभं पड्डुएहिं परिघट्टिज्जंतं। गोवे पुच्छइ कहिं सो वसभो त्ति। तेहिं सो दाइओ तयव्वत्थो। भणियं च

गोट्ठंगणस्स मज्झे ढक्किय-सद्देण जस्स भज्जंति।
दित्ता वि दरिय-वसभा सुतिक्ख-सिंगा समत्था वि॥ १५॥
पोराणय-गय-दप्पो गलंत-नयणो चलंत-विसमोट्ठो।
सो चेव इमो वसभो पड्डुय-परिघट्टणं सहइ॥ १६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६. तं तारिसं पेच्छिय गओ विसायं। चिंतेइ अणिच्चयं। अहो तारिसो होऊण संपइ एयारिसो जाओ एस वसभो। ता सव्वे अथिरा संसारे पयत्था। तहा हि, जो ताव भोग-निबंधणं महा-मोह-हेऊ य अत्थो, सो अधुवो। भणियं च

चवलं सुर-चावं व विज्जु-लेह व्व चंचलं।
पाआवलग्गं पंसु व्व धणं अथिर-धम्मयं॥ १७॥
अत्थं चोरा विलुंपंति उद्दालंति नरेसरा।
वंतरा य निगूहंति गेण्हंति अह दाइया॥ १८॥
हुयासणो डहे सव्वं जलुप्पीलो विणासए।
सव्वस्स हरणं चावि करेइ कुविओ जमो॥ १९॥

तहा परमाणंद-हेऊ इट्ठ-जण-संगमो वि अणिच्चो। कहं

जहा संझाएँ रुक्खम्मि मिलंति विहगा बहू।
पंथिया पहियावासे जहा देसंतरागया॥ २०॥
पहाए जंति सव्वे वि अन्नमन्नं दिसंतरं।
एवं कुडुंब-वासे वि संगया बहवो जिया॥ २१॥
नरामर-तिरिक्खाइ-जोणीसु कम्म-संजुया।
मच्चु-प्पहाय-कालम्मि सव्वे जंति दिसो-दिसिं॥ २२॥

तहा

जेणुम्मत्त-पमत्तउ हिंडइ पुरि-पहिहिं
मोडाओडि करंतउ वेढिउ बहु-नरहिं।
तं जोयणु अइरेण जण खण-भंगुरउ
जर-रोगिहिं सोसिज्जइ रक्खंतह खरउ॥ २३॥

तहा

गब्भे जम्मे बालत्तणम्मि तरुणत्तणम्मि थेरत्ते।
मट्टिय-भंडं व जिया सव्वावत्थासु विहडंति॥ २४॥

एमाइ चिंतंतो पडिबुद्धो, पत्तेयबुद्धो जाओ। काऊण पंचमुट्ठियं लोयं देवया-विइण्ण-लिंगो विहरइ। भणियं च

सेयं सुजायं सुविभत्त-सिंगं
जो पासिया वसभं गोट्ठ-मज्झे।
रिद्धिं अरिद्धिं समुपेहियाण
कलिंग-राया वि समिक्ख धम्मं॥ २५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्य हेमचन्द्र और उनका शब्दानुशासन : एक अध्ययन

डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री

संस्कृत और प्राकृत भाषाओं के वैयाकरणों में सर्वाङ्गपूर्णता, वैज्ञानिकता और सरलता की दृष्टि से आचार्य हेम का अद्वितीय स्थान है, किन्तु हैम शब्दानुशासन की तो बात ही क्या; समस्त व्याकरण शास्त्र में अद्यावधि तुलनात्मक विवेचन, परीक्षण और अध्ययन नहीं के बराबर हुआ है। प्रस्तुत ग्रंथ एक प्रकार से संस्कृत व्याकरण शास्त्र का तुलनात्मक इतिहास है जिसमें शब्दानुशासन-सम्बन्धी हेम की विशेषताओं, उपलब्धियों, और अभावों पर प्रकाश डाला गया है तथा पाणिनि एवं पाणिनि से भिन्न अन्य अनेक वैयाकरणों के साथ अनेक दृष्टियों से उनकी तुलना करते हुए विशद आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। हैम के साथ-साथ अन्य शब्दानुशासनों का भी विवेचन यथास्थान होता चला है।

अपनी कोटि एवं विषय का यह सर्वथा नवीन ग्रन्थ है और बहुत अंशों में नवीन और मौलिक सामग्री से समलंकृत है। व्याकरण के विद्यार्थी, अध्यापक एवं शोधकर्ताओं के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। १५–००

प्राकृत साहित्य का इतिहास

प्रो० जगदीशचन्द्र जैन

प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रमुख विषय तो नाम से ही स्पष्ट है किन्तु उसके सन्दर्भ रूप में विश्वभर की सम्पूर्ण भाषाओं की जानकारी संक्षिप्त रूप में प्राप्त हो जाती है। तदनन्तर वेद से लेकर प्राचीनतम शिलालेख, प्राचीन नाटक, कथाग्रन्थ आदि तथा इस विषय पर खद्योत-प्रकाश डालने वाले आधुनिक ग्रन्थों के अध्ययन आदि के व्यापक समीक्षण और समालोचनपूर्वक अपने विषय का यह प्रथम ग्रन्थ हिन्दी साहित्य में अवतरित हुआ है। ऐसा विश्वास है कि प्राकृत के उद्गम, स्थिति और प्रचार आदि के विषय में जो भ्रामक और सन्दिग्ध दुर्निर्णेय मत-मतान्तर प्रचलित हैं उन सबका एक साथ निर्णय हो जायगा और प्राकृत के वास्तविक एवं प्रामाणिक इतिहास से लोग परिचित हो सकेंगे।

हिन्दी साहित्य को लेखक की यह अनुपम देन है। प्रत्येक संस्कृत-साहित्य के अनुसन्धित्सु छात्र, अध्यापक एवं अनुरागी व्यक्ति को इस ग्रन्थ का अवलोकन एवं अध्ययन अवश्य करना चाहिए। २०–००

प्राप्तिस्थानम्—चौखम्बा विद्याभवन चौक, वाराणसी–१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi